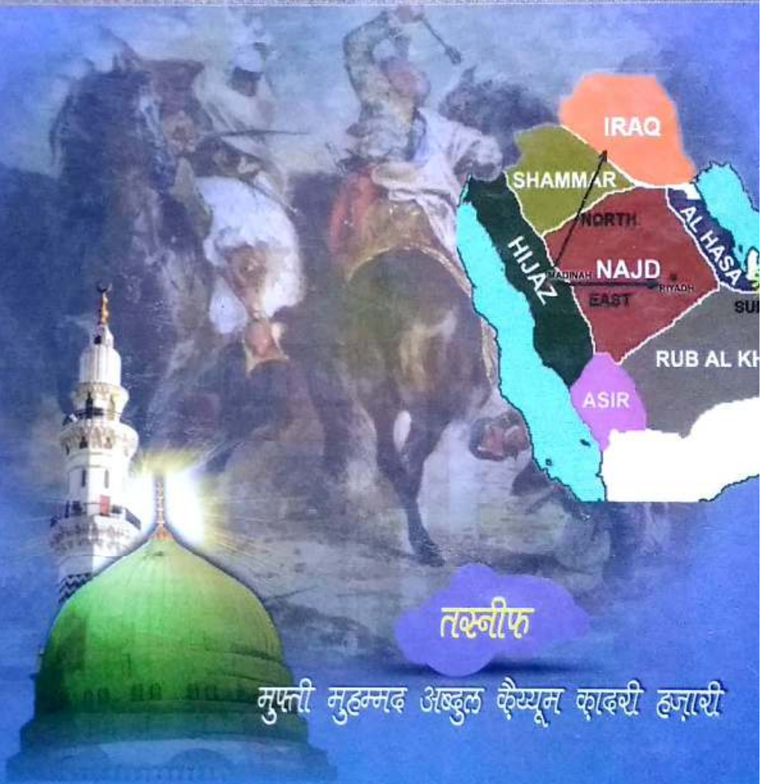
तारीख़े नज्द व हिजाज़



तस्नीफ़

मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़ैय्यूम क़ादरी हज़ारवी



रज़वी किताब घर
423, मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6

لا إله إلا الله محمد رسول الله

الله

اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی
عبادت کے لائق نہیں
اور حضرت محمد (صلی اللہ علیہ وسلم)
اللہ کے رسول ہیں۔

ولله الأسماء الحسنى فادعوه بها

أشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله

رضوی کتاب گھر دہلی

لا إله إلا الله محمد رسول الله

ولله الأسماء الحسنى فادعوه بها

الله

هو الله						الذي لا إله
إلا هو						الرحمن
الرحيم	الملك				القدوس	السلام
المؤمن	المهيمن				العزيز	الجبار
المتكبر	الخالق				البارئ	المصور
الغفار	القهار	الوهاب	الرزاق	الفتاح	العليم	القابض
الباسط	الخافض	الرافع	المعز	المذل	السميع	البصير
الحكم	العدل	اللطيف	الخبير	الحليم	العظيم	الغفور
الشكور	العلي	الكبير	الحفيظ	المقيت	الحسيب	الجليل
الكريم	الرقيب	المجيب	الواسع	الحكيم	الودود	المجيد
الوكيل	القوي	المتين	الباعث	الشهيد	الحق	الولي
الحميد	المحصي	المبدئ	المعيد	المحيي	المميت	الحي
القيوم	الواجد	الماجد	الواحد	الأحد	الصمد	القادر
المقتدر	المقدم	المؤخر	الأول	الآخر	الظاهر	الباطن
الوالي	المتعالي	البر	التواب	المنتقم	العفو	الرؤوف
مالك الملك	ذو الجلال والإكرام	المقسط	الجامع	الغني	المغني	المعطي
المانع	الضار	النافع	النور	الهادي	البديع	الباقي



हेजाज़े मुक़द्दस मक्का मोअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा का तुर्कों के दौर का मंज़र नामा और सऊदी वहाबियों के दौर का भयानक मंज़र

तारीखे नज्द व हेजाज़

Daud Ibrahim

लेखक

मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी हज़ारवी

प्रकाशक

रजवी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524

नाम किताब	:	**तारीख़े नज्द व हेजाज़**
लेखक	:	मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी हज़ारवी
मुक़द्दमा	:	सलाहुद्दीन महमूद
प्रकाशक	:	रज़वी किताब घर, दिल्ली-6
बएहतेमाम	:	हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी
कम्पोज़िंग	:	रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6
आपरेटर	:	एम० हसन
हिन्दी एडीशन	:	पहली बार 2016
पेज	:	416
तादाद	:	1100
क़ीमत	:	

दिल्ली में मिलने के पते

रज़वी किताब घर
423, उर्दू मार्किट, मटिया महल,
जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
फोन : -011-23264524

मक्तबा इमामे आज़म
425, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006
मोबाईल : 09958423551

भिवन्डी में मिलने के पते

रज़वी किताब घर
114, गैबी नगर, भिवंडी, ज़िला
थाणा (महाराष्ट्र)
फोन : 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स,
गैबी पीर रोड, (महाराष्ट्र)
मोबाईल : 09823625741

ख़ाके हिजाज़ के निगहबान

एक बात

मैं बचपन से अपने हवास के "नक़्शे अव्वल" की तलाश में हूं। और चूंकि मेरे वास्ते रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही मेरे हवास के लिए बाइसे वजूद हैं इसलिए वही मेरे हवास ही का नहीं बल्कि मेरे ईमान का नक़्शे अव्वल भी हैं।

मेरा यह सफ़र लम्हात से जारी है कि जिन में मैं ग़ैब गुज़ार कर, इस जहान में आया था और उस वक़्त तक जारी रहेगा कि जब मैं यह जहान सर्फ़ करके दोबारा ग़ैब में गुज़र जाऊंगा। मगर अपने हवास के अज़ल को दरयाफ़्त करने के लिए इस जहान की भर भरी ख़ाक पर मुझ को रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों के निशान की ज़रूरत है ताकि मुझ पर ग़ायब और मौजूद दोनों के राज़ वा हो सकें।

क्या किसी चटयल मैदान की कगर पर या किसी अंजान वादी के ख़म पर, क्या अपने अन्दर या बाहर, या फिर उस आईने की धार पर कि जो अन्दर और बाहर को एक करती है, मैं यह निशान पा सकूंगा, उसकी ख़बर तो उन निशानात ही को है। मगर तलाश मेरा मन्सब है। सो तलाश जारी है।

उस ही तलाश की एक लाज़िम कड़ी के तौर पर, 1390 हि० और 1391 हि० में मैंने हेजाज़ का सफर इख़्तियार किया था। ज़ेरे नज़र मज़्मून इस ही सफर का एक बयान है।

सलाहुद्दीन महमूद, लाहौर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(1)

तुर्कों ने हेजाज़ पर अपने दौरे हुकूमत के दौरान रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से लेकर आपके विसाल तक के हर लम्हे से वाबस्ता हर जिस्मानी, रूहानी, तारीख़ी और जमालियाती कैफ़ियत को आइन्दा नस्लों के वास्ते महफ़ूज़ करने का इरादा किया था। यह काम एक ग़ैर शुऊरी सतह पर तो अह्दे नबवी ही से जारी था मगर अब कोई एक हज़ार बरस गुज़र चुके थे और अब यह ज़रूरी था कि एक शऊरी और हतमी सतह पर यह अमल हो। इस काम के वास्ते जुनून की हद तक रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत और इंसानी हवास की हुदूद तक नफ़ासत और ज़ेहनी सच्चाई की ज़रूरत थी। यह रहमत तुर्क लहन में मौजूद थी और इसी वास्ते वह इस काम में तक़रीबन कामयाब हुए थे। तुर्कों का इंसानियत पर यह सब से बड़ा एहसान है।

उनको इल्म था कि जिस ख़ित्त-ए-ज़मीन पर आपका नुज़ूल हुआ और आपका पहला क़दम पड़ा कि जिस हवा का पहला सांस आपके अन्दर जज़्ब हुआ और जिसने आपकी आवाज़ का गुदाज़ पहली बार बर्दाश्त किया कि जिस हवा की सहार से पहले परिन्दे की पुकार आप तक आई और फिर जिस ख़ला के ख़म से चाँद और सूरज ने पहली बार आपको और आपने पहली बार उनको देखा कि जहाँ-जहाँ आपकी बीनाई में नए सितारों का वकूअ् हुआ और जिस-जिस तौर पर आपकी वसीअ् होती आंखों ने उनकी दोहरी हरकत को वाहिद करके अपने दिल में समोया कि यह क़द आवर लम्हे, गोशे, चप्पे और हवा और बीनाई, सदा और शनवाई के नक़्शे अव्वल महज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के नहीं, बल्कि आती दुनिया तक हर नये कलेमा गो के लहू का अव्वल, अज़ली, आबाई और असली निशान हैं। इस बात का उनको मुकम्मल इल्म था, सो इन तमाम चीज़ों को मद्दे नज़र रखते हुए उन्हों ने पनप पा कर इस बड़े होते बच्चे में बनू सअद की ख़स्लत और मुहब्बत से आग़ाज़ करने का इरादा किया मगर सब से पहले उन्हों

मदीना मुनव्वरा में इस मैदान का तएय्युन किया कि जहाँ मरने से पहले एक ख़ूबरू और कम उम्र नौजवान ने अपने घर से दूर बुख़ार की गर्मी और बेचैनी को मिटाने के वास्ते, एक शाम, चन्द लम्हात के वास्ते गश्त किया था और फिर अपनी कम सिन, ख़ूबसूरत और हंस मुख बीवी क़ो बे वह और अभी माँ के बदन ही में क़ायम बच्चे को यतीम और बेसहारा छोड़ कर अपनी तमन्नाएं अपने दिल ही में लिए मर गया था।

फिर उन्होंने एक पहाड़ की कोख में उस छोटे से घर का तएय्युन भी किया था कि जिस की पहली मंज़िल पर शुमाल की जानिब क़ाइम, एक छोटे से बिल्कुल चौकोर कमरे में कि जहाँ चहार आईनों की ओट में चहार सिम्तें मिलती थीं, एक बच्चा कि जिसको काइनात की अमान थी, ज़ुहूर में आया था। फिर उस बच्चे को एक बुज़ुर्ग इंसान ने अपने मेहनत और सूरज से कुम्हलाए हाथों से अपनी एक चादर में लपेटा था और वह पगडंडी तय की थी कि जो अल्लाह के घर तक जाती थी। वहाँ पहुँच कर उस ज़ईफ़ इंसान ने चादर में लिपटे हुए नौज़ाइदा बच्चे को हाथों में रख कर काइनात की जानिब बुलन्द किया था और दुआ की थी कि ऐ ख़ालिक़े काइनात इस बच्चे पर रहम फरमा इस वास्ते कि यह बेआसरा और यतीम है। तुर्कों ने उस शुमाली कमरे, उस आबाई पगडंडी और उस दुआ के मक़ाम का भी निहायत ही काविश से तएय्युन करके निशान छोड़ा था।

फिर उन्होंने पीली रगों के सियाह पहाड़ों और अक्सर औक़ात ख़ामोश रेगिस्तान के संगम पर क़ायम उस जगह को भी दरयाफ़्त करके महफ़ूज़ किया था कि जहां इस दुआ के कोई छेः बरस बाद अपने जवां मर्ग ख़ाविन्द की क़बर से वापसी पर अपने छेः बरस के हैरान बच्चे की उंगली पकड़े-पकड़े जब इस कमसिन ख़ातून ने एक रात के वास्ते पड़ाव किया था, तो वफ़ात पाई थी।

अगले रोज़ हैरान आंखों वाले इस छेः बरस के बच्चे ने अपनी मां का चेहरा कि जिस से अब आहिस्ता-आहिस्ता वह मानूस हो रहा था, आख़िरी बार देखा था और फिर अपनी मां को अपने कच्चे-कच्चे हाथों से अंजान ख़ाक में उतार कर क़ाफ़िले के साथ अपने मुक़द्दर की जानिब चल पड़ा था। तुर्कों ने अपनी मिसाली दुरुस्तगी, सादगी, सफ़ाई और खुश उस्लूबी से एक कतबा यहाँ भी छोड़ दिया था कि आने वालों को

आगाही हो कि मासूम दिलों की अकील ही है कि जो उनको वहदत का हम्राज़ बनाती है।

उनका अगला क़दम उस रास्ते का तऐयुन करना था कि जिस पर इस वाक़ए के तीन बरस बाद यह बच्चा एक ज़ईफ़ मैयत के साथ-साथ चारपाई का पाया पकड़ कर सबके सामने बिलक-बिलक कर रोता हुआ चला था। उसको शायद एहसास था कि आज के बाद उसकी अकील काइनाती वहदत की अकील है और आज के बाद शायद वह खुल कर रो भी न सकेगा। ग़रज़ यह कि तुर्कों ने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से लेकर आपके विसाल तक के वाक़ेआत को आने वाली नस्लों के तारीख़ी, जमालियाती और ईमानी शुऊर के वास्ते दुरुस्तगी और सादगी के साथ महफ़ूज़ करने का जो बेड़ा उठाया था, उसमें वह एक बड़ी हद तक कामयाब हुए। आपके बचपन से जवानी तक की सिम्तों का तऐयुन करने के बाद उन्होंने ग़ारे हिरा की चोटी से आसमानों को देखा और फिर उस ऊंचे पहाड़ की नशेबी वादी में क़ाइम शहर के एक घर के उस छोटे से कमरे का तऐयुन किया कि जहाँ हैरत पर से अपने नाम की पुकार सुनने के बाद वापस आकर रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आराम फरमाया था और जहाँ हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने आप पर अपने मुकम्मल एतमाद से आपको इस हद तक हौसला दिया था कि जब फतहे मक्का के बाद आप से पूछा गया कि आप कहाँ क़याम करेंगे, तो आपने ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी कि हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा की क़बर के साथ आपका ख़ेमा नसब किया जाए। बाज़ लोगों के इस्तिफ़सार पर कि आख़िर एक क़बर के किनारे एक क़ब्रिस्तान में क्यों? आपने फरमाया था :

"जब मैं ग़रीब था, तो उस ने मुझ को माला माल किया। जब उन्होंने मुझ को झूठा ठहराया, तो सिर्फ़ उस ही ने मुझ पर एतमाद किया और जब सारा जहान मेरे ख़िलाफ़ था, तो सिर्फ़ उस अकेली ही की वफ़ा मेरे साथ थी।"

तुर्कों के माहिरीन ने पहले उस घर का फिर उस घर में उस कमरे का तऐयुन किया कि जहाँ मुकम्मल एतमाद का यह बुनियादी लम्हा गुज़रा था। यहाँ यह बयान करना शायद दिल्चस्पी से ख़ाली न हो कि इस कमरे और उस कमरे के बारे में कि जहाँ आपका ज़ुहूर हुआ था

उस्मानी हुकूमत की जानिब से जो जारी अहकामात थे, वह क्या थे? हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा के घर वाले कमरे के बारे में जारी हुक्म था कि हर बार रमज़ान का चाँद देखते ही उसमें सफ़ेदी की जाए और फिर फज्र की अज़ान तक ख़्वातीन बआवाज़े बुलन्द कुरआन की तिलावत करें, जबकि हज़रत अब्दुल-मुत्तलिब के घर में वाक़े इस शुमाली कमरे के बारे में अहकामात यह थे कि पहली रबीउल-अव्वल को कमरे के अन्दर सफ़ेद रंग किया जाए, रंग साज़ हाफ़िज़े कुरआन हों और फिर रबीउल-अव्वल की उस रात कि जब आपका ज़ुहूर हुआ, मासूम बच्चे उस कमरे के अन्दर आईं और कुरआन की तिलावत करें। अगली बरस परिन्दे आज़ाद करने का हुक्म और रवाज था।

सो जहाँ उन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा के मकान और मक़बरे का तअैयुन किया, वहाँ उन्होंने बनू अरक़म की बैठक को महफ़ूज़, वरक़ा बिन नौफ़ल की देहलीज़ को पुख़्ता और हज़रत उम्मे हानी रज़ि अल्लाहु अन्हा के आंगन की निशानदेही भी करवाई। उसक साथ-साथ उन्होंने मक्के और मदीने में क़ायम इन अज़ली क़ब्रिस्तानों को कि जिन में ख़ानवाद-ए-रसूल के बेशतर अफ़राद, अस्हाबे किराम और उनकें ख़ानदान और चेदह तरीन बुज़ुर्गाने दीन क़यामत के मुंतज़िर सोते थे, साफ़ सुथरा और पाक करवाया और फिर निहायत ही सलीक़े से क़बरों की निशानदेही करके मुकम्मल नक़्शे मुरत्तब करवाए।

इन तमाम कार्रवाइयों में तुर्कों का तरीक़-ए-कार बहुत मुअस्सिर और यक्ता होता था। मिसाल के तौर पर जब तुर्क हिजाज़ पहुंचे, तो मस्जिदे बिलाल जो कि ख़ान-ए-काबा के सामने एक पहाड़ पर वाक़े है, सदियों की ग़फ़लत की वजह से तक़रीबन मिट्टी और पत्थर का ढेर हो चुकी थी। इस छोटी सी मस्जिद को उसके असली ख़ुतूत पर दोबारा तामीर करने के वास्ते जो तरीक़ा अख़्तियार किया गया, वह यह था। पहले तमाम मिट्टी को अलग कर लिया गया और फिर तमाम चूने को और उसके बाद तमाम असली पत्थरों को, उसके बाद मिट्टी और चूने को पीस कर और निहायत ही बारीक छलनियों से छान कर अलग-अलग तैयार कर लिया गया। बुझे हुए चूने का कीमियाई तज्ज़िया करके उसके अज्ज़ा मालूम किए गये। फिर उन अज्ज़ा के असली और पुराने माख़ज़ दरयाफ़्त करने के बाद एक ही माख़ज़ के नए और पुराने चूने को मिला

कर और मज़ीद ताकतवर बना कर चुनाई के वास्ते इस्तेमाल किया गया। पत्थर भी अपनी तराश, कैफ़ियत और साख़्त को मद्दे नज़र रखते हुए थे।

इस तरह वही मिट्टी, वही गारा और वही चूना और वही पत्थर बिल्कुल इसी तरह इस्तेमाल हुआ जैसा कि सदियों पहले मस्जिद की तामीरे अव्वल में इस्तेमाल हुआ था। मस्जिद नई भी हो गई और अपने असली और अव्वल खुतूत पर क़ायम भी रही। यह तुर्कों के तरीक़-ए-कार की महज़ एक और क़दरे मामूली मिसाल है।

जब ५३ बरस मक्के में बीत गये और ज़मीन गर्दिश उस शहर को एक बार फिर वहीं ले आई कि जहां वह ५३ गर्दिशों पहले था, तो नए सितारों का वकूअ् हुआ था और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीने का रुख़ किया था। सो तुर्क भी इस आबाई रास्ते पर चल निकले थे। ग़ारे सौर को उन्होंने कुछ न कहा और यही मुनासिब समझा कि न तो उसके जाले साफ़ करें और न ही कबूतरों के सदियों पुराने घोंसिलों के झाड़ झनकार को काटें या हटाएं। ग़ारें सौर को उन्होंने मकड़ियों और कबूतरों के सुपुर्द ही रहने दिया कि अब जाइज़ तौर पर वही उस गोशे के मालिक और हक़्दार थे। ग़ारे हिरा तक की निहायत ही मुश्किल चढ़ाई को भी उन्होंने आसान बनाने की कोई कोशिश न की ताकि तिहाई चढ़ाई पर एक निहायत सादा सी नानद बना दी ताकि बारिश का पानी कभी-कभी जमा हो सके और बच्चे, बूढ़े और औरतें अगर चाहें तो चढ़ाई के दौरान प्यास बुझा सकीं।

इसके बाद उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु के घर से लेकर मदीने के अतराफ़ में क़ायम बनू नज्जार की कच्ची बस्ती तक हिजरत के रास्ते का हतमी तऐयुन करके नक़्शा मुरत्तब किया। तुर्क जब हिजाज़ पहुंचे तो बनू नज्जार तितर बितर हो चुके थे। फिर भी तुर्कों ने बचे खुचे लोगों को तलाश किया और सीना ब सीना महफूज़, उनके लोक गीतों को पहली बार क़लम बन्द करके बाक़ायदा महफूज़ किया। मस्जिदे क़ुबा को निहायत ही सब्ज़ से बहाल करने के बाद वह कुछ देर उस कुएं की मुंडेर पर भी सुस्ताने को बैठे कि जहाँ हिजरत के बाद पहली नमाज़ अदा करके रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़याम फ़रमाया था और जिसके आपको देख कर आपसे आप ऊंचे होते पानी में आपने अपने चेहरे का शफ़्फ़ाफ़ अक्स देख कर, पहले एक लम्हा तवक्कुफ़ और फिर मुसर्रत का इज़्हार फरमाया था।

इस कुएं से अब रास्ता मदीने को जाता था। मदीने के उस मैदान तक जाता था कि जहाँ आपकी आमद से कोई ५३ बरस पहले, एक शाम, मरने से पहले एक ख़ूबरू और कम उम्र नौजवान ने अपने घर से दूर अपने बुख़ार की गर्मी और बेचैनी को मिटाने के लिए चन्द लम्हात के वास्ते गश्त किया था और फिर अपनी कमसिन, ख़ूबसूरत और हंस मुख बीवी और अभी माँ के बदन ही में क़ायम बच्चे को यतीम और बेसहारा छोड़ के अपनी तमन्नाएं अपने दिल ही दिल में लिए मर गया था।

एक बार फिर वही मैदान था। मस्जिदे नबवी को अब यहाँ तामीर होना था।

मस्जिदे नबवी की तामीर भी ईमान, हुनरमन्दी , पाकीज़गी और नफ़ासत की एक अजीब और अनोखी दास्तान है।

पहले पहल बरसों तक तो तुर्कों को हिम्मत न हुई कि वह मस्जिदे नबवी की तामीर करें। उनके नज़्दीक यह एक काइनाती और इंसानी हुदूद से मावरा ताक़तों के बस का अमल था और वह महज़ इंसान थे। मगर जब इंसान सच्ची मुहब्बत करता है तो वह अपने आप से बाहर क़दम धरने की हिम्मत भी पा जाता है। सो अपनी मुहब्बत की सच्चाई के सहारे उन्होंने यह काम शुरू करने का इरादा किया। तुर्कों ने अपनी वसीअ् सलतनत और फिर पूरे आलमे इस्लाम में अपने इस इरादे का ऐलान किया। उसके साथ-साथ उन्होंने यह ऐलान भी किया कि इस हतमी काम के वास्ते उनको इमारत साज़ी और उस से मुतअल्लेक़ा उलूम और फ़ुनून के माहिरीन दरकार हैं। यह सुनना था कि हिन्दुस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, चीन, वस्ती ऐशिया, ईरान, इराक़, शाम, मिस्र, यूनान, शुमाली और वस्ती अफ़्रीक़ा के इस्लामी ख़ित्तों और न जाने आलमे इस्लाम के किस-किस कोने और किस-किस चप्पे से नक़्शा नवेस, मेअ्मार तराश, बुनियादें ज़मीन की ज़िन्दा रगों तक उतारने के माहिर, छत्तों और साइबानों को हवा में मुअल्लक़ करने के हुनरमन्द, ख़ुत्तात पच्चाकार, शीशागर और शीना साज़, कीमियागर, रंग साज़ और रंग शनास, माहिरीने फ़ल्कियात, हवाओं के रुख़ पर इमारतों की धार को बिठाने के हुनरमन्द और न जाने किन-किन अयाँ और कैसे-कैसे पोशीदा उलूम के माहरीन, असातिज़ा, पेशावर और हुनरमन्दों ने दुनियाए इस्लाम के गोशे-गोशे में अपने अह्लो अयाल को समेटा और इस

अज़ली बुलावे पर कुस्तुनतुनिया की जानिब रवाना हो गये, कहीं बेहद दूर, एक चटयल रेगिस्तान में जन्नत की कियारी के किनारे, उनके रसूल की क़्यामगाह पर तामीर होनी थी और वह और उनके हुनर अब हर तरह उस काम के वास्ते वक़्फ़ थे।

तुर्कों को इस वालिहाना कैफ़ियत की एक हद तक उम्मीद थी, मगर फिर भी कहा जाता है कि इस इज्तिमाई बेअख़्तियारी और मुकम्मल इताअत पर उन तक को तअज्जुब ज़रूर हुआ था। बहरे कैफ़ उनकी तैयारियाँ भी मुकम्मल थीं। उस्मानी हुकूमत की तक़रीबन हर शाख़, ऐलान से पहले ही हरकत में आ चुकी थी और हुकूमत के अह्लकार अपनी हुदूद में और सफीर दूसरे इस्लामी ममालिक में इस अंदाज़ और इरादे के तमाम लोगों की एआनत के वास्ते तैयार थे। इन अह्लकारों और सफीरों को यह अहकामात थे कि वह इन तमाम माहिरीन और उनके हम्राह और उनके अह्लो अयाल को अगर वह चाहें तो कुस्तुनतुनिया से चन्द फरसंग बाहर मैदानों में एक खुद कफील और कुशादा बस्ती तैयार हो चुकी थी। सो फिर जब उन यक्ताए रोज़गार लोगों के क़ाफ़िले पहुंचने शुरू हुए तो उनको उनके रोज़गार के एतबार से इस नई बस्ती के अलग-अलग महलों में बसाया जाने लगा और हुकूमत मुकम्मल तौर पर उनकी कफील हुई।

इस अमल में कोई पन्द्रह बरस गुज़र गये, मगर अब यह यक़ीन से कहा जा सकता था कि इस बस्ती में अपने वक़्तों के अज़ीम तरीन फ़न्कार जमा हो चुके हैं। अब खुद सुल्ताने वक़्त इस नई बस्ती में गया और उसने ख़ानदानी सरबराहों का इज्लास तलब करके मन्सूबे का अगला हिस्सा उनके सामने रखा। मन्सूबे का अगला हिस्सा इस तरह था। हर हुनरमन्द अपने सबसे होनिहार बच्चे या बच्चों (औलाद न होने की सूरत में होनिहार शागिर्द) का इंतिख़ाब करे और इस बच्चे के जवान हो कर पुख़्ता उम्र तक पहुंचने तक उसके बदन और लहन में अपना मुकम्मल फन मुन्तकि़ल कर दे। उधर हुकूमत का ज़िम्मा था कि वह उस दौरान इस अन्दाज़े के अतालीक़ मुक़र्रर करे कि वह हर बच्चे को पहले कुरआने करीम पढ़ाएं और फिर कुरआन हिफ़्ज़ करवाएं। साथ-साथ बच्चा शहसवारी भी सीखे। इस तमाम तालीम, तर्बियत और तैयारी के वास्ते पचीस बरस का अरसा मुक़र्रर किया गया।

इस मन्सूबे पर हर एक ने लब्बैक कहा और सब्र, मेहनत और मुहब्बत और हैरत का यह बिल्कुल अनोखा अमल शुरू हुआ।

चुनांचे पचीस बरस बीत गये और इन अनोखे हुनर मन्दों की एक नई और ख़ालिस नस्ल नशो नुमा पाकर तैयार हो गई। यह तीस से चालीस बरस उम्र के मख़्सूस और नेक अतवार नौजवानों की एक ऐसी जमाअत थी कि जो महज़ अपने-अपने आबाई और ख़ानदानी फ़ुनून ही में यक्ता और उनका नहीं थे, बल्कि इस जमाअत का हर फ़र्द हाफ़िज़े कुरआन और फ़अ्आल मुसलमान होने के अलावा एक सेहतमन्द नौजवान और अच्छा शहसवार भी था। बचपन के लम्ह-ए-अव्वल से उनको इल्म था कि यह वह चीदह लोग हैं कि जिन को एक रोज़ कहीं बेहद दूर, एक चटियल रेगिस्तान में, जन्नत की क्यारी के किनारे अपने रसूल की क़्यामगाह के गिर्द एक ऐसी काइनाती इमारत तामीर करनी है कि जो आसमान की जानिब उस ज़मीन का वाहिद निशान हो।

तुर्कों के ऐलाने अव्वल से लेकर अब तक कोई तीस बरस से ज़्यादा बीत चुके थे, और मस्जिदे नबवी के मेअ्मार, जिनकी तादाद कोई पांच सौ के लग भग बताई जाती है, तैयार थे। एक तरफ़ तो हुनर मन्दों की यह जमाअत तैयार हो रही थी और दूसरी तरफ तुर्क हुकूमत के अह्लकार इमारत के वास्ते साज़ो सामान इकट्ठा करने में एक ख़ास क़रीने के साथ मसरूफ़ थे। हुकूमत के शोअ्ब-ए-कान कुनी के माहिरीन ने ख़ालिस और उम्दा रग व रेशे के पत्थर की बिल्कुल नई कानें दरयाफ़्त कीं कि जिन से सिर्फ़ एक बार पत्थर हासिल करके उनको हमेशा के वास्ते बन्द कर दिया गया। उन कानों की जाए वकूअ् को इस हद तक सेग़-ए-राज़ में रखा गया कि आज तक किसी को इल्म नहीं है कि मस्जिदे नबवी में इस्तेमाल होने वाले पत्थर कहाँ से आए थे। बिल्कुल नए और उन छूए जंगल दरयाफ़्त किए गये और उनको काट कर उनकी लकड़ी को बीस बरस तक हिजाज़ की आबो हवा में आसमान तले मोसमाया गया। रंग साज़ों ने आलमे इस्लाम में उगने वाले दरख़्तों और ख़ाकी व आबी पौदों से तरह-तरह के रंग हासिल किए और शीशा गरों ने शीशा बनाने के वास्ते हिजाज़ी की रेत इस्तेमाल की। बच्चाकारी के क़लम ईरान से बन कर आए, जबकि ख़त्ताती के वास्ते नेज़े दरियाए जमुना और दरियाए नील के पानियों के किनारे उगाए

गये। ग़रज़ यह कि जब तक इन हुनरमन्दों की जमाअत तैयार हुई, उन ही के बुजुर्गों की ख़ास तौर पर तैयार करदह टोलियों ने इमारती सामान भी फ़राहम कर लिया। यह सारा इमारती सामान बमआ हुनर मन्दों की जमाअत के, निहायत ही एहतियात से पहले खुशकी, फिर समुन्द्र और फिर खुशकी के रास्ते हिजाज़ की सर ज़मीन तक पहुंचा दिया गया कि जहाँ मदीने से चार फ़रसंग दूर एक नई बस्ती इस तमाम सामान को रखने और हुनरमन्दों के तामीर के दौरान रहने सहने के वास्ते पहले ही तैयार हो चुकी थी। यहां यह सवाल पैदा होता है। कि अगर तामीर मदीने में होनी थी, तो फिर साज़ो सामान मदीने ही में रखा जाता। आख़िर यह चार फ़रसंग (बारह मील) दूर क्यों? इस की वजह तुर्क यह बताते हैं कि आख़िर एक बहुत बड़ी इमारत तैयार होनी थी कि जिसके वास्ते मुख़्तलिफ़ जसामत के हज़ारों पत्थर काटे जाने थे, बड़े-बड़े मचान ठोक ठाक कर तैयार होने थे, उसके अलावा भी बहुत से ऐसे ज़रूरी इमारती अमल होने थे कि जिन में शोर का बेहद इम्कान था, जबकि वह यह चाहते थे कि इमारत की तामीर के दौरान मदीने में ज़र्रह बराबर भी कोई शोर न हो और जिस फ़ज़ा ने हमारे रसूल की आंखें देखीं और आवाज़ सुनी हुई थी, वह अपनी हया, सुकून और वक़ार क़ायम रखे।

सो हर ऐसा काम कि जिसमें ज़रा भी शोर का इम्कान था, मदीने से चार फ़रसंग के फासिले पर हुआ और फिर हर चीज़ को ज़रूरत के मुताबिक़ मदीने ले आया गया। एक-एक पत्थर पहले वहीं काटा गया और फिर मदीने ला कर नसब किया गया। कभी ऐसा भी हुआ कि चुनाई के दौरान किसी पत्थर की कटाई ज़रा ज़्यादा साबित हुई या कोई मचान या जंगला छोटा या बड़ा पड़ा, तो उसको उजलत में ठोक बजा कर वहीं रसूल के सरहाने ठीक न किया गया, बल्कि चार फ़रसंग दूर की बस्ती ले जाकर और दुरुस्त करके दोबारा मदीने लाया गया। यहां यह भी याद रखें कि इस दौर में ज़राए मवासिलात क्या थे। भारी बोझ निहायत सुस्त रफ़्तारी और सब्र से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जाता था और इंसानी नक़ल व हमल के वास्ते सब से तेज़ रफ़्तार सवारी घोड़े के अलावा कोई और न थी।

सो जबकि सारा इमारती सामान अपनी ख़ाम शक्ल में मदीने के मुज़ाफ़ात वाली बस्ती में पहुंच गया और फिर पाँच सौ के लगभग हुनर

मन्दों की जमाअत ने भीइसी बस्ती में आन कर सुकूनत पा ली, तो सब कुछ अब इस जमाअत के सुपुर्द कर दिया गया। अपने फ़ुनून के इस्तेमाल और अपने तख़्लीक़ी अमल में यह फ़न्कार व हुनर मन्द बिल्कुल आज़ाद थे। सिर्फ़ दो अहकामात उनको दिए गये। अव्वल यह कि तामीर के लम्ह-ए-अव्वल से लेकर लम्ह-ए-तक्मील तक इस जमाअत का हर हुनरमन्द अपने काम के दौरान बावुज़ू रहे और दोम यह कि इस दौरान वह हर लम्हा तिलावते कुरआन जारी रखे।

सो बावुज़ू हाफ़िज़े कुरआन हुनरमन्दों की यह जमाअत पूरे पन्द्रह बरस तक मस्जिदे नबवी की तामीर में मस्रूफ़ रही और फिर एक सुबह आई कि मस्जिदे नबवी के ख़लाई निशान की चोटी से फज्र की अज़ान ने, ज़मीन से निहायत ही भरोसे से और ईमान से उगी उस इमारत के मुकम्मल होने का ऐलान कर दिया। अब ख़ला महफ़ूज़ भी था और आज़ाद भी।

यह इमारत कैसी है, क्या है, कहां है और कहाँ ले जाती है? उसके बारे में तो अलब किताब लिखूंगा। यहाँ सिर्फ़ इतना कह सकता हूँ कि यह इमारत इस जहान में होते हुए भी इस जहान में नहीं है। अपने आप में क़ायम रह कर इस इमारत को तो देखो तो यह कहीं और है। अपने आप से बाहर क़दम धर के उसको देखो तो यह कहीं और, और हम कुछ और हैं। पत्थर, ख़ला, हवा, आवाज़, लहन, नीयत, ईमान और नूर ने मिल कर सब्र की एक नई बिन्त की है। मुतवाज़ी औक़ात अगर रंग बिरंग के धागे हैं तो उनकी बुन्त में बेरंग का धागा उस इमारत का नूर है जो कि इस बिन्त को महज़ मानी ही नहीं देता, बल्कि औक़ात का एक दूसरे से एक जाइज़ और मख़्फ़ी राबता बन कर औक़ात को एक मरकज़ भी फराहम करता है और औक़ात के इस मरकज़ से हम को अपने रसूल की आवाज़ यूं आती है कि जैसे ख़ला महफ़ूज़ भी हो और आज़ाद भी कि जैसे आवाज़ परिन्दा भी हो और लहू भी कि अन्धेरे मैदानों में कभी नूर का शजर उगे तो कभी नूर की वादियों में अंधेरा खुद एक शजर हो कि जैसे नूर महज़ नूर ही न हो, बल्कि नूर का मंबअ़ भी हो। सो जब रियाजुल-जन्नह में इस ख़ला के खुम पर अपने रसूल के सरहाने बैठो, तो कश्फ़ होता है कि आख़िर मुहब्बत के क्या मानी हैं और नीयत की क्या हुदूद। और फिर वह बेनाम हुनरमन्द याद आते हैं कि जिनको

अपने हुनर से इस वास्ते मुहब्बत थी कि वह उनके रसूल के वास्ते था कि जिन्होंने इस चटियल मैदान में इस जन्नत की क्यारी के किनारे अपने रसूल की क़्यामगाह की हया, सुकून और हैरत को क़ायम रखते हुए इस इमारत को इस ख़ला के ख़म पर तामीर किया था कि आज इस इमारत में महज़ उनका हुनर ही नहीं, बल्कि उनके हुनर का ग़ैब भी महफ़ूज़ है, और फिर तुर्कों के वास्ते दुआ हमारे पोर पोर से बुलन्द होती है।

(2)

फिर कई सदियाँ बीत गईं :

अन्दरूनी साज़िशों और बैरूनी नीयतों के दबाव के तहत पुरानी हुकूमतें कमज़ोर और नई हुकूमतें और ताक़तें ज़ुहूर में आती रहीं। फिर जब बीसवीं सदी का आग़ाज़ हुआ, तो पहली जंगे अज़ीम शुरू हुई। इस जंग में उस्मानी हुकूमत ने अँग्रेज़, फ़्रांसीसी और अतालवी ताक़तों के ख़िलाफ़ जर्मन क़ौम का साथ दिया। १६१८ ई० में तुर्क जर्मन महाज़ को शिकस्त हुई और फतह पाने वालों ने जहाँ जर्मनी के टुकड़े करके शिकस्त के साथ-साथ उसके इज्तिमाई वक़ार को ख़ाक में मिलाया, वहाँ तुर्कमानी नामूस भी ख़ून के साथ-साथ बह कर ख़ाक में शामिल हो गया और उस्मानी हुकूमत की कुशादा हुदूद भी फ़ातेह टोले के तसर्रुफ़ में आ गईं। अपनी नव आबादियाती ख़्वाहिशात को आगे बढ़ाने के वास्ते उस फ़ातेह टोले ने उस्मानी सलतनत के ख़ित्तों पर हुकूमत करने के दो करीक़े राइज किए। पहला तरीक़ा बराहे रास्त हुकूमत था और जहाँ बराहे रास्त हुकूमत मुम्किन न थी। वहाँ एक ख़ास मन्सूबे के तहत ऐसे क़बीलों, सियासी जमाअतों या अफ़राद को सहारा या ताक़त देना तय पाया था कि जिनकी वसातत ने महज़ दाइर-ए-असर ही को क़ायम न रखा जा सके, तो मिल्लते इस्लामिया में मज़ीद इंतिशार और कशीदगी भी फैलाई जा सके।

तुर्कों की जंगे अज़ीम में शिकस्त के बाद जज़ीरा नुमाए अरब में जिन ताक़तों ने इलाक़ाई अफ़रा तफ़री का फ़ाइदा उठा कर खुल्लम खुल्ला हाथ पाँव लगाने शुरू कर दिए थे, उनमें सूब-ए-नज्द के एक पेशावर बाग़ियों का सऊद नामी क़बीला भी शामिल था। जंगे अज़ीम के

दौरान ही यह लोग एक खुफ़िया मुआहदे के तहत अंग्रेज़ों से मिल चुके थे। इस मुआहदे की रूह से अंग्रेज़ यह चाहता था कि जंगे अज़ीम के दौरान यह क़बीला अपनी बग़ावतों, हमलों और छापों वग़ैरह से तुर्कों को इतना तंग करे और बरसरे पैकार रखे कि वह मश्रिक़े वुस्ता में अंग्रेज़ हमला आवरों की तरफ़ पूरी तरह ध्यान न दे सकें। इसके एवज़ अंग्रेज़ ने अहद किया था कि अगर वह जंग जीत गया तो वह पहले नज्द और फिर जज़ीरा नुमाए अरब पर उस नज्दी क़बीले का तसल्लुत क़ायम करने में उनकी मदद करेगा। मगर यह अंग्रेज़ का अह्द था जो कि कम अज़ कम दो तरफ़ा तो ज़रूर होता है। सो यही अह्द उन्होंने हिजाज़ के हुसैनी क़बीले से भी किया हुआ था। बस जो चीज़ दोनों नामों में मुश्तरक थी, वह थी तुर्कों की शिकस्त और जज़ीरा नुमाए अरब से इन्ख़ला।

बह्रे कैफ़ तुर्कों की हार के बाद उन फातेह ताक़तों (और बाद में अमरीका) के ईमा और इम्दाद पर सऊदियों ने अपने इलाक़ाई हरीफ़ों को आख़िरकार शिकस्त देकर १६२१ ई० में सूबा नज्द पर अपनी अमलदारी और बादशाहत का एलान कर दिया। आलमी जंग के इख़्तिताम पर ही तुर्कों ने हिजाज का निज़ामे हिजाज़ के सरबराह क़बीले के सरदार के सुपुर्द करके अपनी फौजें हिजाज़ से वापस बुला ली थीं। उनका कहना यह था कि जंग में शिकस्त के बाद वह हिजाज़ में अपनी हुकूमत सिर्फ़ फौजी ताक़त के ज़रिए क़ायम रख सकते हैं। इसका मतलब यह होगा कि किसी हमले की सूरत में ख़ाक हिजाज़ पर लहू बहाना लाज़िम हो जाएगा और खुदा नख़्वास्ता मक्के और मदीने में गोली चलानी लाज़मी हो जाएगी। यह कैफ़ियत तर्के लेहन और ख़स्लत के बिल्कुल बरअक्स थी। सो कुछ अरसा सोच बिचार के बाद हिजाज़ के तर्क गवर्नर का हुक्म हुआ था और तुर्कों ने ख़ाना काबा के गिर्द आख़िरी तवाफ़ करके मस्जिदे नबवी की देहलीज़ को आख़िरी बार चूमा था और ख़ाके हिजाज़ से हमेशा के वास्ते चले गये थे।

अब अह्ले नज्द और अह्ले हिजाज़ दोनों जज़ीरा नुमाए अरब की बादशाहत के ख़्वाहां थे और दोनों को अंग्रेज़ की हिमायत हासिल थी।

इस सियासी ख़ला को सऊदियों ने पुर किया और १६२४ ई० में मक्के पर और १६२५ ई० में मदीने और जद्दे पर क़ब्ज़ा जमाने के बाद

उस नज्दी क़बीले के सरदार ने १६२६ ई० में नज्द व हिजाज़ की बादशाहत का ऐलान कर दिया। यहाँ से हिजाज़ पर सऊदियों के दौर का आग़ाज़ होता है। यह दौर अभी तक जारी है। आख़िर यह सऊदी कौन हैं?

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि जज़ीरा नुमाए अरब के एक मश्रिक़ी सूबे नज्द से उनका तअल्लुक़ है। आपको याद होगा कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वक़्तों में जिस क़बीले ने सबसे आख़िर में इस्लाम कुबूल किया था और फिर आपके वेसाल के फौरन बाद ही जो क़बीला इस्लाम से मुन्हरिफ़ हो गया था, वह यही सऊदियों का क़बीला था। आपको यह भी याद होगा कि फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने उन ही के सरकूबी के वास्ते हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हु को एक लश्कर के साथ नज्द रवाना किया ाि और एक जंग में मुकम्मल शिकस्त पाने के बाद उन में से कुछ फिर से इस्लाम ले आए थे। इस मौक़ा पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हु को एक लश्कर के साथ नज्द रवाना किया था और एक जंग में मुकम्मल शिकस्त खाने के बाद उन में से कुछ फिर से इस्लाम ले आए थे। इस मौक़ा पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हु ने इस इलाक़े में एक मस्जिद भी तामीर की थी। इस मस्जिद के आसार एक खण्डर की सूरत में अभी तक क़ायम हैं।

नस्बियात के जदीद माहिरीन का कहना है कि मुसैलमा बिन कज़्ज़ाब का तअल्लुक़ भी इसी क़बीले या उस क़बीले की एक मरकज़ी शाख़ से है। हो सकता है कि यह हैबतनाक बात ग़लत हो, मगर हिजाज़ में इक़्तिदार संभालते ही जो बदसुलूकी उन्होंने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात से वाबस्ता तारीख़ी, जमालियाती, रूहानी, जिस्मानी और मुआशरती निशानात के साथ की है। इससे तो यही अन्दाज़ा होता है कि इल्मे नस्बियात के माहिरीन का यह कहना ग़लत नहीं है।

फिर अट्ठारहवीं सदी के अवाइल में एक शख़्स मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब ने इन्हीं में सर उठाया। उनकी बिला सोचे समझे काटने वाली तल्वार को उसकी तक़रीर की सहारा मिली और उसकी तक़रीर

को कि जिस पर बीमार दिमाग़ की बड़ समझ कर कोई कान न धरता था, उनकी तल्वार और शातिराना ख़स्लत की सहारा से ताक़त हासिल हुई, हत्ता कि अठ्ठारहवीं सदी के वस्त तक मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब और उसके सऊदी सरपरस्त की इतनी हिम्मत हुई कि इन दोनों ने मिल कर आलमे इस्लाम के हर बादशाह और फरमां रवा को खुतूत भेजे। इन खुतूत में और बातों के बाद टेप के बन्द के तौर पर मुन्दरजा ज़ैल इबादत दर्ज थी :

"अल्लाह एक है और मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं, मगर मुहम्मद की तारीफ़ करना या उनकी ताज़ीम करना कोई ज़रूरी नहीं है।"

आज तक सऊदी लहू की ख़स्लत यही है।

सो हिजाज़ पर क़ब्ज़ा जमाने के फौरन बाद ही जोसब से पहला काम सऊदियों ने किया था, वह हिजाज़ के तूल व अर्ज़ से रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम को महव करने का था। मस्जिदे नबवी, खाना काबा की मस्जिद और उसके अलावा जहाँ-जहाँ और जिस-जिस इमारत और मस्जिद पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम निहायत ही फन और मुहब्बत से जाइज़ कुन्दह था, उसको निहायत ही भोंढे पन से मिटा दिया गया। ईमान, मुहब्बत, फन्ने ख़त्ताती और दीगर फुनूने लतीफ़ा के इन नादिर नमूनों पर कहीं तारकोल फेर दिया गया और कहीं उन पर पलस्तर थोप दिया गया। अक्सर औक़ात लोहे की छीनी और हथौड़े का इस्तेमाल भी किया गया। इस बेमिसाल गुस्ताख़ी और वन्दालियत के निशानात आज तक हिजाज़ के तूल व अर्ज़ में और ख़ास तौर पर ख़ान-ए-काबा की पुरानी मस्जिद और मस्जिदे नबवी के दरो दीवार पर देखे जा सकते हैं।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मिटाने के बाद सऊदियों ने एक बाक़ायदा निज़ाम के तहत हयाते तैयबा से मुन्सलक तक़रीबन हर तारीख़ी, जमालियाती, रूहानी, जिस्मानी और मुआशरती निशान को अपनी ज़ेहनी किल्लत और क़लील तर अक़ीदे का हदफ़ बनाया।

जन्नतुल-ऊला और जन्नतुल-बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान कि जिनकी भुर भुरी ख़ाक में हज़रत अब्दुल-मुत्तलिब, अबू तालिब, वरक़ा बिन नौफ़ल,

हज़रत ख़दीजतुल-कुबरा, हज़रत अब्बास रज़ि० हज़रत हलीमा सअ़दिया रज़ि०, उम्महातुल-मुमिनीन रज़ि०, आपकी साहबज़ादियाँ, आपके साहबज़ादगान और ख़ानवाद-ए-रसूल के दीगर अफ़राद, अस्हाबे किराम और उनके पूरे-पूरे ख़ानदान, मशाइख़ व सूफ़ियाए किराम, नामवराने इस्लाम और दो जहानों की चहार सिम्तों से मुहब्बत और ईमान की ख़ातिर आए हुए अन गिनत गुम्नाम मुसलमान सुकून और शाइस्तगी से सोते थे, लोहे के मशीनी हल चला कर खोद डाले गये और फिर पटेला फिरवा कर बराबर करवा दिए गये बाद में जन्नतुल-बक़ीअ़ के सामने सड़क के पार क़ाइम शुहदाए किराम के मज़ार सड़क को चौड़ा करवाने की नज़र हुए और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्दुल-मुत्तलिब के मज़ार और ताबूत को एक बाज़ार की तौसीअ़ के दौरान रातों रात ग़ायब करवा दिया गया। न अबू तालिब का मुहल्ला रहा, न वरक़ा बिन नौफ़ल की देहलीज़, न उम्मे हानी का आंगन रहा, और न ही बनू अरक़म की बैठक की कोई चीज़ उस टीले पर कि जहाँ अबू तालिब का मुहल्ला था, एक बद सूरती की हद तक जदीद, मुतअद्दद मंज़िलों की इमारत खड़ी है। वरक़ा बिन नौफ़ल का मकान, एक कपड़े के बाज़ार की लपेट में आ चुका है। दारे अरक़म की जगह कराए की मोटर गाड़ियों का अड्डा है और रहा उम्मे हानी का घर कि जिसके आंगन में दो वक़्त मिल कर एक हुए थे, तो वह मस्जिदे हरम की "तौसीअ़" के दौरान मिट कर बेनिशान हो चुका है।

जब हज़रत अब्दुल-मुत्तलिब की क़बर ही न रही, तो उस तक जाता वह रास्ता भी न रहा कि जिस पर नौ बरस का एक बच्चा आख़िरी बार खुल कर रोया था और न ही वह पगडंडी रही कि जिस पर एक ज़ईफ़ इंसान अपनी चादर में एक नौज़ाइदा बच्चे को लपेट कर ले चला था। हाँ! इस बेवज़ा इमारत के साए में कि जो अबू तालिब के मुहल्ले को खोंद कर बनाई गई है। एक घर और उसका वह शुमाली कमरा कि जिस में चहार आईनों की ओट में कभी चहार सिम्तें मिली थीं, अभी तक बमुश्किल मौजूद है। मगर उस कमरे में हरसे से सफ़ेदी नहीं हुई है और न ही तीसरे चाँद के बारहवें दिन मासूम बच्चे तिलावत करने उस घर में दाख़िल होते हैं। उस कमरे के शुमाल की जानिब एक रौशन दान ज़रूर मौजूद है, मगर उस से अब शुमाल का सितारा नहीं देख सकते

कि मुतअद्दिद मंज़िलों की वह बद वज़ा इमारत कि जो शायद कहीं और न बन सकती थी, रास्ते में हाइल है और रहे परिन्दे तो उनके आज़ाद करने का रिवाज तो उस शहर में कभी का ख़त्म हो चुका है।

और हाँ अगर आप इस घर में कि जिस में रहमतुल-लिल-आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जुहूर हुआ था, दो नफ़्ल शुक्राने के अदा करना चाहें तो एक हन्टर बरदार आपको रोक देगा। इस वास्ते कि इसके और उसके आक़ाओं के नज़्दीक इस अज़ीम तरीन रहमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करना "शिर्क" है।

यहाँ हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हु के घर उस कमरे के बारे में भी सुन लीजिए कि जहाँ एतमाद का एक बुनियादी लम्हा गुज़रा था। वह कमरा और घर भी निस्फ़ सदी से हाफ़िज़े कुरआन रंग साज़ों का इंतिज़ार करते-करते अब एक सर्राफ़ा बाज़ार से घिर चुके हैं।

हिजरत के रास्ते का निशान तक मिट चुका है। नई हुकूमत ने मक्के से मदीने तक जाने का नया रास्ता अख़्तियार किया है। यह रास्ता मक्के से मक़ामे बद्र तक समुन्द्र के साथ-साथ जाता है और वही है कि जिस से अबू सुफ़ियान, लश्करे इस्लाम की रवानगी की ख़बर सुन कर अपने क़ाफ़िले को बचा कर मक्के की जानिब फ़रार हो गया था।

मदीने पहुंचते ही इंसान मस्जिद क़ुबा का रुख़ करता है कि जिसके सामने वाले अहाते में वह निहायत क़दीम कुवाँ था कि जिसके पानी ने आपका रुख़े मुबारक देखा था, मगर चन्द बरस हुए उस कुएँ को भी पत्थर की बड़ी-बड़ी सिलें रख कर बन्द किया जा चुका है। इस्तिफ़सार पर निहायत ही खुश्की के साथ यह इत्तिला दी जाती है कि मशीनी पम्प ईज़ाद हो चुके हैं, इस वास्ते अब इस कुएँ की कोई ज़रूरत न थी।

जब शिकस्त व रेख़्त का यह वहशतनाक अमल शुरू हुआ था, तो सरबराह क़बीले के सरदार ने तुर्कों की बनाई हुई गुंबदे ख़ज़रा वाली मस्जिदे नबवी को गुंबदे ख़ज़रा समेत मुन्हदिम करने का ऐलान किया था। फिर बहुत बड़ी-बड़ी और अपने वक़्तों की ताक़तवर तरीन मशीनें मंगवाई गई थीं और फिर एक नुक्कड़ के सुतून से शुरूआत की गई थी। दो माह तक यह मशीनें अपनी पूरी ताक़त से उस एक सुतून से टकड़ा-टकड़ा कर उसको गिराने या तोड़ने की कोशिश करती रही थीं,

मगर यह सुतून ज़र्रा बराबर भी अपनी जगह से न हिला था। आख़िर उसकी जड़ों की तो बावुज़ू हाफ़िज़े क़ुरआन हुनर मन्दों के ईमान, इश्क़ और नीयत के सीसे ने थामा हुआ था, यह कैसे अपनी जगह से हिलता। जब ताक़तवर तरीन मशीनों की दो माह तक मुसलसल कोशिश के बावजूद एक सुतून भी अपनी जगह से एक इन्च न हिल सका था, तो मस्जिदे नबवी को मुन्हदिम करने की यह वहशतनाक कोशिश तीअन व करहन रोक दी गई थी। मस्जिदे नबवी के इस सुतून पर उस अमल के निशानात आज तक मौजूद हैं।

सो अब किस-किस दुख का बयान करूं। किसी नक़्शे अव्वल को अक़ीदे की क़िल्लत ने मिटाया, तो किसी को दिल की क़िल्लत ने, और जो नुक़ूश उन दोनों की गिरिफ़्त में न आ सके, उनको बेएतनाई और जमालियाती हिस् के फ़ुक़्दान ने।

अगर कभी बरसरे इक़्तिदार लोगों से उस शिकस्त व रेख़्त के अमल के बारे में पूछो, तो अव्वल तो उस बर्रे सग़ीर के मुहब्बत के मारे मुसलमानों को इस लाइक़ ही नहीं समझा जाता कि उनको कोई जवाब दिया जाए। अगर कोई मज्बूर करे, तो फिर दो अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए जाते हैं। यानी "तौसीअ्" और "शिर्क" किया तो "तौसीअ्" इस अन्दाज़ हौसले और क़रीने के साथ न की जा सकती थी कि जिस तरह तुर्कों ने की? और क्या "शिर्क" को मिटाने का तरीक़ा सिर्फ़ यही था कि हज़रत ख़दीजतुल-कुबरा की बावफ़ा हड्डियों के निशान को मिटा दिया जाए।

सलाहुद्दीन महमूद

फेहरिस्त मज़ामीन

उनवानात सफ़ा

तीसरा बाब

उनवानात सफ़ा

चौथा बाब

पांचवा बाब

छठा बाब

उनवानात	सफ़ा

सातवां बाब

उनवानात सफ़ा

आठवां बाब

नवाँ बाब

दसवां बाब

उनवानात	सफ़ा

ग्याहवां बाब

इंतिसाब

मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान हज़रत मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद क़ादरी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैहि०

के नाम

जिन्होंने पाकिस्तान में नज्दीयत के बढ़ते हुए सैलाब के आगे बन्द बांधा और इस्लामियाने पाकिस्तान के दिलों को इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनवार की आमाजगाह बना दिया।

मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी

तारीख़ की बुनियाद व अक़ाइद व अफ़्कार पर नहीं, क़वी शहादतों पर होती है और अक़ाइद की सेहत, किताब व सुन्नत के दलाइल और अस्लाफ़ के मामूलात से होती है। इस किताब में ज़्यादा तर तारीख़ से बहस की गई है और इसके सबूत में ठोस दलाइल पेश किए हैं जो मुसल्लेमात में से हैं यह वह शवाहिद हैं जो अख़्बारात व रसाइल से यक्जा किये गये हैं, सिर्फ़ एक बाब में अक़ाइद से बसह की है और उसकी बुनियाद किताब व सुन्नत और मुस्तनद मुफ़स्सेरीन हैं।

मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी

11 शाबानुल-मुअज़्ज़म 1398 हिज०

मअ़रूज़ात

1. सरज़मीने अरब के ज़र्रा-जर्रा से मुसलमानों को अपने ईमान की धड़कनें सुनाई देती हैं, जब कोई मुसलमान हज करके सर ज़मीने हिजाज़ से हो कर आता है तो वह उसके हाथों को चूमते हैं कि यह हाथ काबा की दीवारों और गुंबदे ख़ज़रा की हालियों को मस करके आए हैं, उनकी निगाहें हाजियों की आंखों के बोसे लेती हैं कि उन आंखों ने उस सरज़मीने को देखा है, जिन पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़रें पड़ी थीं, वह उस शख़्स से बग़लगीर होते हैं, मुआ़नक़ा करते हैं कि यह शख़्स मुम्किन है हिजाज़ की उस जगह फ़ैज़याब हुआ हो जहाँ हुज़ूरे अनवर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दम लगे हों। सहाबा किराम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वुज़ू के ग़साला (वुज़ू करते वक़्त गिरा हुआ पानी) पर परवाना वार झपट पड़ते थे और उस पानी को अपने चेहरे और बदन से मिलते जिस सहाबी के हिस्से में पानी न आता वह दूसरे सहाबी के हाथों की तरी को अपनी आंखों और बदन से लगा ताकि किसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कोई निस्बत क़ायम हो जाए। सलफ़े सालेहीन में ऐसे बुजुर्ग गुज़रे हैं जो मदीना मुनव्वरा के कुत्तों का भी एहतराम करते थे। उन्हीं लोगों का यह अक़ीदा था कि :

निस्बत खुद बसगत करदम व मुन्फ़इलम
ज़ांकि निस्बत बसक कूए तोशद बे अदबी

(मैंने आपके कुत्तों की तरफ़ अपनी निस्बत की और उस पर भी शर्मिंदा हूं क्योंकि आपकी गली के कुत्तों की तरफ़ अपनी निस्बत करना भी ब़ेअदबी है)

सर ज़मीने पाकिस्तान ऐसे ही उश्शाक़ रसूल मुसलमानों का गहवारा है जो मदीना तैयबा की गलियों के कुत्तों का भी एहतराम करते हैं और उन कुत्तों की तरफ़ अपनी निस्बत करने को भी बेअदबी समझते हैं।

2. आजकल सर ज़मीने नज्द व हिजाज़ पर वहाबियों का क़ब्ज़ा और उनकी हुकूमत है और यह बात किसी से ढकी छुपी नहीं है इसके बावजूद जब १६७६ ई० में इमामे हरम नबवी और इमामे हरम काबा आए तो पाकिस्तानी मुसलमान दीवानावार उनके इस्तिक़्बाल के लिए टूट पड़े, उनकी राह में पल्कें बिछाईं, जहां गये उनका अह्लन

व सहलन मरहबा के नारों और तहसीन व आफरीन की गूंज से इस्तिक़्बाल हुआ। यह अक़ीदत के मुज़ाहरे इसलिए न थे कि उनमें से एक शख़्स का नाम अब्दुल-अज़ीज़ बिन बाज़ और दूसरे का नाम अब्दुल्लाह बिन सबील था, हज़ारों लोग सिफ़ारती और तिजारती सतह पर अरब से पाकिस्तान आते रहते हैं, उन्हें कोई पूछता भी नहीं, इस वालहीयत की वजह सिर्फ़ और सिर्फ़ यह थी कि उन में से एक शख़्स की निस्बत मस्जिदे नबवी और दूसरे की मस्जिदे हराम से थी।

दोबारा इमामे हरम के पाकिस्तान आने का प्रोग्राम बना तो एक वहाबियत नवाज़ अख़्बार ने लिखा कि जब इमामे हरम कराची में लाखों फ़रज़न्दाने तौहीद को नमाज़ पढ़ाएंगे, तो पता चल जाएगा कि सुवादे आज़म कौन है। मेरे ख़्याल में सुवादे आज़म की तादाद मालूम करने का यह पैमाना दुरुस्त नहीं है, बात तो जब थी कि अख़्बार मज़्कूर लिखता कि फ़लां तारीख़ को कराची में वह शख़्स नमाज़ पढ़ाएगा जो यह कहता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत तलब करना कुफ़्र है और मूजिबे क़त्ल है जो यह कहता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला से दुआ करना कुफ़्र है जो यह कहता है कि औलिया अल्लाह की क़बरों पर जाकर उनके वसीला से दुआ करना उनकी क़बर पर फूल चढ़ाना हराम और शिर्क से कम नहीं जो यह कहता है कि पाकिस्तान में ग़ैर मुक़ल्लिदों के सिवा सब मुश्रिक हैं। फिर हम देखते कि उस शख़्स के पीछे वहाबियों के सिवा कितने लोग नमाज़ पढ़ने जाते और उनकी कितनी तादाद होती।

हालांकि यह भी एक हक़ीक़त है कि रोज़नामा नवाए वक़्त ११ मई १९५५ ई० के मुताबिक़ उस वक़्त के वज़ीरे आज़म अमीर फ़ैसल ने गाँधी की समाधी पर फूल चढ़ाए और नज्द की वहाबी शरीअत की पेशानी पर कोई शिकन नहीं आई, इसी तरह रोज़नामा नवाए वक़्त २ फरवरी १९५७ ई० की ख़बर के मुताबिक़ उस वक़्त के वज़ीरे दिफ़ा शहज़ादा फ़हद ने जार्ज वाशिंगटन की क़बर पर फूल चढ़ाए और बादशाहों और शहज़ादों के इस एलानिया शिर्क पर नज्द के उलमा महरे बलब रहे, कहीं से उसके ख़िलाफ़ सदाए बाज़गश्त नहीं सुनाई दी। हो सकता है उलमा-ए-नज्द के नज़्दीक शिर्क के पैमाने आम मुसलमानों और शाही ख़ानदानों के लिए मुख़्तलिफ़ हों। सितम्बर १९५६ ई० में पंडित नेहरू जो एक बदतरीन मुश्रिक और

सख़्त दुश्मने इस्लाम था, उसको सऊदी अरब में दावत दी गई और उसका "मरहबा या रसूलुस्सलाम" के पुर जोश नारों से इस्तिक़बाल किया गया। अरब और हिन्दुस्तान के वहाबियों में इस नारे को सराहा गया। पाकिस्तान के उलमा अख़्बारात और रसाइल ने आज़ादी-ए-सहाफ़त और आज़ादीए ज़मीर का इज़्हार करते हुए सऊदी हुकूमत को सख़्त मतऊन किया, लेकिन पाकिस्तान के ग़ैर मुक़ल्लिद उलमा उस वक़्त भी महरे बल्ब रहे और दीन में मुदाहिनत से काम लेते रहे।

यह बातें अब पुरानी हो गईं हैं, लेकिन तारीख़ में महफ़ूज़ हो चुकी हैं और तारीख़ हमेशा ज़िन्दा रहती है।

ज़ेरे नज़र किताब १७०३ ई० से लेकर १६७५ ई० तक के नज्द व हिजाज़ के तारीख़ी अहवाल और तारीख़ पर फैली हुई है, इस किताब के लिखने का बाइस यह है कि आम लोग नहीं जानते कि तुर्कों की ख़िलाफ़ते उस्मानिया जिस ने तमाम ममालिके इस्लामिया को एक रिश्त-ए-वहदत में परवर रखा था, उसको किसी साज़िश से ख़त्म किया गया। मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब शैख़ नज्दी कौन शख़्स था, उसने मुसलमानों के सामने कौन सी नई दावत पेश की। उलमाए इस्लाम पर उस दावत का क्या रद्दे अमल हुआ। अरब में क़ौमियत की तहरीक पैदा करके जज़ीरह अरब को तुर्कों के ख़िलाफ़ बग़ावत बरपा करने में किस शख़्स ने पार्ट अदा किया। लार्नस ऑफ़ अरबीया कौन था। बरतानिया और दूसरी ताक़तें अरब से तुर्कों का इक़्तिदार ख़त्म करना क्यों चाहती थी। अमरीका का इसमें क्या मफ़ाद था। वहाबी तहरीक अरब में दोबारा उठी और कुचल दी गई। वहाबिया के दौरे अव्वल में गुंबदे ख़ज़रा की ज़रे निगार छत बरबाद कर दी गई। गुंबद से सोने का हिलाल और कुरह उतार लिया गया। खुद गुंबदे ख़ज़रा की ज़रे निगाह का क़स्द किया गया, मगर इस कोशिश में दो आदमी हिलाक हो गये। फिर उस इरादा को तर्क कर दिया गया। तीसरी बार अब्दुल-अज़ीज़ बिन अब्दुर्रहमान आल सऊद ने एक बार फिर नज्द व हिजाज़ पर यल्ग़ार की। ख़िलाफ़ते उस्मानिया इस बार हिजाज़ का दिफ़ा क्यों न कर सकी। वह क्या हालात थे, जिन्होंने तुर्कों को बेदस्त व पा कर दिया और वहाबियों को नज्द व हिजाज़ में पंजे गाड़ने का मौक़ा मिल गया और उस जंग में ताइफ़ के मुसलमानों पर क्या हालत गुज़री।

सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ आल सऊद के सर पर आराए सलतनत

होने के बाद मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी ने उसके सामने क्या तजावीज़ रखीं। सुल्तान ने सहाबा के मआसर व मुशाहिद के तहफ़्फ़ुज़ और मक़ाबिर की हिफ़ाज़त और मुन्हदिम शुदह क़ुबाजात की तामीर का वादा किया और फिर किस तरह उन वादों से मुन्हरिफ़ हुआ।

सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ ऑल सऊद के 28 साला दौरे हुकूमत में अरबों की क्या हालत थी, उसकी रिहलत के बाद शाह सऊद ने किस तरह हुकूमत की और उसको क्यों मअ्ज़ूल किया गया। शाह सऊद के ग्यारह साला अह्दे हुकूमत में हिजाज़ मुक़द्दस किस हालत तक पहुंच चुका था। उसके बाद शाह फ़ैसल ने अपने ग्यारह साला अह्दे हुकूमत में किस हिक्मत और सियासत से मुल्क को तरक़्क़ी दी और सऊदी अरब दुनिया का अमीर तरीन मुल्क शुमार होने लगा। इसके बावजूद फ़ैसल के अह्दे हुकूमत में मआसर व मुशाहिद की क्या कैफ़ियत थी। मौजूदा शाह के दौर में पाकिस्तान की माद्दी इम्दाद के बावजूद पाकिस्तानी मुसलमानों के दीनी जज़्बात को किस तरह मज्रूह किया गया। यह तमाम अख़्बार व अहवाल हम ने वहाबी और देवबन्दी मुसन्नेफ़ीन की किताबों और अख़्बार व रसाइल से जमा करके एक तारीख़ मुरत्तब कर ली है।

6. इस किताब में जितने वाक़ेआत दर्ज हैं वह सब वहाबी मक्तब-ए-फ़िक्र और सऊदी अरब से शाए शुदह किताबों से लिए गये हैं। यह किताबें उनका नहीं हैं। बाज़ारों में आम फ़रोख़्त होती हैं। रसाइल व अख़्बारात को उनके दफ़ातिर और लाइब्रेरियों से हासिल करके देखा जा सकता है। मैं आम मुसन्निफ़ों की तरह यह तो नहीं कहता कि इस किताब का अगर एक हवाला भी ग़लत सवाब हो गया तो मैं एक हज़ार रुपया इंआम दूँगा। मैं हज़ारों में खेलने वाला आदमी नहीं हूँ, अल्बत्ता में एक साफ़ सीधे और सच्चे मुसलमान की तरह यह ज़रूर कहूँगा कि अगर मेरा दिया हुआ कोई हवाला ग़लत साबित हुआ और उसका बदल मुहैया न हो सका, तो मैं आइन्दा एडीशन में उस हवाला को किताब से निकाल दूँगा, लेकिन इन्शाअल्लाह उसकी नौबत नहीं आएगी। मैंने हवालों को बहुत छान फटक कर अख़्बारात के दफ़ातिर में जा कर पुराने अख़्बारात के फ़ाइल देख कर मुख़्तलिफ़ लाइब्रेरियों में घन्टों वक़्त ख़र्च करके उस किताब के लिए मवाद हासिल किया है। किताब की ग़लती या एडीशन के मुख़्तलिफ़ होने की वजह से यह मुम्किन है कि सफ़ः का

नम्बर तब्दील हो जाए, लेकिन असल वाक़ेआ इन्शाअल्लाह किताब में मौजूद होगा।

7. इस किताब की तस्नीफ़ से किसी शख़्स या किसी मक्तबा फ़िक्र की दिल आज़ारी मक़्सूद नहीं है, बल्कि सिर्फ़ हक़ाइक़ का आईना दिखाया है और किसी शख़्स को आईना में अपने ख़द्दो ख़ाल नज़र आएं, तो उसको आईना पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। आईना तोड़ने से उसकी बिगड़ी हुई शक्ल संवर नहीं जाएगी। तारीख़ माज़ी के हालात व वाक़ेआत का आईना होती है। होना यह चाहिए कि अगर किसी शख़्स या इदारा को उस आईना में अपनी कोई ग़लती नज़र आए तो उसकी इस्लाह करे और माज़ी की ग़लतियों को मुस्तक़्बिल के लिए रिवायत न बना ले।

8. आम तौर पर यह मशहूर कर दिया गया है कि सुवादे आज़म अह्ले सुन्नत देवबन्दियों, वहाबियों की तक्फ़ीर करते हैं, इस किताब के मुताला से आपको मालूम होगा कि हक़ीक़त में मुसलमानों की तक्फ़ीर कौन करता है। मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब शैख़ नज्दी और उनके पैरू कारों की तस्रीह के मुताबिक़ जो मुसलमान उनके अक़ाइद से मुत्तफ़िक़ न हों। वह सब काफ़िर और मुश्रिक हैं। और इस फ़तवा की लपेट में अह्दे सहाबा से लेकर आज तक के तमाम मुसलमान आ जाते हैं जिसका खुलासा यह है कि शैख़ नज्दी और उनके मुत्तबईन के नज़्दीक तेरह सौ साल की सारी उम्मत काफिर है जो फौत हो गये वह कुफ़्र पर मरे और जो ज़िन्दा हैं वह वाजिबुल- क़त्ल हैं।

मैं अपने लिए और तमाम अहबाब के लिए खुसूसन और जुमला सुवादे आज़म अह्ले सुन्नत के लिए उमूमन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह बेकस पनाह में शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त करता हूँ या रसूलुल्लाह अपने उन गुलामों की इज़्ज़त की लाज रख लीजिए और रोज़े महशर उनकी शफ़ाअत फरमा कर उन्हें सर खुरू फरमाइए। शफ़ाअत का ताज आपके सर पर है। मक़ामे महमूद पर आप फ़ाइज़ हैं। हम्द का झण्डा आपके हाथों में कौसर के आप वाहिद साक़ी हैं। मीज़ान और सिरात पर आपकी शफ़ाअत का डंका है। तमाम मैदाने महशर में आपकी शफ़ाअत की गूंज है और हम आपकी शफ़ाअत के भिखारी हैं। हमारी शफ़ाअत कीजिए।

मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी
11 शाबानुल-मुअज़्ज़म 1398 हिज०

होने के बाद मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी ने उसके सामने क्या तजावीज़ रखीं। सुल्तान ने सहाबा के मआसर व मुशाहिद के तहफ़्फ़ुज़ और मक़ाबिर की हिफ़ाज़त और मुन्हदिम शुदह क़ुबाजात की तामीर का वादा किया और फिर किस तरह उन वादों से मुन्हरिफ़ हुआ।

सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ ऑल सऊद के 28 साला दौरे हुकूमत में अरबों की क्या हालत थी, उसकी रिहलत के बाद शाह सऊद ने किस तरह हुकूमत की और उसको क्यों मअ्ज़ूल किया गया। शाह सऊद के ग्यारह साला अह्दे हुकूमत में हिजाज़ मुक़द्दस किस हालत तक पहुंच चुका था। उसके बाद शाह फ़ैसल ने अपने ग्यारह साला अह्दे हुकूमत में किस हिक्मत और सियासत से मुल्क को तरक़्क़ी दी और सऊदी अरब दुनिया का अमीर तरीन मुल्क शुमार होने लगा। इसके बावजूद फ़ैसल के अह्दे हुकूमत में मआसर व मुशाहिद की क्या कैफ़ियत थी। मौजूदा शाह के दौर में पाकिस्तान की माद्दी इम्दाद के बावजूद पाकिस्तानी मुसलमानों के दीनी जज़्बात को किस तरह मज्रूह किया गया। यह तमाम अख़्बार व अहवाल हम ने वहाबी और देवबन्दी मुसन्नेफ़ीन की किताबों और अख़्बार व रसाइल से जमा करके एक तारीख़ मुरत्तब कर ली है।

6. इस किताब में जितने वाक़ेआत दर्ज हैं वह सब वहाबी मक्तब-ए-फ़िक्र और सऊदी अरब से शाए शुदह किताबों से लिए गये हैं। यह किताबें उनक़ा नहीं हैं। बाज़ारों में आम फ़रोख़्त होती हैं। रसाइल व अख़्बारात को उनके दफ़ातिर और लाइब्रेरियों से हासिल करके देखा जा सकता है। मैं आम मुसन्निफ़ों की तरह यह तो नहीं कहता कि इस किताब का अगर एक हवाला भी ग़लत सवाब हो गया तो मैं एक हज़ार रुपया इंआम दूँगा। मैं हज़ारों में खेलने वाला आदमी नहीं हूँ, अल्बत्ता में एक साफ़ सीधे और सच्चे मुसलमान की तरह यह ज़रूर कहूँगा कि अगर मेरा दिया हुआ कोई हवाला ग़लत साबित हुआ और उसका बदल मुहैया न हो सका, तो मैं आइन्दा एडीशन में उस हवाला को किताब से निकाल दूँगा, लेकिन इन्शाअल्लाह उसकी नौबत नहीं आएगी। मैंने हवालों को बहुत छान फटक कर अख़्बारात के दफ़ातिर में जा कर पुराने अख़्बारात के फ़ाइल देख कर मुख़्तलिफ़ लाइब्रेरियों में घन्टों वक़्त ख़र्च करके उस किताब के लिए मवाद हासिल किया है। किताब की ग़लती या एडीशन के मुख़्तलिफ़ होने की वजह से यह मुम्किन है कि सफ़ः का

नम्बर तब्दील हो जाए, लेकिन असल वाक़ेआ इन्शाअल्लाह किताब में मौजूद होगा।

7. इस किताब की तस्नीफ़ से किसी शख़्स या किसी मक्तबा फ़िक्र की दिल आज़ारी मक़्सूद नहीं है, बल्कि सिर्फ़ हक़ाइक़ का आईना दिखाया है और किसी शख़्स को आईना में अपने ख़द्दो ख़ाल नज़र आएं, तो उसको आईना पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। आईना तोड़ने से उसकी बिगड़ी हुई शक्ल संवर नहीं जाएगी। तारीख़ माज़ी के हालात व वाक़ेआत का आईना होती है। होना यह चाहिए कि अगर किसी शख़्स या इदारा को उस आईना में अपनी कोई ग़लती नज़र आए तो उसकी इस्लाह करे और माज़ी की ग़लतियों को मुस्तक़्बिल के लिए रिवायत न बना ले।

8. आम तौर पर यह मशहूर कर दिया गया है कि सुवादे आज़म अह्ले सुन्नत देवबन्दियों, वहाबियों की तक्फ़ीर करते हैं, इस किताब के मुताला से आपको मालूम होगा कि हक़ीक़त में मुसलमानों की तक्फ़ीर कौन करता है। मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब शैख़ नज्दी और उनके पैरू कारों की तस्रीह के मुताबिक़ जो मुसलमान उनके अक़ाइद से मुत्तफ़िक़ न हों। वह सब काफ़िर और मुश्रिक हैं। और इस फ़तवा की लपेट में अह्दे सहाबा से लेकर आज तक के तमाम मुसलमान आ जाते हैं जिसका खुलासा यह है कि शैख़ नज्दी और उनके मुत्तबईन के नज़्दीक तेरह सौ साल की सारी उम्मत काफिर है जो फौत हो गये वह कुफ़्र पर मरे और जो ज़िन्दा हैं वह वाजिबुल- क़त्ल हैं।

मैं अपने लिए और तमाम अहबाब के लिए खुसूसन और जुमला सुवादे आज़म अह्ले सुन्नत के लिए उमूमन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह बेकस पनाह में शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त करता हूँ या रसूलुल्लाह अपने उन गुलामों की इज़्ज़त की लाज रख लीजिए और रोज़े महशर उनकी शफ़ाअत फरमा कर उन्हें सर खुरू फरमाइए। शफ़ाअत का ताज आपके सर पर है। मक़ामे महमूद पर आप फ़ाइज़ हैं। हम्द का झण्डा आपके हाथों में कौसर के आप वाहिद साक़ी हैं। मीज़ान और सिरात पर आपकी शफ़ाअत का डंका है। तमाम मैदाने महशर में आपकी शफ़ाअत की गूंज है और हम आपकी शफ़ाअत के भिखारी हैं। हमारी शफ़ाअत कीजिए।

मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी
11 शाबानुल-मुअज़्ज़म 1398 हिज०

बाब (1)

शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल-करीम

शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी 1703/1115 ता 1792/हिज० 1206 बारहवीं सदी की इब्तिदा में पैदा हुए, उनकी शख़्सियत ने मिल्लते इस्लामिया में इफ़्तिराक़ और इन्तिशार का एक नया दरवाज़ा खोला, अह्ले इस्लाम में किताब व सुन्नत के मुताबिक़ जो मामूलात सदियों से राइज थे, उन्होंने उनको कुफ़्र और शिर्क क़रार दिया। मक़ाबिरे सहाबा और मुशाहिद व मआसिर की बेहुर्मती की, कुब्बाजात को मिस्मार कर दिया, रुसूमाते सहीहा को ग़लत मानी पहनाए और ईसाले सवाब की तमाम जाइज़ सूरतों की ग़लत ताबीर करके उन्हें "अलज़िज़बहु लेग़ैरिल्लाह" और "अन्नज़्रू लेग़ैरिल्लाह" का नाम दिया, तवस्सुल का इनकार किया और अंबिया अलैहिमुस्सलाम और सुलहा-ए-उम्मत से इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा को (يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ (نحل:٢٠) *यदऊना मिन दूनिल्लाहि* का जामा पहना कर इबादत लेग़ैरिल्लाह क़रार दिया। अंबिया अलैहिमुस्सलाम, मलाइका किराम और हुज़ूर ताजदारे मदनी मुहम्मद मुस्तफ़ा अलैहित्तहीया वस्सना से शफ़ाअत तलब करने वालों के क़त्ल और उनके अम्वाल लूटने को जाइज़ क़रार दिया।

शैख़ नज्दी ने जिस नये दीन की तरफ़ लोगों को दावत दी, वह हरफ़े आम में वहाबियत के नाम से मशहूर हुआ और उनके पैरूकार वहाबी कहलाए, चुनांचे खुद शैख़ नज्दी के मुत्तबईन अपने आपको बरमला वहाबी कहते और कहलाते हैं चुनांचे अल्लामा तनतनावी ने लिखा है : मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब ने जिस तहरीक की दावत दी थी, वह वहाबियत के नाम से मारूफ़ है। (शैख़ अली तनतनावी जोहरी मिस्री वफ़ात 1358 हि० मुहम्मद अब्दुल वहाब नजदी, पेज 13)

शैख़ नज्दी के वालिद : शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब

नज्दी के दादा सुलेमान बिन अली शर्फ़ हंबलीयुल-मस्लक और अपने वक़्त के मशहूर आलिमे दीन थे, उनके चचा इब्राहीम बिन सुलेमान भी मुम्ताज़ आलिमे दीन थे। इब्राहीम के बेटे अब्दुर्रहमान मशहूर फ़क़ीह और अदीब थे।

शैख़ नज्दी के वालिद की वफ़ात 1740 ई० / 1153 हिज० निहायत सालेहुल-अक़ीदा बुज़ुर्ग और मशहूर आलिमे दीन और फ़क़ीह थे, वह शैख़ नज्दी को तन्क़ीसे रिसालत, तौहीन मआसर सहाबा और तक्फीरुल-मुस्लेमीन जैसे गुम्राह कुन अक़ाइद पर हमेशा सरज़निश करते रहते थे। इसी तरह उनके असातिज़ा भी उसके तख़्रीबी अफ़्कार पर उसको हमेशा मुलामत करते रहते थे।

इस सिलसिला में एक ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी आलिम शैख़ नज्दी की सरगर्मियों के बारे में लिखते हैं :

जाहिलों के ग़लत अक़ीदों की इस्लाह माबूदाने बातिल क़ुबा व क़बर से हटा कर फिर माबूदाने हक़ीक़ी की दर्गाह में लाखड़ा करना उनका मक़्सूद था। फिर यह हर कस व नाकस की बात न थी, उसके लिए ईमान ख़ालिस और सच्ची अज़ीमत की ज़रूरत थी। इस राह में शैख़ को जिन सब्र आज़मा मुसीबतों से दो चार होना पड़ा और जिस ख़न्दा पेशानी के साथ उन्होंने उस राह की तक्लीफ़ों का इस्तिक़्बाल किया, उस से मालूम होता है कि वह उन औसाफ़ से पूरी तरह मुत्तसिफ़ थे।

तौहीद की दावत दी, ग़ैरुल्लाह के आगे सर ख़म करने, क़बरों वलियों से मदद मांगने और नेकोकार बन्दों को माबूदाने सानी बनाने से रोकने की कोशिश की, क़बरों की ज़्यारत में मस्नून तरीक़ा के ख़िलाफ़ जो बिदअतें राइज हो गई थीं, उनके मिटाने को अमली इक़्दाम उठाया था, बस फिर किया था मुख़ालिफ़त का सैलाब उमड आया। अइज़्ज़ह व अक़्रिबा दरपिए आज़ाद हो गये, ख़ुद बाप को भी यह अदा पसन्द न आई, शैख़ ने बाप के अदब और उस्ताद की इज़्ज़त का पूरा लिहाज़ किया, पर जो क़दम आगे बढ़ चुका था, वह पीछे न हटा।

इस इक़्तिबास से यह ज़ाहिर हो गया कि तौहीद के नाम पर तन्क़ीसे रिसालत और तौहीने सहाबा व औलिया की जो दावत लेकर शैख़ नज्दी उठे थे, उसकी सदियों पीछे इस्लाम में कोई नज़ीर न थी न जज़ीरा

अरब में तौहीद की इस नई तशरीह से कोई वाक़िफ़ था और न शैख़ नज्दी का अपना ख़ानदान और उनके असातिज़ा उस से वाक़िफ़ थे।

शैख़ अब्दुल-वहाब रहमहुल्लाह और उनके बेटे शैख़ नज्दी के दर्मियान अक़ाइद का जो मुनाक़शा था, उस पर रौशनी डालते हुए अल्लामा तन्तावी लिखते हैं :

शैख़ नज्दी अपने वालिद के हल्क़-ए-दर्स में हाज़िर हुआ करता था और (नाम निहाद) बिदआत पर एतराज़ किया करता था, यहाँ तक कि तमाम लोग उसके मुख़ालिफ़ हो गये और उसके वालिद भी उस पर नाराज़ हुए और उसकी सरज़निश की। शैख़ अब्दुल-वहाब सुलह जू शख़्स थे, झगड़े को नापसन्द फ़रमाते थे, उन्होंने उसको (शिआरे अह्ले सुन्नत) की मुख़ालिफ़त करने से मना किया। (लेकिन शैख़ नज्दी बाज़ न आया) और अपने वालिद से सख़्त तकरार और बहस की और (शिआरे अह्ले इस्लाम) की मुख़ालिफ़त पर क़ायम रहा। चन्द लोग उसके साथ हो गये और अक्सर उसकी मुख़ालिफ़त करने लगे, हत्ता कि शैख़ अब्दुल-वहाब के हल्क़-ए-दर्स के तलबा में दो गरोह क़ाइम हो गये। अक़ल्लियत शैख़ नज्दी के साथ थी और अक्सरीयत उसके वालिद गिरामी शैख़ अब्दुल-वहाब रहमहुल्लाह के साथ थी।

इस इक़्तिबास से वाज़ेह हो गया कि शैख़ नज्दी ने शिआरे अह्ले इस्लाम और तरीक़ा अह्ले सुन्नत की मुख़ालिफ़त में अपने वालिद का भी पास नहीं किया और उन से तल्ख़ कलामी से पेश आता रहा, ताहम वालिद की ज़िन्दगी में शैख़ नज्दी को खुल कर अपने अक़ाइद के पर चार का मौक़ा न मिल सका, लेकिन वालिद की वफ़ात होते ही शैख़ नज्दी ने पूरी क़ुव्वत के साथ अपनी दावत और तहरीक को आगे बढ़ाया, चुनाचे अल्लामा तनतावी लिखते हैं :

(शैख़ नज्दी अपने वालिद का क़द्रे लिहाज़ करता था, लेकिन इसके बावजूद उसका अक़ीदा था कि वालिद की इज़्ज़त व तौक़ीर इस बात की इजाज़त नहीं देती कि वह अपने अफ़्कार की दावत से दस्तबरदार हो जाए, लेकिन जब उसके वालिद रहमहुल्लाह 1153 हिज. में वासिले बहक़ हुए, तो शैख़ नज्दी की दावत में रही सही ज़ंजीरें भी टूट गईं। फिर उसने अलल-एलान अपनी दावत को फ़ैलाना शुरू किया और अपनी पूरी क़ुव्वत और ताक़त को उसमें ख़र्च कर दिया।)

मुहम्मद मन्ज़ूर नौमानी देवबन्दी उनके बारे में लिखते हैं :

उनके वालिद शैख़ अब्दुल-वहाब हंबली भी अगरचे अपने वक़्त के बड़े आलिम और फ़क़ीह थे, लेकिन वह अपने ख़ास सूफ़ियाना मिज़ाज और मसलक की वजह से अपने बेटे शैख़ मुहम्मद की बरपा की हुई तहरीक और जद्दो जहद से अमलन अलग रहे, बल्कि उन्होंने अपने को अलग और एक सू रखने के लिए अपने असल वतन उऐना की सुकूनत तर्क करके उस इलाक़े के एक दूसरे शहर "हरीमला" में सुकूनत अख़्तियार कर ली थी, क्योंकि "उऐना" शैख़ मुहम्मद की तहरीक का मरकज़ बन गया था। यह बात हर उस शख़्स के इल्म में है जो उस ख़ानदान की तारीख़ से कुछ वाक़फ़ीयत रखता है।

और उस्मान बिन बिश्र नज्दी लिखते हैं :

(शैख़ नज्दी हरीमला पहुँच गये और अपने वालिद से पढ़ना शुरू कर दिया और वहाँ के लोग अपने जिन मामूलात में मशग़ूल थे। शैख़ नज्दी ने उनको शिर्क और बिदअत क़रार दिया और इस बात में उनका अपने वालिद अब्दुल-वहाब से भी मुबाहसा हुआ और शहर के दूसरे अमाइदीन ने भी शैख़ नज्दी की मुख़ालिफ़त की। कई साल तक यूंही निज़ा होता रहा, हत्ता कि शैख़ नज्दी के वालिद अब्दुल-वहाब रहमहुल्लाह 1153 हिज० में फौत हो गये, वालिद की वफ़ात के बाद शैख़ नज्दी ने खुल कर अपनी तहरीक को फैलाया और बहुत से लोग शैख़ नज्दी के ताबे हो गये और उनकी दावत मशहूर हो गई।)

इस तफ़्सील से ज़ाहिर हो गया कि शैख़ नज्दी के वालिद अब्दुल-वहाब रहमहुल्लाह सहीहुल-अक़ीदा मुसलमान थे और उऐना में उसके जो उस्ताद थे, वह भी एक सालेह और दीनदार शख़्स थे, अल्बत्ता हिजाज़ में उसको इब्नुस्सैफ़ और शैख़ मुहम्मद हयात सिन्धी दो ग़ैर मुक़ल्लिद उस्ताद मिले जिन्होंने उसको इब्ने तैमिया की किताबें पढ़ा कर अस्लाफ़ की रिवायात से बाग़ी बना दिया।

शैख़ नज्दी के भाई : शैख़ नज्दी के भाई सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब मुतवफ़्फ़ी २०८ हिज० अपने वालिद के मसलक के हामिल थे और अस्लाफ़ के मामूलात को अक़ीदत से सीने से लगाए हुए थे, उनका तआरुफ़ कराते हुए तन्तावी ने लिखा है :

(शैख़ अब्दुल-वहाब के दो बेटे थे मुहम्मद और सुलेमान शैख़ सुलेमान बहुत बड़े आलिम और फ़क़ीह थे और "रैमला" में अपने वालिद के बाद क़ाज़ी मुक़र्रर हुए, उनके दो लड़के थे अब्दुल्लाह और अब्दुल-अज़ीज़ वह भी आलिम थे और इबादत और तक़्वा में अल्लाह तआला की आयात में से एक आयत थे।)

शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब तमाम ज़िन्दगी शैख़ नज्दी से अक़ाइद की जंग लड़ते रहे, उन्होंने शैख़ नज्दी के अक़ाइद के रद में एक इंतिहाई मुफ़ीद और मुदल्लल रिसाला "अस्सवाइकुल-इलाहिया" तस्नीफ़ किया जिसको अवाम व ख़्वास में इंतिहाई शोहरत और मक़्बूलियत हासिल हुई। मौजूदा दौर के नज्दी उलमा कहते हैं कि शैख़ सुलेमान ने अख़ीर उम्र में अपने अक़ीदा से रुजूअ़ करके शैख़ नज्दी से इत्तिफ़ाक़ कर लिया था, लेकिन यह दावा बिला दलील है। इस दावा के सुबूत पर न कोई तारीख़ी शहादत है और न शैख़ सुलेमान रहमहुल्लाह ने "अस्सवाइकुल-इलाहिया" के बाद कोई ऐसी किताब लिखी जिस ने "अस्सवाइकुल-इलाहिया" में मज़्कूरा दलाइल पर ख़ते नस्ख़ खींच दिया हो।

शैख़ नज्दी की विलादत और जाए पैदाईश :

शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी 1703 ई० में नज्द की जुनूबी जानिब वादी हनीफ़ा के एक मक़ाम उऐना में पैदा हुए। इसलिए हम ज़रूरी समझते हैं कि नज्द और उऐना की जुग़राफ़ियाई शरई और तारीख़ी हैसियत वाज़ेह कर दें :

नज्द सर ज़मीने हिजाज़ के मश्रिक़ में वाक़े है। मश्रिक़ में ख़लीजे फारस क़तार से लेकर रासुल-मुशअब तक और रासुल-मुसअब से लेकर रासुल-क़लीआ तक नज्द और कोयत के दर्मियान सर ज़मीन बे आईन थी, मग़्रिब में मम्लिकते हिजाज़ वाक़े है। जुनूब में सरहद बुहैरह क़ुल्जुम के क़ुन्फ़ता के मक़ाम से शुरू हो कर असीर के नीचे से होती हुई वादी दवासीर के जिसमें नजरान वाक़े है। जुनूब में से होती हुई रुबउल-ख़ाल के शुमाल किनारे के पास से गुज़रती क़तार के इलाक़ा तक चली जाती है।

इस तफ़्सील से ज़ाहिर हो गया कि सर ज़मीने अरब के मग़्रिब में हिजाज़ और मश्रिक़ में नज्द वाक़े हैं। आइए अब देखें कि हुज़ूरे अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द के बारे में क्या फरमाया है :

(हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा बयान फ़रमाते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना। दर आंहालेकि हुज़ूर मश्रिक़ के सामने खड़े थे। आपने (मश्रिक़ की जानिब) इशारा करके फरमाया : उस जगह से शैतान का सींग तुलूअ़ होगा।

(हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ मांगी और फरामया : ऐ अल्लाह हमारे शाम और यमन में बरकत दे बाज़ लोगों ने कहा हुज़ूर और हमारे नज्द में, हुज़ूर ने फिर दुआ फरमाई और फरमाया : ऐ अल्लाह हमारे शाम और यमन में बरकत अता फ़रमा। लोगों ने कहा और हमारे नज्द में, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं मेरा गुमान है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीसरी बार फरमाया कि उस जगह ज़लज़ले आएंगे और फित्ने नमूदार होंगे और वहीं से शैतान का सींग निकलेगा।)

नोट : बाज़ लोग इस हदीस की यह तौजीह करते हैं कि नज्द से मुराद सूबा नज्द नहीं बल्कि नज्द का लुग़वी माना यानी ऊंची ज़मीन मुराद है, लेकिन यह तौजीह सही नहीं है, क्योंकि उस से पहले हदीस में यमन और शाम का ज़िक्र है और उन लफ़्ज़ों से उनके लुग़वी मानी मुराद नहीं हैं बल्कि मुतआरफ़ मानी यानी शाम और यमन मुराद हैं, इसी क़रीना से नज्द से लुग़वी मानी मुराद नहीं हैं बल्कि मुतआरफ़ माना सूबा नज्द मुराद है, अलावा अज़ीं दूसरा क़रीना यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द के ज़िक्र पर मश्रिक़ की तरफ़ इशारा फरमाया और अरब के मश्रिक़ में सूबा नज्द वाक़े है न कि कोई ऊंची ज़मीन। मज़ीद बरआं यह कि अल्फ़ाज़ को उनके मआनी मुतआरिफ़ा पर महमूल किया जाता है और नज्द का मुतआरफ़ मानी सूबा नज्द है।

यह तो था नज्द का तआरुफ़, आइए अब नज्द की जुनूबी वादी हनीफ़ा के एक ख़ास मक़ाम उऐना की तारीख़ी हैसियत देखें, जहाँ शैख़ नज्दी पैदा हुआ :

अक़्रेबा ही के एक हिस्से का नाम जबीला है और यह वह जगह है

जहाँ सबसे पहले मुसैलमा कज़्ज़ाब ने नुबुव्वत का दावा किया था। इस से जुनूब मग़रिब की तरफ़ चन्द मील के फ़ासिला पर एक मक़ाम उऐना है जो मुसैलमा कज़्ज़ाब की जाए पैदाइश है।

ग़ौर फरमाइए कि नज्द वह नामस्ऊद मक़ाम है जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ से महरूम रहा, जिसके बारे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि वहाँ से फ़ित्ने निकलेंगे। और ज़लज़ले आएंगे जो जगह हुज़ूर की दुआ से महरूम रही हो, वहाँ क़्यामत तक कभी ख़ैर व बरकत की सुबह नमूदार नहीं हो सकती जिस मक़ाम के बारे में हुज़ूर ने ज़लज़लों और फित्नों की ख़बर दी हो, वहाँ अमन व सुकून का आफ़ताब कैसे तुलूअ़ हो सकता है जिस जगह को आपने क़र्न शैतान का मुत्तला क़रार दिया हो, वह रहमत व हिदायत का मंबअ़ कैसे बन सकती है।

तारीख़े इस्लामी में नज्द में सबसे पहला फ़ित्ना मुसैलमा कज़्ज़ाब ने बरपा किया जो नज्द की जुनूबी वादी हनीफ़ा के एक मक़ाम उऐना में पैदा हुआ। दूसरा बड़ा फ़ित्ना ग्यारह सौ साल बाद ठीक उसी जगह शैख़ नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब ने बरपा किया, जिसके वजूद ना महमूद ने सही और रासिखुल-अक़ीदा मुसलमानों के अक़ाइद को मुतज़लज़ल कर दिया। यह एक क़्यामत खेज़ ज़लज़ला था जिसके झटके 1115 हिज. से लेकर आज तक महसूस किए जा रहे हैं। वह एक ऐसा तबाह कुन ज़लज़ला था जिसने सहाबा किराम के तमाम मुशाहिद व मआसिर को ज़मीन बोस कर दिया। जन्नतुल-बक़ीअ़ के तमाम मज़ारात को क़ाआ सफ़सफ़ा के मिस्दाक़ चटियल मैदान बना दिया। वह ऐसा फित्ना था जिसने रेगज़ार अरब को ख़ून से नहला दिया, ताइफ़ से करबला तक और मक्का से मदीना तक कोई हरम न रहा, हत्ता कि रहमतुल-लिल-आलमीन के गुंबदे ख़ज़रा की ज़ेरे निगाह छत परबाद कर दी गई और क़बरे अनवर से चादर उतार ली गई। यह शख़्स क़रने शैतान था जिस से शैतान भी पनाह माँगता होगा। उस ने मुहब्बते रसूल के मतवालों के ख़िलाफ़ तल्वार मैदान से बाहर निकाली और उनकी जान व माल को अपने लिए हलाल क़रार दिया। उसके अज़नाब और इत्तिबा ने लोगों का ईमान ख़रीद के लिए सीम व ज़र की थैलियों का मुँह खोल दिया। इन तमाम हक़ाइक़ की तफ़्सीलात तारीखी तस्तावेज़

के साथ आइन्दा सफ़हात में आ रही हैं।

शैख़ नज्दी की तालीम व तर्बियत : शैख़ नज्दी की तालीम के बारे में सरदार हुसैनी ने लिखा है। शैख़ नज्दी 1703 ई० मुताबिक़ 1115 हिज० बमक़ाम उऐना जो कि जुनूबी नज्द की वादी हनीफ़ा में वाक़े है, पैदा हुए, शुरू से ही बेहद ज़हीन और सेहतमन्द थे। दस बरस की उम्र में कलामुल्लाह ख़त्म कर चुके थे। उनके वालिद का बयान है कि वह बारह बरस की उम्र में बुलूग़त को पहुंच गये थे। उसी साल उनकी शादी कर दी गई, बादे अज़ां उन्होंने हज किया और मदीना मुनव्वरा की ज़्यारत की, फिर अपने वतन मालूफ़ को वापस आ कर अपने वालिद माजिद से फ़िक़ह इमाम अहमद बिन हंबल की तालीम शुरू की तहसीले इल्म की ग़रज़ से मुतअद्दद बार हिजाज़ गये।

शैख़ नज्दी मदीना मुनव्वरा हुसूले इल्म के लिए गये, वहाँ उनकी मुलाक़ात शैख़ मुहम्मद हयात सिन्धी से हुई। शैख़ मुहम्मद हयात सिन्धी इंतिहाई मुतअस्सिब क़िस्म के ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम थे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मदद हासिल करने को शिर्क क़रार देते थे, उन्होंने शैख़ नज्दी को यही तालीम दी।

उस्मान बिन बिश्र ने उस दौरान का एक वाक़या यूं लिखा है :

(हिकायत है कि एक दिन शैख़ नज्दी हुजरा नब्वीया के सामने खड़ा हुआ था, वहाँ लोग हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपके वसीला से दुआएं मांग रहे थे। शैख़ नज्दी ने शैख़ मुहम्मद हयात से पूछा कि उन लोगों के बारे में आपकी क्या राय है। शैख़ मुहम्मद हयात ने कहा यह लोग तबाह होने वाले हैं और उनके यह आमाल बातिल हैं। शैख़ नज्दी उसके बाद नज्द चला गया और वहाँ से फिर बसरा जाने की तैयारी की और वहाँ से शाम का इरादा किया, जब वहाँ पहुंचा, तो बसरा की एक बस्ती में मुहम्मद मज्मूई से मुलाक़ात हुई, उनके पास शैख़ नज्दी एक मुद्दत तक ठहरा और (नाम निहाद) शिर्क और बिदआत का इंकार करता रहा और उसके उस्ताद उसकी तारीफ़ करते रहे।)

शैख़ नज्दी की हिजाज़ में जिन उलमा से मुलाक़ात हुई, वह ग़ैर मुक़ल्लिद थे और इब्ने तैमिया के अफ़्कार से मुतअस्सिर थे। उन्होंने इब्ने तैमिया के अफ़्कार में शैख़ नज्दी को इस तरह ढाला कि वह ग़लत

और शिद्दत में इब्ने तैमिया से भी कई हाथ आगे निकल गया, चुनांचे अली तन्तावी लिखते हैं :

(शैख़ नज्दी की मुलाक़ात मदीना मुनव्वरा में दो ऐसे शख़्सों से हुई जो उसकी ज़िन्दगी का रुख़ बदलने में बहुत मुअस्सिर साबित हुए। उन में से पहला शख़्स नज्द का एक ऐसा बाअसर आलिम था जिसको "मज्मा" में रियासत का दरजा हासिल था और वहाँ के एक बाअसर ख़ानदान से था उसका ओढ़ना बिछौना इब्ने तैमिया और उसके पैरूकारों की किताबें थीं, उस शख़्स का नाम शैख़ अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम बिन सैफ़ था।

तन्तावी उसके बारे में मज़ीद लिखते हैं :

(शैख़ नज्दी कहते हैं कि मैं एक इब्ने सैफ़ के पास बैठा हुआ था, उसने मुझ से कहा, क्या मैं तुमको वह हथियार दिखाऊं जो मैंने मज्मा वालों के लिए तैयार किए हैं, मैंने कहा हां। वह मुझे एक कमरा में ले गया जो इब्ने तैमिया की किताबों से भरा हुआ था। इब्ने सैफ़ ने कहा यही वह हथियार हैं जो मैंने अह्ले मज्मा के लिए जमा किए हैं और इब्ने सैफ़ ही वह शैख़्स है जिस ने शैख़ नज्दी को इब्ने तैमिया की तसानीफ़ की तरफ़ रहनुमाई की और उन से इस्तिफ़ादा में मदद दी।)

शैख़ नज्दी ने जिस दूसरे उस्ताद का गहरा असर कुबूल किया, उसके बारे में अली तन्तावी लिखते हैं :

(दूसरा शख़्स हिन्दुस्तान का एक ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम था जिस का नाम मुहम्मद हयात सिन्धी था। यह शख़्स बिदआत (यानी हुज़ूर और बुज़ुर्गाने दीन की ताज़ीम और शफ़ाअत का सख़्त रद्द करता था और उन (नाम निहाद) बिदआत करने वालों को काफिर कहता था और जो आयतें मुश्रेकीन के बारे में नाज़िल हुई हैं, उनको उन मुसलमानों पर चिस्पां करता था। उस ने शैख़ नज्दी को हुज़ूर के रौज़ा पर तालीम किए जाने वाले उमूर दिखलाए और यह आयत चिस्पां की "यह लोग तबाह होने वाले हैं और जिस काम में लगे हुए हैं, वह बरबाद होने वाला है।" मालूम होता है कि शैख़ नज्दी ने जो तमाम तमाम को काफिर क़रार दिया है, वह हिन्दुस्तान के इसी ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम की तालीम का असर था।

इब्ने सैफ़ नज्दी और मुहम्मद हयात सिन्धी की तालीमात ने शैख़

नज्दी के ज़हन में बाग़ियाना अफ़्कार भर दिए और वह इब्ने तैमिया से भी ज़्यादा शिद्दत के साथ अस्लाफ़ की रिवायात को मिटाने पर तुल गया। इब्ने तैमिया ने सिर्फ़ क़लम के ज़ोर से अपने अफ़्कार को फैलाया था और शैख़ नज्दी को क़लम के साथ तल्वार की क़ुव्वत भी हासिल हुई और वह बेधड़क अपने मुख़ालिफ़ीन की गर्दनें उड़ाता चला गया।

जज़ीरा अरब में बुतपरस्ती का दावा और उसकी हक़ीक़त :

जिन लोगों ने शैख़ नज्दी की सवानेह हयात पर किताबें लिखी हैं, वह सबके सब यादे देवबन्दी मक्तबा फ़िक्र से वाबस्ता हैं या ग़ैर मुक़ल्लेदीन और नज्दी हैं। उन हज़रात का अक़ीदा है कि औलिया-ए-किराम के वसीले से दुआ माँगना नाजाइज़ है। अंबिया व औलिया से इस्तिम्दाद या उनकी क़ुबूर के आसार से तबर्रुक हासिल करना इर्तिदाद के मुतरादिफ़ है, हालांकि मुसलमानों के सवादे आज़म में यह तमाम मामूलात अह्दे रिसालत से लेकर आज तक राइज हैं, चुनांचे शैख़ नज्दी ने जिस फ़ज़ा में अपनी बुलूग़त की आंख खोली, वहाँ यही मामूलात सदियों से राइज थे। शैख़ नज्दी ने इन तमाम उमूर को कुफ़्र और शिर्क क़रार दिया और उसकी इत्तिबा में शैख़ नज्दी के सवानेह निगारों ने भी इन तमाम को शिर्क और कुफ़्र क़रार दिया। क़बरों पर जा कर अस्हाबे क़ुबूर के वसाइल से मुरादें मांगना हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुंबदे ख़ज़रा पर जा कर आप से शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त करना यह तमाम बातें उन के नज़्दीक इबादत लेग़ैरुल्लाह थीं और इन्होंने इन उमूर को बुतपरस्ती क़रार दिया, बल्कि इस ख़िलाफ़े वाक़े इल्ज़ाम में इस हद तक ग़ुलू करते हुए कहा कि जज़ीर-ए-अरब के तमाम लोग मज़ारात के क़रीब दरख़्तों और पत्थरों की इबादत करते हैं, हालांकि यह बात हुज़ूर की बेशगोई के सरासर ख़िलाफ़ है। इमाम मुसिलम रिवायत करते हैं :

(हज़रत जाबिर बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि मुसलमान जज़ीरा अरब में उसकी इबादत करें, अल्बत्ता वह उनको आपस में लड़ाता रहेगा।)

और हाकिम, अबू याला और बैहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद

से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़रमान रिवायत किया:

(तहक़ीक़ शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि सरज़मीने अरब में बुत परस्ती की जाए) वह कभी इस बात को नहीं मान सकता कि मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के ज़ुहूर से पहले जज़ीर-ए-अरब बुत परस्ती का शिकार था। हमें उन लोगों पर सख़्त हैरत होती है कि जो अपने आपको अह्ले हदीस कहलाते नहीं थकते। उन्होंने इस हदीस के अलर्ग़म मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की सवानेह में लिखा है :

बारहवीं सदी हिजरी के आगाज़ में इस्लामी दुनिया और मक़ामाते मुक़द्दसदा का जो हाल था, उसका हल्का सा अन्दाज़ा ऊपर के बयानात से हुआ होगा, लेकिन जज़ीरतुल-अरब के क़ल्ब (नज्द) की हालत और भी ख़राब थी, कम से कम जो कहा सकता है, वह यह कि अह्ले नज्द अख़्लाक़ी इंहितात में हद से गुज़र चुके थे और उनकी सोसायटी में भलाई, बुराई का कोई मेयार नहीं क़ायम रहा था। मुश्रिकाना अक़ीदे सदियों के तसलसुल से इस तरह दिलों में घर कर चुके थे कि एक बड़ा तब्क़ा उन्हीं खुराफ़ात को दीने सही का नमूना जानता था और ग़लत या सही वह अपने आबा व अज्दाद की रविश से हटने के लिए तैयार नहीं थे।

जबीला (वादी हनीफ़ा) में ज़ैद बिन ख़त्ताब (हज़रत उमर के भाई) की क़बर की परस्तिश होती थी, दरइया में भी बाज़ सहाबा के नाम से मन्सूब क़बरें और क़ुब्बे अवाम की जाहिलाना अक़ीदत के मरकज़ बने हुए थे। वादी नुमैरह बिन ज़रार बिन अज़्दर रज़ि अल्लाहु अन्हु का क़ुब्बा बिदअतों की नुमाइशगाह बन रहा था।

एक और अह्ले हदीस आलिम ने शैख़ नज्दी के मिशन की हक़्क़ानियत को साबित करने के लिए हुज़ूरे अकरम की हदीस मुबारक की तक्ज़ीब करते हुए जो लिखा है, वह भी सुन लीजिए :

जूं-जूं वक़्त गुज़रता गया, यहाँ के रहने वालों में बिदअतों और दीगर ग़ैर इस्लामी आदात ने रिवाज पकड़ा, अब वह लात व मनात की परस्तिश तो न करते, लेकिन क़बरें उनकी अक़ीदत का मरकज़ बन गईं, तवह्हुम परस्ती आम हो गई, मुस्तक़्बिल में होने वाले वाक़ेआत की निशानदेही करने वाले काहिनों की ख़िदमात हासिल की जाने लगीं। फ़ासिद अक़ाइद और बिदआत दिलों में जड़ पकड़ने लगे, दौरे जाहिलीयत पलट आया, हजर और शजर परस्ती का दौर दौरा हुआ।

एक और नज्दी आलिम लिखते हैं :

नज्द का इलाक़ा बारहवीं सदी हिजरी में ज़लालत व गुम्राही का मरकज़ बना हुआ था अदवार की जाहिलीयत की तमाम इक़्तिसादी बीमारियों और अख़्लाक़ी बीमारियों की आमाजगाह बना हुआ था, मज़्हबी इक़्दार को पाँव तले रौंदा जा रहा था..........शिर्क, बुतपरस्ती, बिदआत व खुराफ़ात के मज्मूआ का नाम ही इस्लाम था और उनक अक़ीदों में इस क़द्र तब्दीली आ चुकी थी कि वह उनको ही असास क़रार देते हुए अल्लाह वहदहू ला शरीक की इबादत से इंहिराफ करते हुए मुश्रिकाना कामों में लगे हुए थे। नफ़ा व नुक़्सान की क़ुदरत का एतक़ाद रखते हुए क़बरों, दरख़्तों, चट्टानों से दुआएं की जा रही थीं और उन से मुरादें मांगी जा रही थीं, उन पर जानवरों को ज़बह किया जा रहा था। यूं मालूम होता था कि नज्द का इलाक़ा जाहिलीयते ऊला की आग़ोश में पहुंच चुका था और जाहिली रस्म व रिवाज दोबारा उनकी आदत बन चुके थे, चुनांचे उनकी ज़िन्दगी के तमाम शोअ़बों में उमूरे जाहिलीयत को ही मुअस्सिर दख़्ल था। नेक फाली और बदफाली के लिए जहाँ परिन्दों को उड़ाते वहाँ काहिनों, नुजूमियों, रम्मालों से मशवरे में मस्रूफ़ रहते।

एक देवबन्दी आलिम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस के ख़िलाफ़ सर ज़मीने अरब का यूं नक़्शा खींचते हैं :

शैख़ से पेश्तर नज्द के मुसलमानों की मज़्हबी कैफ़ियत मस्ख़ हो चुकी थी। तरह-तरह के ख़्यालात से यह लोग मुतअस्सिर हो चुके थे। बाज़ बदवी साबी रुसूम अख़्तियार कर चुके थे और बाज़ क़रामता की बिदआत, रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस्लाम से यह लोग कोसों दूर थे। मज़ारात और क़ुब्बों की परस्तिश करते थे। चट्टानों और दरख़्तों से मिन्नतें और मुरादें माँगते थे। अगर कभी-कभी नमाज़ पढ़ते, तो खुदा के बन्दों को भी खुदा के साथ शामिल कर लेते थे।

अब इस बात का फ़ैसला हम अह्ले इंसाफ़ व दयानत की बसीरत पर छोड़ते हैं कि आया हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िदाह नफ़्सी व उम्मी का यह फरमाना दुरुस्त है कि शैतान अर्ज़े अरब में बुत परस्ती से मायूस हो चुका है या शैख़ नज्दी की वकालत में वहाबी और देवबन्दी मुअर्रेख़ीन का बयान दुरुस्त है कि सरज़मीने अरब में

शजर व हजर, क़बरों और कुब्बों की आम परस्तिश की जाती थी।

शैख़ नज्दी मैदाने अमल में : शैख़ सरदार हसनी लिखते हैं : बसरा में न सिर्फ़ तहसीले इल्म करते रहे, बल्कि तौहीद की तबलीग़ व इशाअत भर करते रहे। शैख़ कहते हैं कि बाज़ मुश्रिक मेरे पास आते, मसाइल दरयाफ़्त करते और मेरे जवाब देने पर दम बखुद और मबहूत रह जाते। मैं कहता कि सिर्फ़ खुदा परस्तिश के लाइक़ है। औलिया अल्लाह और खुदा के नेक बन्दों का एहतराम वाजिब है, लेकिन हम नमाज़ सिर्फ़ खुदा की पढ़ते हैं और इसी से दुआ मांगते हैं। हम औलिया अल्लाह के नक़्शे क़दम पर चलते हैं और उनकी तक़्लीद करते हैं, लेकिन दुआएँ और मुरादें सिर्फ़ खुदा से मांगते हैं।

बसरा से जब उऐना वापस आए, तो उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से अपने ख़्यालात की तबलीग़ शुरू की और लोगों को बेहूदा रुसूमात और गुम्राह कुन तरीक़ों से बचने की हिदायत करने लगे। उस पर बहुत से लोग उनके जाँ निसार और बहुत से जानी दुशमन हो गये, इसी हालत में उन्होंने पहली किताब "किताबुत्तौहीद" तस्नीफ़ की।

ऊपर बयान किया जा चुका है कि नज्द के कुछ लोगों की तवह्हुम परस्ती इस क़द्र बढ़ गई थी कि अव्वलन उन्होंने दलीलों की इस क़द्र ताज़ीम की कि इबादत के दरजा तक पहुंच गये। बादे अज़ां उनके मज़ारों की परस्तिश शुरू की, फिर यहां तक अक़ीदा ने गुलू किया कि उनके मज़ारों के दरख़्त और दीगर चीज़ें मुतबर्रक और मुक़द्दस ठहरें, कुर्ब व जवार के लोग आते, मिन्नतें मानते और दुआएं मांगते।

सरदार हुसैनी ने यह जो कुछ लिखा है : सही मुस्लिम, हाकिम, अबू याला और बैहक़ी की हदीस सही के लिहाज़ से क़तअन बातिल और ख़िलाफ़े वाक़े है। असल वाक़या यह है कि अह्दे रिसालत से लेकर आज तक जज़ीर-ए-अरब में तमाम कलिमा गो इंसान अल्हम्दु लिल्लाह किसी क़िस्म की बुत परस्ती या क़बर परस्ती से महफ़ूज़ रहे हैं, अल्बत्ता हर दौर में सालेहीने उम्मत के तवस्सुल से दुआएँ माँगी जाती हैं और अंबियाए इज़ाम और औलियाए किराम के आस्तानों पर जा कर उन से इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा किया जाता रहा है। हुज़ूरे अरकम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत और दीगर मुरादों के लिए दुआओं की

दर्ख़्वास्त की जाती है उसको ग़ैर मुक़ल्लिदों ने बिल-उमूम और शैख़ नज्दी ने बिल-खुसूस शिर्क, बुत परस्ती और गौर परस्ती का नाम देकर अह्दे रिसालत से लेकर बारहवीं सदी तक के तमाम दुनिया के मुसलमानों को बिल-उमूम और जज़ीरा अरब के मुसलमानों को बिल-खुसूस काफिर क़रार दे दिया।

तक्फ़ीरे मुस्लेमीन और क़त्ले आम : शैख़ नज्दी अपने मसलक के मुवाफ़िक़ीन के सिवा तमाम मुसलमानों को काफिर क़रार देते थे और उनके क़त्ल और माल लूटने को जाइज़ क़रार देते थे। तन्तावी इस मौज़ू पर लिखते हैं :

(इब्ने सैफ़ नज्दी और मुहम्मद हयात सिन्धी (ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम) से तहसीले इल्म के बाद शैख़ नज्दी अपने वालिद के पास नज्द लौट आया और मज़ीद हुसूले इल्म के लिए शाम जाने की इजाज़त तलब की, वालिद ने इजाज़त दे दी। अभी बसरा तक पहुंचा था कि उसकी एक ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मुहम्मद मज्मूई से मुलाक़ात हुई जो बसरा के एक मदरसा में पढ़ाता था और (नाम निहाद) बिदआत के इंकार में सख़्त मुतशद्दिद था और किसी क़िस्म की नर्मी नहीं करता था। उधर शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी के दिल में आतिश फ़ुशां का लावा उबल रहा था और अन्क़रीब फटा चाहता था। शैख़ नज्दी ने मुहम्मद मज्मूई से मुलाक़ात की और वह लावा फूट पड़ा और शैख़ मज्मूई उसका हौसला बढ़ाता रहा यहाँ तक कि मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी ने तमाम मुसलमानों को काफिर क़रार दे दिया और खुद मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब कहता है कि मुश्रिकीन बसरा में से लोग मेरे पास आते और शुबहात पेश करते। मैं जवाब में कहता अल्लाह के सिवा किसी इबादत नहीं करनी चाहिए और यह सुन कर वह लाजवाब हो जाते। शैख़ नज्दी का यह कलाम इस बात में नस है कि वह मुसलमानों का काफिर क़रार देता था, क्योंकि उसने बसरों के लोगों को मुश्रिकीन से ताबीर किया है।)

और मुसलमानों की तक्फ़ीर और उनके क़त्ले आम के जवाज़ और उनके अम्वाल लूटने की इबाहत पर शैख़ नज्दी खुद लिखते हैं :

(और तुम को मालूम हो चुका है कि उन लोगों (मुसलमानों) का

तौहीद को मान लेना उन्हें इस्लाम में दाख़िल नहीं करता और उन लोगों का नबियों और फ़रिश्तों से शफ़ाअत तलब करना और उनकी ताज़ीम से अल्लाह तआला का कुर्ब चाहना ही वह सबब है जिस ने उनके क़त्ल और अम्वाल लूटने को जाइज़ कर दिया है)

और शैख़ अत्तार, मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की सीरत पर रौशनी डालते हुए लिखते हैं :

"शैखुल-इस्लाम साफ़-साफ़ ऐलान कर रहे थे कि जिस तरह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों के ख़िलाफ़ ऐलाने जिहाद किया जिन्होंने आपकी दावत को कुबूल न किया, इसी तरह मुझे भी उन लोगों के ख़िलाफ़ तल्वार उठाना है। जो अक़ाइद की बीमारियों में जकड़े हुए हैं जो लोग अपने अक़ाइद की इस्लाह करते हुए हमारी तहरीक के रुक्न बन जाएंगे, उनका ख़ून और माल महफ़ूज़ होगा, वगर न जिज़िया अदा करना पड़ेगा और अगर जिज़िया अदा करने से भी इंकार करेंगे, तो फिर तल्वार उठाने के अलावा और कोई सूरत नहीं।

एक और मक़ाम पर शैख़ अत्तार लिखते हैं :

शैखुल-इस्लाम ने देखा कि उनकी (मुसलमानों की) बीमारी (अंबिया की ताज़ीम और उन से शफ़ाअत का तलबगार होना) ख़तरनाक सूरत अख़्तियार कर चुकी है, तो वह मज्बूर हो कर उनके मुक़ाबला में तल्वार पकड़ कर मैदान में उतरते हैं। ख़्याल रहे कि नेकी के फ़रोग़ और बुराई के इस्तीसाल के लिए जंग करने का नाम शरीअते मुतह्हरा में जिहाद है और उसकी मशरूइयत से कौन इंकार कर सकता है।

अली तन्तावी भी इब्ने अब्दुल-वहाब के हामी हैं और शैख़ नज्दी के मुसलमानों के साथ क़िताल को हज़रत अबू बकर के मानेईने ज़कात से जिहाद पर क़्यास करते हैं, हालांकि यह क़्यास बातिल है, क्योंकि ज़कात फ़र्ज़े ऐन है और उसका इंकार कुफ़्र है, उसके बरख़िलाफ़ अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ताज़ीम और उन से शफ़ाअत तलब करना कुरआने करीम का मामूर और हदीस शरीफ़ का मतलूब और सहाबा किराम का मामूल है। उसको ग़ैरुल्लाह की इबादत क़रार देना जहालत के सिवा कुछ नहीं (उसकी मुकम्मल वज़ाहत बाब सानी में आ रही है) लेकिन शैख़ नज्दी ने अपने ज़माने से पहले की तमाम उम्मते मुस्लेमा को जो बयक जुंबिशे क़लम काफ़िर क़रार दे दिया, यह बात तन्तावी को भी

हज़रत न हो सकी, वह उस पर तब्सरा करते हुए लिखते हैं :

(और जब मैं यह सोचता हूं कि शैख़ नज्दी अपने मुवाफ़िक़ीन के सिवा तमाम मुसलमानों को काफ़िर करार देता है, हालांकि तमाम मुसलमानों ने न कब्रों की इबादत की है और न कोई कुफ़्रिया काम किए हैं। अगर कुछ किया है, तो आम लोगों ने खुसूसन जबकि मुसलमानों में उलमा और मुस्लेहीन भी मौजूद हैं, तो मैं शैख़ नज्दी की तक्फ़ीर की सेहत के लिए कोई उज़्र नहीं पाता।)

मस्ऊद आलम नदवी शैख़ नज्दी की तक्फ़ीर की मुदाफ़िअत करते हुए लिखते हैं :

इस उमूमी तक्फ़ीर की अह्ले नज्द पुर ज़ोर तरदीद करते हैं, लेकिन इत्मामे हुज्जत और तब्लीग़ के बाद तक्फ़ीर और क़िताल के क़ाइल नज़र आते हैं :

(शैख़ नज्दी ने सिर्फ़ उन बुत परस्तों की तक्फ़ीर की है जो औलिया अल्लाह और सालेहीन बुजुर्गों से) दुआ के ज़रिया) मुरादें मांगते थे। (इस बिना पर) शैख़ नज्दी ने उन्हें मुश्रिक क़रार दिया और अपनी हुज्जत पूरी करने के बाद उनसे क़िताल शुरू किया। इन तमाम मुसलमानों का ख़ून बहाया। उनके अम्वाल लिए (और उनके ज़ुअम फ़ासिद में) यह सब कुछ किताब व सुन्नत और इज्मा के मुताबिक़ था।)

शैख़ नज्दी ने तक्फ़ीरे मुस्लेमीन और उनके क़त्ल के जवाज़ की बुनियाद पर जो मज़ालिम ढाए, उनकी तफ़्सील आइन्दा सफ़हात में मुलाहिज़ा फरमाएं :

शैख़ नज्दी का मज़ाराते सहाबा को मिस्मार करना : शैख़ नज्दी, इब्ने तैमिया के पैरो कार और ग़ैर मुक़ल्लेदीन उलमा से जो सहाबा किराम और औलिया-ए-उम्मत के ख़िलाफ़ दिल में बद अक़ीदगी का आतिश फ़शाँ लेकर आए थे। वह नज्द में पहुंचते ही फट पड़ा। और उन्होंने अपनी तहरीक की इब्तिदा मज़ाराते सहाबा को मिस्मार करने से की।

चुनांचे सरदार हसनी लिखते हैं : शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब का पहला क़ाबिले ज़िक्र हम ख़्याल उस्मान बिन मुअम्मर वाली उऐना था शैख़ ने उस से हलफ़ लिया कि वह उन मज़ारों और मुतअल्लेक़ात

को तल्फ़ करने में इम्दाद देगा, इब्ने मुअम्मर ने क़ुबूल किया। दोनों हम मशवरा हो कर जबीला गये, यहाँ चन्द सहाबियाने रसूल के मज़ारात थे, दोनों ने मज़ारात मिस्मार कर दिए।

इसी मौज़ू पर इज़्हारे ख़्याल करते हुए शैख़ अत्तार ने लिखा है : शैखुल-इस्लाम दावत इलल्लाह के साथ अमलन क़बरों पर तामीर शुदह इमारतों और क़ुब्बों को गिरा देते थे, इसलिए कि यही दरअसल शिर्क और बिदअत की आबयारी के मरकज़ हैं और तमाम आलमे इस्लाम में क़बरों पर इमारतें और क़ुब्बे बुनने शुरू हो गये थे।

शैख़ नज्दी ने जो सबसे पहले क़ुब्बा गिराया था, वह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु के भाई ज़ैद बिन ख़त्ताब का क़ुब्बा था। उस्मान बिन बिश्र नज्दी मुतवफ़्फ़ी 1288 हिज० उस क़ुब्बा गिराने का ज़िक्र करते हैं :

(फिर शैख़ ने जबीला में हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु का गुंबद ढाने का इरादा किया और अपने मुआविन उस्मान से कहा आओ हम दोनों मिल कर उस क़ुब्बा को गिरा दें जिसने लोगों को गुम्राह कर दिया है। उस्मान ने कहा यह काम तुम खुद ही करो। शैख़ नज्दी ने कहा मैं अह्ले जबीला से डरता हूँ, वह हम पर हमला कर देंगे, मैं तुम्हारी मुआविनत के बग़ैर उस क़ुब्बा को गिराने की ताक़त नहीं रखता यह सुन कर उस्मान अपने छः सौ साथियों के साथ शैख़ नज्दी को लेकर चल पड़ा। जब अह्ले जबीला ने देखा, तो वह मज़ाहिम हुए, लेकिन जब उस्मान के आदमी लड़ाई के लिए तैयार हो गये तो उन्होंने उनका रास्ता छोड़ दिया। जब उस्मान क़ुब्बा के पास पहुंचा, तो उसने कहा हम लोग क़ुब्बा को हाथ नहीं लगाएंगे। शैख़ नज्दी ने कहा मुझे कुल्हाड़ी दो। फिर शैख़ नज्दी ने हाथ में कुल्हाड़ी लेकर क़ुब्बा तोड़ना शुरू किया, हत्ता कि उसको ज़मीन के हम्वार कर दिया।)

शैख़ नज्दी ने अगरचे उस्मान की मुआविनत से चन्द मज़ारात गिरा दिए थे, लेकिन जिस वसीअ् मन्सूबे को लेकर शैख़ नज्दी उठा था, उसकी तक्मील के लिए उन्हें एक मज़्बूत मरकज़ी क़ुव्वत की ज़रूरत थी।

शैख़ नज्दी का इब्ने सऊद से राब्ता : शैख़ नज्दी अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ताज़ीम और उन से तलबे शफ़ाअत के

ख़िलाफ़ जो दावत लेकर उठे थे, उसकी कामयाबी के लिए उन्हें तल्वा की कुव्वत की ज़रूरत थी, वरना उनके अफ़्कार व अक़ाइद भी इ तैमिया की तरह सिर्फ़ क़िरतास व कुतुब तक महदूद रहते। इ नसबुल-ऐन की तक्मील के लिए उनकी आंखों ने नज्द के सरदारों क जाइज़ा लेना शुरू किया। बिल-आख़िर उनकी निगाहों ने इस मुहिम लिए मुहम्मद इब्ने सऊद का इंतिख़ाब कर लिया और मुहम्मद बि सऊद की बीवी के ज़रिया उन्होंने इब्ने सऊद को अपना हम्नवा ब लिया। इस मौज़ू पर इज़्हारे ख़्याल करते हुए सरदार हसनी लिखते हैं

उऐना से शैख़ दरअया में पहुँचे और अपने एक शागिर्द इब् सुवैलिम के हाँ मुक़ीम हुए। इब्ने सुवैलिम ने अमीर मुहम्मद इब्ने सऊ वालिए दरइया की मदद हासिल करने का वादा किया, लेकिन अमी दरइया शुरू में रज़ामन्द न हुआ। उसके भाई जो इस अरसा में शैख़ के बेहद मद्दाह हो गये थे और बाद में उसके बेहतरीन मुवैइद साबित हुए अमीर को शैख़ की मुताबिअत के लिए तरग़ीब देते रहे। आख़िरश अमीर की अक़्लमन्द और होशियार बेगम की मदद के लिए मुसाई हुई नतीजा यह हुआ कि अमीर भी शैख़ का मोअ्तरिफ़ हो गया।

अमीर इब्ने सऊद और मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी के राब्ता को एक वहाबी आलिम ने क़द्रे तफ़्सील से लिखा है :

अमीर मुहम्मद बिन सऊद जो शैख़ की दावत से पहले भी हुस्ने अख़्लाक़ में मशहूर था, अपनी बीवी की गुफ़्तगू से मुतअस्सिर हुआ और उसके दिल में शैख़ की मुहब्बत घर कर गई। सब के इसरार से उसने मिलने में पहल की और अख़्लाक़ व अक़ीदत से पज़ीराई की। शैख़ ने अपनी दावत के अहम हिस्सों (कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह का मफ़्हूम अम्र बिल-मारूफ़ नहिये अनिल-मुंकर, जिहाद) (वाज़ेह रहे जिस जिहाद का ज़िक्र किया गया है इसका मतलब अरब के मुसलमानों के ख़िलाफ़ तेग़ आज़माई था) पर मुख़्तसर सी तक़रीर की और अह्ले नज्द की बुराइयों से आगाह किया और उनकी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह दिलाई अमीर मुतअस्सिर हुआ और बेसाख़्ता बोल उठा :

"ऐ शैख़ यह तो बिला शुबह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन है। मैं आपकी इमदाद व इताअत और मुख़ालेफ़ीने तौहीद से जिहाद के लिए तैयार हूँ, लेकिन दो शर्तें हैं :

1. अगर हमने आपकी मदद की और अल्लाह ने हमें फ़तह दी, तो आप हमारा साथ न छोड़ें।"

2. अह्ले दरइया से फ़सल के वक़्त में कुछ मुक़र्ररा महसूल लेता हूँ, आप मुझे उस से न रोकें। शैख़ ने जवाब दिया :

पहली शर्त बसरोचश्म मन्ज़ूर है, हाथ मिलाओ *अद्‌मु बिद्‌मे वल-हद्‌मु बिल-हद्‌मे* (मेरा ख़ून तुम्हारा ख़ून और मेरी तबाही तुम्हारी तबाही) रही दूसरी शर्त, सो इन्शाअल्लाह तुम्हें फ़ुतूहात और ग़नीमतों में इतना कुछ मिल जाए कि इस ख़राज का दिल में ख़्याल भी आएगा।

दावते शैख़ नज्दी की बज़ोरे शम्शीर इशाअत :

शैख़ नज्दी ने इब्ने सऊद की ताक़त से फ़ाइदा उठाते हुए अपने मुख़ालिफ़ मुसलमानों की गर्दनों पर किस तरह तेग़ आज़माई और मश्क़े सितम की। यह सरदार हसनी से सुनिए :

अमीर और शैख़ में मवद्दत और मुवाफ़िक़त के इक़रार हुए, चुनांचे तलवार इब्ने सऊद की थी और मज़्हब शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब का। आज इस वाक़या को दो सौ बरस गुज़र चुके हैं, लेकिन यह तअल्लुक़ और इश्तिराक क़ाइम है।

मुआहदा के वक़्त शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की उम्र 42 साल थी, उसी साल शैख़ ने तौहीद के अजराद निफ़ाज़ के लिए मुश्रेकीन के ख़िलाफ़ जंग कर दी। (याद रहे कि मुश्रेकीन से मुराद अरब के वह मुसलमान हैं जो अस्लाफ़ की रिवायात को सीनों से लगाए हुए थे। अंबिया और औलिया से तवस्सुल और इस्तिग़ासा को जाइज़ समझते थे और सहाबा किराम के क़ुब्बों को एहतराम की निगाह से देखते थे। (क़ादरी ग़ुफ़िरा लहू)

पहला मारका रियाज़ मौजूदा दारुस्सलतनत के मक़ाम पर अमीर दहम बिन दव्वास और इब्ने सऊद के दर्मियान पेश आया। इब्ने दवास सऊदी वहाबी इश्तिराक के सख़्त मुख़ालिफ़ था। वह मामूली ग़ुलामी की हालत से इमामत के रुतबा तक पहुंचा था और अपनी कशमकश के शुरू में अमीर इब्ने सऊद से मदद हासिल करके रहीने मिन्नत हो चुका था। इस बात के भरोसा पर अमीर इब्ने सऊद ने इब्ने दव्वास को शैख़ की मुताबेअत के लिए दावत दी, लेकिन इब्ने दव्वास नज्द के किसी

शैख़ या अमीर की मुताबेअत नहीं करना चाहता था। (इब्ने दव्वास दरअसल सहीहुल-अक़ीदा मुसलमान था और अस्लाफ़ की रिवायात का हामिल था। यह सही है कि इब्ने सऊद ने उसको अमारत क़ाइम करने में मदद दी, लेकिन एक गुयूर मुसलमान से यह कभी तवक़्क़ो नहीं रखी जा सकती कि वह अपने दीन और मसलक को जाह व मन्सब पर कुरबान कर देगा। (क़ादरी गुफ़िरा लहू)

इब्ने दव्वास में बड़ी ख़ूबी उसकी तबीअत का इस्तेहकाम व इस्तिक़्लाल था। पूरे तीस बरस इब्ने सऊद से बरसरे पैकार रहा, कभी फतह पाता था कभी शिकस्त, लेकिन कभी हिम्मत न हारा। फिर भी रफ़्ता-रफ़्ता अमीर सऊद ने रियाज़ के अलावा उसकी मम्लिकत के दीगर इलाक़ाजात फतह कर लिए। शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब अपने मुताबेईन की जुरअत को बढ़ाते और उनके ईमान को ताज़ा करते रहे। इसी तरह पर ग़ैर फ़ैसला कुन जंगलों का सिलसिला जारी रहा, हत्ता कि अब्दुल-अज़ीज़ इब्ने अमीर मुहम्मद बिन सऊद ने 1773 ई० में रियाज़ को फतह कर लिया, मगर इब्ने दव्वास को गिरफ़्तार न कर सका, क्योंकि वह हज़ीमत उठा कर सहरा में भाग गया था। अन्दाज़ा किया गया है कि इस तीस साला जंग में 1700 मुवह्हेदीन मारे गये और 23 नाम निहाद मुश्रेकीन मारे गये गोया 4000 अरब नाहक़ ज़ाए हुए।

(मक़ामे ग़ौर है कि मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के वकील ने भी इब्ने दव्वास के हामियों को नाम निहाद मुश्रेकीन से ताबीर किया है, यानी फ़िल-वाक़े वह मुश्रिक न थे, मुसलमान थे, लेकिन इब्ने अब्दुल-वहाब की वहाबियत ने उनको मुश्रिक क़रार दे कर उनके माल व जान को मुबाह कर डाला, जबकि उन लोगों का सिर्फ़ इतना कुसूर था कि उन्होंने शैख़ नज्दी की मुताबेअत का इंकार कर दिया था। उसका साफ़ और सरीह मतलब यह है कि शैख़ नज्दी की नामुवाफ़िक़त पर इब्ने सऊद के नज़्दीक हर वह शख़्स वाजिबुल-क़त्ल था जो शैख़ नज्दी की मुवाफ़िक़त से इंकार कर दे। ग़ालिबन यही वह हक़ीक़त है जिसके एतराफ़ के तौर पर सरदार हसनी को भी मानना पड़ा, इस जंग में 4 हज़ार अरब नाहक़ ज़ाए हुए। (क़ादरी गुफ़रा लहू)

अमीरु-हिसा की इब्ने सऊद से जंग : मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी ने जिस नए दीन की तरह डाल कर तमाम जज़ीरा अरब को मुश्रिक क़रार दिया था और इब्ने सऊद के तआवुन से उन सहीहुल-अक़ीदा मुसलमानों का ख़ून बहाना शुरू कर दिया था, उस से तमाम जज़ाइरे अरब में ग़म व गुस्सा की लहर दौड़ गई, साबेक़ा पैरा ग्राफ़ में हम इब्ने दव्वास के साथ इब्ने सऊद की जंग का हाल बयान कर चुके हैं। इब्ने दव्वास के बाद अमीरुल-हिसा इब्ने सऊद पर हमला आवर हुए। चुनांचे सरदार हसनी लिखते हैं :

अल-हिसा का अमीर जो सुलेमान साबिक़ अमीर का जानशीन था, बड़े कर्रोफ़र से सऊदी ताक़त पर हमला आवर हुआ, वह अपने साथ शतरी तोपें लाया था जो कि दरइया के मुहासिरा में इस्तेमाल की गईं। उसके साथ एक क़िस्म की गाड़ी भी थी जिसमें तीस सिपाही बैठ कर बयक वक़्त शहर की फसील पर हमला आवर हो सकते थे। नज्द के बाज़ क़बाइल भी उसके साथ हो गये थे, लेकिन अल-हिसा के अमीर को बावजूद साज़ व सामान के शिकस्त हुई और वह मग़्मूम व मख़्ज़ून अपने इलाक़ा को वापस हुआ। फिर उस ने और ज़्यादा तोप ख़ाना देकर अपने बेटे सअ्दून को यमामा पर हमला करने के लिए भेजा, लेकिन वह भी शिकस्त खा कर नाकाम फिरा और तोप खाना मुख़ालिफ़ की नज़र करता गया। इस तरह उसने एक हमला बुरीदा पर भी किया जिस में फिर उसे शिकस्त हुई। लेकिन इब्ने सऊद की भी एक नुक़्सान उन लड़ाइयों से यह होता रहा कि वह क़बाइल जो बनोके शम्शीर मुवह्हिद किए गये थे, दुश्मन की आमद सुनकर इब्ने सऊद और शैख़ दोनों से बाग़ी हो जाते थे और हमला आवर से निपटते ही बाग़ियों की सरकूबी के लिए हुकूमत को मस्रूफ़ होना पड़ता था। आए दिन की बग़ावतों से सऊदी ताक़त ज़ाए हो रही थी।

ताक़त और पैसे के ज़ोर से वहाबियत की इशाअत : इस पैराग्राफ़ के मुताला से क़ारेईने किराम पर यह हक़ीक़त वाज़ेह हो गई कि नज्द में शैख़ नज्दी और इब्ने सऊद ने किस तरह ताक़त के बल बूते पर यह अफ़्कार लोगों पर मुसल्लत किए और

मुसलमानों को अपने अस्लाफ़ की रिवायात से बज़ोरे शम्शीर हटा कर नाम निहाद तौहीद में दाख़िल किया, उसकी नज़ीर बिल्कुल इस तरह है जैसे उन्दुलुस में ईसाइयों ने मुसलमानों की शहे रग पर तल्वार की नोक रख कर उनको बजब्र ईसाई बनाया। वहाँ क़ानूनन इस्लामी अक़ाइद को अपनाने को नाक़ाबिले मुआफ़ी जुर्म क़रार दिया। चुनांचे बतदरीज उन्दुलुस की आबादी ईसाइयत में ढलती गई और आज इस्पेन में एक मुसलमान भी नहीं पाया जाता और न वहाँ क़ानूनन इस्लाम की तबलीग़ के लिए कोई अमल किया जा सकता है, बिल्कुल इसी तरह शैख़ नज्दी और इब्ने मस्ऊद ने जज़ीरह अरब के मुसलमानों की शहे रग पर ख़ंजर रख कर उनको बज़ोर अपने अक़ाइद में ढाला और बाद में उनके आने वाले जांनशीन इस मुहिम में बेश अज़ बेश हिस्सा लेते रहे, चुनांचे आहिस्ता-आहिस्ता नज्द और उसके क़ुर्ब व जवार की तमाम आबादी और हरमे मक्का की अक्सरीयत वहाबी अक़ाइद में ढलती गई। तलवार के बाद अब दूसरा हथियार उनके पास सीम व ज़र की थैलियाँ हैं, जो तेल के सियाल चशमों की सूरत में उन लोगों को हासिल हुईं। उन्होंने वहाबी दावत की नश्र व इशाअत के लिए सीम व ज़र की थैलियों के मुँह खोल दिए और बेदरेग़ पैसा लुटाना शुरू किया, चुनांचे मौजूदा दौर के एक नज्दी आलिम लिखते हैं :

शैखुल-इस्लाम (यानी मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी) की तज्दीदी मुसाई की रौशनी में अब भी पूरे ज़ोर व शोर से काम हो रहा है और इशाअते इस्लाम में करोड़ों रुपया सर्फ़ किया जा रहा है।

हालत यह है कि जिस तरह मौजूदा स्पेन में ईसाई अक़ाइद के ख़िलाफ़ इस्लामी अक़ाइद की तबलीग़ क़ानूनन जुर्म है, इसी तरह मौजूदा अरब में वहाबी तहरीक के ख़िलाफ़ अह्ले सुन्नत के अक़ाइद व अफ़्कार की नश्र व इशाअत क़ानूनन जुर्म है। जद्दह के एयरपोर्ट पर किसी चीज़ की इतनी चेकिंग नहीं की जाती, जितनी ज़बरदस्त चेकिंग मज़हबी लेट्रेचर की की जाती है और जिन किताबों के बारे में ज़रा सा भी शक हो कि उन से वहाबियत को ठेस पहुंचेगी, उनको फ़ौरन कस्टम हुक्काम रोक लेते हैं।

चुनांचे एक ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी आलिम अपने 1960 ई० के सफ़रनामा हिजाज़ में लिखते हैं :

कस्टम पर मुझे कोई दिक़्क़त पेश न आई, अगरचे मेरे साथ कुछ किताबें थीं और उन में से बाज़ किताबें उन लोगों की इस्तेलाह के मुताबिक़ मज़्हबी थीं, लेकिन कस्टम आफ़िसर साहब ने उन किताबों पर शक व शुबह की निगाह नहीं डाली, क्योंकि बाज़ किताबों के देखने से उन्हें यह अन्दाज़ा हो गया कि मैं भी एक सलफ़ीयुल-अक़ीदा (यानी वहाबी) हों। इसलिए उन्होंने मेरी सख़्ती से तलाशी लेने को ज़रूरी न समझा। मुझे भी सबसे ज़्यादा डर किताबों ही का था क्योंकि किताबों की तलाशी के सिलसिला में गुज़िश्ता सफर 1956 ई० में जद्दह के हवाई अड्डह पर हमें जिस परेशानी का सामना हुआ था, वह मुझे ख़ूब याद थी। दुनिया के दूसरे मुल्कों में ग़ैर मज़्हबी किताबों की तो ख़ूब जांच पड़ताल होती है, लेकिन मज़्हबी किताबों पर कोई एतराज़ नहीं किया जाता। सऊदी अरब का मुआमला उसके बरअक्स है। यहाँ दूसरी किताबों का तो यूं समझिए कोई नोटिस ही नहीं लिया जाता, लेकिन मज़्हब और खुसूसन अक़ाइद से मुतअल्लिक़ किताबों को बड़े शक व शुबह की निगाह से देखते हैं और बाज़ औक़ात जब कस्टम वाले खुद उनके मुतअल्लिक़ कोई राय क़ायम नहीं कर सकते, तो उन्हें तहक़ीक़ के लिए उलमा के पास भेज देते हैं, यानी जब तक उलमा उन्हें नाक़ाबिले एतराज़ क़रार न दे दें, उन्हें मुल्क के अन्दर दाख़िल नहीं होने दिया जाता।

वहाबियत के तहफ़्फ़ुज़ और फ़रोग़ के लिए ज़ालिमाना हथकण्डे : सऊदी अरबीया में वहाबियत को किस तरह तहफ़्फ़ुज़ दिया जाता है, उसका अन्दाज़ा इस तारीख़ी हक़ीक़त से कीजिए। यही वहाबी आलिम लिखते हैं :

यह भी मालूम हुआ कि बड़े-बड़े दीनी मनासिब आले शैख़ (शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के ख़ानदान) के लिए मख़्सूस हैं और दूसरे लोग सिर्फ़ इसी सूरत में किसी दीनी मन्सब पर मुक़र्रर किए जाते हैं, जबकि आले शैख़ में कोई आदमी मौजूद न हो। हरमे मक्का के ख़तीब अगरचे शैख़ अब्दुल-मुहैमिन (मिस्री) हैं, लेकिन वह हरम के ख़तीबे अव्वल नहीं, बल्कि ख़तीबे अव्वल। आले शैख़ के एक फ़रज़न्द शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ बिन हसन हैं जो इन दिनों वज़ारते तालीम के सिक्रेटरी थे और अब वज़ीर हो गये हैं।

इन दोनों पैग्राफ़ों के मुताला से क़ारेईने किराम पर यह हक़ीक़त वाज़ेह हो गई होगी कि सऊदी अरबीया में ज़ालिमाना मन्सूबे के तहत नई नस्ल को वहाबी बनाया जा रहा है। जब वहाँ के बाशिन्दों को वहाबियत के सिवा और कोई लट्रेचर पढ़ने के लिए मुयस्सर नहीं होगा और हर मस्जिद के मिंबर पर वहाबी खुतबा वहाबियत का प्रचार करेंगे और नई नस्ल को पढ़ने और सुनने के लिए वहाबियत के सिवा और कुछ नहीं मिलेगा, तो ज़ाहिर है कि बतदरीज नई नस्ल वहाबियत में ढलती चली जाएगी। और यूं पूरा जज़ीर-ए-अरब वहाबियत का गहवारा बन जाएगा। स्पेन में ईसाइयों ने मुसलमानों को ईसाई बनाने के लिए जो कार्रवाई की थी, वह तारीख़ सऊदी अरबीया में सुन्नियों को वहाबी बनाने के लिए दोहराई जा रही है।

सितम बालाए सितम : क़ारेईने किराम पर यह हक़ीक़त वाज़ेह हो चुकी है कि सऊदी अरबीया में नज्दीयत और वहाबियत के ख़िलाफ़ सुन्नी लट्रेचर क़ानूनन नहीं जा सकता। इन्साफ़ का तक़ाज़ा यह था कि जिन ममालिक में सुन्नी मुसलमानों की अक्सरीयत है, सऊदी अरब वहाँ वहाबियत पर मुश्तमिल लट्रेचर न भेजती, लेकिन यह किस क़द्र ज़ुल्म की बात है कि पाकिस्तान जिसकी अक्सरीयत सुन्नी मुसलमानों पर मुश्तमिल है, वह तो अपना लट्रेचर सऊदी अरबीया नहीं भेज सकते, लेकिन सऊदी सिफ़ारत ख़ाने के ज़रिए पाकिस्तान में वहाबी लट्रेचर जिस की एक-एक जिल्द आठ-आठ सौ सफ़्हात पर मुश्तमिल है, मुफ़्त तक़्सीम किया जा रहा है। और कोई एहतिजाज करने वाला नहीं है कि ज़ालिमो! जब तुम अपने मुल्क में हमारा लेटर नहीं जाने देते, तो तुमको क्या हक़ पहुँचता है कि तुम अपने अक़ाइद व अफ़्कार को फ़ैलाने के लिए करोड़ों की तादाद में अपनी किताबें मुफ़्त तक़्सीम करवाते हो, हत्ता कि पाकिस्तानी अख़्बार मुरासिला की शक्ल में भी यह बात कहने की जुरअत नहीं रखते, क्योंकि हमारी हुकूमत सऊदिया हुकूमत की वज़ीफ़ा ख़्वार है। किसी ने सच कहा है।

है जुर्म ज़ईफ़ी की सज़ा मर्गे मुफ़ाजात

सऊद के हाथों मज़ारात का इंहिदाम : 1207 हि० में मुहम्मद किबन सऊद का बेटा सऊद अहसा पर हमला आवर हुआ और वहाँ ख़ूंरेज़ी और हिलाकत का बदतरीन मुज़ाहरा किया। उस्मान बिन बिश्र नज्दी लिखते हैं :

(जब अह्ले अहसा पर मज़ालिम की इंतिहा हो गई, तो उनके दिलों में सऊद की फौजों का ज़बरदस्त रुअब बैठ गया और वह बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा हो गये और सऊद ने अहसा के पानी के ज़ख़ीरा पर मक़ामे तुफ़ में क़ब्ज़ा कर लिया और वहाँ काफ़ी दिनों तक क़ब्ज़ा बरक़रार रखा, यहाँ तक कि अह्ले अहसा के सरदार मज्बूर हो कर सऊद के पास आए और (नाचार) उसने अह्ले अहसा की तरफ़ से बैअत की पेशकश की सऊद शहर से बाहर एक चशमा के पास जाकर बैठा और लोगों ने उसके हाथ पर बैअत की, फिर नज्दी अफ्वाज ने अहसा का रुख़ किया और वहाँ जिस क़द्र मज़ारात पर गुंबद बने हुए थे, उन सबको गिरा दिया और मुशाहिद के तमाम आसार को मिटा दिया।)

इसी साल सऊद ने हज़रत इमाम हसन, हज़रत तलहा और दीगर सहाबा के मज़ारात को भी मुन्हदिम कर दिया और इस सिलसिला में बेशुमार मुसलमानों का बेदरेग़ क़त्ले आम किया। उस्मान बिन बिश्र नज्दी लिखते हैं :

(फिर सऊद जामे ज़ुबैर पर हमला आवर हुआ और जामे मस्जिद के क़रीब जिस क़द्र मज़ारात के गुंबद थे और शहर के बाहर जिस क़द्र मज़ारात के गुंबद और आसार थे, वह सब मुन्हदिम करा दिए हत्ता कि इमाम हसन और हज़रत तलहा के मज़ारात के गुंबद भी गिरा दिए और उनकी क़बरों का कोई निशान तक नहीं छोड़ा। सुकूते दरइया के बाद हज़रत तलहा और इमाम हसन के मज़ारात पर फिर गुंबद बना दिए गये थे। सऊद ने दोबारा नज्दी फौजों को हुक्म दिया कि दर बहीमा के क़स्र पर हल्ला बोल दें उन्होंने दाबारा तमाम क़बरों को मुन्हदिम कर दिया और उन हामियों को क़त्ल कर डाला)

इब्ने सऊद का इंतिक़ाल : सरदार हसनी लिखते हैं : मुहम्मद इब्ने सऊद का इंतिक़ाल 1764 ई० में हुआ और उसका बेटा अब्दुल-अज़ीज़ जांनशीन हुआ। बाप के वक़्त यह बड़ा मुस्तइद मुजाहिद

था। खुद अमीर होने पर साल में छः छः मरतबा ग़ज़वात करता रहा, उसका बेटा सऊद बाप से भी ज़्यादा गर्म जोश साबित हुआ। उसने अपने वालिद की इजाज़त के बग़ैर ही नजफ़ अशरफ़ और करबला मुअल्ला पर हमलें किए और वहाँ के मज़ाराते मुक़द्दसा को तहो बाला कर दिया। लूट और ग़ारत का तो कुछ हिसाब ही नहीं था। उन मक़ामात पर अह्ले नज्द की तरफ़ से बेहद बद एतेदालियाँ और गुस्ताख़ियां सरज़द हुईं। 1902 ई० बमुताबिक़ 1218 हिज० में एक शीआ़ दरइया में आया और जब कि सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था, उसको क़त्ल कर दिया।

करबला में वहाबियों के मज़ालिम की तफ़्सील :

मस्ऊद आलम नदवी लिखते हैं : और इस साल (1214 हिज०) सऊद तमाम नज्द, हिजाज़ और थामा से एक लश्करे जर्रार लेकर करबला के इरादा से चला और बलदुल-हुसैन के बाशिन्दों पर हमला किया। यह ज़ीक़अ़दा का वाक़या है। मुसलमानों ने उस पर धावा बोल दिया, उसकी दीवारों पर चढ़ गये और ज़बरदस्ती (उनवतन) दाख़िल हो गये और अक्सर बाशिन्दों को घरों और बाज़ारों में तहे तेग़ कर दिया और इस कुब्बा को जो इन के एतक़ाद के मुताबिक़ हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु) की क़बर पर बनाया गया, हदम कर दिया। कुब्बा और उसके आसपास और चढ़ा दे की तमाम चीज़ें ले लें। कुब्बा ज़ुमर्द, याक़ूत और जवाहिर से आरास्ता था और उसके अलावा शहर में जो कि माल व मता था (हथियार, लिबास, सोना, चाँदी, क़ीमती मुसाहिफ़ और बेशुमार चीज़ें) सब ले लिया और शहर में एक पहर से ज़्यादा नहीं ठहरे और ज़ुहर के वक़्त तमाम माल लेकर वहाँ से निकल आए और उसके बाशिन्दों में से तक़रीबन दो हज़ार आदमी क़त्ल किये गये।

उस्मान बिन बिश्र नज्दी लिखते हैं :

(1216 हिज० में सऊद अपनी ताक़तवर फौजों और घुड़ सवार लश्करे जर्रार और तमाम नज्दी ग़ारतगरों को साथ लेकर सर ज़मीने करबला पर हमला आवर हुआ और ज़ीक़अ़दा में नज्दी सूरमाओं ने बल्दे हुसैन का मुहासरा कर लिया और तमाम गलियां और बाज़ार

हालियाने शहर की लाशों से पटे पड़े थे। क़त्ले आम से फ़ारिग़ होने के बाद उन्होंने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की क़बर मुबारक के क़ुब्बा को मुन्हदिम कर दिया। रौज़ा के ऊपर जो ज़ुमर्रद, हीरे, जवाहरात और याक़ूत के जो नक़्श व निगार बने हुए थे, वह सब लूट लिए। उसके अलावा शहर में लोगों के घरों में जो माल व मता, अस्लेहा, कपड़े हत्ता कि चारपाइयों से बिस्तर तक उतार लिए और यह सब माल व मता लूट कर तक़रीबन दो हज़ार मुसलमानों को मौत के घाट उतार कर नज्द वापस लौट गये।)

तायफ़ में ग़ारतगरी के बारे में उस्मान नज्दी लिखते हैं :

(सऊद ने अपने एक कमाण्डर उस्मान को सर ज़मीने तायफ़ को लूटने पर मामूर किया। तायफ़ का अमीर ग़ालिब शरीफ़ क़िला बन्द हो गया। नज्दियों ने उस पर अरसा हयात तंग कर दिया, यहाँ तक कि वह जान बचा कर मक्का की तरफ़ निकल भागा। उस्मान ने तायफ़ की गलियों और बाज़ारों को मुसलमानों की लाशों से भर दिया और दो सौ ज़्यादा मुसलमानों को क़त्ल किया और तायफ़ के घरों से माल व मताअ्, सोना, चाँदी, अस्लेहा और तमाम क़ीमती अशिया जिनका शुमार बयान से बाहर है, लूट कर नज्दियों में तक़सीम किया और उसका पाँचवां हिस्सा अब्दुल-अज़ीज़ के पास भेजा जिसके सिला में उसको तायफ़ और हिजाज़ का अमीर मुक़र्रर कर दिया गया।)

यह उन लोगों की सीरत और किरदार की एक हल्की सी झलक है जिन को मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब ने बज़अ्मे खुद किताब व सुन्नत के सांचे में ढाल कर तैयार किया था।

(फिर सऊद अपने साथियों को लेकर मक़ामे अक़ीक़ से रवाना हुआ और मफ़ासिल पर उतर कर उमरा का एहराम बांधा, मक्का में दाख़िल हो कर मक्का को अमान दी और ज़ेर कसीर ख़र्च किया। उमरा से फ़ारिग़ होने के बाद सऊद और उसके तमाम नज्दी साथियों ने मक्का के तमाम मज़ारात से गुंबद गिरा दिए और मुतबर्रक मक़ामात की तमाम अलामात को मिटा दिया।)

अब्दुल-अज़ीज़ बिन सऊद के अह्दे हुकूमत का

खुलासा : अब्दुल-अज़ीज़ बिन सऊद के दौरे हुकूमत का खुलासा बयान करते हुए एक वहाबी आलिम लिखते हैं :

अब्दुल-अज़ीज़ मुहम्मद बिन सऊद ने 1765 ई० 1179 हिज० से 1803 ई० 1218 हिज० तक कुल उन्तालीस साल हुकूमत की और उस हुकूमत का बेश्तर हिस्सा खुद शैखुल-इस्लाम की निगरानी में गुज़रा। 1792 ई० 1206 हिज० तक अब्दुल-अज़ीज़ ने नुमायां हैसियत तो अपने वालिद ही के अह्द में हासिल कर ली थी और तमाम अहम मारके (1744 ई० 1159 हिज० से 1965 ई० 1179 हिज० तक) उसी की क़्यादत में सर हुए थें बिल्कुल इसी तरह जैसे उसके दौरे हुकूमत में तमाम अहम लड़ाइयों उसके वली अहद सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ की सरकरदगी में लड़ी गईं। उस पर अमीर अब्दुल-अज़ीज़ ने खुद शैखुल-इस्लाम की सोहबत उठाइ थी, इसलिए तबलीग़ व दावत का शौक़ उसके दिल व दिमाग़ में समाया हुआ था, जो इलाक़ा फतह होता था, वहाँ सबसे पहले मुबल्लेग़ीन और मुतअव्वेईन का तक़र्रुर करता।

इस खुलासा से ग़ालिबन क़ारेईने किराम पर वाज़ेह हो गया होगा कि शैख़ नज्दी किस तरह तल्वार के ज़ोर पर इलाक़े पर इलाक़े फतह करके बेचारे मुसलमानों को जबर व इकराह से अपने अक़ाइद में ढलता चला गया।

सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ : शैख़ नज्दी की तवील ज़िन्दगी में नज्द के तीन सरदार सर पर आराए सलतनत हुए। मुहम्मद बिन सऊद मुतवफ़्फ़ी 1965 ई० 1179 हिज०, अब्दुल-अज़ीज़ मुहम्मद बिन सऊद 1765 ई० 1179 हिज० ता 184 ई० 1282 हिज० और सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ 1803 ई० 1218 हिज० ता 1814 ई० 1229 हिज०, नज्द के यह तीनों सरदार इंतिहाई ज़ालिम और सफ़्फ़ाक थे, उनके मज़ालिम देख कर हिलाकू और चंगेज़ खाँ भी रहम दिल मालूम होते हैं, उन ज़ालिमों ने निहत्थे मुसलमानों की शहे रग पर तल्वार की नोक रख कर शैख़ नज्दी के मिशन को पूरा किया और धड़ा धड़ लोगों की गर्दनें उड़ाते चले गये, उनके अम्वाल को अपनी मिल्क और उनकी आबरू को लौंडियां बनाते चले गये।

सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ की वली अहद के बारे में नदवी साहब कहते हैं :

अमीर अब्दुल-अज़ीज़ की शहादत के बाद उसका बेटा सऊद अमीर मुक़र्रर हुआ। सऊद के लिए इमारत की बैअत शैखुल-इस्लाम की ज़िन्दगी ही में उनकी ईमा से ली जा चुकी थी।

सरदार हसनी इस मौज़ू पर लिखते हैं :

सऊद पन्द्रह बरस पेश्तर अपने वालिद का जांनशीन क़रार पा चुका था, चुनांचे मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की मदद और अवाम के दोबारा इंतिख़ाब से सऊद इमाम नज्द क़रार पाया। शैख़ मुहम्मद अब्दुल-वहाब अब तक ज़िन्दा थे सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ के कारनामे और अपने मोतक़ेदात की इशाअत को रोज़ अफ़्ज़ूं तरक़्क़ी पर देख रहे थे। सऊद ने अरब के दूर दराज़ सूबों पर तर कुताज़ियाँ कीं और अपनी सलतनत को वसीअ् किया। वह यमन और असीर से लेकर अमान, अल-हिसा और समार तक पहुंचा। आख़िर कार 1801 हिज० में वह बहैसियत फातेह मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हो गया, लेकिन शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब इस वाक़या से दस-दस पेश्तर यानी 1791 ई० मुताबिक़ 1206 हिज० में फौत हो गये थे।

क़ारेईन किराम हम ने चूंकि इस बाब में सिर्फ़ शैख़ नज्दी की ज़िन्दगी के हालात क़लम बन्द करने थे, इसलिए सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ के तारीख़ी मज़ालिम पढ़ने के लिए आइन्दा अबवाब का इंतिज़ार फरमाएं।

शैख़ नज्दी की मौत : एक नज्दी आलिम शैख़ नज्दी की मौत के बारे में लिखते हैं :

शौवाल 1206 हिज० में एक बीमारी के आरज़ा ने शैखुल-इस्लाम को बिस्तरे अलालत पर लिटा दिया, वह शख़्स जो ज़िन्दगी भर तलबा के हुजूम में चहेकता रहा, इल्मी जवाहिरात की बारिश बरसाता रहा। आज एक ख़ौफ़नाक मरज़ के हाथों मज्बूर हो कर घर के एक कोने में पाबन्द हो गया। ज़ीक़अ्दा के आख़िरी दिन 22 जून 1792 ई० को इल्म व

अमल का यह आफ़ताब गुरूब हो गया, लेकिन उनकी फ़िक्री तवानाइयाँ, ईमानी कुव्वतों और अन्थक मुसाई ने जुग़राफ़िया आलम में एक इस्लामी रियासत का नक़्शा उजागर कर दिया था और नज्द की यह इस्लामी तहरीक दिन बदिन ज़ोर पकड़ती जा रही है।

शौकानी का मर्सिया : शैख़ नज्दी की मर्ग पर मुहम्मद बिन अली शौकानी ने मर्सिया लिखा। मर्सिया में दर्ज ज़ेल अश्आर के तेवर देखिए कि जिस शख़्स की सारी ज़िन्दगी अंबिया अलैहिमुस्सलाम की तन्क़ीस करने में गुज़री, उसको किस तरह आसमाने अक़ीदत पर पहुंचा कर नबी के मुतवाज़ी कर दिया है।

(इल्म का पहाड़ ऊंचाइयों का मरकज़ फौत हो गया है, वह फ़ाज़िल नादिर रोज़गार उलमा की महफ़िल का मरकज़ था, हिदायत का पेशवा हिलाकत आफ़रीनियों को ख़त्म करने वाला, दुश्मनों का क़लअ् क़ुमअ् करने वाला, फ़ैज़ाने इल्म से प्यासों को सैराब करने वाला था जिसका नाम मुहम्मद जो अज़्मत वाला ऊंचे औराक का मालिक था। उसका इल्मी मक़ाम इतना बुलन्द कि कोई फ़ख़्र करने वाला वहाँ पहुँचने की ताक़त नहीं रखता। तमाम नज्द के मुज़ाफ़ात उसके आफ़ताब की किरनों से रौशन हो चुका है और दलाइल की कुव्वत ने हिदायत की मंज़िलों को पुर शिकोह बना दिया है।)

ग़ौर फरमाइए जो लोग हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए किसी नफ़ा और ज़रर की ताक़त मानने को शिर्क और कुफ़्र क़रार देते हैं। वह किस तरह बेख़ौफ़ी से शैख़ नज्दी को नफ़ा, ज़रर इल्म और हिदायत के आसमान पर पहुंचा रहे हैं।

बाब (2)

शैख़ नज्दी की दावत और उसकी हक़ीक़त

शैख़ नज्दी की दावत मुतअद्दद नुकात पर फैली हुई है, इन तमाम पर गुफ़्तगू करना उस एक बाब में मुम्किन नहीं है। शैख़ नज्दी ने जिस नए दीन की तरफ़ लोगों को दावत दी और इस दावत के मुंकेरीन को काफिर और वाजिबुल-क़त्ल क़रार दिया। इस फ़ित्ना का रद्द करने के लिए उसी वक़्त उल्माए-ए-इस्लाम उठ खड़े हुए थे और फित्न-ए-नज्दीयत के जुहूर से लेकर आज तक इस फ़ित्ना के इब्ताल के लिए अह्ले इस्लाम के जुमला मकातिबे फ़िक्र के उलमा ने मुतअद्दद किताबें सुपुर्दे क़लम की हैं। हम इस बाब में सिर्फ़ तवस्सुल, शफ़ाअत और इस्तिम्दाद के तीन उनवानों पर बहस करेंगे।

तवस्सुल : तवस्सुल के बारे में गुफ़्तगू करते हुए शैख़ नज्दी लिखते हैं :

दुश्मनाने खुदा के दीने रसूल पर मुतअद्दिद ऐतराज़ात हैं जिनकी बिना पर वह लोगों को सही दीन पहुंचाने से रोकते हैं, उन में से एक एतराज़ यह हे कि दुश्मनाने खुदा कहते हैं। हम अल्लाह तआला के साथ शिर्क नहीं करते, बल्कि हम गवाही देते हैं कि अल्लाह तआला के सिवा न कोई ख़ालिक़ है, न राज़िक़ है औरन अल्लाह तआला के सिवा कोई नफ़ा दे सकता है और न नुक़सान पहुंचा सकता है और इन बातों में खुदा का शरीक नहीं है और यह कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम भी अपनी ज़ात के लिए किसी नफ़ा व नुक़सान के मालिक नहीं हैं, चेह जाएकि अब्दुल-क़ादिर या और कोई शख़्स हो, लेकिन मैं एक गुनहगार शख़्स हूँ और सुलहा, अल्लाह तआला की बारगाह में जाह और मरतबा रखते हैं, पस मैं उनके वसीला से अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ। पस उनको वह जवाब दो जो गुज़र चुका है कि जिन लोगों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़िताल किया, वह भी इन्हीं चीज़ों का इक़रार करते थे और यह मानते थे कि जिन बुतों की वह परस्तिश करते हैं, वह किसी चीज़ के ख़ालिक़ राज़िक़ वग़ैरह नहीं हैं और वह उन से

सिर्फ़ शफ़ाअत और जाह का इरादा करते थे।

इस बात का ख़ुलासा यह है कि जो मुसलमान अंबिया-ए-किराम और औलियाए इज़ाम के लिए अल्लाह तआला की बारगाह में जाह व इज़्ज़त और मरतबा के क़ाइल हैं और उनके वसीला से अल्लाह तआला से दुआएँ माँगते हैं, वह तमाम मुसलमान काफ़िर हैं और इसी तरह जिहाद करना वाजिब है जिस तरह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का के उन काफ़िरों और बुत परस्तों से जिहाद किया था जो अपने मुहब्बतों की अल्लाह के हाँ रसाई और जाह व मरतबा का एतक़ाद रख कर उनकी इबादत इसलिए करते थे ताकि उनके वसीला और शफ़ाअत से उनकी मुरादें पूरी हों।

शैख़ नज्दी की यह इबारत मुन्दरजा ज़ैल नुकात पर मुश्तमिल है:

1. अंबिया अलैहिमुस्सलाम के लिए अल्लाह तआला की बारगाह में इज़्ज़त और जाह साबित नहीं।

2. अंबिया अलैहिमुस्सलाम और औलिया-ए-किराम का वसीला पेश करके दुआएं मांगना जाइज़ नहीं।

3. अंबिया अलैहिमुस्सलाम की इज़्ज़त और जाह के वसीला से दुआ माँगना कुफ़्फ़ार से मुमासिलत की वजह से कुफ़्र है।

तवस्सुल में मुसलमानों और कुफ़्फ़ार का फ़र्क़ :

सबसे पहले हम कुफ़्फ़ार से मुमालिसलत के नुक्ता पर बहस करते हैं:

(अलिफ़) कुफ़्फ़ार जिन बुतों के लिए अल्लाह तआला की बारगाह में इज़्ज़त और जाह का अक़ीदा रखते थे। अल्लाह तआला ने अपनी बारगाह में उनके लिए इज़्ज़त और जाह के हुसूल पर कोई दलील क़ायम नहीं फरमाई, उसके बरख़िलाफ़ अंबिया के लिए इस मरतबा के हुसूल पर दलील क़ायम फ़रमाई है।

(ब) कुफ़्फ़ार बुतों के बारे में नफ़ा पहुंचाने और ज़रर देने का एतक़ाद रखते थे, हालांकि अल्लाह तआला ने बुतों को यह ताक़त असलन अता नहीं फरमाई। उसके बरख़िलाफ़ अंबिया अलैहिमुस्सलाम वल्लाहु तआला ने यह क़ुदरत अता फरमाई है। इन दोनों अमरों की हम इन्शाअल्लाह अन्क़रीब बा दलाइल वज़ाहत करेंगे।

कुफ़्फ़ार जो बुतों के बारे में इज़्ज़त व जाह और नफ़ा व ज़रर का

अक़ीदा रखते थे, उसके रू में अल्लाह तआला कुफ़्फ़ार के बारे में हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का क़ौल नक़ल फरमाता है :

أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ؕ (اعراف:۷۱)

(क्या तुम मुझ से झगड़ा करते हो, उन अस्मा के बारे में जिनके तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने नाम रख लिए हैं और अल्लाह तआला ने उनकी इस हैसियत पर कोई दलील क़ायम नहीं फरमाई)

अल्लामा इब्ने कसीर इस आयते करीमा की तफ़सीर में लिखते हैं : (क्या तुम मुझ से इन बुतों के बारे में झगड़ा करते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने माबूद मान लिया है जो न नफ़ा देने की ताक़त रखते हैं और न ज़रर की और न अल्लाह तआला ने उनकी इबादत पर कोई हुज्जत और दलील क़ायम की है।)

अल्लामा इब्ने कसीर की इस तफ़सीर से वाज़ेह हो गया कि कुफ़्फ़ार का बुतों के लिए अल्लाह की बारगाह में इज़्ज़त व जाह और नफ़ा और ज़रर की ताक़त को साबित करना बिला दलील था।

मुसलमानों के अंबिया से तवस्सुल करने में और कुफ़्फ़ार के अमल में दूसरा फ़र्क़ यह है कि मुसलमान बावजूद यह मानने के कि अंबियाए किराम को अल्लाह तआला की बारगाह में इज़्ज़त व जाह हासिल है और अल्लाह तआला ने उनको नफ़ा और ज़रर की कुदरत अता की है, यह एतक़ाद रखते हैं, मुस्तहिक़े इबादत सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात वहदहू ला शरीक है, वह अंबिया और औलिया को मुस्तहिक़े इबादत या इलाह नहीं क़रार देते, बल्कि इस अक़ीदे को कुफ्र क़रार देते हैं। इसके बरख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार बुतों को न सिर्फ़ यह कि बिला किसी दलील के अल्लाह तआला की बारगाह में साहिबे इज़्ज़त व वजाहत और नाफ़े और रज़ा मानते हैं, बल्कि उनको मुस्तहिक़े इबादत समझते हैं और बरमला उनको इलाह कहते हैं और ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं, चुनांचे अल्लामा इब्ने कसीर की तफ़सीरे साबिक़ से भी यह बात वाज़ेह हो चुकी है और हम उसके सुबूत में कुरआने करीम की एक नस्से क़तई पेश करते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है :

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ ؕ (زمر:۳)

(और जिन लोगों ने अल्लाह तआला को छोड़ कर दूसरे मददगार

बना रखे हैं, वह कहते हैं कि हम उन बुतों की इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि यह हम को अल्लाह तआला के क़रीब कर दें।)

इस आयत से वाज़ेह हो गया कि कुफ़्फ़ार बुतों के साथ जो कुछ मुआमला करते थे, वह इबादत के उनवान से करते थे और उनको अपना मुस्तहिक़े इबादत समझते थे और यह सब बातें बिला दलील हैं।

और मुसलमान जो अंबियाए किराम के लिए अल्लाह तआला की बारगाह में इज़्ज़त व जाह का अक़ीदा रखते हैं, इस पर भी कुरआने करीम में दलील मौजूद है, उनको खुदा की दी हुई ताक़त से नाफ़े और रज़ा समझते हैं, उस पर भी कुरआने करीम में हुज्जत मौजूद है और उनके तवस्सुल से जो दुआएँ माँगते हैं, तो उनको माबूद या मुस्तहिक़ इबादत या खुदा का शरीक समझ कर नहीं, बल्कि खुदा का अब्द मुक़र्रब समझ कर उनके वसीला से दुआएँ करते हैं और उस पर भी कुरआने करीम में दलील मौजूद है।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम की बारगाहे उलूहियत में वजाहत :

में वजाहत : आइए अब इस अम्र पर ग़ौर करते हैं कि अंबियाए किराम को अल्लाह तआला की बारगाह में इज़्ज़त और वजाहत हासिल है या नहीं? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है : (احزاب:٦٩) وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا (और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम) अल्लाह तआला की बारगाह में ज़ू वजाहत थे)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाता है :

وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ۔ (ال عمران:٤٥)

(हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, अल्लाह तआला के नज़्दीक दुनिया और आख़िरत दोनों में ज़ू वजाहत हैं)

और हुज़ूर सैयदुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अल्लाह तआला की बारगाह में वजाहत का अन्दाज़ा इन आयात से लगाइए : (انبیاء،١٠٧) وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ (और हम ने आपको नहीं भेजा, मगर तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर)

अंबिया साबेक़ीन अलैहिमुस्सलाम के ज़माना में कोई क़ौम कुफ़्र व शिर्क को न छोड़ती, तो उस पर अज़ाब आ जाता, मगर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मरतबा और मक़ाम ज़ाहिर करने के

लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया : وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ (انفال ۳۳)
(अल्लाह तआला की यह शान नहीं कि काफ़िरों पर अज़ाब भेजे, जबकि आप उन में मौजूद हैं।)

जबकि आपकी ख़्वाहिश हुई कि काबा को क़िबला बना दिया जाए, तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई :

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا (بقرہ:۱۴۴)

(बिला शुबह हम देख रहे हैं, हम अल्बत्ता ज़रूर उसी क़िब्ला की तरफ़ आपका मुँह फेर देंगे जिसकी तरफ़ मुँह करने पर आप राज़ी हैं।)

तमाम मुसलमानों का नमाज़ पढ़ने से यह मक़सद होता है कि ख़ुदा राज़ी हो जाए, लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह तआला फ़रमाता है, आप इसलिए नमाज़ पढ़ें ताकि आप ख़ुदाए राज़ी हो जाएं। इरशाद फ़रमाया :

فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿ (طٰہٰ:۱۳۰)

(आप सुबह व शाम नमाज़ पढ़ा कीजिए ताकि आप ख़ुदा तआला से राज़ी हो जाएं)

इन आयात के नुज़ूल को देख कर हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया था :

(मैं आपके रब को नहीं पाती, मगर इस हाल में कि वह आपकी ख़्वाहिश पूरी करने में बहुत जल्दी करता है)

यह चन्द आयात तो दुनिया में वजाहत के बारे में थी। अब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आख़िरत में अल्लाह तआला के नज़्दीक वजाहत मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿ (اسراء:۷۹)

(क़रीब है कि रब तआला आपको मक़ामे महमूद अता फ़रमाएगा)

नीज़ फ़रमाया : وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿ (والضحیٰ:۵) (अन्क़रीब आपका रब तआला आपको इतना देगा कि आप राज़ी हो जाएंगे)

आइए अब अहादीसे सहीहा की रौशनी में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अल्लाह तआला की बारगाह में वजाहत मुलाहिज़ा कीजिए :

(रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं क़यामत के दिन तमाम औलादे आदम का सैयद (सरदार) हूँगा और मुझे इस

पर फ़ख़्र नहीं, हम्द का झण्डा मेरे हाथ में होगा और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं। आदम और उनके मा सिवा तमाम अंबिया और रुसुल मेरे ही झण्डे के नीचे होंगे।)

एक और हदीस में फरमाया :

याद रखो! मैं अल्लाह का महबूब हूँ और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं और रोज़े क़्यामत हम्द का झण्डा उठाऊंगा, आदम और उनके मासिवा तमाम नबी मेरे झण्डे तले होंगे और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं, मैं ही सबसे पहले शफ़ाअत करूंगा और सबसे पहले मेरी ही शफ़ाअत क़ुबूल होगी और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं और सबसे पहले मैं जन्नत का दरवाज़ा खटखटाऊंगा और अल्लाह मेरे लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल देगा और मेरे साथ फ़ुक़रा मुमिनीन होंगे और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं हैं और अल्लाह तआला के नज़्दीक तमाम अव्वलीन व आख़िरीन में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व वजाहत वाला हूँ और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं है।

इन दलाइल को पढ़ने के बाद क्या कोई शक़ीयुल-क़ल्ब यह कह सकता है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम को बिल-उमूम और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बिल-ख़ुसूस अल्लाह तआला की बारगाह में कोई इज़्ज़त व वजाहत और कोई मरतबा और मक़ाम हासिल नहीं है और वह किस क़द्र बद नसीब शख़्स है। जोयह कहता है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम और बुत दोनों इस बात में बराबर हैं कि दोनों को अल्लाह तआला की बारगाह में कोई इज़्ज़त व वज़ाहत हासिल नहीं है। क्या यह लोग बुतों की इज़्ज़त और शान में भी ऐसी आयात और अहादीस दिखा सकते हैं, हत्ता कि दोनों को एक पलड़े में रखा जा सके।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम को अल्लाह तआला ने नफ़ा और नुक़्सान की ताक़त अता की है : जिस दूसरे नुक्ता पर शैख़ नज्दी ने बहस की है। वह यह है कि न बुतों को नफ़ा व नुक़्सान पहुंचाने की क़ुदरत हासिल है और न अंबिया को और दोनों फ़रीक़ इस अम्र में मुसावी हैं। आइए देखें अल्लाह तआला ने अंबिया अलैहिमुस्सलाम को नफ़ा और नुक़्सान पहुंचाने की क़ुदरत दी है या नहीं।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में फरमाता है :

وَإِنَّكَ لَتَهْدِيْ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (شوریٰ:۵۲)

(बिला रैब आप यक़ीनन सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ लोगों को हिदायत देते हैं) وَمَا نَقَمُوْا إِلَّا أَنْ أَغْنٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ (توبہ:۷۴)

(इन मुनाफ़िक़ीन को न बुरा लगा, मगर यह कि अल्लाह और उसके रसूल ने मुसलमानों को अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया।)

ज़ैद बिन हारेसा के बारे में फरमाया :

أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ (احزاب:۳۷)

(अल्लाह ने भी (ज़ैद बिन हारेसा) पर इंआम फरमाया और आपने भी इंआम किया।)

इन तीन आयतों में अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तीन वस्फ़ ज़िक्र फरमाए हैं, हिदायत देना, ग़नी करना, इंआम फरमाना। अब कोई बतलाएगा कि अगर हिदायत देना, ग़नी करना और इंआम से सरफ़राज़ करना, नफ़ा पहुँचाना नहीं है, तो और किस बला का नाम नफ़ा पहुंचाना है और आइए अब देखें कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को ज़रर पहुंचाने की कुदरत दी है या नहीं।

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (توبہ۶۱)

(जो लोग रसूलुल्लाह को तक्लीफ़ देते हैं, उनको दर्दनाक अज़ाब होगा।)

एक और मक़ाम पर फरमाया :

إِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا (احزاب:۵۷)

(बिला रैब जो लोग अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईज़ा देते हैं, उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह तआला की लानत है और अल्लाह तआला ने उनके लिए रुसवाकुन अज़ाब तैयार कर रखा है।)

और इस से भी ज़्यादा वज़ाहत इस हदीस में मुलाहिज़ा फरमाएं, इमाम बुख़ारी अपनी सही में रिवायत करते हैं :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे अबू जहल और दीगर सनादीदे कुरैश आस पास बैठे थे, उन में से किसी ने कहा : फ़लां शख़्स के हाँ ऊंटनी ज़बह हुई है, उसकी आलाइश (जीली) कोई शख़्स

ले आए और जब यह सज्दे में जाएं, तो उनकी पुश्त पर रख दी जाए। पस सबसे ज़्यादा बदनसीब शख़्स (उत्बा बिन अबी मुईत) उठा और ऐन सज्दा की हालत में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुश्ते मुबारक पर वह आलाइश रख दी। अब्दुल्लाह बिन मसऊद अपनी सिग्र सनी के बाइस कुछ न कर सके और खुबसा एक दूसरे को देख कर इशारे करते और मज़ाक़ उड़ाते, हत्ता कि हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फ़िदाहा नफ़्सी व अबी व उम्मी तशरीफ़ लाएं और कमाल बेजिगरी से वह आलाइश उठा कर फेंकी और कुफ़्फ़ार को बुरा भला कहा। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ से फारिग़ हो कर उन काफिरों का नाम ले ले कर उनकी हलाक़त की दुआ फरमाई और इरशाद फरमाया : ऐ अल्लाह अबू जहल को हलाक कर, उत्बा बिन रबीआ को हिलाक कर, शैबा बिन रबीआ को हिलाक कर वलीद बिन उत्बा, उमैया बिन ख़लफ़ को हिलाक कर और उक़्बा बिन अबी मुईत को हिलाक कर। रावी कहता है सातवाँ एक और नाम लिया था जो मुझे याद न रहा (वह अम्मारह बिन वलीद बिन मुग़ीरह था) अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं क़सम है उस रब्बे जुल-जलाल की जिसके क़ब्ज़-ए-कुदरत में मेरी जान है जिन तमाम लोगों का हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नाम लिया था, मैंने उन सबको बद्र के कुएँ में बेजान औंधा पड़े हुए देखा था।

क्या इस सरीह हदीस के बाद भी शैख़ नज्दी के मुत्तबईन यह कहेंगे कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने अपने मुख़ालिफ़ीन को ज़रर पहुंचाने की कुदरत अता नहीं की? इन दलाइल को पेश करने के बाद हम शैख़ नज्दी के मुत्तबईन से पूछते हैं कि क्या बुतों को भी अल्लाह तआला ने नफ़ा और ज़रर की ऐसी ही ताक़त दी है, क्या उनके बारे में नफ़ा पहुंचाने और ज़रर देने के बारे में भी इसी क़िस्म की अहादीस वारिद हुई हैं। फिर शैख़ नज्दी का अद्म नफ़ा व ज़रर में अंबिया अलैहिमुस्सलाम और बुतों को एक पलड़े में रखना, हक़ है या या बातिल, कुफ़्र है या ईमान, तअस्सुब, ज़िद और अनाद छोड़ कर अपने ज़मीर से सवाल कीजिए और देखिए अगर आपके ज़मीर में ज़िन्दगी है तो वह क्या जवाब देता है?

जब यह हक़ीक़त ज़ाहिर हो गई कि अंबियाए किराम को अल्लाह

तआला ने अपनी बारगाहे अक़्दस में इज़्ज़त और मक़ामे जाह और मरतबा भी याद है और उनको नफ़ा और नुक़्सान की ताक़त भी दी है तो आइए अब देखें कि उनके वसीला से दुआ माँगने के लिए क़ुरआने करीम में हिदायत है या नहीं।

अल्लाह करीम क़ुरआन मजीद में फरमाता है :

وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا
كَفَرُوا بِهِ ۚ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾ (بقره:٨٩)

(हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ्सत से पहले यहूद कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला और जंग की सूरत में हुज़ूर का वसीला लेकर अल्लाह तआला से फतह की दुआ किया करते थे और जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आए तो उन्होंने हुज़ूर को न पहचाना और आपका कुफ़्र और इंकार किया पस अल्लाह तआला की लानत हो कुफ़्फ़ार पर)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला से दुआ माँगने पर यहूद को मुलामत नहीं की, बल्कि हुज़ूर के वसीला से दुआ माँगने पर उनको कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ फतह पर फतह अता फ़रमाता रहा, अल्बत्ता जब उन्होंने अल्लाह करीम के इस इंआम के बावजूद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेअ्सत के बाद आप पर ईमान लाने से इंकार कर दिया, तो अल्लाह तआला ने उनकी मुज़म्मत की और उन पर लानत फरमाई।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला से दुआ माँगने के बारे में इस आयते करीमा की तफ़्सीर में चन्द हवाले मुलाहिज़ा हों। अल्लामा इब्ने कसीर इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं :

(हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर की बेअ्सत से पहले हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला से औस और ख़ज़रज के ख़िलाफ़ फतह की दुआएँ करते थे। जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मबऊस हुए, तो उन्होंने आपकी नुबुव्वत का इंकार किया और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तवस्सुल से माँगी हुई साबेक़ा दुआओं का इंकार कर दिया तो मुआज़ बिन जबल, बिश्र बिन बरा और दाऊद बिन सलमा ने कहा:

ऐ जमाअते यहूद ख़ुदा से डरो और इस्लाम ले आओ जब हम मुश्रिक थे, तो तुम हमारे ख़िलाफ़ हुज़ूर के वसीला से दुआएँ मांगा करते थे और हमको बतलाया करते थे कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्क़रीब मबऊस होंगे और हुज़ूर की ऐसी सिफ़ात होंगी, इसके जवाब में यहूदियों के क़बीला बनी नज़ीर से सलाम बिन मुशकम ने कहा कि हुज़ूर हमारे पास कोई दलील नहीं लाए जिसको हम पहचानते हों, यह वह नबी नहीं हैं जिनका हम तुम से ज़िक्र किया करते थे, तो अल्लाह तआला ने उनके रद्द में यह आयत नाज़िल फरमाई।)

अल्लामा राज़ी अपनी तफ़्सीर लिखते हैं :

(हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ़्सत और नुज़ूले कुरआन से पहले यहूद हुज़ूरे अकरम के तवस्सुल से दुआएँ माँगते थे और यूं कहते थे ऐ अल्लाह नबी उम्मी के तवस्सुल से हम को फतह और नुसरत अता फरमा! यह इब्ने अब्बास की रिवायत है।)

और अल्लामा आलूसी ने यहूद की दुआ के यह अल्फ़ाज़ नक़ल किए हैं :

(ऐ अल्लाह हम तुझ से तेरे उस नबी की जाह और हुर्मत के वसीला से सवाल करते हैं जिसकी आख़री ज़माना में बेअ़्सत का तूने हम से वादा किया है तो हमें हमारे दुशमनों के ख़िलाफ़ मदद अता कर, पस उनको मदद दी जाती।)

कुरआने करीम की आयाते मुबारका और मुफ़स्सेरीने किराम के उन हवालों से साबित हो गया कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तवस्सुल से दुआ माँगना जाइज़ है। हो सकता है कि इस मक़ाम पर यह शुबह किया जाए कि यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ़्सत से क़ब्ल का वाक़या है। तवह्हुम क़ारेईनें किराम की ख़िदमत में हदीस शरीफ़ से दो हवाले पेश करते हैं जिन से ज़ाहिर हो जाएगा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ़्सत के बाद आपकी हयाते मुबारका में और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वेसाल के बाद हर दो सूरतों में हुज़ूर के वसीला जलीला से दुआएँ माँगना जाइज़ है।

तवस्सुल का सुबूत अहादीस से : कुरआने करीम की

आयते मुबारका और उसकी तफ़सीर में मुस्तनद मुफ़स्सेरीन के हवालों के बाद तवस्सुल के सुबूत में दो हदीसें मुलाहिज़ा हों:

(हज़रत उस्मान बिन हनीफ़ बयान करते हैं कि एक नाबीना शख़्स हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि दुआ कीजिए, अल्लाह तआला मुझे आफ़ियत दे। आपने फरमाया : अगर तुम चाहो तो उसको मुल्तवी रखूं और यह ज़्यादा बेहतर है और अगर तुम चाहो तो दुआ कर दूँ। उसने अर्ज़ किया दुआ ही कर दीजिए। आपने उसको हुक्म दिया जाकर अच्छी तरह वुज़ू करो, दो रकअत नमाज़ पढ़ो और इस तरह दुआ मांगो। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरे हुज़ूर मुहम्मद नबी रहमत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के तवस्सुल से मुतवज्जेह होता हूँ ताकि मेरी यह हाजत पूरी हो। ऐ अल्लाह! तो हुज़ूर की मेरे बारे में शफ़ाअत कुबूल फरमा (इब्ने माजा कहते हैं) अबू इस्हाक़ ने कहा कि यह हदीस सही है और इमाम तिर्मिज़ी ने कहा यह हदीस हसन सही है।

इस हदीस से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते मुबारका में तवस्सुल का सराहतन जवाज़ साबित हुआ और चूंकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़िन्दगी के साथ मुक़ैयद नहीं फरमाया, इसलिए यह अपने उमूम और इत्लाक़ के एतबार से बअ्दल-विसाल तवस्सुल पर भी दलालत करती है। नीज़ इमाम बैहक़ी ने उस्मान बिन हनीफ़ की इसी रिवायत के तहत बयान फरमाया है कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान के दौरे ख़िलाफ़त में एक शख़्स की हाजत पूरी नहीं होती थी, तो उन्होंने ने उसको यही दुआ पढ़ने की तल्क़ीन फरमाई, चुनांचे अल्लामा सुबकी बैहक़ी के हवाला से बयान करते हैं :

(हज़रत उस्मान बिन हनीफ़ रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि एक शख़्स हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दरबारे ख़िलाफ़त में किसी काम से जाता था, उसकी तरफ़ तवज्जोह नहीं करते थे, उसकी उस्मान बिन हनीफ़ से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा कि जाकर वुज़ू करो, फिर मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ो, फिर अल्लाह तआला से दुआ माँगो ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी बारगाह में मुहम्मद नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला से मुतवज्जेह होता हूं। ऐ मुहम्मद मैं आपके वसीला

से अल्लाह की बारगाह में अपनी इस ज़रूरत के पूरे होने के लिए मुतवज्जेह होता हूँ, फिर तुम अपनी हाजत का ज़िक्र करना। अलख़)

सहाबा से लेकर आज तक उम्मते मुस्लेमा के तमाम अकाबिर और मुस्तनद उलमा और फ़ुक़हा-ए-इस्लाम जवाज़े तवस्सुल के क़ाइल रहे हैं और उस पर उनका अमल रहा है। अगर हम उनके तफ़्सील और हवाले पेश करें, तो बहस तवील हो जाएगी, ताहम इस इज्माल से यह बात बहरहाल ज़ाहिर हो जाती है कि शैख़ नज्दी ने वसीला से दुआ मांगने को कुफ़्र क़रार दे कर तमाम उम्मते मुस्लेमा को काफिर क़रार दे दिया।

शफ़ाअत : जम्हूर उम्मते मुस्लेमा का अक़ीदा है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने मुतलक़न शफ़ाअत का इज़्न दे दिया है और अब किसी की शफ़ाअत करने के लिए हुज़ूर को इज़्ने ख़ास को ज़रूरत नहीं है, बल्कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गुनहगार अफ़रादे उम्मत के लिए शफ़ाअत का हुक्म दिया गया है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपकी हयाते मुक़द्दसा में और बाद अज़ वेसाल हर दो सूरतों में शफ़ाअत तलब करना जाइज़ है, जाइज़ ही नहीं, बल्कि सआदत है।

इसके बरख़िलाफ़ शैख़ नज्दी का अक़ीदा है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत का मरतबा दिया गया है, लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के मख़्सूस इज़्न के बग़ैर किसी शख़्स की शफ़ाअत नहीं कर सकते और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत तलब करना सिर्फ़ मम्नूअ् ही नहीं बल्कि कुफ़्र है, जिसके बाद शफ़ाअत तलब करने वाले का क़त्ल करना और उसका माल लौटना मुबाह हो जाता है।

मस्अला शफ़ाअत में शैख़ नज्दी का मूक़िफ़ और उसका बुतलान: इज्माली तौर पर हम सुतूरे साबेक़ा में मस्अला शफ़ाअत में शैख़ नज्दी का मुक़िफ़ बयान कर चुके, अब हम उनकी अपनी तस्रीहात से इस मस्अला को बयान करते हैं :

अल्लाह तआला की इजाज़त के बग़ैर कोई शख़्स किसी के लिए शफ़ाअत नहीं कर सकेगा।

(और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न कोई और शख़्स अल्लाह तआला के इज़्न के बग़ैर किसी के लिए शफ़ाअत कर सकेगा।)

(अगर कोई शख़्स यह कहे कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत दी गई है, इसलिए मैं आप से इस शफ़ाअत को तलब करता हूँ जो आपको अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को) अता की है। इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को शफ़ाअत अता की है और तुमको हुज़ूर से शफ़ाअत तलब करने से रोक दिया है। कुरआने करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है अल्लाह तआला के साथ किसी की इबादत न करो। अलावा अज़ीं हुज़ूर के अलावा फ़रिश्ते, औलिया और कम्सिन बच्चे भी शफ़ाअत करेंगे, तो क्या तुम यह कहोगे कि उनको भी अल्लाह तआला ने शफ़ाअत अता कर दी और मैं उन से शफ़ाअत तलब करता हूँ, तो यह सालेहीन की इबादत के मुतरादिफ़ है या यह कहोगे कि नहीं तो तुम्हारा यह क़ौल बातिल होगा कि अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत अता की है और मैं आप से इस शफ़ाअत को तलब करता हूँ जो अल्लाह तआला ने आपको अता की है।

शैख़ नज्दी का यह क़ौल बवज्हे बातिल है :

(अलिफ़) शैख़ नज्दी का यह क़ौल बिला दलील है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर से शफ़ाअत तलब करने से मना कर दिया है। कुरआन व हदीस में कोई नस नहीं है जिसका मुनादिया है कि हुज़ूर से शफ़ाअत न तलब की जाए। शैख़ नज्दी ने अपने दावे के सुबूत में जो आयत पेश की है फ़ला तद्ऊ मअल्लाहि अहदा इस आयत का शफ़ाअत से कोई तअल्लुक़ नहीं है। इसका माना है अल्लाह तआला के साथ किसी और की इबादत न करो और शफ़ाअत तलब करना इबादत नहीं है, वरना हुज़ूरे अकरम की हयात में आप से शफ़ाअत तलब करना और अरसा महशर में अंबियाए किराम से शफ़ाअत तलब करना भी इबादत क़रार पा कर मम्नूअ़ होता और शफ़ाअत की यह क़िस्म न सिर्फ़ यह कि अहादीसे सहीहा से साबित है, बल्कि शैख़ नज्दी को भी तस्लीम है, चुनांचे लिखते हैं :

(मख़्लूक़ का अरसा महशर में अंबियाए किराम से मदद तलब करना उस पर महमूल है कि वह उन से अर्ज़ करेंगे कि अंबियाए किराम अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला उन से जल्दी हिसाब ले ले और हश्र की तक्लीफ़ों से नजात मिले और यह दुनिया और आख़िरत दोनों में जाइज़ है। बईं तौर कि तू किसी नेक शख़्स के पास जा कर दुआ की दर्ख़्वास्त करे जो तेरी मज्लिस में हो और तेरा कलाम सुन रहा हो जिस तरह हुज़ूर के सहाबा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी में आप से दुआ की दर्ख़्वास्त करते थे, लेकिन आपके वेसाल के बाद हरगिज़-हरगिज़ किसी सहाबी से साबित नहीं है कि उन्होंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़बर पर जा कर अल्लाह तआला से दुआ की, चेजाएकि उन्होंने हुज़ूर से दुआ की दर्ख़्वास्त की हो।)

सवाल यह है कि अगर हुज़ूर अलैहिस्सलाम या दीगर अंबिया से शफ़ाअत तलब करना ग़ैरुल्लाह की इबादत है, तो वह हुज़ूर की हयाते ज़ाहिरी में दुनिया और आख़िरत में क्योंकर जाइज़ होगी। सानियन यह कि कुरआने करीम की जिस आयत से शैख़ नज्दी ने इस्तिदलाल किया है। फ़ला तद्ऊ मअल्लाहि अहदा 18/72 (अल्लाह तआला के साथ किसी की इबादत न करो) इसमें उमूम और इत्लाक़ है, उसको क़बर के साथ मुक़ैयद करने पर कौन सी सरीह आयत या सही हदीस शैख़ नज्दी ने पेश की है, जबकि शैख़ नज्दी का मद्दुआ यह है कि क़बर पर जा कर अंबिया और औलिया से शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त नहीं करनी चाहिए। इस आयत में कौन सा लफ़्ज़ क़बर पर दलालत करता है जिसके सबब शैख़ नज्दी ने इस आयत को क़बर शफ़ाअत तलब करने के मना पर महमूल किया है।

नीज़ शैख़ नज्दी का यह कहना कि उस शख़्स से दुआ की दर्ख़्वास्त की जाए जो ज़िन्दा हो और तालिबे शफ़ाअत का कलाम सुन रहा हो तो गुज़ारिश है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम अपनी क़बरों में ज़िन्दा होते हैं चुनांचे सही हदीस मुस्लिम शरीफ़ में है कि शबे मेअ्राज हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, की क़बर से गुज़र हुआ, तो आपने देखा कि वह अपनी क़बर में नमाज़ पढ़ रहे थे। नीज़ खुद हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात

व सिमा के बारे में इब्ने कैयिम जौज़िया तबरानी और इब्ने माजा के हवाले से हदीस ज़िक्र करते हैं :

(अबू दाऊद बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जुमा के दिन मुझ पर कसरत से दरूद शरीफ़ पढ़ा करो, क्योंकि यह वह दिन है जिस में फ़रिश्ते आते हैं। कोई शख़्स मुझ पर दरूद नहीं पढ़ता, मगर उसकी आवाज़ मुझे पहुंचती है, ख़्वाह वह कहीं भी हो हम ने अर्ज़ किया। आपकी वफ़ात के बाद भी फरमाया। हाँ वफ़ात के बाद भी अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अंबिया के जिस्मों का खाना हराम कर दिया है।)

और औलियाए किराम की क़बर में हयात और उनके सिमा के लिए इब्ने कसीर की यह रिवायत मुलाहिज़ा फरमाएं :

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर ने अमर बिन जामे को सवानेह बयान करते हुए लिखा है कि एक नौजवान मस्जिद में इबादत करता था उस पर एक औरत फ़रीज़ा हो गई और उसको हमेशा अपने घर आने की दावत देती रही हत्ता कि एक दिन वह नौजवान उसके घर चला गया। नागाह उसको यह आयत याद आई इन्नल्लज़ीनत्तक़ो इज़ा मस्सहुम ताइफुन मिनश्शैताने तज़क्किरू फ़इज़ाहुम मुब्सिरून। वह ख़ौफ़े ख़ुदा से बेहोश हो कर गिर पड़ा। होश में आने के बाद उसने दोबारा उसी आयत को पढ़ा और बेहोश हो गया और फिर फौत हो गया। उसी रात को उसे दफन कर दिया गया। हज़रत उमर ने उसके बाप से ताज़ियत की और उसकी क़बर पर दुआ करने के बाद फरमाया : ऐ नौजवान जो शख़्स ख़ुदा के ख़ौफ़ से फौत हुआ उसको दो जन्नतें मिलती हैं। नौजवान ने क़बर के अन्दर से जवाब दिया मुझे अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने जन्नत दो मरतबा अता फरमा दी।

शैख़ नज्दी ने सालेहीन से दुआ कराने का जो ख़ुद साख़्ता मेअ्यार मुक़र्रर किया था। इस मेअ्यार के मुताबिक़ भी अंबिया और औलिया की क़ुबूर पर उन से दुआ की दर्ख़्वास्त करने का जवाज़ साबित हो गया, क्योंकि इब्ने कसीर और इब्ने कैयिम जौज़िया ने यह सराहत की है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम और औलियाए किराम अपनी क़बरों में ज़िन्दा होते हैं, ज़ाइरीन का कलाम सुनते हैं और अगर कोई उनकी बात सुनने वाले कान रखता हो तो उसको जवाब भी देते हैं।

रहा शैख़ नज्दी का यह कहना कि फिर औलियाए किराम वग़ैरहुम से भी तलबे शफ़ाअत करनी चाहिए, वरना हुज़ूर से भी तलबे शफ़ाअत बातिल है, तो यह शैख़ नज्दी की खुद फरेबी है, अह्ले इस्लाम हमेशा से अंबिया अलैहिमुस्सलाम के अलावा औलियाए किराम से भी अपनी दीनी और दुनियावी मुश्किलात में शफ़ाअत तलब करते हैं।

अह्ले इस्लाम का शफ़ाअत में मस्लक : अह्ले इस्लाम के नज़्दीक हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने शफ़ाअत का इज़्न मुतलक़ दे दिया है, बल्कि उम्मत के गुनहगार अफ़राद के लिए शफ़ाअत का हुक्म दिया है। सहाब-ए-किराम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपकी ज़िन्दगी में शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त की और वेसाल के बाद अह्दे सहाबा में लोगों ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्ख़्वास्त की और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत को तलब करना आज तक अह्ले इस्लाम का मअ्मूल है।

शफ़ाअत का इज़्ने मुतलक़ : हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत का इज़्ने मुतलक़ दे दिया गया है। उसके सुबूत में यह हदीस मुलाहिज़ा फरमाएं। इमाम बुख़ारी अपनी सही में रिवायत करते हैं :

(हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मुझको पाँच ऐसी चीज़ें दी गई हैं जो उस से पहले और किसी नबी को नहीं दी गईं। एक माह की मसाफ़त पर जो दुशमन हों, उन पर मेरा रुअब तारी कर दिया गया और तमाम रूए ज़मीन को मेरे लिए मस्जिद और तयम्मुम को जाइज़ कर दिया गया। पस मेरी उम्मत जब भी नमाज़ का वक़्त पाए तो उसको अदा कर ले और मेरे लिए माले ग़नीमत को हलाल कर दिया गया। उस से पहले किसी के लिए माले ग़नीमत हलाल न था और मुझे अल्लाह तआला ने शफ़ाअत अता कर दी और गुज़िश्ता नबी किसी एक क़ौम के लिए मबऊस होते थे और मैं तमाम लोगों की तरफ़ मबऊस हूँ।)

इस हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शफ़ाअत करने को अपनी खुसूसियत क़रार दिया है, हालांकि अंबियाए

साबेक़ीन को भी शफ़ाअत अता की गई है और उन्होंने अल्लाह से शफ़ाअत तलब की, मसलन हज़रत इब्राहीम ने फरमाया : وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (ابراہیم:۳۶) जो मेरी नाफ़रमानी करे तो तू बख़्शने वाला मेहरबान है) नीज़ फरमाया :

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ (ابراہیم:۴۱)

(ऐ अल्लाह! मेरी बख़्शिश फरमा, मेरे वालिदैन की और सब मुसलमानों की) और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने गुनहगार उम्मतियों की शफ़ाअत करते हुए फरमाया :

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ، وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (مائدہ:۱۱۸)

(अगर तू उनको अज़ाब दे तो तू मालिक है और बख़्श दे, तो तू ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है) और औलियाए साबेक़ीन ने शफ़ाअत करते हुए कहा : رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ- (حشر:۱۰)

(ऐ अल्लाह! हम को भी बख़्श दे और हम से पहले जो मुसलमान भाई फौत हो चुके हैं, उनको भी बख़्श दे।)

कुरआने करीम ने जो हज़रत इब्राहीम, हज़रत ईसा और औलियाए साबेक़ीन की शफ़ाअत करने का ज़िक्र फ़रमाया है, उस से साफ़ ज़ाहिर हो गया कि उन हज़रात को अल्लाह तआला ने शफ़ाअत का इज़्न दे दिया था, और न वह कभी शफ़ाअत न करते। अबरहा यह अम्र कि फिर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शफ़ाअत को अपनी खुसूसियत क्यों क़रार दिया है। उसका साफ़ और वाज़ेह जवाब यही है कि बाक़ी अंबिया और औलिया की शफ़ाअत सिर्फ़ अपनी-अपनी क़ौम के साथ ख़ास थी, यानी उनको सिर्फ़ अपनी क़ौम की शफ़ाअत का इज़्न दिया गया था और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत का इज़्न मुतलक़ फरमाया है। ولله الحمد

और चूंकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अलल-इत्लाक़ वल-उमूम शफ़ाअत का इज़्न दे दिया गया है, जिस क़द्र की अफ़राद की शफ़ाअत की इजाज़त दी जाएगी, आप इतने अफ़राद की शफ़ाअत फरमाएंगे। उसका जवाब यह है कि यह इज़्न ख़ास इज़्ने आम के मुनाफ़ी नहीं है।

शफ़ाअत का हुक्म देना : हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने सिर्फ़ शफ़ाअत का इज़्ने आम ही नहीं दिया, बल्कि शफ़ाअत करने का हुक्म दिया है, चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है : فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ (آل عمران:١٥٩)

(आप ख़ुद भी उनको मआफ़ कीजिए और अल्लाह तआला से भी उनकी शफ़ाअत कीजिए)

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ (الممتحنة:١٢)

(अल्लाह तआला से उनकी शफ़ाअत कीजिए, बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है)

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ (محمد:١٩)

(ऐ महबूब! अपने ख़ास अहबाब और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की बख़्शिश के लिए शफ़ाअत कीजिए।)

क़ुरआने करीम की इन आयात में अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुतलक़न मुसलमानों की शफ़ाअत करने का हुक्म दिया है, ख़्वाह दुनिया हो, बरज़ुख़ हो या आख़िरत और अहादीसे सहीहा से साबित है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया में भी मुसलमानों की शफ़ाअत की है, बरज़ुख़ में भी हर पीर और जुमेरात को शफ़ाअत फ़रमाते हैं और अब भी जब कोई शख़्स शफ़ाअत तलब करे, तो शफ़ाअत फ़रमाते हैं और आख़िरत में भी शफ़ाअत फ़रमाएंगे और उस के बाद भी जो शख़्स यह कहे कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत का इज़्न नहीं दिया गया है। उनके हक़ में उसके सिवा और क्या कहा जा सकता है कि या तो वह क़ुरआने करीम की इन आयाते सरीहा और अहादीसे सहीहा का इल्म नहीं रखते या बावजूद इल्म के इन आयात और अहादीस का इंकार करते हैं।

शफ़ाअत तलब करना : हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दुनिया, बरज़ुख़ और आख़िरत हर जगह शफ़ाअत तलब करना जाइज़ है और अह्दे रिसालत से लेकर आज तक तमाम अह्ले इस्लाम का मामूल रहा है कि वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत तलब करते चले आए हैं।

इमाम बुख़ारी अपनी सही में रिवायत करते हैं :

(हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मैंने तमाम उम्मतों के अहवाल देखे। हर नबी अपनी-अपनी उम्मत के साथ जा रहे थे, किसी नबी के साथ एक जमाअत होती, किसी के साथ दस शख़्स होते, किसी के साथ पाँच किसी के साथ एक और कोई नबी अलैहिस्सलाम अकेले जा रहे होते। मैंने देखा एक जगह बड़ी तादाद में लोग खड़े थे। मैंने कहा : ऐ जिब्रील क्या यह मेरी उम्मत है? जो जिब्रील ने अर्ज़ किया: उधर आसमान के किनारे की तरफ़ देखिए : मैंने देखा, तो लोगों की एक बहुत बड़ी जमाअत थी। जिब्रील ने कहा : यह आपकी उम्मत है और यह जो उन सबके आगे सत्तर हज़ार शख़्स जा रहे हैं, उन से न हिसाब लिया जाएगा न उनको अज़ाब दिया जाएगा। मैंने पूछा, क्यों? अर्ज़ किया : यह वह लोग हैं (जो बिला ज़रूरत) जिस्म पर दाग़ नहीं लगवाते थे और न (ज़मान-ए-जाहिलीयत) के मन्तर पढ़ते थे और न बदशगूनी करते थे अपने रब पर तवक्कुल करते थे, उकाशा ने कहा : हुज़ूर मेरे लिए शफ़ाअत कीजिए। अल्लाह तआला मुझे उन में से कर दे। आपने कहा ऐ अल्लाह उसको उन में से कर दे एक शख़्स और खड़ा हुआ और उसने अर्ज़ किया। मेरे लिए भी शफ़ाअत कीजिए। आपने फरमाया : तुम से पहले उकाशा कह चुका है।

इस हदीस शरीफ़ से एक वाज़ेह बात जो मालूम होती है, वह यह है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत का इज़्ने आम मिल चुका है और हर शख़्स की शफ़ाअत के लिए आपको ख़ास इजाज़त हासिल करने की ज़रूरत नहीं है, वरना उकाशा और दूसरे शख़्स की दर्ख़्वास्त शफ़ाअत पर आप पहले यह फ़रमाते, पहले मैं अल्लाह तआला से शफ़ाअत की इजाज़त हासिल कर लूं, फिर शफ़ाअत करूंगा। दूसरी अहम बात जो इस हदीस से ज़ाहिर होती है वह यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त करना जाइज़ है, वरना हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शफ़ाअत तलब करने से मना फरमा देते इस सिलसिले में शैख़ नज्दी का यह फ़र्क़ करना बातिल है कि ज़िन्दगी में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत तलब करना जाइज़ है और बाद अज़ हयात जाइज़ नहीं है। अगर ऐसा होता तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम खुद वज़ाहत फ़रमा देते कि मेरे वेसाल के बाद मुझ से शफ़ाअत तलब न करना, उसके बर ख़िलाफ़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस क़िस्म की हिदायात दी हैं जो हयात और बाद अज़ हयात का फ़र्क़ ख़त्म कर देती हैं, मसलन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

(हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिस शख़्स ने हज करके मेरे वेसाल के बाद मेरी क़ब्र की ज़्यारत की, गोया उस शख़्स ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़्यारत की है।)

पस जिस तरह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िदाहु नफ़्सी की हयाते मुक़द्देसा में आप से शफ़ाअत तलब करना जाइज़ था, इसी तरह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वेसाल के बाद भी आप से शफ़ाअत तलब करना जाइज़ है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत के उमूम और इत्लाक़ पर कुरआने करीम की यह आयत दलालत करती है :

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ

الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٦٤﴾ (النساء:٦٤)

(अगर मुसलमान गुनाह करके अपनी जानों पर ज़ुल्म करें आपकी बारगाह में आ जाएं, खुदा से मुआफ़ी चाहें और आप भी उनके लिए इस्तिग़फ़ार करें, तो यह लोग अल्लाह तआला को बख़्शने वाला मेहरबान पाएंगे।)

इस आयत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए यह रहनुमाई फ़रमाई है कि वह अगर गुनाह कर लें, तो हुज़ूर के पास आएं और आने का उसके सिवा और कोई मतलब नहीं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शफ़ाअत चाहें उसकी ताईद अगले जुमले से हो रही है, जिसमें फ़रमाया कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उनके लिए शफ़ाअत फ़रमा दें और उस आयत में अल्लाह तआला ने हुज़ूर की हयात या बाद अज़ हयात की कोई क़ैद नहीं लगाई, इसलिए इस आयत को अपने उमूम और इत्लाक़ पर ही रखना होगा और महज़ क़्यास फ़ासिद से उसको हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

की हयाते ज़ाहिरी के साथ मुकैयद नहीं किया जा सकता और अगर बिल-फ़र्ज़ उसको हुज़ूरे अकरम की हयाते ज़ाहिरी के साथ मुकैयद किया जाए, तो उसका मतलब यह होगा कि सहाबा किराम जो पहले ही हुज़ूरे अनवर की तर्बियत और फ़ैज़े सोहबत से मामूर थे। उनकी बख़्शिश के लिए तो एक सूरत मुक़र्रर कर दी और बाद के लोग जो हुज़ूर की तालीम व तर्बियत, फ़ैज़ाने नज़र और शर्फ़े सोहबत सब से महरूम थे और जो बुअद ज़माना की वजह से गुनाहों में ज़्यादा मुस्तग़रक़ और बख़्शिश के ज़राए के ज़्यादा मुस्तहिक़ थे। उनकी मग्फ़िरत के लिए अल्लाह तआला ने उम्मीद का कोई सहारा नहीं छोड़ा और यह अल्लाह तआला के फ़ज़्ले अमीम और उसकी वसीअ् रहमत से इंतिहाई मुस्तबअद है, फिर जब कुरआन के तमाम अहकाम तक्लीफ़ीया और सहाबा से लेकर क्यामत तक के तमाम मुसलमानों के लिए आम हैं, तो इस हुक्म को सिर्फ़ सहाबा के साथ क्यों ख़ास किया जाता है, क्या वहाबिया की इस पख़्सीस से एक आम ज़हन यह नहीं सोचेगा। अहकामे तक्लीफ़िया की मशक़्क़त में तो हम को सहाबा के साथ रखा और जब हुसूले शफ़ाअत के इंआम की बारी आई, तो हम को सहाबा किराम से काट कर रख दिया। उस नुक्ता आफ़रीनी से लोग इस्लाम के क़रीब होंगे या इस्लाम से दूर!

मुस्तनद मुफ़स्सेरीन ने इस आयत को अपने उमूम पर ही रखा है, चुनांच अल्लामा नस्फ़ी इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं :

(हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वेसाल के बाद एक आराबी हुज़ूरे अकरम की क़बरे अनवर पर आया और आपकी क़बर से लिपट गया और ख़ाक सर पर बिखेर कर कहने लगा जिस वक़्त कुरआने करीम नाज़िल हुआ हम ने सुना, आपने फरमाया : *वलौ अन्नहुम इज़ ज़लमू अल-आयह* में गुनाह करके अपनी जान पर जुल्म कर चुका हूँ और आपकी बारगाह में आ कर अल्लाह तआला से मुआफ़ी माँगता हूँ, हुज़ूर आप मेरे लिए अल्लाह तआला से शफ़ाअत कीजिए, उसके बाद क़ब्र से आवाज़ आई, जाओ तुम को बख़्श दिया गया।)

और हाफ़िज़ इब्ने कसीर इसी आयत के तहत लिखते हैं :

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَّلَمُوْا أَنْفُسَهُمْ (نساء:٦٤)

इस आयत में अल्लाह तआला ने तमाम ख़ताकारों और गुनाहगारों

को यह हिदायत की है कि जब उन से कोई ख़ता या गुनाह सरज़द हो जाए तो वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में आ जाएं और आपकी बारगाह में अल्लाह तआला से मुआफ़ी चाहें और हुज़ूर से भी सवाल करें कि वह अल्लाह तआला से उनके गुनाहों की मग़्फ़िरत के लिए शफ़ाअत करें और जब यह गुनाहगार इस तरह करेंगे, तो अल्लाह तआला रहमत फ़रमाएगा और उनको बख़्श देगा। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا (نساء:٦٤)

और उलमा की एक अज़ीम जमाअत ने ज़िक्र किया है जिस में से शैख़ अबुल-मन्सूर अस्सबाइह ने भी अपनी किताब "अश्शामिल" में लिखा है कि उतबी बयान करते हैं कि वह एक दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़बर मुबारक के पास बैठे हुए थे। एक आराबी आया और कहने लगा : *"अस्सलामु अलैका या रसूलुल्लाह"* मैंने सुना अल्लाह तआला ने फरमाया : लोग अपनी जानों पर गुनाह करके जुल्म कर बैठें तो ऐ महबूब आपके पास आ जाएं और अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत चाहें और आप भी उनकी शफ़ाअत कर दें, तो अल्लाह तआला उनको बख़्श देगा, पस मैं आपके पास इस हाल में आया हूँ कि अल्लाह तआला से अपने गुनाहों पर इस्तिग़फ़ार कर रहा हूँ और आप से अपने रब के हुज़ूरे शफ़ाअत का तालिब हूँ। फिर उसने यह अश्आर पढ़े : ऐ उन तमाम लोगों से बरतर जिनके अज्ज़ा ज़मीन में मदफून हैं और उन अज्ज़ा की खुशबू से तमाम ज़मीनें और टीले महक उठे। मेरी जान इस क़ब्र पर फ़िदा हो जिस में आप साकिन हैं, इसमें अफ़्व दर गुज़र है, सख़ावत है और रहमत व करम है। यह अश्आर पढ़ने के बाद आराबी चला गया। मुझे अचानक नींद आ गई, देखा तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे हैं : ऐ उतबी इस आराबी के पास जाओ और उसको जाकर यह नवेद सुनाओ कि अल्लाह तआला ने उसको बख़्श दिया है।)

इस आयत में हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने वाजिब कुछ लिख दिया है जिसको तमाम अह्ले इस्लाम अह्दे रिसालत से लेकर आज तक कहते चले आए हैं। इस आयत की तफ़्सीर में हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने साफ़-साफ़ लिख दिया है कि अल्लाह तआला ने इस आयत में मुसलमानों को हुज़ूर से शफ़ाअत तलब करने की रहनुमाई फरमाई है।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर वह शख़्स हैं जिन्होंने इब्ने तैमिया से बराहे रास्त इस्तिफ़ादा किया है, उन्होंने भी हुज़ूर से तलबे शफ़ाअत को जाइज़ क़रार दिया है और शैख़ नज्दी इब्ने तैमिया के चार सौ साल बाद ज़ाहिर हुए और उन्होंने बद-अक़ीदगी में इस क़द्र गुलू किया कि इब्ने तैमिया, इब्ने कसीर और इब्ने क़ैयिम की रूहें भी उन्हें हैरत से तक्ती रह गईं। इब्ने तैमिया भी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और अक़ीदत से महरूम था, लेकिन शैख़ नज्दी इस महरूमियत में इब्ने तैमिया को भी कोसों मील पीछे छोड़ गया और कश्फ़ुश्शुबहात में बेग़ैर किसी रुकावट और हिजाब के साफ़ लिख दिया :

"तुम ख़ूब जानते हो कि उन लोगों का महज़ इक़्रारे तौहीद करना उनको इस्लाम में दाख़िल नहीं करता और उनका अंबिया, मलाइका और औलिया से शफ़ाअत तलब करना और उनकी ताज़ीम करना और उनका क़ुर्ब चाहना यही वह सबब है जिसके पेशे नज़र उनको क़त्ल करना और उनका माल लूटना जाइज़ हो गया है।

नबियों और वलियों की ताज़ीम और क़ुर्ब चाहना :

अंबियाए किराम और औलियाए इज़ाम की ताज़ीम के बारे में भी चन्द दलाइल मुलाहिज़ा फरमा लीजिए, कुरआने करीम में अल्लाह तआला फरमाता है : لَا تَجْعَلُوْا دُعَاءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ (نور:٦٣)

रसूलुल्लाह को इस तरह न बुलाया करो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो) नीज़ फरमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ
بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲

(ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज़ पर ऊंची मत करो और न ज़ोर से उनके साथ बात करो जैसे आपस में ज़ोर से बात करते हो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे तमाम आमाल ज़ाया हो जाएं। और तुमको ख़बर भी न हो सके।)

ग़ौर फरमाइए जिनको आमियाना अन्दाज़ में बुलाना नाजाइज़ हो, जिनकी आवाज़ पर ऊंची आवाज़ हो जाने से आमाल के ज़ाए हो जाने का ख़तरा हो जिनके फ़ैसले के ख़िलाफ़ दिल में नागवारी आए, तो

ईमान चला जाता है। उनकी ताज़ीम अल्लाह तआला को किस क़द्र मत्लूब होगी और यह ताज़ीम सिर्फ़ इशारात व किनायात और इल्तिज़ामी दलाइल से साबित नहीं, बल्कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर की बेअ्सत से ढाई हज़ार बरस पहले तौरात में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम का हुक्म नाज़िल फ़रमाया था और कुरआने करीम में इस हुक्म की फिर तज्दीद फ़रमाई और इरशाद किया :

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾ (اعراف:١٥٧)

(पस जो लोग नबी उम्मी पर ईमान लाएंगे, उनकी ताज़ीम करेंगे और दीन में उनकी मदद करेंगे और इस नूर (कुरआने करीम की पैरवी करेंगे जो उन पर नाज़िल हुआ, वही कामयाब व कामरान होंगे)।

कुरआने करीम की इस नस्से सरीह के बाद भी क्या कोई शख़्स इस बात में तरद्दुद कर सकता है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम और आपका कुर्ब हासिल करना अल्लाह तआला का मत्लूब है या नहीं। ताज़ीम के बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कुर्ब चाहने के बारे में भी मुलाहिज़ा फरमाएं :

एक मरतबा रबीआ बिन कअब अस्लमी की ख़िदमत से खुश हो कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

(माँगो क्या माँगते हो, अर्ज़ किया : हुज़ूर जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त चाहता हूँ।)

और कुरआने करीम में है :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ

وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ (نساء:٦٩)

(जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेंगे, वह आख़िरत में अल्लाह से इन्आम पाने वाले नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेहों के साथ होंगे।)

यह आयत इस मौक़ा पर नाज़िल हुई थी। जब सौबान रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया हुज़ूर क्या यह मुम्किन है कि जन्नत में आपके साथ रहूँ।

इन तमाम आयात और अहादीस का मुक़्तज़ा इसके सिवा कुछ नहीं

कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम और कुर्ब चाहना अल्लाह का मत्लूब और सहाबा का मअ्मूल है।

और वलियों की ताज़ीम के बारे में इमाम बुख़ारी की यह रिवायत मुलाहिज़ा फरमाएं :

(हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह ताअला इरशाद फरमाता है : जो शख़्स मेरे वली से अदावत रखता है, मैं उस से जंग का ऐलान कर देता हूँ।)

कुरआने करीम की आयाते सरीहा, अहादीसे सहीहा और वहाबिया के मुस्तनद मुफ़स्सेरीन और अह्ले इस्लाम के तआमुल से यह बात आफ़ताब से ज़्यादा रौशन हो गई कि अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम और औलियाए इज़ाम की ताज़ीम करना, उनका कुर्ब चाहना और उन से शफ़ाअत तलब करना अल्लाह तआला का मामूर और मत्लूब है। सहाब-ए-किराम और ख़्यारे मुस्लेमीन का मअ्मूल है और तमाम अह्ले इस्लाम के नज़्दीक यह आमाल महमूद और मस्ऊद हैं। यह और बात है कि शैख़ नज्दी और उनके मुत्तबईन के नज़्दीक यही उमूर कुफ़्र व शिर्क हैं और उन्हीं आमाल की बिना पर वह मुसलमानों की जान व माल को अपने लिए मुबाह और हलाल कर लेते हैं।

"इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा"

तमाम अह्ले इस्लाम का अक़ीदा है कि अंबियाए किराम और औलियाए इज़ाम से उनकी ज़िन्दगी में और वेसाल के बाद से मदद तलब करना जाइज़ है, उसके बरख़िलाफ़ शैख़ नज्दी ने अंबिया किराम और औलियाए इज़ाम से उनकी ज़िन्दगी में जब वह क़रीब हों, तो उन से मदद तलब करना जाइज़ लिखा है और हालते ग़ैबवीयत में और वेसाल के बाद उन से मदद तलब करने को नाजाइज़ लिखा है, चुनांचे लिखते हैं :

(पाक है, वह ज़ात जिसने अपने दुश्मनों के दिलों पर मुहर लगा दी है जिन चीज़ों पर मख़्लूक़ को कुदरत है। उन चीज़ों में मख़्लूक़ से मदद तलब करना जाइज़ है और हम उसका इंकार नहीं करते जैसा कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्सा में बयान

फ़रमाया कि हज़रत मूसा की क़ौम के एक शख़्स ने उन से अपने दुश्मन के ख़िलाफ़ मदद चाही या जैसे कोई शख़्स जंग में अपने साथियों से मदद तलब करता है जिस पर उसको क़ुदरत होती है। हम उस इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा से मना करते हैं जो लोग औलिया अल्लाह की क़बरों पर या उनकी ग़ैबवीयत में उन से मदद तलब करते हैं। उन अशिया पर जिन में अल्लाह तआला के सिवा किसी को क़ुदरत नहीं है।)

शैख़ नज्दी का यह कलाम बवज्हे बातिल है।

अव्वलन : इसलिए कि शैख़ नज्दी का हयात और बाद अज़ हयात का फ़र्क़ करना बातिल है, क्योंकि अगर ग़ैरुल्लाह से इस्तिम्दादे कुफ़्र और शिर्क है, तो उनकी ज़िन्दगी में भी कुफ़्र व शिर्क होगी और उनकी ज़िन्दगी के बाद भी कुफ़्र व शिर्क होगी और अगर उनकी ज़िन्दगी में उन से मदद चाहना शिर्क नहीं है, तो बाद अज़ ममात भी शिर्क न होगा।

सानियन : क़ुदरत का फ़र्क़ करना भी बातिल है, क्योंकि हक़ीक़तन हर चीज़ पर अल्लाह तआला क़ादिर है और अल्लाह तआला की देन और अता से उसकी दी हुई क़ुदरतों से अंबिया और औलिया वेसाल से पहले और वेसाल के बाद माँगने वालों की मदद करते हैं दलाइल हस्बे ज़ैल हैं :

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़बर से इस्तिग़ासा : इस से पहले शफ़ाअत की बहस में हम ज़िक्र कर चुके हैं कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अपनी तफ़्सीर में उतबी की यह रिवायत ज़िक्र की है। एक आराबी ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़बरे मुबारक पर आकर आप से शफ़ाअत तलब की। उसके अलावा इमाम बैहक़ी ने अपनी सनद के साथ दलाइलुन्नुबुव्वह में रिवायत किया है और अल्लामा सुबकी ने उसको पूरी सनद के साथ शिफ़ाउस्सिक़ाम में नक़ल किया है :

(मालिकुद्दार बयान करते हैं कि एक मरतबा हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में क़हत पड़ गया। एक शख़्स हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़बरे मुबारक पर आया और कहने लगा : या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत के लिए बारिश की दुआ कीजिए, क्योंकि मुसलमान भूक से हिलाक हो

रहे हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको ख़्वाब में ज़्यारत से मुशर्रफ़ किया और फ़रमाया : उमर के पास जाओ, उन से मेरा सलाम कहो और उनकी खुशख़बरी दो कि अन्क़रीब बारिश होगी और उन से कहो कि तदब्बुर से काम लें। वह शख़्स हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास गया और उनका माजरा बयान किया हज़रत उमर रोने लगे और कहने लगे ऐ अल्लाह उमर वही काम छोड़ता है जिस की उसको ताक़त न हो।)

इस असर को हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने अल-इसाबा हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल-बर ने इस्तीआब में और तबरानी ने मोअ़जम सग़ीर में बयान फरमाया है।

इस असर यह यह मालूम होता है कि ख़ैरुल-क़ुरूने के क़रने ख़ैर में एक शख़्स ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़बर से इस्तिग़ासा किया और हज़रत उमर की ख़िदमत में यह वाक़या बयान किया और किसी सहाबी ने हत्ता कि हज़रत उमर ने भी उस पर न कोई नकीर और न मुलामत की। पस साबित हुआ कि क़बर से इस्तिग़ासा सहाबा का मअ़मूल था, क्योंकि इस वाक़या को वहाँ किसी अजनबी हैसियत से नहीं देखा गया।

हालते ग़ैबूबत में इस्तिग़ासा : शैख़ नज्दी ने यह भी लिखा है कि जब कोई शख़्स पास मौजूद है, तो उस से इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा जाइज़ है और जब वह दूर या ग़ायब हो तो उस से मदद तलब करना जाइज़ नहीं है हालांकि अक़्लन यह फ़र्क़ बातिल है, क्योंकि जो चीज़ क़रीब से मूजिबे शिर्क होगी, वह दूर से भी मूजिबे शिर्क होगी। उसके अलावा हदीस सही से साबित है कि सहाबा किराम ने दूर से और हाले ग़ैबूबत में इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा किया है, चुनांचे इमाम बुख़ारी और क़ाज़ी अयाज़ और दीगर मुहद्देसीने किराम बयान करते हैं :

(हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर का पैर सुन हो गया, उन से किसी शख़्स ने कहा : जो तुम को लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब हो, उसको याद करो, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने बआवाज़े बुलन्द कहा : या मुहम्मद! तो उनका पाँव उसी वक़्त ठीक हो गया।)

हज़रत मुल्ला अली क़ारी शरह शिफ़ा में या मुहम्मदाह के तहत

लिखते हैं :

(हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने इज़्हारे मुहब्बत के ज़िम्न में बतौरे इस्तिम्दाद व इस्तिग़ासा या मुहम्मद पुकारा।)

इस असर से यह साबित हो गया कि हाले ग़ैबूबत में इस्तिग़ासा करना सहाबा किराम का मअ़मूल था और जो चीज़ सहाबा किराम के मअ़मूलात से हो, उस पर अमल करना ही सिराते मुस्तक़ीम है और उस से हट कर अमल के लिए रास्ता तलाश करना या मामूल सहाबा को ग़लत बल्कि शिर्क क़रार देना बदतरीन गुम्राही है।

कुदरत और अद्मे कुदरत का मुग़ालता : शैख़ नज्दी ने यह भी लिखा है कि इन उमूर में बन्दों से इस्तिग़ासा करना जाइज़ है जो (आम हालात में या आदतन) उनकी कुदरत में हों जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से एक इस्राईल ने मदद चाही या जैसे कोई शख़्स लड़ाई में किसी दोस्त से मदद तलब करता है। उसका मतलब यह है कि जो उमूर आम हालात में और आदतन बन्दों की कुदरत में नहीं होते, उनमें बन्दों से इस्तिग़ासा जाइज़ नहीं है। शैख़ नज्दी का यह फ़र्क़ करना कुरआने करीम के सराहतन ख़िलाफ़ है।

तख़्त बिल्क़ैस यमन में था और बैतुल-मुक़द्दस से सैंकड़ों मील की मसाफ़त पर वाक़े था। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने उस तख़्त को मंगाना चाहा तो दरबारियों से कहा

يَاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ (نمل:٣٨)

ऐ दरबारियो! तुम में से कोई शख़्स उस तख़्त को उनके मुसलमान होने से पहले ला कर दे सकता है) यह उस वक़्त की बात है कि बिल्क़ैस और उसके साथी हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात के लिए चल पड़े थे। एक बहुत बड़े जिन्न ने अर्ज़ किया : मैं आपके दरबार बर्ख़्वास्त होने से पहले ला कर हाज़िर कर दूँगा।

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ (نمل:٣٩)

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम उस से भी पहले चाहते थे, चुनांचे उन्होंने फरमाया : मैं उस से भी पहले चाहता हूँ, तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के कातिब आसिफ़ बिन बरख़िया ने कहा :

أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ (نمل: ٤٠)

(मैं पलक झपकने से पहले उस तख़्त को हाज़िर कर दूँगा, चुनांचे ऐसा ही हो गया।) हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का दरबार बर्ख़ास्त होने से पहले तख़्ते बिल्क़ैस मंगवाना और उनके कातिब आसिफ़ बिन बर्ख़िया का पलक झपकने से पहले ला कर हाज़िर कर देना ख़्वाह यह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का मोजज़ा हो या आसिफ़ बिन बर्ख़िया की करामत। इस वाक़िया से यह बात बहरहाल साबित हो गई कि जिन चीज़ों पर आदतन आम लोगों को कुदरत नहीं होती। उन चीज़ों के हुसूल के लिए औलियाए किराम से रुजूअ् करना सरासर हक़ और सरतापा हिदायत है, वरना हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम दरबारियों से यह न कहते कि मुझे दरबार बर्ख़ास्त होने से पहले तख़्त चाहिए, न कुरआने करीम इस वाक़या को बयान करता, बल्कि कुरआने करीम ने इस वाक़या को बयान करके यह ज़ाहिर कर दिया है कि जिन चीज़ों का हुसूले आम लोगों की कुदरत में नहीं होता, उनके हुसूल के लिए औलियाए किराम की तरफ़ रुजूअ़ करना चाहिए।

सैयदह मैमूना की क़बर से इस्तिग़ासा : साबेक़ा सुतूर में हम ने औलियाए किराम की ज़िन्दगी में उन उमूर में उन से इस्तिग़ासा की दलील फराहम की थी जो आम लोगों की कुदरत में नहीं होते। अब वेसाल के बाद उन से उन चीज़ों के हुसूल में इस्तिग़ासा पर दलील मुलाहिज़ा फरमाएं जो आम लोगों की कुदरत में नहीं होते। सैयद अहमद बरैलवी मुतवफ़्फ़ी 1256 हिज० अक़ाइद में शैख़ नज्दी के हमनवा थे, चुनांचे शैख़ अत्तार ने लिखा है :

हिन्दुस्तान में सैयद अहमद बरैलवी ने उनके मिशन को ज़िन्दा किया और वहाँ के कुफ़्फ़ार (यानी अस्लाफ़ की रिवायात के हामिल मुसलमानों) के साथ बरसरे पैकार रहे।

सैयद मुहम्मद अली, सैयद अहमद बरैलवी के बड़े भांजे के मुरीद और ख़लीफ़ा मिजाज़ थे। सैयद अहमद ने उनको बड़ी बरकात से नवाज़ था और बक़ौल सैयद अहमद बरैलवी अल्लाह तआला ने सैयद मुहम्मद अली को सैयद अहमद बरैलवी की बैअ़त लेने के लिए वकील

मुक़र्रर किया था (मख़्ज़ने अहमदी, स० 60) यानी सैयद अहमद बरैलवी शैख़ नज्दी के परतौ थे और सैयद अली सैयद अहमद के मक़्बूल बारगाह थे, खुलासा यह हुआ कि सैयद मुहम्मद अली भी सैयद अहमद बरैलवी की तरह शैख़ नज्दी के अफ़्कार के पैरूकार थे। बहरहाल चूंकि सैयद मुहम्मद अली शैख़ नज्दी के गरोह के आदमी थे, इसलिए उनके अक़्वाल शैख़ नज्दी के इत्तिबा पर हुज्जत हैं, मुलाहिज़ा फ़रमाएं, लिखते हैं :

(आधी रात के क़रीब हम वादी सरफ़ पर पहुंचे जहाँ उम्मुल-मुमिनीन सैयदह मैमूना रज़ि अल्लाहु अन्हा का मज़ार फाइज़ुल-अनवार है, अल्लाह तआला उन पर और उनके शौहर यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर रहमतें नाज़िल फ़रमाए। इत्तिफ़ाक़ की बात है कि उस रोज़ हमारे पास खाने पीने के लिए कुछ भी न था। जब में सो कर उठा, तो सख़्त भूख लगी हुई थी, मेरी ताक़त में इज़्मेहलाल आ गया था और चेहरा कुम्ला गया था, रोटी मांगने के लिए मैं हर किसी के पास गया, लेकिन मतलब को न पहुंचा, आख़िर बेबस हो कर सैयदह मैमूना रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की क़बर की ज़्यारत के लिए गया और फ़क़ीराना अन्दाज़ से सदा लगाई और मैंने आप से अर्ज़ किया : ऐ मेरी दादी जान में आपका मेहमान हूँ कोई चीज़ खाने की इनायत फ़रमाएं और अपने दर और लुत्फ़ व करम से महरूम न फ़रमाएं। फिर मैंने सलाम अर्ज़ किया और फातिहा पढ़ कर रूह को सवाब पहुंचाया और आपकी क़बरे अनवर पर सर रख दिया। अल्लाह तआला जो राज़िक़े मुतलक़ है और हमारे अहवाल से वाक़िफ़ है, उसकी तरफ़ से मुझको अंगूर के दो ताज़ा ख़ोशे मिले और अजीब तर बात यह है कि वह अय्यामे सरमा थे और उन दिनों वहाँ अंगूर का एक दाना भी नहीं मिलता था। उन ख़ोशों में से कुछ मैंने वहीं खाए और बाक़ी हुजरा से बाहर आ कर मैंने एक-एक दाना हर एक को तक़्सीम किया और फ़िल-बदीह यह अश्आर कहे : हज़रत मरयम ने अगर अय्यामे सरमा में जन्नत के मेवे फ़ज़्ले ख़ुदा से पाए, उनकी यह करामत फ़क़त उनकी ज़िन्दगी में थी और उनकी वफ़ात के बाद यह करामत साबित नहीं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजा की

वफ़ात के इतनी सदियाँ गुज़रने के बाद भी ऐ देखने वाले देख कि मैंने आपसे इस करामत का जुहूर पाया और सद हज़ार नेमत के हुसूल का मरतबा पाया)।

ग़ौर फरमाइए कि क़बर से इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा की यह वही सूरत है जिसको वहाबिया की ज़ुबानें कुफ़्र व शिर्क कहते नहीं थकतीं। सैयद अहमद बरैलवी के भांजे और मुसन्निफ़ मख़्ज़ने अहमदी सैयद मुहम्मद अली ने उम्मुल-मुमिनीन की क़बर से इस्तिग़ासा किया है और उसको सैयद अहमद की सवानेह में लिख कर छाप दिया है, इसके बावजूद वह कट्टर मुवह्हिद और माहिये बिदअत व शिर्क के लक़ब से नवाज़े जाते हैं और दीगर अह्ले इस्लाम अगर यही अमल कर लें तो वह काफिर व मुश्रिक और मुबाहुल-माल वद्दम क़रार दिए जाते हैं।

बाब (3)

शैख़ नज्दी के बारे में आलमे इस्लाम के तअस्सुरात

शैख़ नज्दी ने जो अपने ख़ान-ए-साज़ अक़ाइद की आलमे इस्लाम को दावत दी और उस दावत के इंकार को वज्हे कुफ़्र क़रार दे कर तमाम मुसलमानों को वाजिबुल-क़त्ल क़रार दिया और जहाँ-जहाँ उसका बस चला, उसने अपने उन मज़्मूम मक़ासिद की तक्मील में कोई कसर बाक़ी नहीं छोड़ी। शैख़ नज्दी की इस तक्फ़ीरे आम और बहीमाना क़त्ल व ग़ारतगरी के ख़िलाफ़ उस वक़्त से लेकर आज तक के उलमा उसकी तहरीक के बतलान पर किताबें लिखते चले आ रहे हैं। हम क़ारेईन के सामने इन बेशुमार किताबों में से चन्द किताबों के इक़्तिबासात पेश करते हैं और इब्तिदा में शैख़ नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब मुतवफ़्फ़ी 1206 हिज० के भाई सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब मुतवफ़्फ़ी 1208 हिज० की शहरा आफ़ाक़ किताब अस्सवाइकुल-इलाहिया के चन्द इक़्तिबासात पेश करते हैं :

शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब मुतवफ़्फ़ी 1208 हिज० : शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब शैख़ नज्दी की तक्फ़ीर मुस्लेमीन पर रद्द करते हुए लिखते हैं :

तौहीद व रिसालत की गवाही से मुसलमानों की तक्फ़ीर पर रद्द : तुम्हारे अक़ाइद और तक्फ़ीर के सही न होने पर दलील यह है कि तौहीद व रिसालत की गवाही के बाद इस्लाम का सबसे अज़ीम रुक्न नमाज़ है, इसके बावजूद जो शख़्स रियाकारी के तौर पर नमाज़ पढ़ता है, उसके बारे में फ़ुक़हा ने ज़िक्र किया है कि अल्लाह तआला उस शख़्स की नमाज़ क़ुबूल नहीं फरमाएगा, बल्कि फरमाएगा : मैं दूसरे शरका की निस्बत अपने शिर्क से ज़्यादा बेपरवाह हूँ। जिस शख़्स ने अपने किसी अमल में मेरे साथ किसी और को शरीक

कर लिया मैं उसके अमल और शिर्क को छोड़ देता हूँ और क़्यामत के दिन रियाकार से अल्लाह ताअला फरमाएगा : जा कर अपना अज्र उस शख़्स से तलब कर जिसके लिए तूने अमल किया था। ऐसे शख़्स के बारे में फ़ुक़हाए इस्लाम ने यह कहा है कि उसका अमल बातिल है और यह नहीं कहा कि उसको क़त्ल करना और उसका माल लूटना जाइज़ है, जबकि तुम उस से बहुत हल्की और मामूली बात को कुफ़्र क़रार देते हो।

सज्दा की बिना पर तक्फ़ीरे मुस्लेमीन का रद्द :

इसी तरह नमाज़ के तमाम अरकान में सबसे अहम रुक्न सज्दा है और नज़्र व नियाज़ और ग़ैरुल्लाह को पुकारने की बनिस्बत सज्दा ज़्यादा अहमीयत का हामिल है, हालांकि फ़ुक़हाए इस्लाम ने सज्दा के अहकाम में भी फ़र्क़ किया है और कहा है कि जो शख़्स सूरज, चाँद, सितारे या बुत को सज्दा करे, वह काफिर है और जो शख़्स उनके अलावा किसी और को सज्दा करे, वह कुफ़्र नहीं, गुनाहे कबीरा है। लेकिन हक़ीक़ते हाल यह है कि तुम फ़ुक़हाए इस्लाम और उनकी इबारात की तक़्लीद नहीं करते, बल्कि जो कुछ तुम ने बतौरे खुद समझा है, इसी में हक़ को मुन्हसिर समझते हो और उसको ज़रूरियाते दीन से क़रार देकर उसके मुंकिर को काफिर क़रार देते हो और जिन मुश्तबेह इबारात से तुम इस्तिदलाल करते हो, वह महज़ तुम्हारी मुग़ालता आफ़रीनी है। हमारा तुम से मुतालबा यह है कि तुम अपने खुद साख़्ता मज़्हब की ताकीद में फ़ुक़हाए इस्लाम में से किसी मुस्लिम फ़क़ीह की नस्से सरीह पेश करो, और अगर तुम ऐसी किसी इबारत के पेश करने के बजाए महज़ सब्ब व शितम और तक्फ़ीर पर इक्तिफ़ा करते हो, तो हम तुम्हारे शर से अल्लाह की पनाह में आते हैं।

तक्फ़ीरे मुस्लेमीन के रद्द पर पहली हदीस :

मुसलमानों की तक्फ़ीर के बारे में तुम्हारा मूक़िफ़ इसलिए भी सही नहीं है कि ग़ैरुल्लाह को पुकारना और नज़्र व नियाज़ क़तअन कुफ़्र नहीं, हत्ता कि उसके मुर्तकिब मुसलमान को मिल्लते इस्लामिया से ख़ारिज कर दिया जाए, क्योंकि हदीस सही में है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : शुबहात की बिना पर हुदूद साक़ित कर दो और हाकिम ने अपनी सही में और अबू उवाना और

बज़्ज़ार ने सनद सही के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से रिवायत किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जब किसी शख़्स की सवारी किसी बेआब व गियाह सहरा में गुम हो जाए तो वह तीन बार कहे ऐ इबादल्लाह! (ऐ अल्लाह के बन्दो) मुझको अपनी हिफ़ाज़त में ले लो, तो अल्लाह तआला के कुछ बन्दे हैं तो उसको अपनी हिफ़ाज़त में ले लेते हैं, और तबरानी ने रिवायत किया है कि अगर वह शख़्स मदद चाहता हो तो यूं कहे कि ऐ अल्लाह के बन्दो! मेरी मदद करो। इस हदीस को फुक़हाए इस्लाम ने अपनी कुतबे जलीला में ज़िक्र किया है और उसकी इशाअते आम की है और मोतमद फुक़हा में से किसी ने उसका इंकार नहीं किया, चुनांचे इमाम नौवी ने "किताबुल-अज़्कार" में उसका ज़िक्र किया है और इब्नुल-कैयिम ने अपनी किताब "अल-कलमुत्तैयिब" में उसका ज़िक्र किया है और इब्ने मुफ़्लह ने "किताबुल-आदाब" में और इब्ने मुफ़्लह ने इस हदीस को ज़िक्र करने के बाद लिखा है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल के साहबज़ादे बयान करते हैं कि मैंने अपने वालिद (यानी इमाम अहमद बिन हंबल) से सुना, वह फरमाते थे कि मैंने पाँच बार हज किए हैं, एक बार मैं पैदल जा रहा था और रास्ता भूल गया, मैंने कहा : ऐ इबादल्लाह मुझे रासता दिखाओ, मैं यूंही कहता रहा, हत्ता कि मैं सही रास्ता पर आ लगा।

अब मैं यह कहता हूँ कि जो शख़्स किसी ग़ायब या फ़ौत शुदह बुज़ुर्ग को पुकारता है और तुम उसकी तक्फ़ीर करते हो, बल्कि तुम महज़ अपने क़्यासे फ़ासिद से यह कहते हो कि उस शख़्स का शिर्क उन मुश्रेकीन के शिर्क से भी बढ़ कर है जो बह्रो बर में इबादत के ग़रज़ से ग़ैरुल्लाह को पुकारते थे और उसके रसूल की अलल-एलान तक्ज़ीब करते थे। क्या तुम इस हदीस और उसके मुक़्तज़ी पर उलमा और अइम्मा के अमल को उस शख़्स के लिए असल नहीं क़रार देते जो बुज़ुर्गों को पुकारता है और महज़ अपने फासिदे क़्यास से उसको शिर्के अक्बर क़रार देते हो, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। जबकि शुबहात से हुदूद साक़ित हो जाती हैं, तो इस मज़्बूत असल की बिना पर ऐसे शख़्स से तक्फ़ीर क्योंकर न साक़ित होगी। नीज़ मुख़्तसर अरौज़ा में कहा है : जो शख़्स तौहीद व रिसालत की गवाही देता हो, उसको किसी बिदअत की बिना पर काफिर नहीं कहा जाएगा और इब्ने तैमिया

ने भी इसी बात को तरजीह दी है। (जबकि जो शख़्स फौत शुदह बुज़ुर्गों को पुकारता है, वह किसी बिदअत का मुर्तकिब भी नहीं है, क्योंकि उसका यह फ़ेअ़्ल एक मज़्बूत असल यानी हदीस सही (जिस का ऊपर ज़िक्र हो चुका है) और सलफ़ के अमल पर मब्नी है। (क़ादरी गुफ़ेरा लहू)।

आगे चल कर शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब इसी मौज़ू पर लिखते हैं :

तक्फ़ीरे मुस्लेमीन के रद्द पर दूसरी हदीस : एक और मक़ाम पर शैख़ नज्दी की तक्फ़ीर का रद्द करते हुए शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब लिखते हैं :

तुमने जो मुसलमानों की तक्फ़ीर की बुनियाद पर अपने मज़्हब को क़ाइम किया है, उसके बातिल होने पर सही बुख़ारी की यह हदीस दलालत करती है जिस को मुआविया बिन सुफ़ियान रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है: "हुज़ूर ने फरमाया जिस शख़्स के साथ अल्लाह ख़ैर का इरादा करता है, उसको दीन में फ़क़ीह बना देता है और यह उम्मत हमेशा सही दीन पर क़ायम रहेगी, यहाँ तक कि क़्यामत आ जाए।" इस हदीस की हमारे मत्लूब पर इस तरह दलालत है कि इस हदीस में हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़्यामत तक उम्मत के दीन पर मुस्तक़ीम रहने की ख़बर दी है और यह हक़ीक़त वाक़ेईया है कि जिन उमूर को तुम वज्हे कुफ़्र क़रार देते हो। यह इब्तिदाए इस्लाम से लेकर आज तक तमाम दुनियाए इस्लाम में उरूज और मामूल हैं, पस अगर औलिया अल्लाह के मक़ाबिर बड़े-बड़े बुत होते और उन से इस्तिम्दाद और इस्तिग़ासा करने वाले काफिर होते, तो तमाम उम्मत सही दीन पर क़ाइम न होती, बल्कि उसके बरअक्स सारी उम्मत काफिर और तमाम बिलादे इस्लाम, बिलादे कुफ़्र बन जाते हैं जिन में अलल-ऐलान बुतों की पूजा हो रही होती या बुतों की इबादत पर इस्लाम के अहकाम जारी होते। फिर हुज़ूर के फरमान के मुताबिक़ इस उम्मत की दीने सही पर इस्तिक़ामत की हदीस किस तरह सही होती और यह बात बिल्कुल ज़ाहिर है।

एक और मक़ाम पर शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब लिखते हैं :

तक्फ़ीरे मुस्लेमीन के रद्द पर तीसरी हदीस :

शैख़ नज्दी का तक्फ़ीरे मुस्लेमीन पर रद्द करते हुए शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब लिखते हैं :

तुम्हारे मज़्हब के बुतलान पर बुख़ारी और मुस्लिम की यह हदीस भी दलालत करती है :

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : कुफ़्र का गढ़ मश्रिक़ की तरफ़ होगा। एक और रिवायत में है कि ईमान यमानी है और फित्ना वहाँ होगा जहाँ से शैतान का सींग तुलूअ़ होगा।

नीज़ बुख़ारी और मुस्लिम में हदीस है : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : दर आं हालेकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहर-ए-अनवर मश्रिक़ की तरफ़ था, फित्ना उसी जानिब से ज़ाहिर होगा।

और बुख़ारी की रिवायत में (हुज़ूर का फरमान) इस तरह है कि आपने फरमाया : ऐ अल्लाह हमारे शाम और हमारे यमन में बरकत नाज़िल फरमा। सहाबा ने अर्ज़ किया : हुज़ूर हमारे नज्द में आपने फरमाया : ऐ अल्लाह हमारे शाम में और हमारे यमन में बरकत नाज़िल फरमा। सहाबा ने अर्ज़ किया : हमारे नज्द में। आपने तीसरी बार फरमाया : वहाँ से ज़लज़लों और फित्नों का जुहूर होगा।

और इमाम अहमद बिन हंबल ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा से मरफ़ूअन रिवायत किया है : ऐ अल्लाह हमारे मदीना में बरकत नाज़िल फरमा, हमारे साअ़ और हमारे मुद में और हमारे शाम में और हमारे यमन में। फिर मश्रिक़ की तरफ़ मुँह करके फरमाया: यहाँ से शैतान का सींग तुलूअ़ होगा और फरमाया : यहाँ से ज़लज़लों और फित्नों का जुहूर होगा।

मैं गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिला रैब सादिक़ुल-क़ौल हैं, अल्लाह तआला की बरकतें और रहमतें आप पर और आपकी आल और अस्हाब पर नाज़िल हों, आपने हक़ अमानत अदा कर दिया और फराइज़े रिसालत की तबलीग़ मुकम्मल कर दी।

शैख़ तक़ीयुद्दीन ने कहा : मदीना की जानिब शर्क़ी (नज्द) से मुसैलमा कज़्ज़ाब का ज़ुहूर हुआ और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वेसाल के बाद सबसे पहले जिस फ़ित्ने का ज़ुहूर हुआ, वह मुसैलमा कज़्ज़ाब का दावा नुबुव्वत था जिसका हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने मुकम्मल इस्तीसाल किया।

हुज़ूरे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस शैख़ नज्दी की दावत और तक्फ़ीरे मुस्लेमीन पर कई वजूह से दलालत करती है, हम उन में से बाज़ का ज़िक्र करते हैं :

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ईमान यमानी है और फ़ित्ना मश्रिक़ से निकलेगा और उसका हुज़ूर ने बार-बार ज़िक्र फरमाया।

2. हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हिजाज़ और अह्ले हिजाज़ के लिए बार-बार दुआ फरमाई और अह्ले मश्रिक़ खुसूसन अह्ले नज्द के लिए दुआ करने से इंकार कर दिया।

3. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद जो सर ज़मीने नज्द में पहला फ़ित्ना वाक़े हुआ वह शैख़ नज्दी का फ़ित्ना है जिसने मुसलमानों के दर्मियान सदियों से राइज मामूलात को कुफ़्र और मुसलमानों को काफिर बना दिया, बल्कि शैख़ नज्दी ने उन लोगों को भी काफिर बना दिया जो उन मुसलमानों को काफिर न कहे, हालांकि मक्का और मदीना और यमन के इलाक़ों में सदियों से यह मामूलात राइज हैं, बल्कि हम को तहक़ीक़ से यह बात मालूम हुई है कि औलिया का वसीला उनकी क़बरों से तवस्सुल और इस्तिम्दाद और औलिया अल्लाह का पुकारना, यह तमाम उमूर दुनिया में सबसे ज़्यादा यमन और हरमैन शरीफ़ैन में किए जाते हैं और यह भी हमको मालूम हुआ है कि जिस क़द्र अज़ीम फ़ित्ना सरज़मीने नज्द में वाक़े हुआ, वह किसी दौर में भी किसी और जगह वक़ूअ़ पज़ीर नहीं हुआ और (ऐ शैख़ नज्दी) तुम्हारा क्या कहना है कि दुनिया के तमाम मुसलमानों पर तुम्हारी इत्तिबा वाजिब है और जो शख़्स तुम्हारे मज़्हब की इत्तिबा करे और वह मज़्हब के इज़्हार और दूसरे मुसलमानों की तक्फ़ीर की ताक़त न रखे, उस पर वाजिब है कि वह तुम्हारे शहर की तरफ हिजरत करे और यह कि तुम ही ताइफ़ा मन्सूरह हो और यह इस हदीस के ख़िलाफ़ है, क्योंकि

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने क़यामत तक के होने वाले वाक़ेआत का इल्म अता फरमाया है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत पर गुज़रने वाले तमाम वाक़ेआत को बतला दिया है। अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इल्म होता कि सर ज़मीने मुसैलमा यानी शहर नज्द मआल कार दारुल-ईमान बनेगा और ताइफ़ा मन्सूरा उसी शहर में होगा और ईमान के फ़व्वारे उसी शहर से छोड़े जाएंगे और हरमैन शरीफ़ैन और यमन बिलादे कुफ़्र बन जाएंगे जिनमें बुत परस्ती होगी और वहाँ से हिजरत करना वाजिब होगा, तो हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़रूर इस बात की ख़बर देते और उस मश्रिक़ और खुसूसन नज्द के लिए ज़रूर दुआ फ़रमाते और हरमैन शरीफ़ैन और अह्ले यमन के लिए बद्दुआ फरमाते और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यह ख़बर देते कि वहाँ के बाशिन्दे बुतपरस्ती करेंगे और इन मुतबर्रक इलाक़ों के लोगों से बेज़ारी का इज़्हार फरमाते, लेकिन जब ऐसा नहीं हुआ, बल्कि उसके बरअक्स हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने असल मश्रिक़ के लिए बिल-उमूम और नज्द के बारे में बिल-खुसूस ख़बर दी है कि वहाँ से शैतान का सींग तुलूअ् होगा और उस शहर में और उस शहर से फित्ने नमूदार होंगे और नज्द के लिए दुआ करने से आपने इंकार फरमाया और यह बात तुम्हारे ज़अम के बिल्कुल बरअक्स है। तुम्हारे नज़्दीक जिन लोगों के लिए हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई थी वह कुफ़्फ़ार हैं और जिस इलाक़ा के लोगों के लिए हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दुआ करने से इंकार कर दिया और ख़बर दी थी कि वहाँ से शैतान का सींग निकलेगा और फित्नों का जुहूर होगा, तुम्हारे अक़ीदे के मुताबिक़ वह इलाक़ा दारुल-ईमान है और उसकी तरफ़ हिजरत वाजिब है।

तक्फ़ीरे मुस्लेमीन के रद्द पर चौथी हदीस :

तुम्हारे मज़्हब के बुतलान पर यह हदीस भी दलालत करती है जिसको बुख़ारी और मुस्लिम ने हज़रत उक़्बा बिन आमिर से रिवायत किया है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम "मिंबर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और आपने फरमाया : मुझे इस बात का ख़ौफ़ नहीं है कि

तुम सब (मुसलमान) मेरे बाद शिर्क करने लगोगे, लेकिन मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि तुम को माले दुनियावी बकसरत हासिल होगा और तुम माले दुनियावी की मुहब्बत में मुतफ़र्रिक़ हो जाओगे और माल व दौलत की वजह से तुम लोग आपस में लड़ोगे और हिलाकत में मुब्तला हो जाओगे, जिस तरह उस से पहली उम्मतें हिलाकत में मुब्तला हो गई थीं। उक़्बा बिन आमिर कहते हैं मैंने हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिंबर पर यह आख़िरी वअ़ज़ सुना था।

यह हदीस शरीफ़ भी तुम्हारे मज़्हब के बुतलान पर इसी तरह दलालत करती है कि क़्यामत तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत पर जिस क़द्र अहवाल गुज़रने थे। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने वह तमाम अहवाल बयान फरमा दिए और इस हदीसे सहीहा में हुज़ूर ने यह बतला दिया है कि आपकी उम्मत बुतपरस्ती से महफ़ूज़ रहेगी और न हुज़ूर को अपनी उम्मत से बुतपरस्ती का ख़तरा था और न इस बात की आपने ख़बर दी है। और जिस चीज़ का ख़तरा था और जिस चीज़ से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने डराया, वह माल व दौलत की कसरत और फरावानी है। (और मम्लिकते सऊदी अरबीया आज इसी फित्ना में मुब्तला है। (क़ादरी)

और यह हदीस तुम्हारे मज़्हब के बरअक्स है, क्योंकि तुम्हारा अक़ीदा यह है कि तमाम उम्मत ने बुत परस्ती की और तमाम इस्लामी म्मालिक बुत परस्ती से भर गये और अगर तमाम दुनिया में से किसी जगह में इस्लाम की कोई रमक़ है, तो वह नज्द में है : यहाँ तक कि तुम्हारे ख़्याल में रूम, यमन और मग़्रिब के तमाम इलाक़े (हरमैन शरीफ़ैन वग़ैरह) बुतपरस्ती से भरे हुए हैं और तुम कहते हो कि जो शख़्स उन लोगों को काफिर न कहे, वह खुद काफिर है। पस तुम्हारे अक़ीदे के मुताबिक़ तमाम बिलादे इस्लाम के मुसलमान काफिर हैं, सिवा नज्द शहर के। और जो नया दीन तुम लाए हो, उसकी उम्र सिर्फ़ दस साल है।

(गोया उस से पहले ग्यारह सौ साल तक के तमाम मुसलमान अल-अयाज़ु बिल्लाह काफिर थे, क़ादरी)।

उसके बाद शैख़ सुलेमान मौसूफ़ लिखते हैं :

तक्फ़ीरे मुस्लेमीन के रद्द पर पाँचवीं हदीस :

तुम्हारे मज़्हब के बुतलान पर यह हदीस भी दलालत करती है जिसको इमाम मुस्लिम ने अपनी सही में हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शैतान इस बात से मायूस हो गया है कि जज़ीर-ए-अरब में उसकी परस्तिश की जाए, लेकिन वह उनको आपस में लड़ाता रहेगा और हाकिम ने सही सनद के साथ और अबू याला और बैहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से रिवायत किया है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : शैतान इस बात से मायूस हो गया कि जज़ीरा अरब में बुतपरस्ती की जाए। लेकिन उस से कम बात यानी आपस के लड़ाई झगड़ों पर राज़ी हो गया है, और इमाम अहमद ने और हाकिम ने सनद सही के साथ और इब्ने माजा ने शद्दाद बिन औस से रिवायत की है कि हुज़ूर नबी अक़रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : मैं अपनी उम्मत पर शिर्क का ख़ौफ़ करता हूँ, मैंने अर्ज़ किया : हुज़ूर किया आपके बाद आपकी उम्मत शिर्क करेगी। आपने फरमाया : हाँ! लेकिन वह सूरज, चाँद या किसी बुत को पूजा नहीं करेगी, लेकिन अपने आमाल में रियाकारी करेगी।

इन अहादीस की तुम्हारे मज़्हब के बुतलान पर दलालत इस तरह है कि अल्लाह करीम ने अपने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस क़द्र चाहा अपने ग़ैब से मुत्तला फरमाया, और क़्यामत तक जो कुछ होने वाला है, उसकी ख़बर दे दी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी है कि जज़ीर-ए-अरब में शैतान अपनी इबारत से मायूस हो चुका है और शद्दाद की रिवायत में आपने ख़बर दी है कि जज़ीर-ए-अरब में बुत परस्ती नहीं होगी और यह चीज़ें तुम्हारे मज़्हब के बरअक्स हैं क्योंकि तुम्हारा अक़ीदा है कि बसरा और उसके गर्द व नवाह और इराक़ में दजला से लेकर उस जगह तक जहाँ हज़रत अली और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की क़बरें हैं, इसी तरह सारे यमन और हिजाज़ में शैतान की परस्तिश और बुतपरस्ती होती है और यहाँ के मुसलमान बुत परस्त और कुफ़्फ़ार हैं, हालांकि यह तमाम जगहें सर ज़मीने अरब के वह तमाम इलाक़े हैं जिनकी सलामती ईमान और

कुफ़्र से बरात की हुज़ूर ने ख़बर दी है और तुम कहते हो कि यहाँ के लोग काफिर हैं और जो उनको काफिर न कहे। वह काफिर है, लिहाज़ा यह तमाम अहादीस तुम्हारे मज़्हब का रद्द करती हैं।

शैख़ सुलेमान मजीद लिखते हैं :

तक्फ़ीरे मुस्लेमीन के रद्द पर छठी हदीस : और तुम्हारे मज़्हब के बुतलान पर यह हदीस भी दलालत करती है जिसको इमाम अहमद और इमाम तिर्मिज़ी ने अपनी सनद के साथ ज़िक्र किा और उसको सही क़रार दिया और इमाम निसई ने और इब्ने माजा अमर बिन अहवस से रिवायत किया है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुज्जतुल-विदाअ् के मौक़ा पर फरमाया : शैतान इस बात से हमेशा के लिए मायूस हो चुका है कि तुम्हारे इस शहर में उकसी परस्तिश की जाए, अल्बत्ता तुम्हारी आपस की लड़ाइयों में उसकी पैरवी होती रहेगी और हाकिम ने सनद सही के साथ बयान किया कि हज़रत इब्ने अब्बास बयान फरमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुज्जतुल-विदाअ् के मौक़ा पर खुत्बा दिया और फरमाया : शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि तुम्हारी सरज़मीन में उसकी परिस्तश की जाए, लेकिन उसके अलावा दूसरी बातों में पैरवी की जाने पर राज़ी हो चुका है, इस बात से एहतराज़ करना ऐ लोगो! मैंने तुम में वह चीज़ छोड़ी है कि अगर तुमने उसको मज़्बूती से थाम लिया, तो कभी गुम्राह न होगे और वह अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत है।

इन अहादीस में तुम्हारे मज़्हब के बुत्लान पर इस तरह दलालत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुसूसन मक्का में हमेशा-हमेशा के लिए बुतपरस्ती न होने की ख़बर दी है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बशारत कभी ग़लत नहीं होती, अल्बत्ता इस हदीस में हुज़ूर ने बुत परस्ती के अलावा दूसरी ग़लत बातों मसलन लड़ाई झगड़ों से डराया है और यह बात हदीस से बिल्कुल ज़ाहिर है और जिन चीज़ों का नाम तुम शिर्के अक्बर रखते हो और उनके करने वालों को (औलिया से वसीला, शफ़ाअत तलब करना और उनकी क़ब्रों से फ़ैज़ान तलब करना, (क़ादरी) बुत परस्ती का मुर्तकिब

कहते हो, इन तमाम उमूर पर तमाम अह्ले मक्का, उनके अवाम, उमरा और उलमा छेः सौ साल से ज़्यादा अरसा से अमल पैरा हैं, इसके बावजूद यह तमाम लोग अब तुम्हारे दुश्मन हैं, तुम को सब्ब व शितम करते हैं और तुम्हारी इस बदअक़ीदगी की वजह से तुम पर लानत भेजते हैं और मक्का मुकर्रमा के उलमा और शुरफ़ा इन तमाम उमूर पर अहकामे इस्लाम जारी करते हैं जिनको तुम शिर्के अक्बर क़रार देते हो। अगर तुम्हारा गुमान हक़ है, तो यह लोग अलल-ऐलान काफ़िर हैं, लेकिन यह अहादीस तुम्हारे ज़अ़मे फ़ासिद का रद्द करती हैं और तुम्हारे मज़्हब को बातिल करती हैं।

अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी, मुतवफ़्फ़ी 1252 हिज० : अल्लामा शामी शैख़ नज्दी की तहरीक के बारे में इज़्हारे ख़्याल करते हुए लिखते हैं :

(यह उन लोगों की मिसाल है जिन्होंने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया, वरना उनके ख़ार्जी होने के लिए यह बात काफी है कि उन्होंने उन लोगों को काफ़िर क़रार दिया जिनके ख़िलाफ़ उन्होंने ख़ुरूज किया था जैसा कि हमारे ज़माना में मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के पैरूकार जो नज्द से निकले और हरमैन पर क़ाबिज़ हो गये और वह अपने आपको हंबलीयुल-मज़्हब कहते थे, लेकिन उनका ऐतक़ाद यह था कि मुसलमान सिर्फ़ वह या उनके मुवाफ़िक़ हैं और जो अक़ाइद में उनके मुख़ालिफ़ हैं, वह मुसलमान ही नहीं हैं, बल्कि मुश्रिक हैं, इस बिना पर उन्होंने अह्ले सुन्नत और उलमाए अह्ले सुन्नत के क़त्ल को जाइज़ रखा।

मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब का ज़ुहूर : मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब का ज़ुहूर 1143 हिज० में हुआ और उसकी तहरीक 1150 ई० में मशहूर हुई और उसने अपने अक़ीदे का इज़्हार पहले नज्द में किया और मुसैलमा कज़्ज़ाब के शहर दरइया के अमीर मुहम्मद बिन सऊद को अपना हमनवा बनाया। इब्ने सऊद ने अपनी ताबे रिआया पर ज़ोर डाला कि वह शैख़ नज्दी की दावत को क़ुबूल करें। पस अह्ले दरइया ने शैख़ नज्दी की दावत क़ुबूल कर ली। अन्क़रीब हम उसके इन बाज़ अक़ाइद का ज़िक्र करेंगे जिनके क़ुबूल करने पर अह्ले

दरइया को इब्ने सऊद ने मज्बूर किया था। शैख़ नज्दी की दावत फैलती गई और उसकी इस दावत पर अरब के क़बाइल यके बाद दीगरे लब्बैक कहते चले गये, यहाँ तक की शैख़ नज्दी की तहरीक क़वी हो गई और बादिया नशीन लोग शैख़ नज्दी से डरने लगे। शैख़ नज्दी उन लोगों से कहा करता था कि मैं तुमको तौहीद के फैलाने और शिर्क रोकने की दावत देता हूँ, चुनांचे बादिया नशीन लोग शैख़ नज्दी से डरने गले, शैख़ नज्दी उन लोगों से कहा करता था कि मैं तुमको तौहीद के फ़ैलानो और शिर्क को रोकने की दावत देता हूँ, चुनांचे बादिया नशीन अरब उसकी हर बात में मुवाफ़िक़त और इत्तिबा करने लगे।

शैख़ नज्दी के इत्तिबा का उलमा-ए-हरमैन से मुनाज़रा और शिकस्त : उस ज़माने में हिजाज़ पर शरीफ़, मस्ऊद बिन सईद बिन सअद की हुकूमत थी। शैख़ नज्दी ने अपने मुल्क के तीस उलमा, शरीफ़ के पास इस ख़्याल से भेजे कि वह हरमैन के उलमा को मुनाज़रा में शिकस्त दे कर अपनी दावत और तहरीक फैलाने में कामयाब हो जाएंगे और यह इजाज़त हासिल करेंगे कि उनको हर साल हज के लिए आने की दावत दी जाए। शरीफ़ मस्ऊद ने उलमाए हरमैन को नज्दियों से मुनाज़रा करने का हुक्म दिया। जब उलमाए हरमैन ने उन से मुनाज़रा किया, तो इल्मी एतबार से उनको एक मस्ख़रा से ज़्यादा अहमीयत नहीं दी और जब उनके अक़ाइद पर ग़ौर किया, तो वह अक्सर कुफ़्रियात पर मुश्तमिल थे, यहाँ तक कि क़ाज़ी हरमैन ने ऐलान कर दिया कि उन लोगों पर कुफ़्र की हुज्जत क़ायम हो गई और उन लोगों को क़ैद करने का हुक्म दिया, कुछ क़ैद हो गये और कुछ भाग गये और दरइया पहुंच कर हालात से आगाह किया, उसके बावजूद उन लोगों की सरकशी बढ़ती गई और यह लोग अपनी गुम्राही में सरगरदाँ रहे।

(3) नज्दियों का हरमैन पर क़ब्ज़ा : शरीफ़ मस्ऊद के बाद उसका भाई शरीफ़ मुसाइद बिन सईद उसका जांनशीन मुक़र्रर हुआ। नज्दियों ने फिर शरीफ़ मुसाइद के पास अपने उलमा का वफ़्द भेजा और हज की इजाज़त चाही, लेकिन उनके कुफ़्रिया अक़ाइद की

बिना पर शरीफ़ मुसाइद ने भी उनको हज की इजाज़त न दी, यहाँ तक कि हिजाज़ में दख़ल अन्दाज़ी करने की उनकी आरज़ुओं पर पानी फिर गया। शरीफ़ मुसाइद के बाद उसके भाई शरीफ़ अहमद बिन सईद जांनशीन हुआ, उसके बाद फिर अमीर दरइया ने उसके पास उलमा की एक जमाअत भेजी। उलमा मक्का ने जब उनको टटोला, तो यह लोग सख़्त क़िस्म के लिए दीन साबित हुए। शरीफ़ मक्का ने उलमा के फतव- ए-कुफ़्र के बाद उन लोगों को हरम में ठहरने की इजाज़त न दी जैसा कि उस से पहले की हुकूमतों में होता आया था। जब शरीफ़ सरदार जांनशीन हुआ तो नज्दियों ने एक बार फिर अपने उलमा का वफ़्द भेजा और उससे काबा शरीफ़ा की ज़्यारत की इजाज़त चाही। शरीफ़ ने कहा जिस तरह दूसरे अज्मी मक्का मुकर्रमा में दाख़िले के लिए चमड़ा पेश करते हुए, इसी तरह तुम को भी हर साल चमड़ा और उम्दा घोड़े पेश करने होंगे। नज्दियों को यह फ़ैसला नागवार गुज़रा और इस शर्त पर उन्होंने हज की हाज़िरी से इंकार कर दिया।

शरीफ़ सरदार के बाद जब शरीफ़ ग़ालिब सर पर आराए सलतनत हुआ, तो नज्दियों ने एक बार फिर मक्का में दाख़िले की कोशिश की और हज के लिए इजाज़त चाही उसने इंकार किया। नज्दियों ने धमकी दी कि वह हरमैन शरीफ़ैन पर हमला कर देंगे और उन्होंने फ़िल-वाक़े ऐसा ही किया और १२०५ हिज० को हरमैन करीमैन पर हमला कर दिया, यहाँ तक हरमैन शरीफ़ैन पर नज्दियों का मुकम्मल क़ब्ज़ा हो गया और उसके एक साल बाद १२०६ हिज० में शैख़ नज्दी फौत हो गया। बाज़ उलमा ने उसकी तारीख़ वफ़ात बेहा हलाकल-ख़बीस के जुमला से निकाली है।

शैख़ नज्दी ने जिस तरह बतदरीज तन्क़ीसे रिसालत के अदवार तय किए, उसके बारे में सैयद दहलान रक़्मतराज़ हैं :

(५) शैख़ नज्दी की गुम्राही की इब्तिदा : शैख़ नज्दी शुरू-शुरू में मुद्दई नुबुव्वत, मुसैलमा कज़्ज़ाब, सजाह, अस्वद असनी, और तलैहा असदी जैसे बेदीन लोगों की किताबों का बड़े शौक़ से मुताला किया करता था और उसके दिल में भी शौक़ था कि यह दावा नुबुव्वत का इज़्हार करे, उसने ज़ेरे ज़मीन दावा नुबुव्वत मख़्फ़ी रखा

और ख़ारिज में इसी नहज पर काम करता था, लेकिन उसको खुल कर दावा नुबुव्वत के इज़्हार का मौक़ा न मिल सका, लेकिन उसने तूर अतवार सारे नुबुव्वत के अपना लिए थे। उसके हम अक़ीदा लोग बाहर से हिजरत करके आते, उनको यह मुहाजिरीन कहता और अपने शहर वालों को अंसार कहता और जो कोई शख़्स उसके हाथ पर बैअत करता और अगर उसने पहले हज कर लिया होता, तो यह उसको कहता जाकर दोबारा हज करो, क्योंकि पहला हज तुमने जिस वक़्त किया था, उस वक़्त तुम मुश्रिक थ, वह हज तुझ से मक़्बूल न होगा और न तुझ से फ़रीज़ा हज साक़ित होगा और जब कोई उसके दीन में दाख़िल होने का इरादा करता, तो उस से कलिमतुश्शहादतैन पढ़वाने के बाद कहता था कि इस बात पर गवाही दो कि तुम उस से पहले काफिर थे और गवाही दो कि तुम्हारे माँ बाप काफिर थे और अकाबिर उलमा का नाम लेकर कहता कि गवाही दो कि वह सब काफिर थे, अगर वह गवाही दे देता तो उनका ईमान क़ुबूल कर लेता, वरना क़त्ल करवा देता और शैख़ नज्दी बसराहत कहा करता था कि छे: सौ साल से तमाम उम्मत काफिर है और वह हर उस शख़्स की तक्फ़ीर करता था, जो उसकी इत्तिबा न करे, अगरचे वह इंतिहाई परहेज़गार ही शख़्स क्यों न हो। वह ऐसे तमाम अश्ख़ास को मुश्रिक क़रार देकर उनको क़त्ल करवा डालता और उनके माल व मता को लूटने का हुक्म देता और जो शख़्स उसकी इत्तिबा कर लेता, उसको मोमिन क़रार देता, अगरचे वह बदतरीन फ़ासिक़ों में से हो।

तन्क़ीसे रिसालत में शैख़ नज्दी की दीदा दिलेरी : शैख़ नज्दी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िदाहु नफ़्सी व अबी व उम्मी की तन्क़ीस किया करता था और उसका ज़अ़म था कि तौहीद को महफ़ूज़ रखने का यही एक तरीक़ा है, उसकी चन्द गुस्ताख़ियाँ दर्ज ज़ैल हैं :

1. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को "तारिश" कहा करता था और नज्द की लुग़त में तारिश छठी रसां या एल्ची को कहते हैं।

2. क़िस्सा हुदैबिया के बारे में कहा रकता था कि उस में इतने झूठ बोले गये हैं, चुनांचे उसके ताबईन भी यह बातें उसके सामने करते थे

और वह उन पर खुश होता था।

3. उसके सामने उसके ताबईन में से एक शख़्स ने कहा कि मेरी लाठी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बेहतर है, क्योंकि साँप वग़ैरह को मारने में काम आ सकती है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फौत हो चुके हैं और अब उन में कोई नफ़ा बाक़ी नहीं रहा। वह महज़ एक एल्ची थे जो इस दुनिया से जा चुके।

(बाज़ उलमा ने यह बयान किया कि शैख़ नज्दी के यह अक़्वाल मज़ाहिबे अरबा में कुफ़्र हैं और बाज़ ने कहा यह बातें तमाम अह्ले इस्लाम के नज़्दीक कुफ़्र हैं।)

4. शैख़ नज्दी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद शरीफ़ पढ़ने को सख़्त नापसन्द करता था और दरूद शरीफ़ सुनने से उसको तक्लीफ़ होती थी।

5. जुमा की रात को दरूद शरीफ़ पढ़ने और मीनारों पर बुलन्द आवाज़ से दरूद शरीफ़ पढ़ने को मना करता था और जो शख़्स इस तरह दरूद शरीफ़ पढ़ता, उसको सख़्त तक्लीफ़ देह अज़ाब दिया करता था, यहाँ तक कि एक खुश इल्हान नाबीना मुअज़्ज़िन को उसने दरूद शरीफ़ पढ़ने के जुर्म में क़त्ल करवा देता।

6. कहा करता था कि किसी फ़ाहिशा औरत के कोठे में सितार बजाने से इस क़द्र गुनाह नहीं है जिस क़द्र गुनाह मस्जिद के मीनारों में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पाक पढ़ना है (और अपने इत्तिबा करने वालों और अपने अस्हाब से कहता था कि इस तरीक़े कार से तौहीद की हिफ़ाज़त होती है।)

7. उसके बदतरीन अफ़आल में से एक यह फ़ेअ्ल है कि उस ने दलाइलुल-ख़ैरात और दूसरी दरूद शरीफ़ पढ़ने वाली किताबों को जल्वा दिया और उन किताबों के पढ़ने को बिदअत क़रार देता था।

8. उसने फ़िक़्ह, तफ़्सीर और हदीस की किताबें जल्वा डाली थीं।

9. उस ने अपने मुत्तबईन में से हर शख़्स को कुरआने करीम की अपनी राय से तफ़्सीर की इजाज़त दे दी थी। यह अपने मुत्तबईन में से किसी को कुरआने करीम की तिलावत का हुक्म देता, फिर अज़ खुद उसकी तफ़्सीर करता, फिर जो कुछ अपनी फहम से तफ़्सीर करता, उसको तमाम इल्मी किताबों और तस्रीहाते उलमा पर मुक़द्दम रखता।

10. जो आयात कुरआने करीम में मुनाफ़िक़ीन और मुश्रेकीन के बारे में नाज़िल हुईं, उनको मुसलमानों पर मुन्तबिक़ करता (हालांकि सही बुख़ारी में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ख़्वारिज की पहचान बयान करते हुए फरमाते हैं कि उनका तरीक़ा यह है कि जो आयतें मुश्रेकीन के बारे में नाज़िल हुईं, उनको वह मुसलमानों पर चिस्पां करते हैं और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की एक और सनद से हदीस है कि हुज़ूर ने फरमाया : मुझे अपनी उम्मत में सबसे ज़्यादा उस शख़्स पर ख़ौफ़ है जो शख़्स कुरआन पाक की ग़लत तावील करके आयाते कुरआन को उसके ग़ैर महल में चिस्पां करेगा और यह और उससे पहली हदीस दोनों का मिस्दाक़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब है और उसके पैरोकार हैं और जिस चीज़ की तरफ़ इशारा मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब देता है, वह एक नया दीन है जैसा कि उसके अक़्वाल, अफ़आल और अहवाल से ज़ाहिर है। यही वजह है कि वह दीने इस्लाम में सिर्फ़ कुरआन को हुज्जत मानता है और कुरआन को भी वह फ़क़त ज़ाहिरन मानता है ताकि लोग उसकी हक़ीक़त से वाक़िफ़ न हो जाएं। और हक़ीक़त यह है कि उन्होंने आयाते कुरआनी को अपनी हवाए नफ़्सानी से खिलौना बना रखा है और अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ आयाते कुरआनी को ढालते रहते हैं।)

हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाबा किराम, अख़ियारे ताबईन और अइम्मा तफ़ासीर से जो कुरआने करीम की तफ़्सीर मन्कूल है, शैख़ नज्दी उसको हुज्जत नहीं मानता। जिस तरह यह कुरआने करीम के अलावा अहादीसे शरीफ़ा, अक़ावीले सहाबा व ताबईन और फतावा अइम्मा मुज्तहेदीन को नहीं मानता। इसी तरह यह कुरआने करीम और हदीसे पाक से जिन मसाइल का इस्तिंबात किया गया है, उन को भी नहीं मानता, न क़यास को हुज्जत समझता है और न इज्मा को।

शैख़ नज्दी दरोग़ गोई से अपनी निस्बत इमाम अहमद बिन हंबल की तरफ़ करता है, हालांकि हंबली उलमा ने उसका रद्द लिखा है, यहाँ तक कि उसके भाई सुलमान बिन अब्दुल-वहाब ने भी उसके मज़ऊमात के रद्द पर एक मुस्तक़िल किताब लिखी है। ज़ैल में शैख़ नज्दी के चन्द मज़ऊमात पेश किए जाते हैं :

11. शैख़ नज्दी अपने उम्माल की तरफ़ लिखता था कि तुम ख़ुद इज्तिहाद किया करो और अपने तदब्बुर से अहकाम जारी किया करो और उन किताबों की तरफ़ न देखो, क्योंकि उन में हक़ और बातिल सभी कुछ है, हालांकि उसके तमाम उम्माल बदतरीन जाहिल थे।

12. उसने उन बेशुमार उलमा सालेहीन और अवाम मुस्लेमीन को क़त्ल करवा दिया जिन्होंने उसके नौज़ाइदा दीन को तस्लीम नहीं किया।

13. (मुसलमानों की लूट मार से) जो माल हासिल होता था, उसकी ज़कात यह अपनी हवाए नफ़्स से तक़्सीम किया करता था।

14. शैख़ नज्दी के मुत्तबईन अपने आपको किसी मज़्हब का पाबन्द नहीं जानते थे, अल्बत्ता लोगों को धोखा देने के लिए हंबली मज़्हब की तरफ़ निस्बत करते थे।

15. शैख़ नज्दी नमाज़ के बाद दुआ मांगने से मना करता था और कहा करता था क्या तुम अल्लाह तआला से इस इबादत की मज़्दूरी मांग रहे हो।

इब्ने सऊद का बदअक़ीदगी में गुलू : शैख़ नज्दी ने अपने दीन को फ़ैलाने का काम मुहम्मद बिन सऊद के ज़िम्मे सौंप दिया था और वह अरब के शर्क़ और ग़र्ब में शैख़ नज्दी की दावत फ़ैला रहा था और सरे आम कहता कि तुम सब लोग मुश्रिक हो, तुम्हारा क़त्ल करना जाइज़ और माल लूटना मुबाह है। उसके नज़्दी मुसलमान होने का मेअ्यार सिर्फ़ शैख़ नज्दी की बैअत थी। ख़्वाह बैअत करने वाला नुसूसे शरईया का मुख़ालिफ़ और इज्माए उम्मत का तारिक हो, और शिर्क का मेअ्यार उसके नज़्दीक यह था कि जो शख़्स शैख़ नज्दी की मुवाफ़िक़त न करे, अगरचे वह नस्से सरीह पर अमल करता हो और इज्माए उम्मत का पाबन्द हो। मुहम्मद बिन सऊद अलल-एलान कहता था कि अइम्म-ए-अरबा के अक़्वाल ग़ैर मोतबर हैं, कभी अइम्मा को हक़ पर साबित करता और उनके पैरूकारों की मुज़म्मत करता, जिन्होंने मज़ाहिबे अरबा में किताबें लिखीं और कहता कि यह लोग खुद भी गुम्राह थे और उन्होंने दूसरों को भी गुम्राह किया, कभी कहता शरीअत एक थी, उन्होंने चार मज़ाहिब बना दिए हैं। हम अल्लाह की किताब और उसके

रसूल की सुन्नत के सिवा किसी चीज़ पर भी अमल नहीं करेंगे। अकाबिर उलमाए हनाबिला की तौहीन करते हुए यह कहता, हम नहीं जानते यह मिस्री शामी और हिन्दी कौन हैं?

मुसलमानों के एतराज़ात से शैख़ नज्दी का लाजवाब होना : एक बार शैख़ नज्दी दरइया में जुमा का खुत्बा दे रहा था। दौराने खुतबा में उस ने कहा : जो शख़्स हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का वसीला पकड़े, वह काफिर है। जुमा के बाद शैख़ नज्दी के भाई शैख़ सुलेमान ने पूछा : बताओ इस्लाम के कितने अरकान हैं? शैख़ नज्दी ने कहा पाँच। शैख़ सुलेमान ने कहा : तुम नेतो इस्लाम का छठा रुक्न भी बना दिया है और वह यह कि जो तुम्हारी पैरवी न करे, वह भी काफिर है।

एक और शख़्स ने मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब से पूछा : अल्लाह तआला रमज़ानुल-मुबारक की हर रात में कितने मुसलमानों को आज़ाद करता है? कहने लगा : एक लाख मुसलमानों को, वह शख़्स कहने लगा : तुम्हारे पैरोकार तो इस मिक़्दार के उश्र अशीर को भी नहीं पहुंचते, तो आख़िर वह कौन से मुसलमान हैं जिनको अल्लाह तआला रमज़ानुल-मुबारक की रातों में जहन्नम से आज़ाद करता है, जबकि तुम मुसमलानों का हिस्सा सिर्फ़ अपने पैरोकारों में समझते हो। इस गिरफ़्त पर शैख़ नज्दी मब्हूत हो गया और कोई जवाब न दे सका। इसी अस्ना में शैख़ सुलेमान, शैख़ नज्दी ने नाराज़ हो कर दरइया से मदीना मुनव्वरा चले गये और वहाँ जाकर उसका रद्द करना शुरू किया।

एक बार एक क़बीला का रईस उस से मिलने आया और उससे कहने लगा : ऐ शैख़ तुम्हारा एक मोतमद और ख़ादिम जो तुम्हारे नज़्दीक सच्चा हो, आकर यह ख़बर दे। उस पहाड़ के पीछे एक लश्करे जर्रार आ कर तुम पर हमला आवर होने की तैयारी कर रहा है और तुम एक हज़ार आदमियों को इस बात की तस्दीक़ के लिए रवाना करो और वह देखें कि पीछे न कोई हंगामा है और न कोई लश्कर, और वह अगर तुम को इस बात की ख़बर दें, तो तुम उस एक आदमी की तस्दीक़ करोगे या उन हज़ार आदमियों की। शैख़ नज्दी ने कहा : मैं हज़ार आदमियों की तस्दीक़ करूंगा। उस क़बीला के सरदार ने कहा : इसी

तरह तमाम साबिक़ मुसलमान उलमा ज़िन्दा और फौत शुदह अपनी किताबों में तुम्हारी दावत और तहरीक और तुम्हारे अक़ाइद और अफ़्कार की तक्ज़ीब बयान करते रहे हैं। पस हम इन तमाम की तस्दीक़ करें या सिर्फ़ एक तुम्हारी, इस गिरिफ़्त पर भी शैख़ नज्दी भौंचका रह गया और उसको कोई जवाब बन न आया।

एक और शख़्स ने शैख़ नज्दी से सवाल किया : जिस दीन को तुम लेकर आए हो, यह पहले इस्लाम से मुत्तसिल है या मुंफ़सिल? शैख़ नज्दी ने जवाब दिया : मेरे असातिज़ा और उन असातिज़ा के असातिज़ा हत्ता कि छेः सौ साल तक यह सारी उम्मत काफिर और मुश्रिक थी। उस शख़्स ने कहा : तब तो तुम्हारा दीन मुंफ़सिल है, पस तुमने यह दीन किस से हासिल किया? कहने लगा : वह्ये इल्हाम से जैसी वह्ये इल्हाम हज़रत ख़िज़्र पर होती थी। उस शख़्स ने जवाब दिया : अगर वह्य इल्हाम का दरवाज़ा खुला हुआ है, तो उसकी तुम्हारे साथ क्या खुसूसियत है, हर शख़्स एक नया दीन ले कर उठ सकता है और कहेगा कि उसको यह दीन वह्ये इल्हाम से हासिल हुआ है। उस शख़्स ने फ़िर कहा : तमाम अह्ले सुन्नत के नज़्दीक तवस्सुल जाइज़ है, हत्ता कि इब्ने तैमिया ने भी तवस्सुल की दो क़िस्में ज़िक्र की हैं और उसने यह नहीं कहा कि वसीला करने वाला शख़्स काफिर है। हत्ता कि रवाफ़िज़, ख़्वारिज और मुब्तदेआ की भी तक्फ़ीर नहीं की, फिर तुम वसीला करने वालों की तक्फ़ीर क्यों करते हो? शैख़नज्दी ने जवाब दिया : हज़रत उमर ने हज़रत अब्बास के वसीला से बारिश की दुआ मांगी और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वसीला से दुआ नहीं की। शैख़ नज्दी का मक़सद यह था ज़िन्दा का तवस्सुल जाइज़ है और मैयत का तवस्सुल जाइज़ नहीं। उस शख़्स ने कहा : यह दलील तो तुम्हारे ख़िलाफ़ जाती है, क्योंकि हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु के वसीला से दुआ इसलिए मांगी कि हुज़ूर के अलावा दूसरे बुज़ुर्गों के वसीला से दुआ माँगना भी जाइज़ है और तुम हज़रत उमर से कैसे इस्तिदलाल कर सकते हो, हालांकि हज़रत उमर ने ही इस हदीस को बयान किया है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला से दुआ माँगी थी। इस दलील

पर शैख़ नज्दी मब्हूत हो गया और उसे कोई जवाब न आया, लेकिन उसके बावजूद वह अपनी बदअक़ीदगी पर क़ाइम रहा।

(6) शैख़ नज्दी की गुम्राही की बैय्यिन मिसाल :

शैख़ नज्दी की बदअक़ीगियों और गुम्राहियों की मिसालों में से चन्द यह हैं :

वह मुसलमानों को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़बरे अनवर की ज़्यारत के लिए जाने से मना किया करता था। कुछ लोग अहसा से उसकी इजाज़त के बेग़ैर रौज़-ए-अनवर की ज़्यारत को आए। जब उसको ख़बर पहुंची, तो उस ने उन मुसलमानों को बुल्वा कर उनकी दाढ़ियाँ मुंडवा दें और उनको दरइया से निकाल कर अहसा की तरफ़ भेजवा दिया।

अहादीसे रसूले अकरम से शैख़ नज्दी के ज़ुहूर की मुज़म्मत के बारे में अल्लामा सैयद अहमद दहलान लिखते हैं :

अहादीसे रसूल से शैख़ नज्दी के ख़ुरूज की ताईन :

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : कुछ लोगों का (अरब के) मश्रिक़ की जानिब से ज़हूर होगा, कुरआन पढ़ेंगे, लेकिन वह उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, दीन से इस तरह निकल जाएंगे जिस तरह तीर शिकार से निकल जाता है और दोबारा शिकार हैं वापस नहीं आ सकता, इसी तरह वह लोग भी हैं जो दीन में दोबारा दाख़िल नहीं हो सकेंगे, उनके अलामत यह होगी कि वह सर मुंडाया करेंगे। नीज़ हुज़ूरे पाक ने फरमाया : कुफ़्र का गढ़ मश्रिक़ की जानिब है और फरमाया सख़्त दिली और संगदिली मश्रिक़ की जानिब है और ईमान असल हिजाज़ में है। और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है कि आपने दुआ मांगी : एक अल्लाह! हमारे शाम में बरकत दे और हमारे यमन में बरकत दे। सहाबा ने अर्ज़ किया : हमारे नज्द में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द के लिए दुआ नहीं मांगी और तीसरी बार फरमाया : वहाँ से ज़लज़ले और फित्ने नमूदार होंगे और वहीं से शैतान का सींग तुलूअ् होगा और यह भी हुज़ूर की हदीस है कि कुछ लोगों का (अरब के) मश्रिक़ से ज़ुहूर होगा, कुरआन पढ़ेंगे और वह उनके हलक़ से नीचे नहीं

उतरेगा। जब एक सदी ख़त्म हो जाएगी, तो दूसरी सदी इसी तरह आएगी, हत्ता कि उनके आख़िर में मसीहुद्दज्जाल का ज़ुहूर होगा।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उन बद अक़ीदा लोगों की अलामत यह होगी कि वह सर मुंडायेंगे, यह नस्से सरीह है। उन लोगों पर जो अरब की मश्रिक़ी जानिब से ज़ाहिर हुए और ज़िन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की पैरवी की, क्योंकि मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब अपने पैरोकारों को सर मुंडाने का हुक्म देते थे और ज़ाइरीने मदीना की उस वक़्त तक उस से जान नहीं छटती थी, जब तक कि वह सर नहीं मुंडा लेते थे।

उस से पहले जितने भी फ़िर्क़े गुज़रे हैं, उन में से कोई भी फ़िर्क़ा सर मुंडाने का इल्तिज़ाम नहीं करता था। पस इस हदीस सही में जिन बदअक़ीदा और दीन से निकलने वाले लोगों की ख़बर दी गई है, उसके मिस्दाक़ सिर्फ़ शैख़ नज्दी के पैरोकार हैं। इसी वजह से सैयद अब्दुर्रहमान अल-अहदल मुफ़्ती ज़ुबैद कहते थे कि मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की गुम्राही और दीन से ख़ुरूज पर कोई इलाहिदा और मुस्तक़िल दलील लिखने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उसके फ़िर्क़े के बुल्तान के लिए यह अम्र काफी है कि उन्होंने सर मुंडाना अपना शिआर बना लिया है, बल्कि उन के रद्द के लिए यह काफी है कि मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब तो उन औरतों के भी बाल मुंडवा देना चाहता था जो उस से बैअत के लिए आती थीं।

एक बार एक औरत उसके नये दीन में दाख़िल हुई और पिछले इस्लाम से ताइब हुई। मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब ने उसके सर के बाल मुंडवाने का हुक्म दिया। उस औरत ने कहा : तुम मर्दों के सिर्फ़ सर के बाल मुंडवाने पर क्यों इक्तिफ़ा करते हो, अगर तुम उनकी दाढ़ियाँ भी मुंडवा दो, तो तुम को यह हक़ पहुंचता है कि तुम हमारे सर के बाल कटवा दो, क्योंकि औरतों के सर के बाल बमंज़िला मर्दों की दाढ़ियों के हैं। उस औरत की यह बात सुन कर शैख़ नज्दी मब्हूत रह गया और कोई जवाब न दे सका।

इसके बाद सैयद अहमद दहलान, अल्लामा सैयद अलवी बिन अहमद हसन इब्ने अल-कुतब की किताब जलाउज़्ज़लाम फ़िर्रद्दे अलन्नज्दी अल्लज़ी अज़ल्लल-अवाम से चन्द इक़्तिबासात नक़ल फरमाते हैं :

जलाउज़्ज़ेलाम का ख़ुलासा : अल्लामा सैयद अल्वी बिन अहमद बिन हसन बिन अल-कुतुब सैयदी अब्दुल्लाह बिन अल्वी अल्हद्दाद ने इब्ने अब्दुल-वहाब के रद्द में एक किताब लिखी है जिसका नाम "जलउज़्ज़ेलाम फ़िर्रद्दे अलन्नज्दी अल्लज़ी अज़ल्लल-उलूम" है, इसमें तक़रीबन वह तमाम अहादीस ज़िक्र की हैं जिनको हम इस रिसाला में पेश कर चुके हैं। इसके अलावा उन्होंने इब्ने अब्बास से एक और हदीस पेश की है कि हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : बारहवीं सदी में वादी बनी हनीफ़ा में एक शख़्स का ज़ुहूर होगा जिसकी हैयत कज़ाई बैल की तरह होगी और वह खुश्की का तमाम चारा खा जाएगा। उसके ज़माना में क़त्ल व ख़ूंरेज़ी बहुत होगी, वह मुसलमानों का माल हलाल समझ कर लूट लेंगे और इन अम्वाल से तिजारत करेंगे और मुसलमानों के क़त्ले आम को हलाल समझ कर उनके क़त्ल पर फ़ख़्र करेंगे। यह एक ऐसा फित्ना होगा जिस में ज़लील क़िस्म के लोग उभर कर ग़ालिब हो जाएंगे और निचले दर्जे के लोग उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी करेंगे, जैसे कुत्ता अपने मालिक के पीछे दुम हिलाता फिरता है। इस हदीस के बहुत से शवाहिद और उसके मानी के बहुत से मवैदात हैं, अगरचे उसकी असल का पता नहीं चला सका।

उसके बाद सैयद अल्वी लिखते हैं : उस से भी ज़्यादा सरीह बात यह है कि फ़रेब ख़ूर्दह शैख़ नज्दी बनू तमीम की पैदावार था और इस लिहाज़ से भी यह मुम्किन है कि यह जुल-ख़्वासीरह तमीमी की सलब से पैदा हुआ हो जिसके बारे में सही बुख़ारी में हदीस है, हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : उस शख़्स की ज़मीन से या फरमाया उस शख़्स (जुल-ख़्वासीरह) की औलाद से एक ऐसी क़ौम पैदा होगी कि वह कुरआन पढ़ेंगे और कुरआन उनके नरख़रह से नीचे नहीं उतरेगा, दीन से निकल जाएंगे जिस तरह तीर शिकार से निकल जाता है। मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और कुफ़्फ़ार से तअर्रुज़ नहीं करेंगे। अगर उस वक़्त मैं उनका ज़माना पाता तो उनका इस तरह क़त्ले आम करता जिस तरह क़ौमे आद का क़त्ले आम किया गया था। इसी तरह यह ख़ार्जी भी अह्ले इस्लाम को क़त्ल करता है और कुफ़्फ़ार से उसका

कोई झगड़ा नहीं है और जब हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्वारिज को क़त्ल कर दिया, तो एक शख़्स ने कहा : अल्हम्दु लिल्लाह जिसने उनको हिलाक कर दिया और हमें राहत दी। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया : हरगिज़ नहीं, क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़-ए-कुदरत में मेरी जान है, अभी ख़्वारिज में से वह लोग बाक़ी हैं जो मुर्दों की पुश्तों में हैं और औरतों से हुनूज़ वह पैदा नहीं हुए और उन्हीं में से आख़िरी शख़्स मसीहुद्दज्जाल और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने मुसैलमा कज़्ज़ाब की क़ौम बनू हनीफ़ा के बारे में फरमाया : उनकी वादी से क़्यामत तक फित्नों का ज़ुहूर होता रहेगा और दीने इस्लाम हमेशा कज़्ज़ाबों की वजह से फित्नों में मुब्तला रहगा। उसके बाद अल्लामा अल्वी ने मिश्कात शरीफ़ से एक हदीस शरीफ़ नक़ल की कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : आख़िरी ज़माना में एक क़ौम ऐसी ज़ाहिर होगी जो तुम से ऐसी बातें करेगी जो न तुम ने सुनी होंगी, न तुम्हारे बाप दादा ने। पस तुम उन से हरगिज़ न मिलना कहीं वह तुम को गुम्राह न कर दें या किसी फित्ना में मुब्तला न कर दें, और यह बनू तमीम ही थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई। (حجرات:۴) يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ

(यह लोग आपको दरवाज़ के बाहर से आवाज़ दे कर बुलाते हैं, उन में से अक्सर बेअक़्ल हैं।)

और यह आयत भी बनू तमीम ही के बारे में नाज़िल हुई : (حجرات:۲) لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ (नबी अलैहिस्सलाम की आवाज़ के ऊपर अपनी आवाज़ों को बुलन्द न करो।)

सैयद अली हद्दाद फरमाते हैं कि बनू तमीम, बनू हनीफ़ा और वाइल की मुज़म्मत में बहुत चीज़ें वादिर हुई हैं। याद रहे कि वादी बनू हनीफ़ा क़बीला बनू तमीम में से अक्सर ख़्वारिज का ज़ुहूर हुआ और फ़िर्क़ा वहाबिया का रईस अब्दुल-अज़ीज़ वाइल से था और क़बीला वाइल के बारे में यह रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रिसालत के इब्तिदाई अय्याम में हज के मौसम में मुख़्तलिफ़ क़बाइल पर दीने इस्लाम पेश फरमाते थे, आप फरमाते हैं : मेरे पैग़ाम के जवाब में किसी क़बीला ने इतना क़बीह और ख़बीस जवाब नहीं दिया था, जितना क़बीह और ख़बीस जवाब बनी हनीफ़ा के लोगों ने दिया था।

अल्लामा जमील आफ़न्दी सिद्क़ी ज़हावी इराक़ी :

अल्लामा इराक़ी शैख़ नज्दी के इब्तिदाई हालात से अंजामकार तक नक़्शा खींचते हुए लिखते हैं :

शैख़ नज्दी के इब्तिदाई हालात : शैख़ नज्दी १११ हिज० में पैदा हुआ और १२०७ हिज० में फौत हुआ। तहसीले इल्म के लिए शुरू में मक्का और मदीना गया, वहाँ शैख़ मुहम्मद सुलेमान कर दी और शैख़ मुहम्मद हयात सिन्धी और दूसरे मशाइख़ हिजाज़ से मुलाक़ात हुई। अक्सर मशाइख़ ने फरासते ईमानी से उसकी पेशानी पर गुम्राही और बदबख़्ती के आसार देखे और वह कहा करते थे कि अल्लाह तआला उस शख़्स को गुम्राह कर देगा और उसकी वजह से बहुत से बन्दगाने खुदा गुम्राही के कुएँ में जा गिरेंगे और फ़िल-वाके़ ऐसा ही हुआ। इसी तरह उसके वालिद गिरामी शैख़ अब्दुल-वहाब भी उलमा सालेहीन में से थे। उन्होंने भी उसकी पेशानी पर बेदीनी और कुफ़्र के आसार देख लिए थे, चुनांचे वह मुसलमानों को उस से बचने की तल्क़ीन करते थे, इसी तरह उसके भाई शैख़ सुलेमान ने भी उसकी बदअक़ीदगी में उसके रद्द में एक किताब भी लिखी है।

बदअक़ीदगी की जानिब पहला क़दम : इब्तिदा में शैख़ नज्दी झूठे मदअयाने नुबुव्वत मसलन मुसैलमा कज़्ज़ाब, सजाह, अस्वद असनी, तलैहा असदी और दूसरे मद्दअयाने नुबुव्वत की किताबों का बड़े शौक़ से मुताला किया करता था और वह खुद भी अपने तईं नुबुव्वत का मुद्दई समझता था, लेकिन उसको इस दावा के इज़्हार पर क़ुदरत हासिल न हो सकी। अपने शहर वालों का नाम उस ने अन्सार रखा और उसी के दूसरे हम अक़ीदा जो लोग बाहर से आते, उनका नाम मुहाजिरीन रखा जो शख़्स उसके हाथ पर बैअत करता, उस से इक़रार कराता कि तुम्हारी पिछली ज़िन्दगी मुश्रिकाना थी और अगर तुम हज कर चुके हो, तो तुम पर अब दोबारा हज करना लाज़िम है और उस से कहता कि तुम गवाही दो कि तुम पहले मुश्रिक थे, तुम्हारे माँ-बाप भी शिर्क पर मरे और गुज़िश्ता अकाबिर उलमाए दीन का नाम ले ले कर कहता कि गवाही दो, वह सब मुश्रिक थे। अगर वह शख़्स

यह गवाहियाँ देता तो उसकी बैअत कुबूल करता, वरना उसको क़त्ल करा देता और शैख़ नज्दी बतफ़रीह कहता था कि अब से छे: सौ साल पहले की तमाम उम्मत का काफिर थी और वह शख़्स जो उसकी पैरवी न करता, उसको काफिर कहता ख़्वाह वह कितना ही परहेज़गार मुसलमान क्यों न हो और उसके क़त्ल को हलाल और उसके माल लूटने को जाइज़ समझता और जो शख़्स उसकी इत्तिबा कर लेता, ख़्वाह वह कैसा ही फासिक़ क्यों न हो, उसको मोमिन कहा करता था।

बदअक़ीदगी की इंतिहा : हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से गुस्ताख़ियाँ करता था। आप को तारिश कहता था और तारिश के मानी नज्द की लुग़त में ऐल्ची के होते हैं। वाक़या हुदैबिया के बारे में कहा करता था कि मैंने इस वाक़या को पढ़ा और उसमें इतनी झूठी बातें थीं, नीज़ उसके पैरूकार उसके सामने बरमला कहते थे कि हमारी लाठी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बेहतर है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो फौत हो चुके और उनमें कोई नफ़ा बाक़ी नहीं रहा। यह बातें सुन कर वह खुश हुआ करता था, और यह उमूर मज़ाहिबे अरबा में कुफ़्र हैं।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूछ शरीफ़ पढ़े जाने को नापसन्द करता था और जो मुसलमान जुमा की रात को बुलन्द आवाज़ से दरूद शरीफ़ मिंबर पर पढ़ते थे, उन्हें रोकता था और सख़्त तरीन ईज़ाएँ पहुंचाता था, हत्ता कि एक नाबीना मुअज़्ज़िन जो अज़ान से पहले दरूद शरीफ़ पढ़ता था, और उसके रोकने से नहीं रुकता था। उसको उसने क़त्ल करवा दिया और अपने पैरोकारों को फ़रेब आफ़रीनी से यह समझाया करता था कि मैं यह सब काम तौहीद की हिफ़ाज़त के लिए कर रहा हूँ।

दरूद शरीफ़ के मौज़ू पर दलाइलुल-ख़ैरात और उस जैसी कितनी ही किताबें उस ने जला डालीं। इसी तरह फ़िक़्ह और तफ़्सीर और हदीस की जो किताबें उसके मज़्ऊमात के ख़िलाफ़ थीं, उन सब को उस ने जला डाला और उस ने पैरोकारों को इज़्ने आम दे रखा था कि जिस तरह चाहें, अपनी अक़्ल से कुरआने करीम की तफ़्सीर करें।

शैख़ नज्दी ने मुहम्मद बिन सऊद को जो अपने अज़... नज्दी तकमील के लिए आल-ए-कार बनाया, इस मौज़ू पर अल्लामा इ... ...प लिखते हैं :

मुहम्मद बिन सऊद से गठ जोड़ : शैख़ नज्दी ने मुहम्मद बिन सऊद की ख़ातिर कश्फ़ुश्शुबहात नामी एक रिसाला लिखा। उस रिसाला में उस ने तमाम मुसलमानों को काफिर क़रार दिया और यह ज़अम किया कि छेः सौ साल से तमाम मुसलमान कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला हैं और कुरआने करीम की जो आयात कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई थीं, उनको सालेह मुसलमानों पर चिस्पाँ किया।

इब्ने मस्ऊद ने उस रिसाला को अपनी मलिकत की हुदूद वसी करने के लिए वसीला बना लिया ताकि अरब उसकी पैरवी करें। शैख़ नज्दी लोगों को अपने दीन की तरफ़ दावत देता और लोगों को यह ज़हन नशीन कराता कि आसमान के नीचे उस वक़्त जिस क़द्र मुसलमान हैं, बिलारैब सब मुश्रिक हैं और जो मुश्किर को क़त्ल करेगा, उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाएगी। शैख़ नज्दी जो भी हुक्म देता, इब्ने सऊद उस पर अमल करता। जब शैख़ नज्दी किसी इंसान के क़त्ल या उस के माल लूटने का हुक्म जारी करता, तो इब्ने सऊद उस हुक्म की तामील करता, पस नज्दियों की इस क़ौम में मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब एक नबी की शान से रहता था। उसकी हर बात पर अमल किया जाता था और वह कोई काम उसकी इजाज़त के बग़ैर नहीं करते थे और नज्द के लोग शैख़ नज्दी की इतनी ताज़ीम करते थे जितनी ताज़ीम किसी नबी की की जा सकती है।

शैख़ नज्दी ने जो मुल्हिदाना और इंसानियत सोज़ ज़ालिमाना कार्रवाइयाँ कीं, उन पर क़लम उठाते हुए अल्लामा इराक़ी लिखते हैं :

(7) शैख़ नज्दी की इल्म और उलमा से अदावत :

शैख़ नज्दी के नफ़रत अंगेज़ कामों में से एक काम यह है कि उस ने कसीर तादाद में इल्मी किताबों को जल्वा डाला। दूसरा यह कि कसीर उलमा को क़त्ल करा दिया, इसी तरह अवाम व ख़्वास में से बेहिसाब बेगुनाहों के ख़ूने नाहक़ से उसके हाथ रंगीन हुए और उसने उनके क़त्ल को हलाल और माल को लूटना जाइज़ ठहराया था। तीसरा बदतरीन

फ़ेअ्ल यह है कि उस ने औलिया अल्लाह की क़बरों को खुदवा डाला और चौथा उस से भी क़ाबिले नफ़रत काम यह किया कि अहसा में औलियाए किराम की क़बरों को बैतुल-खुला में तब्दील करा दिया। लोगों को दलाइलुल-ख़ैरात और दूसरे ज़िक्र व अज़्कार का पढ़ने से मना करता था। इसी तरह मीलाद शरीफ़ और मस्जिद के मीनारों में अज़ान के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ने से रोकता था जो मुसलमान यह मुबारक और मुस्तहसन काम करते, उनको क़त्ल करा देता। नमाज़ के बाद दुआ माँगने से मना करता था। अंबिया, मलाइका और औलियाए किराम के वसीला से दुआ माँगने को सराहतन कुफ़्र क़रार देता था और कहता था जो शख़्स किसी को मौलाना या सैयदना कहे, वह काफिर है।

(6) वहाबिया के लरज़ा ख़ेज़ मज़ालिम : वहाबिया के बदतरीन मज़ालिम में से एक यह है कि उन्होंने ताइफ़ पर ग़लबा पा कर क़त्ले आम शुरू कर दिया, यहाँ तक कि बूढ़ों तक सब को तहे तेग़ कर दिया और इस सिलसिला में उन्होंने अमीर, मामूर और अवाम व ख़्वास का कोई फ़र्क़ रवा नहीं रखा। जुल्म की इंतिहा यह थी कि माँ के सामने उसके शीर ख़्वार बच्चे को ज़बह कर देते थे। एक जगह कुछ लोग कुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे। उन्होंने उन तमाम लोगों को उसी हालत में क़त्ल कर दिया। घरों से फारिग़ होने के बाद दुकानों और मस्जिदों का रुख़ किया, मस्जिद में नमाज़ियों को ऐन नमाज़ की हालत में क़त्ल कर दिया ख़्वाह कोई क़्याम में हो, रुकूअ् में या सज्दा में यहाँ तक कि बीस पचीस के सिवा तमाम अह्ले तायफ़ तहे तेग़ कर दिए गये। एक दिन में दो सौ सत्तर मुसलमान क़त्ल किए। दूसरे और तीसरे दिन भी उतने ही लोगों को क़त्ल किया। तीसरे रोज़ अह्ले तायफ़ को धोखे से बुलाया और उनको अमान देने के बहाने से उनके तमाम हथियार ले लिए, फिर उनको बरफानी वादी में ले गये और मर्दों और औरतों के कपड़े उतरवा कर उनको बरफानी वादियों में तड़पता छोड़ गये और उनका माल व मता लूट लिया और किताबों को सरे आम फेंक दिया। उनमें कुरआने करीम के मुतअद्दिद नुस्ख़े, अहादीस में से सही बुख़ारी, सही मुस्लिम और दूसरी हदीस और फ़िक़्ह की दूसरी किताबें थीं जिनकी तादाद हज़ारों तक पहुंचती थी। काफी अरसा तक

यह किताबें अपनी अज़्मत व हुर्मत को यूंही सदाएं देती रहीं और नज्दी उन मुक़द्दस औराक़ को अपने क़दमों तले रौंदते रहे और किसी शख़्स को इजाज़त न थी कि उन औराक़ में से कोई वर्क़ उठा ले। फिर उन्होंने तायफ़ के घरों में आग लगा दी और एक ख़ूबसूरत और आबाद शहर को बरबाद करके चटियल मैदान बना दिया और यह वाक़या 1271 हिज० में वक़ूअ् पज़ीर हुआ।

अबू हामिद बिन मरज़ूक़ : अल्लामा अबी हामिद बिन मरज़ूक़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी के अक़ाइद और उसके चन्द मज़्मूम अफ़्आल का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं:

शैख़ नज्दी के अक़ाइद : हम शुरू ही में बयान कर चुके हैं कि शैख़ नज्दी के बुनियादी अक़ीदे चार हैं :

1. अल्लाह तआला को मख़्लूक़ से मुशाबेह मानना।
2. उलूहियत और रुबूबियत को सिफ़ते वाहिदा मानना।
3. नबी अलैहिस्सलाम की ताज़ीम न करना।
4. तमाम मुसलमानों की तक्फ़ीर करना।

इन चार अक़ीदों में शैख़ नज्दी इब्ने तैमिया का मुक़ल्लिद है और इब्ने तैमिया पहले अक़ीदे में करामिया और मुजस्समा का मुक़ल्लिद है और चौथे अक़ीदे में ख़्वारिज का मुक़ल्लिद है, दूसरा और तीसरा अक़ीदा उसकी अपनी इख़्तिरा है। पहले उस ने उलूहियत और रुबूबियत की वहदत का अक़ीदा तराशा और उसके ऊपर तीसरे अक़ीदा तन्क़ीसे रिसालत की बुनियाद रखी।

शैख़ नज्दी हुज़ूर पर दरूद शरीफ़ पढ़ने को नापसन्द करता था और दरूद शरीफ़ सुनने से उसको तक्लीफ़ होती थी और जुमा की रात को खुसूसन दरूद शरीफ़ पढ़ने से रोकता था और मस्जिद के मीनारों में बुलन्द आवाज़ से दरूद शरीफ़ पढ़ने से भी रोकता था और जो शख़्स दरूद शरीफ़ पढ़ता, उसको सख़्त ईज़ा देता, यहाँ तक कि उस ने एक सालेह और नाबीना मुअज़्ज़िन को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल करा दिया कि उस ने मस्जिद के मीनार में अज़ान के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ा था।

इब्ने तैमिया ने तक्फ़ीरे मुस्लेमीन के अक़ीदा को अपनी किताबों में किताब व सुन्नत की इस्तेलाहों और उलमा की इबारतों की ओट में छुपा

कर रखा था, लेकिन शैख़ नज्दी ने तमाम एहतियातों को बालाए ताक़ रखते हुए तक्फ़ीरे मुस्लेमीन का फत्वा दे दिया और बिना इब्ने तैमिया पर रखी।

शैख़ नज्दी कहता था कि मस्जिद के मीनारों में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद शरीफ़ पढ़ने का गुनाह एक फाहिशा कस्बीया के घर मज़ामीर बजाने से ज़्यादा है और अपने पैरोकारों को फरेब देता था कि तौहीद की हिफ़ाज़त इसी तरह होगी।

शैख़ नज्दी ने दरूद शरीफ़ की आम किताबों और बिल-ख़ुसूस दलाइलुल-ख़ैरात को जल्वा दिया और कहता था कि यह बिदअत हैं और तौहीद की मुहाफ़िज़त इसी तरह होगी और वह अपने पैरोकारों को फ़िक़्ह, तफ़्सीर और हदीस की किताबों के मुताला से मना किया करता था और हर शख़्स की उसकी अक़्ल के मुताबिक़ तफ़्सीर करने की इजाज़त दे रखी थी, चुनांचे उसके मुत्तबईन इसी तरह किया करते थे और जो कुछ कुरआने करीम से मतालिब अख़ज़ करते, उसी पर अमल करते और लोगों से कराते।

अल्लामा अबी मरज़ूक़ ने शैख़ नज्दी की दीगर शनाआत और मफ़ासिद में तक़्रीबन वही बातें लिखी हैं, जिनको अल्लामा सैयद दहलान मक्की और अल्लामा इराक़ी लिख चुके हैं, इसलिए हम ने तवालत की वजह से वह तमाम इबारात तर्क कर दें।

अनवर शाह कश्मीरी : देवबन्दियों के मशहूर मुहद्दिस अनवर शाहर कश्मीरी मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के बारे में इज़्हारे ख़्याल करते हुए लिखते हैं :

मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी निहायत बेवकूफ़ और कम इल्म शख़्स था और वह मुसलमानों पर कुफ़्र का हुक्म लगाने में बहुत तेज़ था।

हुसैन अहमद "मदनी" : देवबन्दी मक्तबे फ़िक्र के एक बड़े आलिम हुसैन अहमद मदनी ने "शिहाबे साक़िब" में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी की शख़्सियत और उसके अक़ाइद से बहस की है, हम इन सुतूरे परीशां को एक मुनज़्ज़म शक्ल में हवाला सफ़्हात की क़ैद के साथ पेश कर रहे हैं :

1. साहिबो! मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब नज्दी इब्तिदा तेरहवीं सदी

नज्द अरब से ज़ाहिर हुआ और चूंकि यह ख़्यालाते बातिला और अक़ाइदे फ़ासिदा रखता था, उस ने अह्ले सुन्नत वल-जमाअत से क़त्ल व क़ेताल किया। उनको बिल-जब्र अपने ख़्यालात की तक्लीफ़ देता रहा, उनको अम्वाल को ग़नीमत का माल और हलाल समझा गया, उनके क़त्ल करने को बाइसे सवाब व रहमत शुमार करता रहा। अह्ले हरमैन को खुसूसन और अह्ले हिजाज़ को उमूमन उसने तक्लीफ़ शाक़्क़ा पहुंचाई। सलफ़े सालेहीन और इत्तिबा की शान में निहायत गुस्ताख़ी और बेअदबी के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए, बहुत से लोगों को बवज्हे उसकी तक्लीफ़े शदीदह के मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअज़्ज़मा छोड़ना पड़ा और हज़ारों आदमी उसके और उसकी फौज के हाथों शहीद हो गये और अल-हासिल वह एक ज़ालिम और बाग़ी, ख़ूंख़्वार, फ़ासिक़ शख़्स था। इसी वजह से अह्ले अरब को खुसूसन उसके और उसके इत्तिबा से दिली बुग्ज़ था और है और इस क़द्र है कि इतना क़ौमे यहूद से है न नसारा से न मजूस से न हुनूद से। ग़र्ज़कि वजूहात मज़्कूरतुस्सद्र की वजह से उनको उसके ताइफ़ा से आला दरजा की अदावत है और बेशक जब उस ने ऐसी-ऐसी तकालीफ़ दी हैं तो ज़रूर होना भी चाहिए। वह लोग यहूद व नसारा से इस क़द्र रंज व अदावत नहीं रखते जितनी कि वहाबिया से रखते हैं।

2. मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब का अक़ीदा था कि जुम्ला अह्ले आलिम व तमाम मुसलमाने दयार मुश्रिक व क़ाफ़िर हैं और उन से क़त्ल व क़ेताल करना, उनके अम्वाल को उन से छीन लेना हलाल और जाइज़ बल्कि वाजिब है, चुनांचे नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ ने खुद उसके तरजमा में इन दोनों बातों की तस्रीह की है।

3. नज्दी और उसके इत्तिबा का अब तक यही अक़ीदा है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम की हयात फ़क़त उसी ज़माना तक है। जब तक वह दुनिया में थे। बादे अज़ां वह और दीगर मुमिनीन मौत में बराबर हैं। अगर बाद वफ़ात उनको हयात है तो वही हयात उनको बरज़ुख़ से और असादे उम्मत को साबित है, बाज़ उनके हिफ़्ज़ जिस्म नबी के क़ाइल हैं, मगर बिला इलाक़ा रूह, और मुतअद्दिद लोगों की ज़ुबान से बअल्फ़ाज़े करीह कि जिनका ज़ुबान पर लाना जाइज़ नहीं, दरबारे हयाते नबवी अलैहिस्सलाम सुना जाता है और उन्होंने अपने रसाइल व

तसानीफ़ में लिखा है।

4. ज़्यारते रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व हुज़ूरी आस्ताना शरीफ़ा व मुलाहिज़ा रौज़-ए-मुतह्हेरा को यह ताइफ़ा बिदअत, हराम वग़ैरह लिखता है। इस नीयत से सफर करना महज़ूर और मम्नूअ् जानता है, ला तशद्दुद अर्रिजालु इल्ला इला सलासते मसाजिद उनका मुस्तदिल है। बाज़ उन में से सफरे ज़्यारत को मआज़ल्लाह तआला ज़िना के दरजा को पहुंचाते हैं। अगर मस्जिदे नबवी में जाते हैं, तो सलात व सलाम ज़ाते अक़्दस नबवी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को नहीं पढ़ते और न उस तरफ़ मुतवज्जेह हो कर दुआ वग़ैरह माँगते हैं।

5. वहाबिया मस्अला शफ़ाअत में हज़ारों तावीलें और घरन्ट करते हैं और क़रीब-क़रीब इंकारे शफ़ाअत के बिल्कुल पहुंच जाते हैं।

6. वहाबिया इश्ग़ाले बातनीया व आमाले सूफ़िया मुराक़िबा, ज़िक्र व फ़िक्र व इरादत व मशीख़ीयत और रब्तुल-क़ल्ब बिश्शैख़ व फना व बक़ा व ख़ल्वत वग़ैरह आमाल को फ़ुज़ूल व लग्व और बिदअत व ज़लालत शुमार करते हैं और उन अकाबिर के अक़्वाल व अफ़्आल को शिर्क वग़ैरह कहते है। और उन सलासिल में दाख़िल होना भी मक्रूह व मुस्तक़्बेह बल्कि उस से ज़ाइद शुमार करते हैं, चुनांचे जिन लोगों ने देयारे नज्द का सफर किया होगा, या उन से इख़्तिलात किया होगा, उनको बख़ूबी मालूम होगा कि फ़्यूज़े रूहानिया उनके नज़्दीक कोई चीज़ नहीं है।

7. वहाबिया किसी ख़ास इमाम की तक़्लीद को शिर्कत फ़िर्रिसाला जानते है। और अइम्म-ए-अरबा और उनके मुक़ल्लेदीन की शान में अल्फ़ाज़े राहिबा ख़बीसा इस्तेमाल करते हैं और उसकी वजह से मसाइल में वह गरोह अह्ले सुन्नत वल-जमाअत के मुख़ालिफ़ हो गये, चुनांचे ग़ैर मुक़ल्लेदीने हिन्द इसी ताइफ़ा शनीआ के पैरोकारे हैं। वहाबिया नज्द व अरब अगरचे बवक़्ते इज़्हारे दावा हंबली होने का इक़रार करते हैं, लेकिन अमल दर आमद उनका हरगिज़ जुमला मसाइल में इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैहि के मज़्हब पर नहीं है, बल्कि वह भी अपने फ़हम के मुताबिक़ जिस हदीस को मुख़ालिफ़ फ़िक़्ह ख़्याल करते हैं, उस की वजह से फ़िक़्ह को छोड़ देते हैं, उनका भी मिस्ल ग़ैर मुक़ल्लेदीन के अकाबिर उम्मत की शान में अल्फ़ाज़

गुस्ताख़ाना बेअदबाना इस्तेमाल करना मामूल हो गया है।

8. मस्लन अलल-अर्शे इस्तवा वग़ैरह आयात में ताइफ़ा वहाबिया इस्तवा ज़ाहिरी और जिहालत वग़ैरह साबित करता है जिसण की वजह से सुबूते जिस्मीयत वग़ैरह लाज़िम आता है। अला हाज़ल-क़्यास मस्अला निदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में वहाबिया मुतलक़ मना करते हैं।

9. वहाबिया अरब की जुबान से बारहा सुना गया कि अस्सलातु वस्सलाम अलैका या रसूलुल्लाह को सख़्त मना करते हैं और अह्ले हरमैन पर सख़्त नज़्रीन इस निदा और ख़िताब पर करते हैं और उनका इस्तेहज़ा उड़ाते हैं। और कलिमाते नाशाइस्ता इस्तेमाल करते हैं।

10. वहाबिया तम्बाकू खाने और पीने को हुक़्क़ा हो या सिगार में या चरट में और उसके नास लेने को हराम और अक्बरुल-कबाइर में से शुमार करते हैं। उन जुहला के नज़्दीक ज़ना और सरक़ा करने वाला इस क़द्र मुलामत नहीं किया जाता, जिस क़द्र तम्बाकू इस्तेमाल करने वाला मुलामत किया जाता है और वह आला दरजा के फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार से वह नफ़्रत नहीं करते जो तम्बाकू इस्तेमाल करने वाले से करते हैं।

11. वहाबिया अमरे शफ़ाअत में इस क़द्र तंगी करते हैं कि बमंज़िला अद्म के पहुंचा देते हैं।

12. वहाबिया सिवाए इल्म अहकामे शराअ्, जुमला उलूम इसरारे हक़्क़ानी वग़ैरह से ज़ात सरवरे काइनात ख़ातमुन्नबीयीन अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ख़ाली जानते हैं।

13. वहाबिया नफ़्स ज़िक्रे विलादत हुज़ूर सरवरे काइनात अलैहिस्सलातु वस्सलाम की क़बीह व बिदअत कहते हैं और अला हाज़ल-क़्यास अज़्कार औलियाए किराम रहमहुमुल्लाह तआला को भी बुरा समझते हैं।

ख़लील अहमद अंबैठवी : अशरफ़ अली थानवी, शब्बीर अहमद उस्मानी, हबीबुर्रहमान देवबन्दी व दीगर अकाबिरे देवबन्द ख़लील अहमद अंबैठवी ने उलमाए मदीना के सवालात के जवाब में एक किताब "अत्तस्दीक़ात लेदफ़इत्तल्बीसात" लिखी जिस की तस्दीक़ व ताईद अशरफ़ अली थानवी, शब्बीर अहमद उस्मानी, हबीबुर्रहमान

देवबन्दी और दीगर अकाबिरे देवबन्द ने की। इस किताब में भी शैख़ नज्दी का ज़िक्र आ गया है। उलमाए मदीना शैख़ नज्दी के बारे में सवाल करते हैं :

सवाल : मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी हलाल समझता था, मुसलमानों के ख़ून और उनके माल व आबरू को और तमाम लोगों को मन्सूब करता था, शिर्क की जानिब और सल्फ़ की शान में गुस्ताख़ी करता था। उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है और क्या सलफ़ और अह्ले क़िब्ला की तक्फ़ीर को तुम जाइज़ समझते हो या क्या मुश्रिब है?

जवाब : हमारे नज़्दीक उनका वही हुक्म है जो साहिबे दुर्रे मुख़्तार ने फरमाया है और ख़्वारिज एक जमाअत है, शौकत वाली जिन्होंने इमाम पर चढ़ाई की थी तावील से कि इमाम को बातिल यानी कुफ़्र या ऐसी मासियत का मुर्तकिब समझते थे जो क़िताल को वाजिब करती है। इस तावील से यह लोग हमारी जान व माल को हलाल समझते और हमारी औरतों को क़ैदी बनाते हैं। आगे फरमाते हैं उनका हुक्म बाग़ियों का है। फिर यह भी फरमाया है कि हम उनकी तक्फ़ीर सिर्फ़ इसलिए नहीं करते कि यह फ़ेअ्ल तावील से है, अगरचे बातिल ही सही और अल्लामा शामी ने उसके हाशिया में फरमाया है जैसा कि हमारे ज़माना में अब्दुल-वहाब के ताबईन सरज़मीने नजद से निकल कर हरमैन शरीफ़ैन पर मुतग़लिब हुए। अपने को हंबली मज़्हब बताते थे, मगर उनका अक़ीदा यह था कि बस वही मुसलमान हैं और जो उनके अक़ीदा के ख़िलाफ़ हो, वह मुश्रिक है और इसी बिना पर उन्होंने अह्ले सुन्नत और उलमा अह्ले सुन्नत का क़त्ले मुबाह समझ रखा था, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उनकी शौकत तोड़ दी।

नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ भोपाली : ग़ैर मुक़ल्लिदों के मशहूर इमाम नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ भोपाली अपने फ़िर्क़ा यानी ग़ैर मुक़ल्लिदों को वहाबियत से बरी करने के लिए एक तवील गुफ़्तगू करते हुए और माले कार लिखते हैं।

हिन्दुस्तान से लोग तिजारत और हरमैन शरीफ़ैन की ज़्यारत के लिए जाते हैं और हरमैन शरीफ़ैन के लोग शैख़ नज्दी के नाम से भी नाराज़ होते हैं।

क्योंकि शैख़ नज्दी उनके लिए शदीद तकालीफ़ और मसाइब का सबब बना था। पस जो शख़्स भी मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा से हो कर आता है, वह अपने दिल में मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के ख़िलाफ़ सख़्त ग़म व गुस्से को लेकर आता है।

मुहम्मद मन्ज़ूर नौमानी : देवबन्दियों के मशहूर आलिम मुहम्मद मन्ज़ूर नौमानी शैख़ नज्दी से बहुत मुतअस्सिर हैं और अपने मज़ामीन में उन्होंने शैख़ नज्दी की मुबालिग़ा आमेज़ वकालत की है, उसके बावजूद वह बाज़ मसाइल में शैख़ नज्दी से इख़्तिलाफ़ करने पर मजबूर हो गये, लिखते हैं।

उसूली दरजा में इस तवाफ़ुक़ व तरज़े फ़िक्र में बड़ी हद तक यकसानियत और यगांगत के बावजूद बाज़ नज़्रियात व मसाइल में हमारे अकाबिर उलमाए देवबन्द और शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की जमाअत के नुक़्त-ए-नज़र और रवैया में कुछ फ़र्क़ व इख़्तिलाफ़ भी है। मसलन वह हज़रात ज़ियारते नबवी को मुस्तहब व मस्नून बल्कि अफ़ज़ल आमाल मानने के बावजूद मशहूर हदीस ला तशद्दू अर्रिजाल. ....अलख़ की ख़ास ज़्यारत के लिए मदीना मुनव्वरा की तरफ़ सफर करना जाइज़ नहीं समझते। उनके नज़्दीक सफर मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ने की नीयत से करना चाहिए। फिर वहाँ पहुँच कर ज़्यारत की मुस्तक़िल नीयत करें। हदीस ला तशद्दू वर्रिजाल अलख़ के बारे में उनकी तहक़ीक़ यह है कि इस मुमानेअत का तअल्लुक़ सिर्फ़ मसाजिद के लिए सफर करने से है।

इसी तरह दुआ में तवस्सुल बिन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और बिस्सालेहीन को शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब और उनके मुत्तबईन बिल्कुल जाइज़ नहीं समझते और हमारे अकाबिर के नज़्दीक वह नाजाइज़ नहीं है, क्योंकि वह फ़िल-हक़ीक़त तवस्सुल बेआमालेहिम अस्सालेहा ही की एक सूरत है और तवस्सुल बिल-आमाले अस्सालेहा बिल-इत्तिफ़ाक़ जाइज़ और साबित है। हाँ अगर कोई जाहिल और गुमराह आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के या किसी और मक़्बूल वफ़ात याफ़्ता बन्दे के वसीले से दुआ करे और समझे कि इस वसीला की वजह से अल्लाह तआला पर मआज़ल्लाह कोई बोझ

और दबाव पड़ेगा और वह क़ुबूल ही कर लेंगे या यह समझ कर दुआ करे कि अल्लाह तआला के यहाँ इस वसीला के बग़ैर दुआ क़ाबिले समाअत न होगी, तो बेशक यह अक़ीदा सख़्त गुम्राहाना और यह फ़ेअ्ल हराम होगा। (किसी मुसलमान से यह तवक़्क़ु नहीं की जा सकती कि वह वसीला से दुआ मज़्कूरा नज़्रिया से माँगता होगा, यह सूरत महज़ फ़र्ज़ी है, वाक़ई नहीं। (क़ादरी ग़ुफ़िरा लहू)

इसी तरह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ए अक़्दस पर हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ करने के साथ आप से शफ़ाअत के सवाल को शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब और उनके मुत्तबईन नाजाइज़ बल्कि एक तरह का शिर्क कहते हैं जैसा कि शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के हवाला से गुज़िश्ता क़िस्त में नक़ल किया जा चुका है (इस बारे में उनका एक ख़ास नुक़्त-ए-नज़र है जो इन हज़रात की किताबों में देखा जा सकता है) लेकिन हमारे अकाबिर इस उसूली अक़ीदा और यक़ीन में इन से मुत्तफ़िक़ होने के बावजूद कि "क़्यामत और आख़िरत में कोई नबी या वली या फ़रिश्ता अल्लाह तआला के इज़्न व इजाज़त के बेग़ैर किसी की शफ़ाअत नहीं कर सकेगा और सिर्फ़ उसी बन्दे के हक़ में शफ़ाअत हो सकेगी जिसके लिए अल्लाह तआला की मर्ज़ी व इजाज़त होगी।"

ज़ाइर के लिए रौज़-ए-मुबारक पर हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ करने के साथ आप से शफ़ाअत और इस्तिग़फ़ार की इस्तिदआ को भी सही समझते हैं। हमारे नज़्दीक इन दोनों बातों में कोई मुनाफ़ात नहीं है, इसी तरह कि शफ़ाअत की हरगिज़ यह बुनियाद नहीं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शफ़ाअत के मुआमला में "ख़ुद मुख़्तार" समझते हैं। ऐसा समझना बिला शुबह सख़्त गुम्राही है। किसी मख़्लूक़ को भी बारगाहे ख़ुदावन्दी में बतौरे ख़ुद शफ़ाअत करने का अख़्तियार नहीं है। और न होगा।

(मन्ज़ूर अहमद नौमानी इक़रार करते हैं कि शैख़ नज्दी दुनिया में हुज़ूर से तलबे शफ़ाअत को शिर्क क़रार देते हैं, बल्कि कश्फ़ुश्शुबहात में शैख़ नज्दी ने तालिबे शफ़ाअत को न सिर्फ़ मुश्रिक बल्कि उसके क़त्ल को जाइज़ और उसके माल लूटने को मुबाह लिखा है और इस मज़्मून में उन्होंने दुनिया में हुज़ूर से तलबे शफ़ाअत को जाइज़ लिख कर शैख़

नज्दी का शिर्क खुद अपनी ज़ात पर जारी कर लिया, बल्कि अपने क़त्ल और माल को भी मुबाह कर दिया। उसके बावजूद वह शैख़ नज्दी के मद्दाह हैं, उसी का नाम है अन्धी अक़ीदत। (क़ादरी गुफ़िरा लहू)

(नौमानी साहब का इन दोनों बातों में मुनाफ़ात न समझना खुद फ़रेबी से ज़्यादा हक़ीक़त नहीं रखता और उन्होंने शैख़ नज्दी के शफ़ाअत तलब करने पर फतवा शिर्क को जो इस बात पर महमूल किया है कि कोई शख़्स हुज़ूर को खुद मुख़्तार समझ कर आप से शफ़ाअत तलब करे, उसको शैख़ नज्दी शिर्क कहते हैं, तो यह शैख़ नज्दी के अपने कलाम के ख़िलाफ़ और तौजीहुल-कलाम बेमा ला यरज़ा बेही क़ाइलुहू का मिस्दाक़ है।)

कश्फ़ुश्शुबहात स० 37 पर शैख़ नज्दी ने तालेबीने शफ़ाअत का रद्द करते हुए लिखा है :

अगर मोतरिज़ यह कहे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने शफ़ाअत का मरतबा दिया है, और मैं इसी दी हुई शफ़ाअत से सवाल करता हूँ, तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर को शफ़ाअत दी और तुम को शफ़ाअत तलब करने से रोक दिया है।

इस से भी वाज़ेह सराहत शैख़ नज्दी की इस इबारत में है :

कश्फ़ुश्शुबहात के सफ़: 31/32 पर शैख़ नज्दी लिखते हैं :

दुश्मनाने खुदा के दीने रसूल पर मुतअद्दिद एतराज़ात हैं जिनकी बिना पर वह लोगों तक सही दीन पहुंचने से रोकते हैं, उन में से एक एतराज़ यह है कि दुश्मनाने खुदा कहते हैं। हम अल्लाह तआला के साथ शिर्क नहीं करते, बल्कि हम गवाही देते हैं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई ख़ालिक़ है न राज़िक़, और न अल्लाह तआला के सिवा कोई नफ़ा दे सकता है और न नुक़सान पहुंचा सकता है और इन बातों में खुदा का कोई शरीक नहीं है और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपनी ज़ात के लिए किसी नफ़ा और नुक़सान के मालिक नहीं हैं चे जाएकि अब्दुल-क़ादिर या कोई और शख़्स हो, लेकिन मैं एक़ गुनहगार शख़्स हूँ और सुलहा अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं, इस बिना पर मैं उन से सवाल करता हूँ।

क्या शैख़ नज्दी की इस तस्रीह के बाद भी नौमानी साहब की यह

तावील चल सकती है कि शैख़ नज्दी ने हुज़ूरे अकरम से इस सूरत में शफ़ाअत करने को मना किया है जो हुज़ूर को खुद मुख़्तार समझता हो। हैरत है कि नौमानी साहब ख़ौफ़े खुदा और आख़िरत के हिसाब से बिल्कुल आरी हो कर शैख़ नज्दी के कलाम में तहरीफ़ और बेबुनियाद तावील करके यह साबित करने की सई नाकाम कर रहे हैं कि शैख़ नज्दी तलबे शफ़ाअत को इस सूरत में मना करते हैं जो हुज़ूर को खुद मुख़्तार माने जबकि शैख़ नज्दी हुज़ूर को आजिज़ और माज़ूना मिनश्शफ़ाअत मानने के बाद भी तलबे शफ़ाअत पर कुफ़्र और क़त्ल और माल लूटने का हुक्म लगाते हैं। अल्लाह तआला इस इल्मी ख़्यानत और गुम्राह कुन प्रोपेगण्डे से हमें महफूज़ रखे। (क़ादरी गुफ़िरा लहू)

अगले पैराग्राफ़ में नौमानी साहब लिखते हैं :

इसी तरह एक इख़्तिलाफ़ इन हज़रात के और हमारे अकाबिर के रवैया में यह है कि जो लोग अपने अश्आर वग़ैरह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख़ातब करके इस्तिआनत और इस्तिग़ासा के अन्दाज़ में निदा और ख़िताब करते हैं, उनके बारे में हमारे अकाबिर का मूक़िफ़ यह है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हाज़िर व नाज़िर और आलमुल-ग़ैब व मुतसर्रिफ़ समझ कर ऐसा ख़िताब और इस्तिम्दाद व इस्तिग़ासा किया जाए, तो बिला शक व शुबह क़तअन शिर्क है, लेकिन अगर किसी शख़्स का अक़ीदा सही है, वह रसूलुल्लाह को न हाज़िर व नाज़िर समझता है न आलिमुल-ग़ैब और मुतसर्रिफ़ समझता है, बल्कि ऐसा समझने को शिर्क जानता है लेकिन शौक़िया तौर पर हाज़िर फ़िज़्ज़ेहन से ख़िताब कर रहा है (जैसा कि अश्आर में बकसरत ऐसा होता है) इस उम्मीद पर ख़िताब कर रहा है कि अल्लाह तआला उसका यह पयाम आप तक पहुंचा देगा और आप इन्शाअल्लाह दुआ फरमाएंगे, तो यह हरगिज़ शिर्क नहीं है और इसी बिना पर साहिबे क़सीदा बुर्दा अल्लामा बूसीरी और जामी वग़ैरह के इस तरह के अश्आर को इसी पर महमूल करते हैं और यह हरगिज़ ज़बरदस्ती की तावील नहीं है।

इस बजाहत के बाद लिखते हैं : लेकिन शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब और उनके मुत्तबईन इस मस्अला में यह तफ़्सील नहीं करते। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या किसी भी वफ़ात

याफ़्ता बुज़ुर्ग से इस तरह के ख़िताब को बहरहाल शिर्क क़रार देते हैं।

नोट : अह्ले सुन्नत हुज़ूर पर आलमुल-ग़ैब का इत्लाक़ नहीं करते, हुज़ूर को ग़ैब पर मुत्तला मानते हैं, हाज़िर व नाज़िर की बहस मौलाना ग़ुलाम रसूल सईदी साहब की तस्नीफ़ "तौज़ीहुल-बयान" में आ चुकी है और कोई भी शख़्स अल्लाह तआला के सुनाए बेग़ैर नहीं सुन सकता, न कोई शख़्स खुदा की दी हुई ताक़त के बेग़ैर तसर्रुफ़ कर सकता है और जो शख़्स भी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुदा करता है, इसी अक़ीदा से करता है। इसी तरह हुज़ूर अल्लाह के दिए हुए ग़ैब को जानते हैं, उसकी दी हुई ताक़त से तसर्रुफ़ करते हैं, उसके सुनाने से सुनते हैं। उन हक़ाइक़ का नौमानी साहब को भी इक़रार है और साथ ही यह भी कहते हैं कि शैख़ नज्दी हर हाल में निदा को शिर्क कहते हैं, लिहाज़ा नौमानी साहब भी शैख़ नज्दी के फत्व-ए-कुफ़्र से बच नहीं सकते। (क़ादरी ग़ुफ़िरा लहू)

शैख़ नज्दी का रद्द करने वाले अकाबिरे इस्लाम की इज्माली फ़ेहरिस्त : शैख़ अबी हामिद बिन मरज़ूक़ ने इन उलमाए इस्लाम की फ़ेहरिस्त मुहैया की है जिन्होंने मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के अक़ाइदे फ़ासिदा के रद्द में तस्नीफ़ाते जलीला सुपुर्द क़लम फरमाई हैं, मुलाहिज़ा कीजिए :

1. शैख़ मुहम्मद बिन सुलेमान कुरदी।
2. शैख़ नज्दी के उस्ताद अल्लामा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लतीफ़ शाफई, उनकी किताब का नाम : तज्रीद सैफुल-जिहाद लेमुद्दई अल-इज्तिहाद।
3. अल्लामा अफ़ीफ़ुद्दीन अब्दुल्लाह बिन दाऊद हंबली, किताब का नामः अस्सवाइक़ वर्रऊद।
4. अल्लामा मुहक़्क़िक़ मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अफ़ालिक़ हंबली, किताब का नाम :
5. अल्लामा अहमद बिन अली अल-कुबानी बसरी शाफ़ई।
6. अल्लामा अब्दुल-वहाब बिन अहमद बरकात शाफ़ई, अहमदी, मक्की।

7. शैख़ अता अल-मक्की, किताब का नाम : अस्सारिमुल-हिन्दी फ़ी उनुकिन्नज्दी।
8. शैख़ अब्दुल्लाह बिन ईसा अल-मुवेसी।
9. शैख़ अहमद मिसरी एहसाई।
10. बैतुल-मुक़द्दस के एक आलिम, किताब का नाम :
11. सैयद अल्वी बिन अहमद हद्दाद, किताब का नाम :
12. शैख़ मुहम्मद बिन शैख़ अहमद बिन अब्दुल्लतीफ़ अल-एहसाई।
13. अल्लामा अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम मीर ग़नी अस्साकिन बित्ताइफ़। किताब का नाम :
14. अश्शैख़ मुहम्मद सालेह ज़मज़मी शाफ़ई।
15. अल्लामा ताहिर हन्फ़ी, किताब का नाम : इंतिसारू लिल-औलियाइल-अबरार।
16. मज़ाहिबे अरबा के अकाबिर के जवाबात का मज्मूआ।
17. मज़ाहिबे अरबा के अकाबिर व रसाइल पर मुश्तमिल एक ज़ख़ीम।
18. अल्लामा सैयद अल-मुन्ई।
19. अल्लामा सैयद अब्दुर्रहमान।
20. अल्लामा सैयद अल्वी बिन अल-हद्दाद, किताब का नाम :
21. सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब, किताब का नाम :
22. अल्लामा मुहक़्क़िक़ शैखुल-इस्लाम बतूनुस इस्माईल अत्तमीमी आ-मालिकी।
23. अल्लामा मुहक़्क़िक़ अश्शैख़ सालेह अल-कवाश अत्तूनसी।
24. अल्लामा मुहक़्क़िक़ सैयद दाऊद अल-बग़दादी अल-हन्फ़ी।
25. अश्शैख़ इब्ने ग़लबून अल्लैबी।
26. सैयद मुस्तफ़ा अल-मिस्री अल-बूलाती।
27. सैयद अत्तबाताई अल-बसरी।

28. अल्लामा अश्शैख़ इब्राहीम अस्सम्नूदी, अल-मन्सूरी, किताब का नाम :

29. मुफ़्ती मक्का सैयद अहमद दहलान, किताब का नाम :

30. अश्शैख़ यूसुफ़ अन्नबहानी, किताब का नाम :

31. जमील सिद्क़ी अज़्ज़हादी अल-बग़दादी, किताब का नाम :

32. शैख़ अल-मुश्रेफ़ी अल-मालिकी अल-जज़ाइरी, किताब का नाम:

33. अल्लामा मख़्दूम मुफ़्ती फास अश्शैख़ अल-महदी अल-वाज़ानी।

34. शैख़ मुस्तफ़ा अल-हमामी अल-मिस्री, किताब का नाम :

35. अश्शैख़ इब्राहीम हिल्मी अल-क़ादरी अल-इस्कन्दरी, किताब का नाम :

36. अल्लामा शैख़ सलामतुल-अज़ामी, किताब का नाम :

37. शैख़ हसन अश्शती अल-हंबली अद्दिमश्क़ी, किताब का नाम :

38. शैख़ हसन अश्शती अल-हंबली अद्दिमश्क़ी, मज़्हबा सूफ़िया की ताईद में एक रिसाला।

39. शैख़ मुहम्मद हसनैन मख़्लूफ़, रिसाला :

40. शैख़ हसन ख़ज़ीक, किताब का नाम :

41. शैख़ अता अल-कस्मुद्दिमश्क़ी, किताब का नाम :

42. अल्लामा शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ अल-क़रशी अल-अजली, अल-मालिकी, अल-एहसाई।

इस फ़ेहरिस्त में इन बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द के नाम शामिल नहीं हैं जिन्होंने अपनी मुतअद्दिद तसानीफ़े जलीला में शैख़ नज्दी के अक़ाइदे बातिला का रद्द किया है। बहरहाल इस फ़ेहरिस्त पर नज़र डालने से मालूम होता है कि शैख़ नज्दी ने बारहवीं सदी में एक ऐसा फित्ना खड़ा कर दिया। जिस को फ़र्द करने के लिए तमाम दुनिया के हक़ परस्त उलमा खड़े हो गये थे।

बाब (4)

वहाबिया का पहला और दूसरा दौर 1745 ई० 1891 ई०

वहाबिया का दौरे अव्वल

1745 ई० - 1818 ई०

इस किताब के पहले बाब में हम अमीर मुहम्मद बिन सऊद मुतवफ़्फ़ी 1179 हिज० के सर पर आराए इक़्तिदार होने की मुकम्मल तस्वीर खींच चुके हैं और इसी बाब में मुहम्मद बिन सऊद के बेटे अब्दुल-अज़ीज़ बिन मुहम्मद बिन सऊद मुतवफ़्फ़ी 1803 हिज० के ख़ूंनीं अहद का भी ज़िक्र किया जा चुका है और उसके बाद उस खानदान का सबसे सफ़्फ़ाक और संगदिल हुक्मरां सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ 1229 हिज० का जांनशीनी का ज़िक्र भी कर चुके हैं।

यह बतलाया जा चुका है कि सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ की जांनशीनी के बारे में मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब से पहले ही राय ली जा चुकी थी, चुनांचे अब्दुल-अज़ीज़ के मक़्तूल होने के बाद सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ को सुलतनत नज्द का फरमांरवा मुक़र्रर कर दिया गया।

सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ का इज्माली तआरुफ़ मस्ऊद आलम से सुनिए, लिखते हैं।

सऊद ज़माम हुकूमत हाथ में लेते ही अपने बाप के नक़्शे क़दम पर दावत व हुकूमत की तौसीअ् में सरगरम हो गया और दूर दराज़ की फौजी मुहिम्मात की सरकरदगी अपने बेटे अब्दुल्लाह के सुपुर्द की, अब्दुल्लाह ने एक तरफ़ हिजाज़ में ख़ैबर को सरनगूं किया और दूसरी तरफ़ बहरैन और रासुल-ख़ीमा तक अपनी फुतूहात की धाक बिठा दी।

सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने अपने बाप की ज़िन्दगी में ख़ूंरेज़ी की किस तरह तर्बियत पाई थी, उसकी भी एक झलक मुलाहिज़ा फरमाएं।

सरदार हसनी लिखते हैं।

वहाबियों ने 1901 ई० में सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ की क़्यादत में करबला मुअल्ला पर मुमिद किया और हज़रत इमाम हुसैन के मुक़द्दस मज़ार को मुन्हदिम कर दिया। करबला मुअल्ला की बेहुरमती की और

अमन पसन्द आबादी का बेश्तर हिस्सा बिला कुसूर तहे तेग़ कर दिया। करबलाए मुअल्ला से बसरा तक का तमाम इलाक़ा ख़ाक सियाह कर दिया। करोड़ों रुपया का माल व अस्बाब लूट लिया, फित्ना तातार के बाद इराक़ में ऐसा ज़ुल्म और फ़साद कभी न हुआ थां। दुनिया भर के मुसलमानों में मातम की सफ़ें बिछ गईं लेकिन दरइया नज्द के दारुल-सलतनत में फतह व नुसरत के शादयाने बज रहे थे।

अब वहाबियों ने शरीफ़ ग़ालिब से भी अह्दे शिकनी की बन्दर्गाह हाली पर बिला वजह क़ब्ज़ा कर लिया, हाली हुदूदे हिजाज में शरीफ़े मक्का की मिल्कीयत थी। एहतजात नाकाम साबित हुआ, वहाबी जंग के ख़्वाहां थे, नाक़ाबिले कुबूल शर्तें पेश कीं, जो सिर्फ़ हक़ीर और कम्ज़ोर दुश्मन ही कुबूल कर सकता था।

हरमे मक्का की बेहुर्मती : सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने ताक़त के नशा में चूर हो कर और मुहाफ़िज़े तौहीद का लुबादा ओढ़ कर मक्का में क्या-क्या सितम ढाए यह सरदार हसनी से सुनिए !

सऊद जो उस वक़्त रुसवाए आलम हो चुका था, हिजाज़ की तरफ़ बढ़ा और लगे हाथों तायफ़ पर क़ाबिज़ हो गया और वहाँ से गर्द व नवाह में अफ़्वाज भेजने लगा। शरीफ़ के पास कोई क़ाबिले ज़िक्र फौज न थी। मुक़ाबला की ताब न ला कर जद्दा चला गया। अप्रैल 1803 ई० में सऊद बिला मुज़ाहमत मक्का में दाख़िल हो गया। वहाबी मुद्दत से आधा रखाए बैठे थे कि असल इस्लाह मक्का से की जाएगी और हर वह चीज़ जिस में कुफ़्र व शिर्क का शाइबा पाया जाता हो, फना कर दी जाएगी, चुनांचे अब मुक़द्दस मज़ारात तोड़ फोड़ दिए गये। ज़्यारत गाहों की बेहुर्मती की गई, हरमे काबा के ग़िलाफ़ चढ़ा दिए गये। वहाबियों के मोतक़िदात के मुताबिक़ जिस क़द्र शआइर या रुसूमात क़ुरआन व सुन्नत के ख़िलाफ़ थीं, एक लख़्ते मम्नूअ़ क़रार दी गईं।

मक्का मुकर्रमा की फतह के बाद वहाबी शुमाल की तरफ़ बढ़े, जद्दह का मुहासरा किया गया, शरीफ़ ग़ालिब ने जांफ़शानी से डट कर मुक़ाबला किया, मदीना मुनव्वरा में भी वहाबियों का मुक़ाबला किया गया।

हरमे मक्का की बेहुर्मती के बारे में ग़ैर मुक़ल्लिदों के मशहूर आलमे नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ भोपाली लिखते हैं, सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़

ने सरदारों और शरीफ़ों को क़त्ल किया और काबा को बरहना कर दिया और दावते वहाबियत कुबूल करने को लोगों पर जब्र किया।

सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ के बारे में एक और ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मिज़ाइयत लिखते हैं।

अब्दुल-अज़ीज़ के बाद उसका बड़ा बेटा सअद (सऊद) अपने बाप से भी ज़्यादा पुर जोश और मर्दे मैदान निकला। उस ने और भी अपनी फ़ुतूहात मुल्की को उस्अत दी और तुर्की सलतनत को हिला दिया।

मक्का फतह करने के बाद उस मर्दे मैदान की शुजाअत का एक वाक़या बयान करते हुए मिर्ज़ाइयत लिखते हैं :

हुक़्क़ा पीने की मुमानिअत बहुत सख़्त थी, एक दिन इत्तिफ़ाक़ से मुहतसिब ने एक ख़ातून को जो हुक़्क़ा की हद से ज़्यादा आदी थी, हुक़्क़ा पीते देख लिया, वह हर चन्द चाहती थी कि बच के निकल जाऊं, पर मुम्किन न हुआ, आख़िर वह पकड़ी गई। उलटे गधे पर उसको सवार किया गया और उसकी गर्दन पर उसका हुक़्क़ा रखा गया और गली दर गली उसे फेरा गया ताकि औरतों को सख़्त इबरत हो और फिर वह शहर बद्र कर दी गई।

हरमे मदीना की बेहुर्मती : 1803 ई० के अख़ीर में सऊद की क़यादत में वहाबियों ने मदीना मुनव्वरा भी फतह कर लिया। मस्ऊद आलम नदवी लिखते हैं।

1805 ई० के आग़ाज़ में अह्ले मदीना ने भी इताअत क़ुबूल कर ली और समअ् व ताअत का अह्द किया, हस्बे दस्तूर मदीना मुनव्वरा में आम क़बरों के क़ुब्बे और ज़्यारत गाहें मुन्हदिम कर दी गईं।

मिर्ज़ा हैरत लिखते हैं : 1803 ई० के इख़्तिताम पर मदीना भी सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ के क़ब्ज़ा में आ गया। मदीना के लिए उसके मज़हबी जोश में यहाँ तक उबाल आया कि उस ने और मक़बरों से गुज़र कर ख़ुद नबी अकरम के मज़ार को भी सलामत न छोड़ा, आपके मज़ार की जवाहर निगार छत को बर्बाद कर दिया और उस चादर को उठा दिया, जो आपके मज़ारे मुक़द्दस पर पड़ी रहती थी।

रशीद रज़ा मिस्री लिखते हैं : यही लोग (सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ ग़ैरुहू क़ादरी) तेरहवीं सदी हिजरी के आग़ाज़ में (यानी उन्नीसवीं सदी

ईसवी के अवाइल में हरमैन शरीफ़ैन पर क़ाबिज़ हुए थे, लेकिन उन्होंने हुजरा शरीफ़ा को नहीं गिराया? अल्बत्ता बाज़ मुअर्रेख़ीन का क़ौल है कि उन्होंने हरमे नबवी के कुब्बा के ऊपर से सोने का हिलाल और कुरह उतार लिया था और वह कुब्बा को भी गिराना चाहते थे, लेकिन उन कार्कुनों में से जो हिलाल और कुरह मज़्कूरा को उतारने के लिए ऊपर चढ़े थे, दो आदमी नीचे गिर कर मर गये, जिसका नतीजा यह हुआ कि उन्होंने कुब्बा गिराने का इरादा तर्क कर दिया।)

नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ भोपाली लिखते हैं : सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ का फिर बनी ज़र्ब से हर्ब का इत्तिफ़ाक़ हुआ और उनके शहरों में उसने बहुत ख़ूंरेज़ी की और शहर यंबूअ् में उतरा और वहां के लोगों ने उसकी इताअत कुबूल की, फिर मदीना मुनव्वरा में गया और वहाँ के लोगों पर जिज़्या बांधा और मज़ार मुक़द्दस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बरहना कर दिया और उसके ख़ज़ाइन और दफ़ाइन सब लूट कर दरइया को ले गया, बाज़ों ने कहा कि साठ ऊंटों पर बार करके ख़ज़ाना ले गया और ऐसा ही अबू बकर और उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के मज़ारात के साथ पेश आया और मदीना पर तमर बिन शैख़ बनी हर्ब को हाकिम किया और लोगों को दावते वहाबिया के कुबूल करने पर मज्बूर किया और सऊद ने कुब्बा मज़ार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ढाने का क़स्द किया, मगर उस अम्र का मुर्तकिब न हुआ और हुक्म किया कि बैतुल्लाह का हज सिवाए वहाबियों के और कोई न करे और उस्मानियों को हज से मना हुआ और कई बरस तक लोग हज से महरूम रहे और शाम और अजम के लोगों को हज नसीब न हुआ और उनके ख़ौफ़ से अक्सर हुज्जाज अपने मक़ासिद पर फाइज़ न हो सके।

सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ की फ़ुतूहात : सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ की फ़ुतूहात के बारे में सरदार हसनी लिखते हैं : मौते के वक़्त अब्दुल-अज़ीज़ की उम्र 82 बरस की थी, उसके अहद की अक्सर फ़ुतूहात उसके बेटे सऊद के हाथ पर हुई थीं, चुनांचे सऊद बाप की जगह तख़्त नशीन हुआ। उसके अहद में वहाबी फ़ुतूहात का सिलसिला बराबर क़ाइम रहा, हिजाज़ के शुमाल से लेकर अमान तक जज़ीरतुल-अरब नज्दियों की हुकूमत में आ गया। अरब का मश्रिक़ी

साहिल भी उनके क़ब्ज़ में था, बहरैन भी फतह हो गया, यमन के सिवा सारा मुल्क बतीबे ख़ातिर या बा अम्र मज्बूरी वहाबी हो गया था।

तुर्की की ख़िलाफ़ते उस्मानिया का इक़्दाम :

जज़ीरा अरब ख़िलाफ़ते उस्मानिया के ज़ेरे इंतिज़ाम था और तुर्कों की तरफ़ से शरीफ़ ग़ालिब हिजाज़ का हुक्मरान और मुहाफ़िज़ हरमैन था। बज़ाहिर यह बात बहुत हैरान कुन मालूम होती है कि वहाबियों की इस सारी कार्रवाई के दौरान तर्क ख़ामोश तमाशाई बना रहा, उसका मुक़र्रर करदह हाकिम शरीफ़ ग़ालिब शिकस्त पर शिकस्त खाता रहा।

और तुर्कों की तरफ़ से उसको कोई मदद न पहुंची, हत्ता कि वहाबी ख़िलाफ़ते उस्मानिया और वहदते इस्लामिया को पारा-पारा करके तमाम जज़ीरा अरब पर क़ाबिज़ हो गये, लेकिन उस ख़ामोशी की बहुत सी वजूहात थीं। तुर्क का सुल्तान इस वक़्त बैनुल-अक़्वामी तौर पर बहुत सी जंगों में उल्झा हुआ था, जैसे ही उसको उन जंगों से एक गुना इत्मीनान हुआ। उसकी एक ज़र्ब ने वहाबी हुकूमत को बेख़ व बन से उखाड़ फेंका, अब्दुल-अज़ीज़ बिन मुहम्मद बिन सऊद और सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ के दौर में वहाबी सलतनत उभरी और यह दौर 1765 ई० 1179 हिज० से लेकर 1817 ई०, 1229 हिज० तक फैला हुआ है। आइए देखें इस दौर में सलातीन तर्क बैनुल-अक़्वामी तौर पर किस तरह जंग व पैकार में उल्झे हुए थे मशहूर मुअर्रिख़ अबुल-उला सैयद शाह मुहम्मद कबीर लिखते हैं।

सुल्तान अब्दुल-हमीद खान मुस्तफ़ा सालिस का भाई और सुल्तान अहमद सोम का बेटा था। 1127 हिज० में पैदा हुआ और 1187 हिज० में तख़्त पर बैठा। मिज़ाज में सुलह पसन्दी थी, तख़्त पर बैठते ही ईसाइयों से सुलह कर ली, क्योंकि खांगी और मुतवातिर झगड़ों और लखेड़ों की वजह से उसकी सलतनत में निहायत ज़ुअ्फ़ आ गया था और लश्कर और फौज की बग़ावत से मुल्क तबाह हो रहा था। सुलह के बाद हुसैन पाशा को बाग़ियाने अरब की गोशमाली पर रवाना किया, जिसने क़रार वाक़ई इस फ़साद को मिटा दिया और सरकशों को पूरी सज़ा दी, मगर रूस और जर्मन ने आपस में इत्तिफ़ाक़ करके सुल्तान पर चढ़ाई की, यूसुफ़ पाशा और अली पाशा मुक़ाबला के लिए मुक़र्रर

किए गये। यूसुफ़ पाशा ने पहले जर्मन की फौज से मुक़ाबला किया और क़िला शीश को मुसख़्ख़र कर लिया और अली पाशा ने भी रूस से ख़ूब मुक़ाबला किया, उसी बादशाह के ज़माना में करीम ख़ाँ रिन्द ने बसरा को फतह कर लिया और मुद्दते सलतनत उसकी पन्द्रह साल थी और उम्र 63 साल।

सलीम ख़ाँ सालिस 1175 हिज० में पैदा हुआ और 1798 ई० व 1203 हिज० में तख़्ते उस्मानिया पर बैठा और अपनी तमाम तर हिम्मत उस ने बर्री और बहरी फौत की आरास्तगी में मस्रूफ़ की थोड़े ही दिनों में डेढ़ लाख फौज तैयार हुई और शाहाने जर्मन और रूस से लड़ाई भी छिड़ गई, दो महीना तक सख़्त लड़ाई रही। 1791 ई० में सिपेहसालार रूस ने सुलह कर ली मगर मलिका कथराइन सुल्तान रूस ने कि अपने शौहर पतरस सोम को मार कर तख़्त पर बैठी थी, इस मुआहदा को क़ुबूल न किया और जर्रार लश्कर क़िला इस्माईलिया पर भेजा जिसमें तीस हज़ार रूमी फौज रहती थी, जब रूसियों ने क़िला पर यूरिश की, तोप और गोलियों से इस क़द्र रूसी मारे गये कि क़िला की ख़न्दक़ लाशों से पिट गई, चूंकि रूसी कसरत से थे। क़िला की फ़सील पर चढ़ गये और तीन शबाना रोज़ क़िला के अन्दर ऐसी लड़ाई हुई कि क़िला के रास्तों में ख़ून की नदियाँ बहती थीं, क़िला की औरतों और बच्चों ने भी बड़ी दिलेरी और जुरअत की और सब मारे गये। सिर्फ़ एक शख़्स उस हंगामा से बच गया और कुस्तुनतुनिया में जा कर ख़बर की रूमी लश्कर को यह ख़बर सुन कर निहायत जोश और ग़लीज़ आ गया और चाहते थे कि रूसियों पर टूट पड़ीं और अपने उन मक़्तूल भाईयों का एवज़ जो क़िला में थे लें, मगर इंग्लिस्तान और परवरिश ने बेच बचाव करा दिया, यूसुफ़ पाशा ने अपने ओहदे से मौक़ूफ़ किया गया और मुहम्मद पाशा कि छियासी बरस का बुड्ढा था, वज़ारत पर मामूर हुआ, उसके बाद पूना पार्ट शाह फ़्रांस और अंग्रेज़ों में लड़ाई शुरू हो गई और खेते फ़्रांस के हाथ रहा और फ़्रांस ने सुल्तान से दोस्ती और सुलह कर ली, सुल्तान ने बाज़ लोग अपने यहाँ के फ़्रांस रवाना किए कि जंगी मदरसों में तालीम पा कर तुर्की फौज की बवज़अ् दिला गई फौज के तालीम करें, मगर सिपाहे नेग चर्मी ने उसको पसन्द नहीं किया और सुल्तान के हुक्म से मुंहरिफ़ हो गये। अल-ग़रज़ 1114 हिज० में मुसम्मी

और ख़ान ने फौज बाक़ायदा, जिस का नाम फौज निज़ाम है, तरतीब दी तक़रीबन दो हज़ार फौज बाक़ायदा बसर कर दी मस्ऊद आग़ा कुस्तुनतुनिया में तैयार हुई, जिसने जंग की जगह में निहायत बहादुरी ज़ाहिर की और सोला हज़ार फौज निज़ाम कुज़मान में बतहत व अफ़्सुरी क़ाज़ी पाशा तैयार हुई, जिस को सुल्तान ने अस्तंबूल में तलब किया। राह में एक शख़्स क़ाज़ी पाशा के ख़ेमा में उसके मारने को घुस आया, मगर क़ाज़ी पाशा निहायत बहादुर और जरी सिपाही था। बेदार होते ही उस ने दुश्मन को ठिकाने लगा दिया, जब वह मआ लश्कर के क़रीब पहुंचा। नेग चर्मी फौज ने शहर में ग़दर मचा दिया। चन्द मकानात में आग लगा दी और क़हवा ख़ाना और मस्जिदों में जमा हो कर आमादा फ़साद थे। सुल्तान ने मस्लेहते वक़्त के लिहाज़ से क़ाज़ी पाशा को हुक्म दिया कि वह लश्कर समेत कुरमान को चला जाए, चूंकि अंग्रेज़ और फ़्रांस में सफ़ाई न थी। इसलिए अंग्रेज़ जो चाहते थे कि सुल्तान फ़्रांस से दोस्ती तर्क कर दे, मगर सुल्तान ने कुबूल न किया, सफीर इंग्लिस्तान नाकाम वापस गया और अंग्रेज़ों ने ग़फ़्लत में इस्कन्द्रीया पर क़ब्ज़ा कर लिया, मगर मुहम्मद पाशा वालीए मिस्र ने फिर इस्कन्द्रीया को अंग्रेज़ों से छीन लिया, अब अंग्रेज़ों ने मुसालेहत की फिर जंबानी की और अपने वास्ते से सुल्तान और दस से सुलह करा दी, इस वाक़या के बाद वज़ारते रूम में बहुत तग़ैयुर व तब्दीली हुई और कई पाशा बरतरफ़ और मुक़र्रर हुए, आख़िर में इल्मी इब्राहीम पाशा वज़ारत पर मुक़र्रर हुए। 1122 हिज० में फौज नेगचरी ने ग़दर कर दिया। बहुत से पाशा जो फौज निज़ाम की तरतीब में सुल्तान के शरीक थे, मारे गये और सुल्तान को माज़ूल करके मुस्तफ़ा ख़ाँ चहारुम को तख़्त नशीन किया। उस पाशा ने अट्ठारह साल सलतनत की और 48 साल ज़िन्दा रहा।

तारीख़ खुलफ़ाए अरब व इस्लाम से, जो हम ने इक़्तिबास पेश किया है। उस से क़ारेईने किराम को अंदाज़ा हो गया होगा कि जिस दौर में वहाबिया सर ज़मीने अरब से ख़िलाफ़ते उस्मानिया की जड़ें उखाड़ रहे थे, उस ज़माना में तुर्क बैनल-अक़्वामी जंगों के ख़ल्फ़शार में मुब्तला थे, लेकिन जब उन्होंने देखा कि जज़ीरा अरब में बग़ावत अपनी इंतिहा को पहुंच चुकी है। मुसलमानों को बेदरेग़ क़त्ल किया जा रहा है और

मक़ामाते मुक़द्दसा की अलल-ऐलान बेहुर्मती हो रही है, तो उन्होंने अरब की इस्लाह अहवाल की तरफ़ तवज्जोह की, चुनांचे सरदार हसनी लिखते हैं :

उस वक़्त जबकि सारा अरब तुर्की हुकूमत से एलाहिदा हो चुका था। उस्मानी सुल्तान को भी अपने फराइज़ का ख़्याल पैदा हुआ। यूरोप भी अरब के हालात से ग़ाफ़िल न था। निपोलीन उस ज़माना में मश्रिक़ की फ़ुतूहात के ख़्वाब देख रहा था, उसे वहाबी तहरीक से बड़ी दिल्चस्पी थी वह समझता था कि यह तहरीक उसके लिए सद राह होगी, चुनांचे तारीख़ी मवाद से यह अम्र साबित है कि उस ने तफ़्तीशे हालात की ग़रज़ से बग़दाद के फ़्रांसीसी कौन्सिल को ख़ास तौर पर मुक़र्रर किया था। सुल्तान रूम अभी ग़ौर व फ़िक्र में ही था कि नज्दियों ने इराक़ के मुक़द्दस मक़ामात पर फिर यूरिश की, अप्रैल 1096 ई० में नजफ़े अशरफ़ का मुहासरा कर लिया, लेकिन यह मुक़द्दस शहर फतह न हो सका। इंतिक़ाम के तौर पर नज्दियों ने नवाह बग़दाद के इलाक़ों को ताख़्त व ताराज कर दिया उसी साल में शाम पर वहाबियों ने हमला किया और हलब को फतह कर लिया, शामियों ने दब कर सुलह कर ली, लेकिन ऊपर बयान हो चुका है कि उस ज़माना के वहाबी पैमान शिक्नी में ताक़ थे, मुआहदा के बावजूद बारहा हमला करते रहे। 1810 ई० में वहाबी हूरान तक जो कि दमिश्क़ से सिर्फ़ दो दिन की मसाफ़त पर वाक़े है, बढ़ गये और वहाँ के बीसयों गाँव को लूट लिया, दमिश्क़ के वाली ने उनके ख़िलाफ़ मुहिम भेजी, लेकिन वह वहाबियों को पिस्पा न कर सके मालूम होता था कि तुर्क इस बलाए मुबरम के सामने बेदस्त व पा हैं, पेश्तर अज़ीं तुर्की सलतनत ने कभी ऐसी कम्ज़ोरी का इज़्हार न किया था, तुर्क मश्रिक़ में बग़दाद से और शुमाल में दमिश्क़ से वहाबियों पर हमला कर चुके थे और बिल्कुल नाकाम रहे थे।

अब सिर्फ़ मग़्रिब की जानिब मिस्र की राह से तर्क हमला आवर हो सकते थे, तुर्की सुल्तान ने मुहम्मद अली पाशा ख़दियू मिस्र के नाम फरमान सादिर किया कि पाशा मौसूफ़ हिजाज़ पर हमला करे और हरमैन शरीफ़ैन को फित्ना नज्दीया से नजात दिलाए। पाशाए मौसूफ़ बराए नाम तो तुर्की का बाज गुज़ार हुक्मरान था, लेकिन अमलन

कामिल तौर पर आज़ाद था और उस ज़माना में खुद मम्लूकीन मिस्र के बारे में मुतफ़क्किर रहता था, चुनांचे अव्वल, अव्वल तो तामीले हुक्म करने में पस व पेश करता रहा, लेकिन जब मिस्र के तमाम ख़दशे मिट चुके और उसकी हैसियत मुस्तहकम हो चुकी तो उसे भी बयक करिश्मा दो कार दीनी ख़िदमत के अलावा फतह हिजाज़ का शौक़ पैदा हुआ। उसने एक जर्रार लश्कर तैयार किया और 1811 ई० में अपने बेटे तूसून पाशा की क़्यादत में हिजाज़ पर हमला करने के लिए भेजा, इस फौज ममें तक़रीबन आठ सौ तुर्की रिसाला के जवान और दो हज़ार अल-बानवी थे, तूसून मदीना मुनव्वरा की तरफ़ बढ़ा, लेकिन इस मुक़द्दस शहर को अट्ठारह बारह ईसवी के अवाख़िर तक फतह न कर सका। उसके बाद तो मक्का मुकर्रमा और ताइफ़ भी फतह हो गये लेकिन सऊदे आज़म बराबर मुक़ाबिला पर बढ़ता रहा, उस वक़्त मुहम्मद अली पाशा खुद फौज की क़्यादत के लिए हिजाज़ में आ गया। तराबा के मक़ाम पर जो नज्द व हिजाज़ की सरहद पर वाक़े है और जो बाद में अरबी तारीख़ में मशहूर मक़ाम हुआ। सऊदे आज़म ने मुहम्मद अली पाशा को शिकस्ते फ़ाश दी। यह 1812 ई० का वाक़या है। उसके तक़रीबन एक साल बाद 1814 ई० में सऊद मर गया। उसकी वफ़ात के साथ ही वहाबी कम्ज़ोर हो गये, पेश्तर बयान हो चुका है कि सऊद बड़ा फातेह गुज़रा है, उस ने क़रीब-क़रीब सारे अरब को फतह कर लिया था और कुर्ब व जवार के इलाक़ों को भी खुल कर ताख़्त व ताराज राज किया था, लेकिन उसकी मौत के बाद उसके जांनशीन हुकूमत को संभाल न सके।

मुहम्मद अली पाशा ने तराबा के मक़ाम पर शिकस्त उठाने के बाद वहाबियों के जोश व ख़रोश को देख कर एक चाल चली, ज़र व माल के ज़रिया से बदवियों को अपने साथ मिला लिया। यह बदवी हाल ही में जबरन वहाबी किए गये थे। यह लोग दौलत के लालच में हर वक़्त बेवफ़ाई करने के लिए तैयार रहते थे, चुनांचे इंआम व इकराम के लालच में जूक़ दर जूक़ मुहम्मद अली पाशा की अफ़्वाज में शामिल होते गये। 1814 ई० में बवेसाल के मक़ाम पर जो तायफ़ के क़रीब ही एक मुख़्तसर सा गाँव है। मुहम्मद अली पाशा ने वहाबियों को फाश शिकस्त दी, जिस में वहाबी ताक़त का ख़ात्म हो गया। अब्दुल्ला, सऊद आज़म

का जांनशीन हुआ था, लेकिन वहाबी हुकूमत को बरबादी से बचा न सका। तूसून बेसूबा क़ासिम की तरफ़ बढ़ता गया और वहाँ के सदर मक़ाम रास को फतह कर लिया, वहाबियों के वफ़ादार क़बाइल इताअत से फिर गये, मज्बूरन अमीर अब्दुल्लाह ने सुलह दामन का पैग़ाम भेजा और आख़िर कार आर्ज़ी सुलह हो गई।

सहराई जंग की एक खुसूसियत यह भी है। कि अगरएक दफ़ा लड़ाई शुरू हो जाए, तो मुद्दत तक बन्द नहीं होती, चुनांचे मुहम्मद अली पाशा ने अब्दुल्लाह से सुलह तो कर ली, लेकिन मन्शा महज़ यह था कि हमेशा के लिए वहाबियों का क़लअ् क़ुमअ् कर दिया जाए, चुनांचे 1815 ई० में फिर जंग शुरू हो गई, अब मुहम्मद अली पाशा का दूसरा बेटा इब्राहीम पाशा जो लाइक़ और मशहूर व मारूफ़ जिब्रईल था, सिपेहसालार मुक़र्रर हुआ, तुर्की, मिस्री फौजों की यल्ग़ार देख कर अरब के बहुत से क़बाइल हमला आवरों से मिल गये, चुनांचे बारी-बारी मुतीर, उतैबा, हरब वग़ैरह ने वहाबियों की इताअत छोड़ दी। वहाबी फौजें मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर हज़ीमत उठा कर पिस्पा हुईं, हमला आवरों ने एक-एक करके वहाबी सलतनत के तमाम इलाक़े छीन लिए, यहाँ तक कि 1818 ई० में दरइया दारुल-सलतनत पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। मज्बूर हो कर अमीर अब्दुल्लाह को असीर करके पहले क़ाहिरा भेजा गया, फिर क़ुस्तुनतुनिया मुहम्मद अली पाशा ने उस्मानी सुल्तान के हुज़ूर में सिफ़ारिश की कि अमीर अब्दुल्लाह की जान बख़्शी कर दी जाए, लेकिन तुर्कों ने सुल्तान के हुक्म के मुताबिक़ मज्मा आम के रूबरू अमीर अब्दुल्लाह को मस्जिद उबा सूफ़िया के चौक में बड़ी ज़िल्लत से तहे तेग़ किया। इस तरह पर वहाबी सलतनत के पहले दौर का ख़ात्मा हुआ।

1745 ई० से लेकर 1818 ई० तक नज्द के एक मुख़्तसर रक़्बा से लेकर पूरे जज़ीरे अरब पर अमीर मुहम्मद बिन सऊद से लेकर अमीर अब्दुल्लाह तक वहाबी इंतिहाई जुल्म और तशद्दुद से जाबिर न हुकूमत करते रहे, बिल-आख़िर तुर्कों के एक ही दार से जुल्म और इस्तिब्दाद की दीवार मुन्हदिम हो गई।

वहाबिया का दौरे सानी

1823 ई० ता 1891 ई०

इससे पहले हम सलतनते उस्मानिया के बैनल-अक़्वामी हालात लिख चुके हैं और यह बता चुके हैं कि इस्लाम की यह अज़ीम सलतनत किस तरह बैनल-अक़्वामी साज़िशों का शिकार थी और यूरोप की बड़ी-बड़ी सलतनतें अज़ीम, तुर्की को किसी पल चैन से बैठने न देतीं थीं, एक बार जज़ीर-ए-अरब में वहाबियों की बग़ावत कुचलने के बाद तुर्की फिर बैनल-अक़्वामी जंगों सऐ नबर्द आज़मा होने के लिए मैदान में निकल आया। उधर वहाबियों के ख़ाकिस्तर में से कुछ चिंगारियाँ फिर उभर रही थीं और यह चिंगारियां साग़गार वक़्त के इंतिज़ार में एक बार फिर शोअ्ला जवाला बनाना चाहती थीं, सरदार हसनी वहाबियों की इस बेदारी और माहौल साज़गार देख कर उनकी दूसरी कामयाबी के बारे में लिखते हैं :

उस वक़्त नज्दी भी हिजाज़ की तरह मिस्र का एक बाजगुज़ार सूबा हो गया था, वहाबियत की तहरीक ख़ाक सिया कर दी गई थी, लेकिन उस में कुछ शरारे अभी बाक़ी थे और मुश्तइल होने के लिए मुसाइद हालात के मुंतज़िर थे, अमीर अब्दुल्लाह के मारे जाने के कई बरस बाद नज्द में मिस्री हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की आग भड़की, रियाज़ में जो मिस्री लश्कर मौजूद था, बाग़ियों की तल्वार ने उसे ठिकाने लगाया 1821 ई० में अमीर अब्दुल्लाह के बेटे अमीर तुर्की ने मिस्रियों को नज्द सऐ निकाल बाहर किया और खुद नज्द, अल-हिसा, और अमान का अमीर बन गया, लेकिन अमीर तुर्की की इस हुकूमत को वहाबी सलतनत नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अमीर तुर्की मिस्र को ख़राज अदा किया करता था।

वहाबियों की हक़ीक़ी ताक़त व सतवत का पेश्तर ही ख़ात्मा हो चुका था, अब ख़ाना जंगी भी शुरू हुई। सऊदी ख़ानदान के अफ़राद आपस में बुग्ज़ व इनाद करने लगे। यूं कहना चाहिए कि यह ज़वाल व इंहितात की बदतरीन मिसाल थी, लेकिन इन तमाम बातों के बावजूद फ़ैसल के अहद में, जो कि अमीर तुर्की का लड़का था, फिर वहाबियों की हुकूमत में जान की रमक़ पैदा हुई।

अमीर फ़ैसल तुर्की का बेटा 1834 ई० में अल-हिसा का नज़्म व नस्क़ कर रहा था। कि मशअरी बिन अब्दुर्रहमान ने जो कि ख़ानदाने सऊद का हम्जद था, अमीर फ़ैसल की ग़ैर हाज़िरी से फ़ाइदा उठा कर बग़ावत की और तुर्कों को साथ मिला कर अमीर तुर्की को क़त्ल कर दिया। अमीर फ़ैसल को बेहद रंज हुआ और रियाज़ में वापस आ कर क़रीबन दो महीने बाद मशअरी का ख़ात्मा कर दिया। उस कार्रवाइ में एक शख़्स अब्दुल्लाह बिन रशीद नामी फ़ैसल का दस्ते रास्त था। फ़ैसल ने उसकी ख़िदमात से खुश हो कर हाइल की सूबेदारी उसके हवाला कर दी, यह शख़्स हाइल के मशहूर ख़ानदान रशीद का मूरिस था, उस ख़ानदान की हुकूमत ने रफ़्ता-रफ़्ता इतनी तरक़्क़ी की कि उन्नीसवीं सदी ईसवीं के आख़िरी हिस्सा में अरब भर में कोई हुक्मरान सतवत व इक़्तिदार में आल रशीद से बढ़ कर न था।

अमीर फ़ैसल कुछ तो सलतनत के अन्दरूनी मुआमलात की इस्लाह में मशग़ूल रहा, कुछ उसकी नीयत भी मिस्री हुकूमत के मातहत रहने की न थी। इसलिए सालहा साल तक उस ने मिस्र को ख़राज अदा न किया। उस वक़्त की मिस्री हुकूमत में अभी ताक़त बाक़ी थी मिस्रियों ने १८३७ ई० में अमीर फ़ैसल पर हमला आवर हो कर उसे अपने तईं हवाले करने पर मज्बूर किया और उसके ख़ानदान को बग़ावत और सरकशी से इज्तिनाब करने का सबक़ सिखाने के लिए उन्होंने फ़ैसल को क़ाहिरा पहुंचा दिया, उसके बाद मिस्र की तरफ़ से बराहे रास्त नज्द के वाली मुक़र्रर होते रहे। अल्बत्ता कभी-कभी मस्लेहत के लिहाज़ से ख़ानदाने सऊद के बाज़ अफ़राद भी नज्द के सूबेदार मुक़र्रर कर दिए गये।

1843 ई० में फ़ैसल क़ाहिरा के मज्लिस से भाग निकला और आते ही रियाज़ का अमीर बन गया, बादे अज़ां उस ने अपनी हुकूमत को फिर अमान, अल-हिसा, क़ासिम और जबल शुमार तक वसीअ् कर लिया। हक़ीक़त में यह अमीर अज़ीम शख़्सित रखता था और वह वहाबी सलतनत में पहली सी आन बान पैदा न कर सका, लेकिन अपनी वफ़ात तक बड़ी कामयाबी से हुक्मरानी करता रहा। उसकी मौत 1867 ई० में वाक़े हुई।

फ़ैसल के बाद उसका बेटा अब्दुल्लाह तख़्त नशीन हुआ यह शख़्स कमीना ख़साइल रखता था और नफ़रत व हिक़ारत की निगाह से देखा जाता था। उसके भाई सऊद ने 1871 ई० में उसे तख़्त से उतार दिया और खुद अमीर बन बैठा, लेकिन खाना जंगी के सिलसिले में सूबाजात क़ासिम और जबल शुमार से वहाबी हुकूमत उठ गई।

माज़ूल शुदह अब्दुल्लाह निचला नहीं बैठना चाहता था, वह सऊद से इंतिक़ाम लेने का ख़्वाहां था, हालांकि उस्मानी तुर्क आबा व अज्दाद के वक़्त से सऊदी ख़ानदान के मुख़ालिफ़ थे, लेकिन अब्दुल्लाह ने इंतिक़ाम के मज़्मूम जज़्बे के मातहत तुर्कों से कमक तलब की, तुर्कों ने मौक़ा को ग़नीमत जाना और अब्दुल्लाह को अपनी तरफ़ से नज्द का वाली क़रार दे कर उसकी मदद के लिए एक मुहिम तैयार की और सूबा अल-हिसा को फ़तह कर लिया।

सऊद तुर्कों से मुक़ाबले की ताक़त न रखता था। 1872 ई० में उसने तुर्कों से मुफ़ाहिमत पैदा करने के लिए अपने भाई अब्दुर्रहमान को बग़दाद भेजा, तुर्क सऊद की पेशक़दमी से खुश तो क्या होते, उलटा अब्दुर्रहमान को दो बरस क़ैद कर दिया।

सऊद 1877 ई० में मर गया और माज़ूल शुदह अब्दुल्लाह उसके बजाए तख़्त नशीन हुआ। अब्दुल्लाह आठ बरस हुकूमत करता रहा, लेकिन फरमांरवाई की पूरी सलाहियत न रखता था। सऊद के दोनों बेटे मुहम्मद और सऊद उस से हसद रखते थे और फित्ना व फसाद बरपा रखते थे। आख़िर कार उन्होंने उस को तख़्त से उतार कर क़ैद कर दिया।

उसी ज़माने में मुहम्मद बिन रशीद की शख़्सियत और कारहाए नुमायां मुअ़रिज़ वजूद में आए, उनकी मुख़्तसर कैफ़ियत किसी और मक़ाम पर बयान होगी।

इस पर शिकोह बादशाह ने नज्द को मुसख़्ख़र कर लिया और अब्दुल्लाह को क़ैदख़ाना से निकाल कर उसके भाई अब्दुर्रहमान के साथ हाइल भेज दिया। 1886 ई० में दोनों को रियाज़ वापस आने की

इजाज़त मिल गई। दोनों भाई ख़ामोशी से अपने आबाई दारुल-सलतनत में मुक़ीम हो गये और यहीं 1889 ई० में अब्दुल्लाह मरग या। तबई तौर पर अब्दुर्रहमान की तवक़्क़ु यह थी कि अब्दुल्लाह की जगह उनको रियाज़ का हाकिम बना दिया जाएगा, लेकिन मुहम्मद इब्ने रशीद इस तज्वीज़ के मुवाफ़िक़ न था। उस ने सलीम इब्ने सुब्हान को रियाज़ का हाकिम बना कर भेज दिया। कुछ अरसा के बाद मुहम्मद बिन रशीद को ख़ानदाने सऊद की तरफ़ से बदगुमानी पैदा हुई, उसने सलीम को हुक्म दिया कि उस ख़ानदान के तमाम अफ़राद को क़त्ल करा दे। किसी तरह पर अब्दुर्रहमान को इस हुक्म की इत्तिला मिल गई। सलीम तामील हुक्म की कोशिश में था कि कि आल सऊद ने उस पर हमला आवर हो कर जान से मार दिया और रियाज़ में अपनी हुकूमत जमा ली, उस वक़्त रियाज़ पर तो उनका क़ब्ज़ा हो गया लेकिन नज्द पर इब्ने रशीद का इक़्तिदार बहाल था। चन्द माह यह लोग सूबा अल-अरिया पर जहाँ रियाज़ वाक़े है, हुकूमत करते रहे, लेकिन जनवरी 1891 ई० मुहम्मद बिन रशीद ने बरीदह के मक़ाम पर सऊदी अफ्वाज को शिकस्ते फ़ाश दी और मज़ीद गोशमाली के लिए रियाज़ दारुल-सलतनत की तरफ़ बढ़ा।

आख़िर कार अब्दुर्रहमान ने महसूस किया कि वह इब्ने रशीद से मुक़ाबला नहीं कर सकता, इसलिए वह अह्ल व अयाल लेकर अन्दरूने अरब से चला और मुद्दत तक सहरा नूरी करने के बाद वाली होयत के हां जा कर पनाह गुर्ज़ी हो गया। उस ख़ानदान के बाज़ अफ़राद क़ैद करके हाइल पहुंचा दिए गये।

1823 इ० से कर 1891 ई० तक नज्द के बाज़ इलाक़ों से लेकर जज़ीरा अरब के कुछ हिस्सों पर अमीर तुर्की से लेकर अमीर अब्दुर्रहमान तक वहाबियों का दोबारा इक़्तिदार क़ाइम हो गया, लेकिन तुर्कों की पेश क़दमी और आल रशीद की ज़बरदस्त मुख़ासिमत से इस गिरती हुई दीवार को एक बार फिर से मुन्हदिम कर दिया।

बाब (5)

वहाबिया का तीसरा दौर

15 जनवरी 1902 ई० से लेकर 25 दिसम्बर 1925 ई० तक इब्ने सऊद तुर्कों और उसके हलीफ़ अरबों से बरसरे पैकार रहा। उस दौरान बदक़िस्मती से तुर्क इत्तिहादी फौजों के साथ बैनल-अक़्वामी जंगलों में उल्झा हुआ था उधर सऊदी ख़ानदान को बरतानवी इस्तेमार से नक़द रुपया और अस्लेहा की वाफर मिक़्दार मिल रही थी। दूसरी तरफ़ करनल लार्नस सालहा साल से अरब में तुर्कों के ख़िलाफ़ मुश्तइल हो गई। जंगे अज़ीम के मौक़ा पर शरीफ़ हुसैन ने भी तुर्कों से ग़द्दारी करके अपनी ख़िलाफ़त का एजला कर दिया था। यह तमाम अनासिर मिल कर इब्ने सऊद को तक़्वियत पहुंचा रहे थे और तुर्कों के लिए हालात दिन बदिन नासाज़गार होते जा रहे थे। बैनल-अक़्वामी जंगों में उलझने की वजह से तुर्कों के लिए अरब को कन्ट्रोल करना मुम्किन न रहा। जिस के नतीजे में सऊदी ताक़त बढ़ती गई, उन्होंने पहले तुर्कों के हलीफ़ आले रशीद को शिकस्त दी। फिर खुद साख़्ता शरीफ़ हुसैन को सरज़मीने अरब से निकलने पर मज्बूर किया। नतीजा यह हुआ कि 25 दिसम्बर 1925 ई० में तमाम जज़ीरा अरब पर इब्ने सऊद की सलतनत का एलान आम कर दिया गया।

यह एक इज्माली ख़ाका है तफ़्सील के लिए हम एक ग़ैर मुक़ल्लिद अह्ले क़लम मुहम्मद सिद्दीक़ कुरैशी की तहरीर पेश कर रहे हैं। वह लिखते हैं।

मौजूदा सऊदी सलतनत के बानी शाह अब्दुल-अज़ीज़ थे। वह 22 दिसम्बर 1180 ई० (29 ज़िल-हिज्जा 1297 हिज०) को रियाज़ में पैदा हुए। ऊपर यह ज़िक्र हो चुका है कि अब्दुर्रहमान बिन फ़ैसल अपने चारों बेटों के साथ कोयत में पनाह गुज़ीं हो चुके थे। अब्दुर्रहमान ने कोयत पहुंच कर अमीरे कोयत की मदद से अपनी खोई हुई मम्लिकत वापस लेने की कोशिश की, मगर नाकाम रहे। हत्ता कि उन्हें 1891 ई० में अपनी औरतों और बच्चों को बहरीन में पनाह लेने के लिए भेजना पड़ा।

1895 ई० में तर्क हुकूमत ने नज्द के इब्ने रशीद की बढ़ती हुई

में तवाज़ुन पैदा करने के लिए अमीर अब्दुर्रहमान को कोयत में रिहाइश अख़्तियार करने की इजाज़त दे दी और उनकी गुज़र औक़ात के लिए साठ (60) पौंड भी देने का वादा किया। यहाँ उनकी रिहाइश गाह तीन कमरों पर मुश्तमिल थी। यह ज़माना बड़ी तंगी तरशी से गुज़रा। अलाउन्स निहायत क़लील था उस पर तुर्रा यह कि बाक़ायदगी से अदा न किया जाता। इस तंगदस्ती का उस वक़्त शिद्दत से एहसास हुआ, जब अमीर अब्दुल-अज़ीज़ की शादी महज़ रक़म न होने की वजह से चालीस दिन तक मुल्तवी करना पड़ी। ताआंकि एक देरीना दोस्त यूसुफ इब्राहीम ने इस यूसुफ़े बेकारवां की एआनत की। तब कहीं अमीर अब्दुल-अज़ीज़ दूल्हा बने।

कोयत के दौरान क़याम में अमीर अब्दुल-अज़ीज़ अपना वक़्त घोड़ सवारी में सर्फ़ करते। कभी कभार वह शुतर सवारी करते हुए दूर सहरा में निकल जाते और उक़ाबों से शिकार करते। शाम को आग के अलाव के आगे बैठ जाते। काफी का दौर चलता और मुजाहिदीन के क़िस्से दुहराए जाते कि....लहू गर्म रखने का है इक बहाना.....अमीर अब्दुल-अज़ीज़ पर सर्फ़ एक धुन सवार थी वह यह कि अपने हरीफ़ को नीचा दिखाएं, लेकिन दुश्मन तर नवाला न था। वह हर दम चौकन्ना रहता।

16 फरवरी 1901 ई० को अमीर अब्दुल-अज़ीज़ का इब्ने रशीद के साथ पहली मरतबा तसादुम हुआ, लेकिन सऊदियों को नुक़सान उठाना पड़ा। जंगजू अब्दुल-अज़ीज़ निचला बैठने वाला न था। अगले साल शाबान के अवाइल में उस ने चालीस नौजवान साथ लिए लम्बा चक्कर काटा और कारवानी रास्तों से हट कर सहरा रुबुअ् अल-ख़ाली के किनारे-किनारे रवाना हुआ बहुत से मुहिम जो जद्दो जहद भी शरीक हो गये थे, लेकिन वह रास्ता में छटते चले गयें अबू जीफ़ान के कुवों के मश्रिक़ में उन्होंने ईदुल-फ़ित्र मनाई और फिर उसी रात मश्रिक़ की तरफ़ बढ़े। हद्दे निगाह तक लक़ व दक़ रेगज़ार था। अगला दिन उन्होंने सतह मुर्तफ़अ् जबील की निचली वादियों में छुप कर गुज़ारा। जूंही सूरज गुरूब हुआ और तारीकी फैल गई यह लोग फिर चल खड़े हुए। अब रियाज़ के बाग़ात और फ़सील के ह्यूले नज़र आने लगे। यहाँ नौजवान अब्दुल-अज़ीज़ ने छे: साथी मुन्तख़ब किए और बाक़ी अफ़राद को हुक्म दिया कि अगर उन्हें अगले दिन दोपहर तक उनकी ख़बर न

मिले तो कोयत की तरफ़ कूच कर जाएं। इक्कीस साला तवीलुल-क़ामत (छे: फिट पाँच-इंच) सालार के इस दस्ता में उनके भाई मुहम्मद और चचेरे भाई अब्दुल-अज़ीज़ फहद और अब्दुल्लाह भी थे। जवां साल सालार इस क़द्र मुहतात था कि उसने अपने हम्राहियों को भी अपने मिशन से आगाह न किया।

रियाज़ सामने नज़र आ रहा था जिसके दरो दीवार जंग गुज़ीदा थे जिसकी आबयारी अमीर अब्दुल-अज़ीज़ के आबा व अज्दाद ने अपने लहू से की थी। पूरा शहर नींद की ख़ामोशी में डूबा हुआ था। यह लोग शहर पनाह के पास पहुंचे तो मालूम हुआ कि फ़सील अभी तक शिकस्ता हालत में है सऊदी आसानी से शहर के अन्दर दाख़िल हो गये। रात दो बजे का अमल होगा। सर्दी बढ़ गई थी और लोग अपने घरों में लिहाफ़ों में दबके पड़े थे। शहर के वस्त में रशीदियों का क़िला था जहाँ रशीदी गवर्नर अजलान रात बसर किया करता था उसकी रिहाइश गाह क़िला के वाहिद गेट के बिल-मुक़ाबिल वाक़े थी। अमीर अब्दुल-अज़ीज़ ने दरवाज़े पर दस्तक दी। एक ख़ातून बरामद हुई। हमला आवर झपटे और चश्म ज़दन में कमीनों की मुश्कें कस कर उन्हें एक कमरे में महबूस कर दिया। यह मकीन ख़्वातीन और ख़ुद्दाम थे। यह तनूमन्द मुहाफ़िज़ उन पर ताईनात कर दिया गया।

उधर अमीर अब्दुल-अज़ीज़ के साथी छत पर पहुंच कर झरी की ओट में क़िला के दरवाज़े पर शस्त बांध कर बैठ गये ताकि शिकार निकले और यह शाहीन ख़ूगर झपट कर उसे अपनी आहिनी गिरिफ़्त में ले लें। उस दौरान में काफी का तल्ख़ जरआ हलक़ में उतारते और तिलावते कुरआन करते रहे। सपेदा सहर नमूदार हुआ। वह ख़ुदा के हुज़ूर सर बसजूद हो गये। नमाज़े फज्र से फारिग़ हो कर उन्होंने फतह और नुसरत की दुआ मांगी।

रशीदी गवर्नर का दस्तूर था कि वह अलरसुबह क़िला से निकल कर घर की राह लेता। हस्बे मामूल दरवाज़ा खुला और वगर्नर अपने ख़ुद्दाम चश्म के साथ बाहर निकला। अभी वह आधा रास्ता ही तय कर पाया था कि अमीर अब्दुल-अज़ीज़ और उनके बिफरे हुए जांबाज़ उन पर टूट पड़े। अजलान मुक़ाबला करने के बजाए उलटे पाँव वापस भाग खड़ा हुआ। अब्दुल्लाह इब्ने जल्वी ने अपने छोटे से नेज़े से उसका

निशाना बांधा, लेकिन निशाना चूक गया, नेज़े का फल टूट गया और फाटक के दाएं बाएं लकड़ी के नक़्श व निगार में पैवस्त हो गया। ताहम अज्लान फाटक की खिड़की में क़िला के अन्दर दाख़िल होने में कामयाब हो गया। इस से पहले कि दरवाज़ा बन्द होता अब्दुल्लाह भी उसके पीछे-पीछे अन्दर पहुंच गया और अजलान से गत्थम गुत्था हो कर उसे क़त्ल कर डाला इस अस्ना में अमीर अब्दुल-अज़ीज़ और उनके बाक़ी साथी भी क़िला के अन्दर पहुंच चुके थे। यह सब कुछ इतनी तेज़ी से हुआ कि क़िले के मुहाफ़िज़ और अज्लान के बाड़ीगार्ड भौंचके खड़े देखते रहे। इतने में इब्ने सऊद के आदमियों ने फाटक खोल दिया और बाक़ी साथी भी अन्दर पहुंच गये। ख़ूंरेज़ जंग छिड़ गई। अज्लान के चालीस साथी मारे गये। बाक़ी चालीस ने हथियार डाल दिए। अमी अब्दुल-अज़ीज़ के दो साथियों ने जामे शहादत नोश किया। एक घन्टे के अन्दर-अन्दर दो घरानों की क़िस्मत का फ़ैसला हो गया। यह 10 जनवरी 1902 ई० का वाक़या है।

उसी रोज़ अमीर अब्दुल-अज़ीज़ ने अमीर नज्द और तहरीके इस्लामी के इमाम का ख़िताब अख़्तियार किया। इस तरह सऊदी मम्लिकत की तारीख़ का तीसरा दौर शुरू हुआ। अमीर अब्दुल-अज़ीज़ ने सबसे पहला काम यह किया कि कोयत से अपने वालिद को बुलाया। अमीर अब्दुर्रहमान सर्फ़ की लड़ाई के बाद अपने बेटे के हक़ में दस्तबरदार हो गये थे उनके सामने कठिन मंज़िलें थीं। उन्हें अपनी मम्लिकत को मुस्तहकम भी करना था और जो इलाक़े अभी तक हरीफ़ के क़ब्ज़े में थे उन्हें दागुज़ार भी कराना था उन के शब व रोज़ अक्सर दारुल-हुकूमत से बाहर मअ्रका आराइयों में गुज़रते। अमीर अब्दुल-अज़ीज़ की ग़ैर हाज़िरी में नियाबत के फ़राइज़ अमीर अब्दुर्रहमान के सुपुर्द हुए। अमीर अब्दुर्रहमान बारह बरस के बाद रियाज़ में दाख़िल हुए तो उनकी आंखों से अश्के मुसर्रत मोती बन कर टपकने लगे। जब वह यहाँ से भाग कर कोयत में पनाह गुज़ीं हुए, तो यह सोच भी न सकते थे कि वह दोबारा अपनी सरज़मीन में लौटेंगे, तो उनका क़ाबिले फ़रज़न्द यहाँ का हुक्मरान होगा। अमीर अब्दुर्रहमान ने ज़माने की तक्लीफ़ें बर्दाश्त की थीं वज जहांदीदह और सर्द व गर्म जानते थे। अगले पचीस बरस अमीर अब्दुर्रहमान अपने अज़ीम फ़रज़न्द की हर

अहम और मुश्किल मरहले में रहनुमाई करते रहे, मम्लिकत को मुस्तहकम करने के साथ-साथ अमीर अब्दुल-अज़ीज़ इस्लाम को अमली ज़िन्दगी में नाफ़िज़ करना चाहता था, क्योंकि यही उनकी कुव्वत का असल सर चश्मा था। इसी से उनके दिलों के सोते फूटते थे। अब यह उनकी ज़िम्मेदारी थी कि अरब मुआशरे में जिन बिदअतों और कम्ज़ोरों ने सर उठाया था उसकी सरकूबी करें वह दिलेर भी थे और ज़हीन व फ़ित्तीहन भी! चुनांचे वह जल्द ही अज़ीमुल-मर्तिबत शख़्सियत बन गये, लेकिन यहाँ तक पहुँचने के लिए उन्हें कई बरस तक पैहम जद्दो जहद करना पड़ी और अन गिनत मसाइब से गुज़रना पड़ा। उन्होंने रशीदियों से नबर्द आज़मा होने के लिए सब से पहले बद्दुओं को एक अमली तहरीक के प्लेट फ़ार्म पर जमा किया। यह लोग इख़्वान कहलाते थे। नज्द के बद्दुओं की शख़्सियत के सहर से बेहद मरऊब थे। अमीर अब्दुल-अज़ीज़ ने इख़्वान के मक़सद को अपने एक तारीख़ी जुम्ले में सिमो दिया। "खुदा हमारे साथ है और आलमे इस्लाम को इस्लाह की तत्हीर के लिए अब भी इस्लामी तहरीक की अशद ज़रूरत है।"

1904 ई० तक इब्ने सऊद ने जुनूब में अपनी पोज़ीशन मुस्तहकम कर ली। इसी साल तुर्कों ने इब्ने रशीद की मदद के लिए ग्यारह ज़मिन्टें और चौदह तोपें भेजीं। तुर्की फौज का क़ाइद अहमद फ़ैज़ी पाशा था। इब्ने सऊद को आर्ज़ी तौर पर रियाज़ की तरफ़ पिस्पा होना पड़ा, लेकिन जल्द ही उन्होंने अपनी कुव्वत यक्जा कर ली और इस तरह डट कर मुक़ाबला किया कि दुश्मन के छक्के छूट गये और वह भाग गया। पूरा सूबा क़सीम उनके क़दमों तले था। क़सीम की गवर्नरी अपने बरादरे सग़ीर सअद के हवाले करने के बाद 14 अप्रैल 1906 ई० के मौसमे बहार में अमीर अब्दुल-अज़ीज़ इब्ने सऊद रियाज़ की तरफ़ लौट रहे थे कि पता चला इब्ने रशीद बरीदह से बीस मील शुमाल में फौज लेकर पहुंच गया है। इब्ने सऊद ने शब ख़ून मारा। ज़बरदस्त लड़ाई हुई इब्ने रशीद के जिस्म में बीस गालियाँ लगीं और वह मारा गया। इस मुख़्तसर, मगर ख़ूंरेज़ लड़ाई के बाद नज्द से तुर्कों का असर मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो गया।

आने वाले छे: सालों में क़द्रे सुकून रहा! अगरचे कभी कभार झड़पें हो जातीं। 1910 ई० का साल इब्ने सऊद के लिए ना मुबारक साल था।

इब्ने सऊद के चचा सऊद के पोतों ने ख़रज और हरीक़ के इलाक़े में बग़ावत बुलन्द कर दिया। उधर मक्का का शरीफ़ हुसैन एक ज़बरदस्त फौज के साथ सूबा क़सीम में आ धमका। और उतैबा क़बीले के हुकूक़ का मुहाफ़िज़ बन बैठा। अब्दुल्लाह का मूक़िफ़ यह था कि इब्ने सऊद ने उतैबा के हुकूक़ ग़सब कर लिए हैं। उस ने इब्ने सऊद के भाई सअद को यर्ग़माल बना लिया। शरीफ़ हुसैन ने मुतालबा किया कि इब्ने सऊद तुर्की की हाकमीयत आला तस्लीम करे वह सालाना चार हज़ार पौंड हुकूमते मक्का को दे और अह्ले क़सीम को अपना गवर्नर मुन्तख़ब करने की आज़ादी दे। इब्ने सऊद हालात में कुछ इस तरह गिरफ़्तार हुआ कि अपने भाई को आज़ाद करने के लिए उसने हुसैन के लिखे हुए मुआहदे पर दस्तख़त कर दिए और सअद आज़ाद हो गया, लेकिन इब्ने सऊद ने इस मुआहदे पर भी अमल न किया उसका मूक़िफ़ यह था कि मुआहदा दबाव के तहत हुआ था। वाली-ए-मक्का ने जुनूबी नज्द में होने वाली बग़ावत से फाइदा उठाने की कोशिश की थी और इब्ने सऊद के लिए इन शराइत को तस्लीम करने के सिवाए कोई चार-ए-कार न था।

अब्दुल्लाह के रुख़्सत होते ही इब्ने सऊद दो-दो हाथ करने के लिए ख़रज और हरीक़ की तरफ़ मुतवज्जह हुए उन्होंने बग़ावत को सख़्ती से कुचला और बाग़ियों का नज्द के क़रिया क़रिया में तआक़ुब किया लगे हाथों उतैबा को उनकी शरारत का मज़ा भी चखाया जिन्होंने अब्दुल्लाह को इब्ने सऊद के ख़िलाफ़ मुबाज़िरत दी थी। फिर अह्ले क़सीम की बारी आई जिन से इब्ने सऊद ने शम्शीर व सियासत कारी दोनों हरबे इस्तेमाल किए। 1914 ई० में इब्ने सऊद ने अल-हिसा की तरफ़ तवज्जो दी। अल-हिसा कभी नज्द का हिस्सा था और मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब की तहरीक इस्लाह व तज्दीदे दीन का पुर जोश पैरूकार, इक़्तिसादी लिहाज़ से बड़ा पुरकशिश था और इब्ने सऊद अपनी मम्लिकत के मुआशी इस्तेहकाम के लिए उसे वापस लेना नागुज़ीर समझते थे। वह मौक़ा की तलाश में थे। उन दिनों बिल्क़ान की जंग ज़ोरों पर थी और अन्दरूने मुल्क क़बाइल की सफ़ों में इंतिशार था। लश्करकुशी का बड़ा उम्दा मौक़ा था, जिसे इब्ने सऊद ऐसा माहिर सियासतदानों ज़ाए न कर सकता था। कार्रवाई के लिए बहाना भी मौजूद था। हफ़ूफ़ के इलाक़े में उनके बाग़ी रिश्तेदारों ने पनाह ले रखी

थी और उन्हें इब्ने सऊद के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया जा रहा था। एक अन्धेरी शब इब्ने सऊद ने पन्द्रह सौ तेज़ शुतर सवारों की मदद से हिसा पर हमला कर दिया। क़िला में एक हज़ार तुर्क प्यादा फौज मौजूद थी। उसके पास तोपें भी थीं। दस दिन के अन्दर-अन्दर क़तीफ़ के गुरूर काबित इब्ने सऊद के क़दमों में पाश-पाश हो चुका था। क़तीफ़ के तुर्क गवर्नर और फौज को जंगी एज़ाज़ के साथ मार्च कराने के बाद अक़ीर की बन्दर्गाह ले जाया गया। जहाँ से कुछ बसरा चले गये बाक़ी मांदा ने क़तर का रुख़ किया।

रशीदियों और तुर्कों के साथ आवेज़िश जारी थी कि पहली जंगे अज़ीम छिड़ गई और तुर्क जंग में शरीक हो गये। इब्ने सऊद ने इस मौक़ा से पूरा-पूरा फाइदा उठाया और रशीदियों से टकराते और अपनी कुव्वत मज़्बूत करते रहे। २६ दिसम्बर १६१५ ई० में बरतानिया और इब्ने सऊद के दर्मियान मुआहद-ए-दारान तय पाया। मुआहदा पर शाह बर्तानिया की तरफ़ से ख़लीज बनारस के इलाक़े में मुक़ीम चीफ़ पोलिटिकल रेज़िडेंट सर परस्ती का किस ने दस्तख़त किए इस मुआहदा की रू से।

1. बरतानिया ने इब्ने सऊद और उनकी औलाद को नज्द का हुक्मरान तस्लीम कर लिया।
2. बैरूनी जार्हीयत की सूरत में इब्ने सऊद को बरतानिया की एआनत हासिल हो गई।
3. इब्ने सऊद के बैरूनी मुआमलात पर बरतानवी सियादत तस्लीम कर ली गई।
4. इब्ने सऊद ने यह तस्लीम किया कि वह अपना इलाक़ा या उसका कुछ हिस्सा बरतानिया की मर्ज़ी के बेग़ैर किसी ताक़त के हवाले न करेंगे।
5. इब्ने सऊद अपने इलाक़े में हाजियों के क़ाफ़िले के रास्ते खुले रखेंगे।
6. इब्ने सऊद ने वादा किया कि वह कोयत बहरैन और साहिली इमारतों के मुआमलात में मुदाख़लत नहीं करेंगे।

मुआहदे का क़ाबिले ज़िक्र पहलू यह है कि इसमें ऐसी कोई दफ़ा न थी कि इब्ने सऊद शरीफ़ हुसैन के इलाक़े पर हमला न करेंगे। बादे अज़ां का किस की इस्तिदआ पर इब्ने सऊद ने सितम्बर 1914 ई० में

कोयत के शैख़ जाबिर अस्सबाह अनीज़ह के शैख़ फहद और मुहम्मरा के शैख़ हज़ाल से बसरा में मुलाक़ात की याद रहे कि शैख़ मुबारक अस्सबाह का 1915 ई० में इंतिक़ाल हो गया था। इस मुलाक़ात के नतीजे में इब्ने सऊद को बरतानिया से.....60000 साठ हज़ार पौंड सालाना की इम्दाद मिलने लगी। आगे चल कर यह रक़म एक लाख पौंड मुक़र्रर कर दी गई। अलावा अज़ीं उन्हें तीन हज़ार राइफ़लें और तीन मशीन गनें भी तोहफ़े में दी गईं।

जंगे अज़ीम के दौरान इब्ने सऊद और शरीफ़ हुसैन के मफ़ादात का कई बार तसादुम हुआ। जुलाई 1914 ई० में शरीफ़ हुसैन ने उस्मानी बाला दस्ती का जुवा उतार फेंका और तुर्कों के ख़िलाफ़ इत्तिहादियों का साथ देने का एलान कर दिया। इसी महीने शरीफ़ हुसैन ने एक और इक़्दाम यह किया कि यंबूअ़ की बन्दर्गाह पर क़ब्ज़ा कर लिया। 19 अक्तूबर को अरब की आज़ादी और फिर अरब मम्लिकत का बादशाह होने का ऐलान कर दिया। इस एलान से तल्ख़ी बढ़ी। इत्तिहादी उसे हिजाज़ का बादशाह तस्लीम करते थे, लेकिन अरब मुल्कों का बादशाह मानने में उन्हें कोई मन्तिक़ नज़र न आई। इब्ने सऊद ने शुरू में तो शरीफ़ हुसैन के इन इक़्दामात पर ख़ामोशी अख़्तियार की लेकिन 1918 ई० के मौसमे गरमा में खुर्मा के सरहदी नख़्लिस्तान में दोनों की अफ़्वाज में मुसल्लह तसादुम हो गया। बरतानिया जंग में बुरी तरह उल्झा हुआ था, तो इधर नोजा ही न दे सका। शरीफ़ हुसैन का बेटा अब्दुल्लाह तीन शब व रोज़ खुर्मा पर दादे शुजाअत देता रहा। मगर फिर ख़ालिद बिन लवी की कमान में इख़्वान दस्ते पहुंच गये इख़्वान का हमला इतना शदीद था कि अब्दुल्लाह भाग निकला, इख़्वान ने उसके ख़ेमे, तोपें, राइफ़लें और अस्लहा के ज़ख़ाइर अपने क़ब्ज़े में ले लिए इस तरह इब्ने सऊद के हाथ बे पनाह माले ग़नीमत लगा।

आलमी जंग में शरीफ़ हुसैन ने बरतानिया का साथ दिया। यही मुआमला इब्ने सऊद का भी था लेकिन मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र का हिस्सा महज़ बराय नाम था। अमलन वह अपनी हुकूमत के इस्तेहकाम ही की तरफ़ मुतवज्जेह रहे। दाख़िली मस्लेहतों के अलावा वह एक वजह यह भी थी कि इब्ने सऊद को बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द के मुसलमानों के एहसासात का पूरा-पूरा एहतराम था, जिन्हें ख़िलाफ़त के निज़ाम से

वालेहाना मुहब्बत थी, उसके बरअक्स शरीफ़ हुसैन ने जून 1916 ई० में तुर्की के ख़िलाफ़ ऐलाने जंग कर दिया और तुर्कों को हिजाज़, इराक़ और शाम व फ़िलस्तीन से निकालने के लिए बरतानिया का मक़्दूर भर साथ दिया।

पहली जंगे अज़ीम के बाद के हालात पर रोशनी डालने से पहले इख़्वान और इब्ने सऊद के बाहमी तअल्लुक़ात का जाइज़ा लेना ज़रूरी है। इख़्वाने तहरीक का मक़्सद दरहक़ीक़त बदवी क़बाइल को मुस्तक़िल बस्तियों में बसाना और उनकी ताक़त को मुनज़्ज़म करके सऊदी मम्लिकत के लिए मुफ़ीद क़ुव्वत बनाना था।

1914 ई० में इब्ने सऊद ने अपना मशहूर फरमाने अह्ले बादिया के नाम जारी किया कि वह इख़्वाने तहरीक में शामिल हो जाएं। इस तहरीक में शामिल होने के लिए दो चीज़ों का इक़रार ज़रूरी था।

(1) ख़ुदावन्द की इबादत इस में दर्ज ज़ैल बातें भी शामिल थीं।
(अ) ख़ुदा का शरीक न ठहराना।
(ब) ज़कात देना।
(स) रमज़ान के महीने में रोज़े रखना।
(द) दिन में पाँच मरतबा नमाज़ पढ़ना।
(ह) हज करना।

(२) तमाम सच्चे मुसलमानों में भाई चारे के जज़्बात को फरोग़ देना।
(अ) अपने वतन से मुहब्बत करना।
(ब) इमाम की कामिल इताअत करना।
(स) दूसरे इख़्वान भाईयों की मुश्किल के वक़्त मदद करना।

जंगे अज़ीम में सऊदी हुकूमत का किरदार : जंगे अज़ीम की सूरतेहाल से इब्ने सऊद ने किस तरह फ़ाइदा उठायध यह सिद्दीक़ हसन क़ुरैशी से सुनिए।

जंग ने इत्तिहादियों के हक़ में फ़ैसला दे दिया था। तुर्कों को शिकस्त किया हुई। उस्मानिया ख़िलाफ़त की कमर टूट गई। जंग के दौरान में तो अंग्रेज़ अरब की सियासत की तरफ़ तवज्जोह न दे सके थे। अब फिर इधर मुतवज्जेह हुए और अलल-ऐलान शरीफ़ हुसैन का साथ देना शुरू कर दिया। उन से जंग में अंग्रेज़ों का साथ दिया था। शायद यह

उस का मुआवज़ा था। शरीफ़ हुसैन उम्मीद लगाए बैठा था कि जंग के बाद बरतानिया उसे पूरे अरब का बादशाह बनाने का वादा पूरा करेगा। इसी ज़अम में अपने आक़ा का इरशारा पा कर शरीफ़ हुसैन ने 1919 ई० में इब्ने सऊद की मम्लिकत पर हमला कर दिया। तरबा के मक़ाम पर दोनों अफ़्वाज का मुक़ाबला हुआ।

फ़तह ने इब्ने सऊद के क़दम चूमे। शरीफ़ हुसैन के तीस हज़ार से ज़ाइद आदमी मारे गये। बाक़ी फरार हो गये। इब्ने सऊद ने शुमाल का रुख़ किया और रशीदियों के मरकज़ हाइल का मुहासरा कर लिया। 1920 ई० में अब्दुल्लाह बिन मुतअब बिन अब्दुल-अज़ीज़ ने हथियार डाल दिए। 1921 ई० में उन्होंने रशीदियों को आख़िरी फ़ैसला कुन शिकस्त दी। जबलुश्शुहरा और हाइल के इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसी साल मुहम्मद बिन तलाल ने हथियार डाल दिए। इस तरह पूरा नजद सऊदियों के ज़ेरे नगीं आ गया।

कमाल आना तर्क ने ख़िलाफ़त के ख़ातमा का ऐलान करके आख़िरी ख़लीफ़ा सुल्तान अब्दुल-हमीद और उनके ख़ानदान को जला वतन कर दिया। तो सात मार्च 1924 ई० को शरीफ़ हुसैन ने अपने ख़लीफ़ा होने का दावा कर दिया। उसका ख़्याल तो यह था कि लोग फौरन उनकी बैअ़त कर लेंगे, लेकिन इस एलान का रद्दे अमल अरब से बाहर नाखुशगवार हुआ। खुसूसन बर्रे सग़ीर के मुसलमानों ने मौलाना मुहम्मद अली जौहर की क़यादत में सख़्त मुख़ालिफ़त की।

आख़िर शरीफ़ हुसैन का ख़दशा मिटाने के लिए इब्ने सऊद ने हिजाज़ पर चढ़ाई करने का फ़ैसला किया। 24 अगस्त 1924 ई० को हमला का आग़ाज़ हुआ। इब्ने सऊद की फौजों ने ताइफ़ को घेर लिया। शदीद मुज़ाहिमत के बाद ताइफ़ फतह हो गया। अब सऊदी अफ़्वाज मक्का की तरफ़ बढ़ें। 30 अक्तूबर को शरीफ़ हुसैन ने तख़्त से दस्तबरदार होने का एलान किया। पन्द्रह रोज़ बाद मक्का मुअज़्ज़मा पर भी सऊद का फरेरा लहराने लगा। अब शरीफ़ हुसैन का बड़ा बेटा जांनशीन हुआ। उस ने जद्दह को दारुल-हुकूमत बनाया। पाँच दिसम्बर 1925 ई० को 10 महीने के मुहासरा के बाद मदीना मुनव्वरा फतह हो गया और 23 दिसम्बर को सऊदी फौज ने जद्दह पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब्दुल्लाह 9 दिसम्बर ही को जद्दह से निकल गया था। शरीफ़ हुसैन

क़बरस जा चुका था। अब इब्ने सऊद अपनी मम्लिकत के बिला शिर्कते
ैर से हुक्मरान थे। 22 सितम्बर 1934 ई० को उन्होंने मम्लिकत का
ाम सऊदी अरब रखा और खुद बादशाह बन गये। यमन के साथ
ारहदी इलाक़ों का तनाज़ा चला आ रहा था। अप्रैल 1934 ई० में दोनों
ुल्कों के दर्मियान जंग की नौबत आई। सऊदी अफ्वाज फातिहाना
ामन में दाख़िल हो गईं। आख़िर मुज़ाकरात शुरू हुए और जून के वस्त
मुआहदा तय पा गया। जिसकी रू से नजरान के ज़रख़ेज़ नख़्लिस्तान
ौर पाम का इलाक़ा सऊदियों को वापस मिल गया और असीर पर भी
ानका दावा यमन ने दुरुस्त तस्लीम कर लिया।

इस तरह इब्ने सऊद ने तीस साल तक जांगसल जद्दो जहद के बाद
ह मम्लिकत क़ाइम की जो आज मम्लिकते सऊदी कहलाती है और
ारब और आलमे इस्लाम की एक मुम्ताज़ मम्लिकत शुमार की जाती
। सऊदी मम्लिकत के क़याम से इब्ने सऊद की ज़िन्दगी का एक अहम
क़स्द पूरा हो गया। उन्होंने अरबों को जो मुख़्तलिफ़ क़बाइल में बटे
ए और तवाइफुल-मुलूकी का शिकार थे। एक मुनज़्ज़म किताब व
ुन्नत के क़वानी पर मब्नी मम्लिकत में मुत्तहिद कर दिया।

जंग के दौरान वहाबिया के मज़ालिम : सऊदी
अफ़्वाज ने तायफ़, मक्का और मदीना मुनव्वरा की फतह के दौरान जो
संगदिलाना और बहीमाना इंसानियत सोज़ मज़ालिम किए हैं। तारीख़
की सतरों से अब तक उन मज़ालिम का लहू टपक रहा है सरदार हसनी
लेखते हैं।

जंगे तायफ़ के ख़ूनीं वाक़ेआत : मई 1919 ई० में इब्ने
सऊद ने शरीफ़ हुसैन पर हमला आवर होने की तैयारी शुरू कर दी।
वाकिट हाल में एक और कॉंफ़्रेंस हुई और इब्ने सऊद के वज़ीफ़ा को
पाँच हज़ार पौंड से घटा कर पचीस पौंड कर दिया गया। इस वाक़्या
की इत्तिला इब्ने सऊद को न हुई। वह तैयारियों में हमातन मसरूफ़ था।
वह समझता था कि उसका मुस्तक़्बिल उसी एक मारके पर मुंहसिर है।

इब्ने सऊद के ख़िलाफ़ शरीफ़ ने भी अपने बेटे अब्दुल्लाह की
क़्यादत में एक लश्करे जर्रार तैयार किया। लश्कर के साथ बहुत से
बदवी लूट के लालच से साथ हो गये। चार हज़ार नौजवान निज़ामी

फौज के थे। जिन के इराक़ी और शामी अफ़्सरान तुर्की हुकूमत के तर्बियत याफ़्ता थे और जंगे अज़ीम के तजरेबात ने उन्हें जदीद अस्लेहा का इस्तेमाल ख़ूब सिखा दिया था। शरीफ़ी फौज की तैयारियां माह अप्रैल के अवाख़िर में मुकम्मल हो गईं। तायफ़ से लश्कर हश्म व वक़ार के साथ तराबा पहुंच कर अमीर अब्दुल्लाह को मालूम हुआ कि बाज़ लोग यहाँ भी दुश्मन के साथ मिले हुए हैं। अमीर ने उन सबको तेह तेग़ कर दिया। मक़्तूलीन के वरसा बज़ाहिर तो शरीफ़ की इताअत का दम भरते रहे, लेकिन खुफ़िया तौर पर यहाँ के इस्तेहकामात व इंतिज़ामात का हाले ख़िरमा वालों कासे कहला भेजा।

इब्ने सऊद उस वक़्त अफ़्वाज लिए ख़िरमा से कई मील दूर जानिब मश्रिक़ में मौजूद था। कि तराबा वालों का पैग़ाम ख़ालिद बिन लवी वालिए ख़िरमा को पहुंचा। इस शुजाअ् मर्द ने न इब्ने सऊद को इत्तिला दी और न ही बाज़ाब्ता इजाज़त हासिल करनी ज़रूरी समझी। अपने गाँव की कार आज़मूदा जमाअत को लेकर 24 मई की रात को तराबा पर चढ़ दौड़ा और रात के अंधेरे में जब कि शरीफ़ी अफ्वाज आराम और इत्मीनान की मीठी नींद सो रही थी। उनको तहे तेग़ करना शुरू कर दिया। वह क़त्ल व ख़ून हुआ कि अल-अमान, अल-अमान वहाबियों की यही शुजाअत व बसालत थी जिसने उक सदी पेश्तर आलिम इस्लाम को मुतहैयर व मब्हूत कर दिया था। बहुत से शरीफ़ी अभी बिस्तर पर ही थे कि क़त्ल कर दिए गये। बाज़ उठ कर संभलने न पाए थे कि तहे तेग़ हो गये। पाँच हज़ार शरीफ़ी अफ्वाज में से सिर्फ़ एक सद आदमी उस ख़ोंचकां सरगुज़िश्त को बयान करने के लिए ज़िन्दा रहे। अमीर अब्दुल्लाह जान बचा कर भाग गया। उसकी ज़ुबान से शरीफ़ हुसैन को फौज की मुकम्मल तबाही व बरबादी का हाल मालूम हुआ। अगले दिन पचीस मई को इब्ने सऊद अपने असा को ले कर बनफ़्से नफ़ीस तराबा पहुंचा और मक़्तूलीन के अंबार बचश्म खुद मुलाहिज़ा किए। किश्तगान की इतनी तादाद शायद उस ने भी न देखी थी। बेनज़ीर शुजाअत के बावजूद नर्म दिल वाक़े हुआ है। इस क़द्र किश्त व ख़ून पर बेहद मुतअस्सिफ़ हुआ। आंखों से आंसू जारी थे। हसरत भरी आह लेकर कहने लगा।

अल्लाह ने यह बार शाक़ा मुझ पर डाला है। मुश्रेकीन को (यानी वह

हाशमी मुसलमान जो इब्ने सऊद के वहाबी अक़ाइद से मुत्तफ़िक़ न थे। क़ादरी) राहे रास्त पर लाने की ज़िम्मेदारी मेरे मुक़द्दर कर दी गई है। काश मैं एक मामूली सिपाही होता।

नोट : इब्ने सऊद ने जो यह अल्फ़ाज़ कहे हैं। नबी के अलावा कोई शख़्स इन अल्फ़ाज़ के कहने का मजाज़ नहीं क्योंकि अल्लाह तआला नबी के अलावा और किसी शख़्स पर यह बार शाक़ा नहीं डालता। (क़ादरी गुफ़ेरा लहू)

मौलाना मुहम्मद अली जौहर तायफ़ के मज़ालिम के बारे में लिखते हैं।

मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी को हस्बे ज़ैल तार मक्का मुअज़्ज़मा से वुसूल हुआ।

ग्यारह सितम्बर बाशिन्दगाने मक्का मुअज़्ज़मा आज क़ाबतुल्लाह के सामने ज़मा हुए हैं जिस में तक़रीबन बीस हज़ार मुसलमान बाशिन्दगान। जावा, हिन्दुस्तान, सूडान, अल-जज़ीरिया, रूस शामिल थे और उन्होंने मुत्तफ़ेक़ा तौर पर मज़्हबी दुनिया को यह बताया कि वहाबियों ने शहर तायफ़ पर हमला किया और फौज हाशमी ने बड़ी बेजिगरी से उनका मुक़ाबला किया। बाशिन्दगाने मक्का और हुकूमते हाशमी ने जिसकी हिमायत आम तरीक़ा पर की जा रही है हर मुम्किन कोशिश इस अम्र की है कि बेगुनाह बाशिन्दगान और ग़ैर मुल्कियों को बचाया जाए, लेकिन वहाबियों ने बजाए उसके वह बाक़ायदा तौर पर क़ब्ज़ा करते, निहायत वहशियाना तरीक़ा अख़्तियार किया और वहाँ के बाशिन्दों और ग़ैर मुल्की रिआया पर जो वहाँ मुक़ीम थी, इंतिहाई ज़ुल्म किया है और जैसा कि खुद उन ग़ैर मुल्कियों से दोस्ती रखने वाली सलतनतों को इन तमाम हादिसात की ख़बर दी है। (यह वाक़या है) कि वहाबियों ने हज़रत इब्ने अब्बास के मज़ार को फूंक देने के बाद सारी आबादी को तहे तेग़ किया जिस में बच्चे, औरतें और बूढ़े सब शामिल थे। यानी मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में सारी रिआया और कल ग़ैर मुल्की बाशिन्दे मारे गये। इंसानियत, तहज़ीब और इंसाफ़ के नाम पर जिसकी लीग अक़्वाम अलम्बरदार है। हम दर्ख़्वास्त करते हैं कि इन मज़ालिम का ख़ात्मा किया जाए और उन वहशियाना हरकात को जिन से तहज़ीब और इंसानियत थर्राती है। जिल्द से जिल्द सख़्त तरीन कार्रवाई करके ख़त्म किया जाए।

10 सितम्बर 1924 ई०

मिनजानिब शुरकाए जल्सा।

अब्दुल-ग़फ़्फ़ार सूफ़ी, अब्दुस्सागानी, इब्ने क़ारी अब्दुल्लाह मरूह सूडानी, मोतादी, बदरुद्दीन, हिदायतुल्लाह आज़र बाईजान, मौलाना ग़फ़्फ़ार बिन क़रीनी, मौलाना मुहम्मद दाऊदी अमरागिस्तानी, अहमद बिन अनादानी, अबुल-जूलाक़ी, मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन ज़ैदान अश्शकीनी, मुहम्मद हबीबुल्लाह शौकती, उमर तूनसी अल-मुराकशी, मुहम्मद मुख़्तार बिन आज़िरत, नाज़िमुद्दौला ईरानी, मुहम्मद बिन अब्दुल-करीम, मुहम्मद अत्तार बिन सलमान, मुहम्मद इस्माईल बिन खुलफ़लानी, अब्दुल्लाह बिन याकूब, इब्ने सुबह समारी, बुख़ारी अब्दुल-ग़नी, बदरुद्दीन मुहम्मद आरिफ़, मुहम्मद मज़्हर, अबू तालिब, (नोट तार फ़्रांसीसी ज़बान में थे इसलिए बहुत से नाम साफ़ नहीं पढ़े गये)

जंग के दौरान वहाबियों के मक्का मुकर्रमा पर मज़ालिम : तायफ़ में वहाबियों ने जिस दरिन्दगी और बरबरीयत का मुज़ाहरा किया तमाम दुनिया में इंसानियत के नाम पर उन मज़ालिम की मुज़म्मत की गई, उसके बाद मक्का और मदीनान में उन लोगों ने एहतियात से काम लिया। ताहम एहतियात के दौरान उनकी फ़ितरी दरिन्दगी से जो मज़ालिम जुहूर में आए वह सरदार हसनी से सुनिए।

यह वाक़या है कि सुल्तान इब्ने सऊद के अहकाम उस वक़्त अहालियाने मक्का के काम आए शहर में क़त्ल व ग़ारत न हुआ। तायफ़ के कश्त व ख़ून के मुतअल्लिक़ अंग्रेज़ों ने ज़बरदस्त एहतिजाज किया था। और सुल्तान इब्ने सऊद ने इरादा कर लिया था कि हिजाज़ के मुतअल्लिक़ बक़िया कार्रवाइयां उसकी ज़ाती निगरानी के मातहत हों, चुनांचे शहर में अमन व अमान का एलान कर दिया गया और सुल्तान इब्ने बजाद शैख़ ग़तफ़त ने आर्ज़ी तौर पर शहरी नज़्म व नस्क़ संभाल लिया, लेकिन अमन व अमान क़ायम हो जाने के बावजूद इख़्वान बिफ़रे हुए थे। उन्हें इसरार था कि अगर मक्का के मुश्रेकीन (यानी वह मुसलमान जो अक़ाइद में नज्दियों से मुत्तफ़िक़ न थे। (क़ादरी) बच जाएं, तो बच जाएं लेकिन मक़ाबिर व मज़ारात ज़रूर मुन्हदिम कर दिए

जाएंगे और मसाजिद की आराइशें ज़ाए कर दी जाएंगी, क्योंकि उनके ऐतक़ाद के मुताबिक़ इन चीज़ों के वजूद में शिर्क का साइबा पाया जाता है चुनांचे हरम के वह तमाम मुक़द्दस मज़ारात जो सदियों से ज़ाइरीन के मरजा रहे थे आन की आन में तबाह व बरबाद कर दिए गये। वह तमाम रुसूम व शआइर जिनकी सनद वहाबियों के एतक़ाद के मुताबिक़ कुरआन व सुन्नत में मौजूद न थी बयक जुंबिश क़लम मम्नूअ् क़रार दे दिए गये, इस कार्रवाई का नतीजा यह हुआ कि तमाम आलमे इस्लाम में तुनफ़्फ़ुर और इज़्तिराब की लहर उठी। ईरान के शीओं और हिन्दुस्तानी मुसलमानों में मातम की सफ़ें बिछ गईं। लोग वहाबियों से बदगुमान तो पहले ही से थे जो कुछ उनके मुतअल्लिक़ कहा गया बिला तहक़ीक़ व तदक़ीक़ सही तस्लीम कर लिया गया। वहाबी इस फ़ेअ्ल को कुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ समझते थे। उन्होंने मुसलमानों के ग़म व गुस्सा की कुछ परवाह न की और अपने काम से काम रखा।

मदीना मुनव्वरह की बेहुर्मती : मक्का मुकर्रमा के मक़ामाते मुक़द्दसा और मज़ाराते सहाबा को पामाल करती हुई जब वहाबी फौजें मदीना मुनव्वरा पर यल्ग़ार करती हुई पहुंचीं, तो उन्होंने जिस शक़ावते क़ल्बी के साथ मदीना मुनव्वरा की बेहुर्मती की वह सरदार हसनी से सुनिए। लिखते हैं!

अगस्त में नज्दी अफ्वाज मदीना की तरफ़ बढ़ें। इसी महीना की २० तारीख़ को अमीर अली के हुक्काम ने अक़्साए आलम में यह ख़बर मशहूर कर दी कि नऊज़ुबिल्लाह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुक़द्दस मरक़द पर नज्दी गोलाबारी कर रहे हैं। नज्दियों की तरफ़ से तरदीद तो शाए हुई लेकिन बाद अज़ वक़्त पहुंची। मुसलमानों में फिर ग़ैज़ व ग़ज़ब बरपा हुआ। मुसलमान हुकूमतों की तरफ़ से एहतजाज शाए हुए फ़र्दन-फ़र्दन मुसलमान इस (रौज़-ए-रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) (क़ारी) के तहफ़्फ़ुज़ के लिए कोशिश करते रहे। ईरानी हुकूमत ने एक वफ़्द तहक़ीक़ हालात की ग़रज़ से भेजा। 1925 ई० के अवाख़िर में इस वफ़्द ने बयान शाए किया कि वाक़ई हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के रौज़ा के गुंबद में पाँच गोलियाँ लगी हैं।

इससे पहले सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ के दौरे हुकूमत में यह बयान

किया जा चुका है कि सऊद ने गुंबदे ख़ज़रा से सोने का हिलाल औ कुरह उतार लिया था और वह कुब्बा को भी गिराना चाहते थे लेकिन इ कारकुनों में से जो हिलाल और कुरह मज़्कूरा को उतारने के लिए ऊप चढ़े थे, दो आदमी नीचे गिर कर मर गये जिसका नतीजा यह हुआ वि उन्होंने कुब्बा गिराने का इरादा तर्क कर दिया :

इन दोनों तारीख़ी वाक़ेआत के मिलाने से यह नतीजा निकलता है कि इब्ने सऊद के दौर में रौज़ा मुनव्वरा पर गोलियों की बौछार को इत्तिफ़ाक़ी हादसा न था, बल्कि वहाबी हज़रात दीदा दानिस्ता गुंब ख़ज़रा की तौहीन करना चाहते थे।

इब्ने सऊद की तुर्कों से मुख़ासमत

ख़िलाफ़ते उस्मानिया के तहत तमाम इस्लामी इलाक़े एक वहदत मुन्सलिक थे। वहाबियों ने जज़ीरा अरब को ख़िलाफ़ते उस्मानिया र निकालने की दोबारा कोशिश की और नाकाम रहे। तीसरी बार जब वि तुर्क जंगे अज़ीम में जर्मनी के हलीफ़ थे और इत्तिहादियों से बरस पैकार थे। वहाबियों ने इस मौक़ा को ग़नीमत जाना और अंग्रेज़ों व हलीफ़ बन गये और जब इत्तिहादियों के मुक़ाबला में तुर्कों को शिकस्त हो गई तो इब्ने सऊद को अंग्रेज़ों की तरफ़ से बतौर इंआम सहरा अर दे दिया गया। इधर सालहा साल से करनल लार्नस अरब में क़ौमियत की जो तहरीक पैदा कर रहा था। इस तहरीक का असर था कि अर यक्जहती से तुर्कों के हलीफ़ इब्ने रशीद से लड़े।

चुनांचे इस सिलसिले में इस्टैनले लैन पोल लिखते हैं :

तुर्कों को दूसरी शानदार फतह क़त्तुल-इमारह के मुहासरा में हासिल हुई। 29 अप्रैल 1914 ई० को जनरल टाउन्सेंड ने मज्बूर हो कर हथियार डाल दिए वह और उसकी तमाम फौज क़ैद कर ली गई। इस कामयाबी ने इराक़ में तुर्कों की मुतअद्दिद शिकस्तों की एक हद तक तलाफ़ी कर दी थी, मगर 24 फरवरी 1917 ई० को अंग्रेज़ दोबारा क़त्तुल-इमारा पर क़ाबिज़ हो गये।

अरब में अंग्रेज़ों ने एक दूसरे तरीक़ा से नुमायां कामयाबी हासिल की। कर्नल लार्नस की बरसों की खुफ़िया कोशिशें आख़िरश बार आवर

हुईं और अरब बरतानिया की सरपरस्ती में और अरब नशनलिज़्म के जोश में तुर्कों के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए।

यकुम अक्तूबर 1914 ई० को शरीफ़ हुसैन ने अपने शाह हिजाज़ होने का एलान कर दिया। बरतानिया ने फ़ौरन ज़ाबता तौर पर उसकी बादशाहत को तस्लीम कर लिया। उसका लड़का अमीर फ़ैसल अरब फ़ौजों को लेकर तुर्क अफ़्वाज के मुक़ाबला के लिए शाम की तरफ़ बढ़ा और बरतानिया की मदद से तुर्कों को पय दर पय शिकस्तें दीं। पान इस्लामज़्म का तिलिस्म टूट गया। इसी अफ़्सूं से जर्मनी का काम लेना चाहता था, मगर बरतानिया की तदाबीर ने अरबों को तुर्कों के मुक़ाबले पर ला कर उसके असर को हमेशा के लिए ज़ाइल कर दिया।

नज्दियों ने बरतानिया ने साज़ बाज़ करके जिस तरह ख़िलाफ़ते उस्मानिया को नुक़्सान पहुंचाया है इस मौज़ूअ् पर बहाउल-हक़ क़ासमी (देवबन्दी) ने फित्ना नज्दीयत और तहरीक नज्दीयत के नाम से दो रिसाले लिखे। इस बाब में हम फित्ना नज्दीयत को मिन व अन नक़ल कर रहे हैं और तहरीके नज्दीयत के बाज़ इक़्तिबासात आइन्दा अबवाब में पेश करेंगे।

नज्दियों के सियाह आमालनामा का एक वर्क़ शरीफ़ हुसैन और इब्ने सऊद की ग़द्दारी

नज्दी अक़ाइदे फ़ासिदा का मुख़्तसर मुरक़्क़ा

सैयद हुसैन साबिक़ शरीफ़े मक्का ने तुर्कों से बग़ावत करके और दुशमनाने इस्लाम से याराना गांठ कर जैसी इबरत ख़ेज़ और सबक़ आमोज़ ज़िल्लत हासिल की है इसके फ़क़त तसव्वुर से मुन्तक़िमे हक़ीक़ी की कुदरत का अन्दाज़ा हो सकता है। आज इस बदक़िस्मत का वजूद ही इस हक़ीक़त का रौशन सुबूत है कि क़ह्हार व जब्बार खुदा जब किसी ज़ालिम को सज़ा देना चाहते हैं, तो फिर दुनिया की कोई ताक़त उसको बचा नहीं सकती। शरीफ़ के मक्का मुअज़्ज़मा से निकल जाने के बाद उसका बेटा वहाँ मुसल्लत हुआ। बाग़ी वहाबियों की हरीसाना

निगाहें हरमैन शरीफ़ैन की तरफ़ अरसा से उठ रही थीं। उन्होंने तायफ़ शरीफ़ को बरबाद करने के बाद मक्का मुअज़्ज़मा पर हल्ला बोल दिया तायफ़ में लूट खसोट और क़त्ल व ग़ारत करके वहाँ क़ाबिज़ हुए और फिर मक्का मुअज़्ज़मा पर भी बेग़ैर किसी दिक़्क़त और दुशवारी के मुसल्लत हो गये तो इस सवाल का जवाब हर मुतफ़त्तिन और समझदार इंसान यही देगा कि -

नज्द कौकब यह सलीक़ा है सितम्गारी में
कोई माशूक़ है इस पर्दा निगारी में

नज्दियों के तसल्लुत ही के वक़्त अरबाबे फ़िरासत भाँप गये थे कि अब सूरते हालात रूबा इस्लाह होने की बजाए और ज़्यादा ख़तरनाक और पेचीदा हो जाएगी, क्योंकि यह क़ौम सख़्त वहशी वाक़े हुई है। बरबरीयत और दरिन्दगी उसके ख़मीर में दाख़िल और इंसाफ़ परवरी वर्द इदारी की उनको हवा तक नहीं लगी है, उनके अक़ाइद में इस दर्जे का गुलू, तशद्दुद और तजावुज़ पाया जाता है कि वह मरकज़े इस्लाम पर हुकूमत व क़्यादत करने की क़तअन अह्लियत नहीं रखते और सबसे बढ़ कर यह कि शैख़ नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब आंजहानी के अह्दे नहूसत से लेकर उस वक़्त तक यह लोग आस्तान-ए-ख़िलाफ़त से बाग़ी रहे, बल्कि मौजूदा नज्दी हुकूमत दुश्मनाने इस्लाम की अंगिश्त नुमाई और बर अंगेख़्त से तुर्कों के साथ नबर्द आज़मा और मस्रूफ़ पैकार रह चुकी है और मौजूदा अमीर नज्द अब्दुल-अज़ीज़ इब्ने सऊद भी शरीफ़ की तरह अंग्रेज़ों का मन्ज़ूरे नज़र पिट्ठू और ख़ास वज़ीफ़ा ख़्वार है। इन वाक़ेआत व हक़ाइक़ की बिना पर अरबाबे बसरीरत ने नज्दियों के तसल्लुत को सख़्त ना पसन्दीदगी की नज़र से देखा लेकिन अफ़सोस कि हिन्दुस्तानी मुसलमानों में से किसी ने सुनहरी और रू पहली मस्लेहतों के तहत बाज़ ने नज्दियों के हम अक़ीदा होने बाइस किसी ने शरीफ़ के मज़ालिम से तंग आ कर और किसी ने ज़बान दराज़ और मुँह फट लोगों की गालियों के ख़ौफ़ से इन तमाम हक़ाइक़े साबिता से आंखें बन्द करके नज्दियों की तारीफ़ व तौसीफ़ के पुल बांधने शुरू कर दिए।

यह लोग जहाँ नज्दियों के अक़ाइद की ख़ूबियाँ बयान करते नहीं थकते। वहाँ चीख़-चाख़ कर और गला फाड़-फाड़ कर यह भी साबित करना चाहते हैं कि इब्ने सऊद नज्दी शरीफ़ की तरह अंग्रेज़ परस्त नहीं बल्कि "इस्लाम परस्त है। हालांकि उन्हीं में के ज़िम्मेदार लोग कुछ मुद्दत पहले अपनी तहरीरों और तक़रीरों में बाज़ाबता सरीहन इक़रार कर चुके हैं कि नज्दी हुकूमते बरतानिया की वज़ीफ़ा ख़्वार, मुक़र्रब पिट्ठू और तुर्कों की सख़्त दुश्मन वाक़े हुई है।

मैं ज़ैल में ज़िम्मेदार हामियाने नज्दीया हीकी तक़रीरों और तहरीरों से इब्ने सऊद और मौजूदा नज्दी हुकूमत की ग़द्दारी, नसारा परस्ती और इस्लाम कश हिक्मते अमली के चन्द वाक़ेआत अर्ज़ करता हूँ और इसके बाद वहाबियों के काफिर साज़ाना और मुश्रिक गराना अक़ाइद ही की किताबों से नक़ल करके फ़ैसला नाज़िरीन पर छोड़ता हूँ वह खुद अन्दाज़ा लगा लें कि नज्दियों की हिमायत में जो आजकल हंगामा खेज़ मुज़ाहिरात हो रहे हैं उनकी क्या हक़ीक़त है?

बस इक निगाह पे ठेहरा है फ़ैसला दिल का

ग़द्दार इब्ने सऊद की सियासी कहानी

अख़्बार ज़मींदार की ज़बानी

अख़्बार ज़मींदार लाहौर बाबत माह फ़रवरी 1922 ई० के मुतअद्दिद पर्चों में एक तवील मज़्मून शाए हुआ था। जिसके तीन उनवान थे "हुकूमते बरतानिया और इराक़ अरब" "इसरार का इंकिशाफ़" "हक़ीक़त की चेहर कुशाई" इस मज़्मून में बरतानिया की इन रेशा दवानियों का मुफ़स्सल तज़्किरा किया गया है जो उसने इराक़ अरब में तुर्कों के ख़िलाफ़ और अपना इक़्तिदार क़ायम करने की ग़रज़ से अरबों को सीम व ज़र का लालच देने की सूरत में रवा रखें। मैं ज़ैल में इस मज़्मून से वह इक़्तिबासात नमबर वार नक़ल करता हूँ जिन में इब्ने सऊद नज्दी और उसकी हुकूमत की ग़द्दाराना साज़िशों और मुस्लिम क़ौम के ख़िलाफ़ बदअमलियों से नक़ाब कुशाई की गई है।

(1)

तलकल-अम्सालु नज़र बहा लिन्नासे लअल्लहुम यतफ़क्करून।

टाइम्ज़ का नामा निगार मज़ीम तहरान लिखता है कि :

"तुर्क हमारे (बरतानिया के) दुशमन थे। इसलिए कुदरती तौर पर हम इस कोशिश में मसरूफ़ रहते थे कि तुर्की की बदनज़्मी की कोई बात हमारे हाथ लगे, जिसे हम इत्तिहादियों के फौजी मक़ासिद के लिए मुफ़ीद बना सकें। अरबों के जज़्बात की कोई क़द्र अहमीयत हो या न हो लेकिन हम तुर्की के नक़ाइस को नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकते थे और उसके बताए हुए लोगों से तो वह किसी तरह सुलूक तग़ाफ़ुल नहीं कर सकते थे जो जर्मनी ने आयरलैंड से किया है। हामियाने अरब के लिए यह नादिर मौक़ा था जिस तरह हुकूमत जर्मनी के पास उसके मुतबह्हिर माहिरीने उलूम और मुस्तशरेक़ीन मौजूद थे जिनका ज़न्ने ग़ालिब यह था कि आयरलैंड में जम्हूनियत के अक़्वाम व क़्याम का इम्कान है और हिन्दुस्तान के बाशिन्दों के मफ़ाद के लिए बग़ावत अंग्रेज़ी ज़रूरी है। इसी तरह हमारे मुल्क में बसने वाले इत्तिहाद अरब के हामी तुर्की की हुकूमत को काँ-काँट कर अरबों की हुकूमत पर मिस्र थे। इसलिए यह बात कुदरती और नागुज़ीर थी कि हुकूमत उन लोगों को आल-ए-कार बरआरी बनाए।

वहाबियों का खुरूज : इसलिए अब यह सवाल पैदा हुआ कि अरबों को तुर्कों के ख़िलाफ़ किस तरह बरअंगेख़्ता किया जाए। सनोसी तो किसी काम के नहीं थे, क्योंकि वह इस हुकूमते अरब में हिस्सेदार नहीं बन सकते, जिसके हम हामी हैं। वजह यह है कि मिस्र दर्मियान में हाइल है। अलावा अज़ीं वह हमारे मुख़ालिफ़ भी हैं। इद्रीसी और इमाम यमन बहुत काम दे सकते थे। रशीद अमीर हाइल तुर्कों के साथ मिल गये। अब सिर्फ़ दो ऐसी हस्तियाँ रह गईं जो हमारे यानी गवर्नमेंट बरतानिया के शहनशाही इक़्तिदार के असर में आ सकती थीं उन्हें हम सरमाया दे सकते थे और उन से यह वादा कर सकते थे कि अगर हमारी एआनत की जाएगी तो हम बहुत सा सिला इंआम देंगे। यह मुअज़्ज़ज़ हस्तियाँ" हुसैन शरीफ़ आज़म मक्का और इब्ने वहाबी अमीर नज्द की हस्तियाँ थीं।

इस हक़ीक़ते नफ़्सुल-अमरी से कि यह दोनों एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हैं उनके इग़राज़ व मक़ासिद में बादल-मश्रिक़ैन है और उनके पीर मज़्हब की तल्वार से एक दूसरे से एलाहिदा हैं बहुत पेचीदगी पड़ गई। मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब अट्ठारहवीं सदी में इल्मे इस्लाम लेकर उठा उसने १७६० ई० में सऊद हाकिमे नज्द को अपना हम अक़ीदा बना लिया। उसी ज़माने में बहुत से छोटे शुयूख़ ने जो पहले एक दूसरे के मुख़ालिफ़ थे यह मज़्हब क़ुबूल कर लिया।

इन शुयूख़ और दीगर अक़ीदतमन्दों की मदद से सऊद और उसका जांनशीन सऊद इब्ने सऊद वस्त अरब में एक वसीअ् सलतनत क़ायम करने के क़ाबिल हो सके।

सऊद सानी के बेटे ने 1801 ई० में करबलाए मुअल्ला के मुक़द्दस शहर की बेहुर्मती की। 1803 ई० में फौजें लेकर मश्रिक़ की तरफ़ बढ़ा और मक्का मुअज़्ज़मा के हरमे मुक़द्दस पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस मक़ामे मुक़द्दस की जो शीआ और सुन्नियों दोनों के लिए यक्सां वाजिबुल-एहतराम है बेहुर्मती की। 1804 ई० में उस ने मदीना पर क़ब्ज़ा कर लिया। मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा दोनों 1813 ई० तक वहाबियों के क़ब्ज़े में रहे। 1811 ई० में मिस्र के मशहूर व मारूफ़ पाशा मुहम्मद अली नज्द के दारुल-सलतनत देराऐह पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसे तबाह कर डाला। उस वक़्त वहाबी सलतनत कुछ मुद्दत के लिए मिट गई लेकिन ईमान का ज़ाइल होना तो नामुम्किन था। सलतनत की वीरानी व तबाही में भी ईमान का जज़्बा मौजूद रहा 1820 ई० में ख़ानदाने सऊद ने फिर सर उठाया। देराऐह के खण्डरों के नज़्दीक एक नए दारुल-सतलतनत की बुनियाद रखी गई। उस शहर का नाम रियाज़ रखा फिर उस मम्लिकत ने उरूज हासिल किया। लेकिन बत्तीस साल गुज़रे ख़ानदानी तनाज़ुआत से यूं फिर मलियामेट हो गई और ख़ानदाने इब्ने रशीद जो जबल शुमार से तअल्लुक़ रखता हे ग़ालिब आ गया लेकिन आख़िर उसे भी रोज़े बद देखना पड़ा। इब्ने सऊद का ख़ानदान सख़्त जान है। 1901 ई० में मौजूदा अमीर नज्द जिसकी उम्र उस वक़्त अट्ठारह साल थी। पन्द्रह आदमियों को साथ लेकर रात की तारीकी में शहर में जा घुसा। पोह फटते ही इब्ने रशीद के मुक़र्रर करदह आमिल को क़त्ल कर डाला और इब्ने सऊद का

झण्डा नसब कर दिया। इसके बाद अमीर नज्द का लक़ब अख़्तियार करके उस ने अपनी आबाई सलतनत के बहुत से हिस्से पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस ने अल-हिसा में से तुर्कों को निकाल दिया और मश्रिक़ की तरफ़ उन बन्दर्गाहों तक जो बहरैन के मुक़ाबिल वाक़े हैं। शुमाल में शैख़ कुवैत के मुल्की की सरहद तक जा पहुंचा लेकिन मग़्रिब में शरीफ़ आज़मे मक्का ने उसका मुक़ाबला किया और 1910 ई० में नज्द पर हमला किया। अगरचे शिकस्त खाई और अपने मुल्क की हद तक वापस हुआ, लेकिन बाहमी मुफ़ाहिमत व मुनाक़िशत का सिलसिला जारी रहा और दोनों एक दूसरे की मुख़ालिफ़त पर तुले रहे।

ज़मींदार सफ़ः अव्वल बाबत 6 फरवरी 1922 ई०

अंग्रेज़ों से दोस्ती तुर्कों से जंग

"इब्ने सऊद ने तहरीक इख़्वान से जो एक रूहानी बिरादरी की तहरीक थी। वहाबी मसलक को वह तक़्वियत बख़्शी जो आजकल इस मसलक को हासिल है। शीआ़ और सुन्नियों के अहया का दौर अभी नहीं आया था। वह अलल-एलान तम्बाकू नोशी करते थे और शराब भी पी लिया करते थे। इब्ने सऊद के आबा व अज्दाद तो इतने फ़ितरती न थे कि उनके ख़िलाफ़ मज़्हबे अफ़आल को गवारा करते। वह उनके लिए ज़रूर सज़ा दिया करते थे, लेकिन उसने अपनी मम्लिकत के क़ुर्ब व जवार और मम्लिकत में बसने वाले शीआ़ और सुन्नियों को इन अफ़आल के लिए सज़ा देने की कोशिश तक नहीं की। उसने इख़्वान की बस्तियाँ क़ायम कीं वह इस क़द्र आदमियों को हम अक़ीदा बनाते थे कि तल्वार के ज़ोर से पहले कभी उस हल्क़ा मसलक में दाख़िल नहीं होते थे। उनके मुबल्लिग़ों की सरगर्मियाँ मक्का वालों को बेचैन और मुज़्तरब किया करती थीं। इब्ने सऊद एक हद तक हज में भी मुदाख़लत किया करते थे और उस रुपया को जो इस तरह शाह हुसैन के ख़ज़ाना में भी जाता था रोकते थे। इस ख़्याल से कि यह भी एक क़िस्म का शिर्क और बुत परस्ती है वह इन शीओं से जो उनके इलाक़े में गुज़ारा करते थे। तावान या जिज़्या लिया करते थे।

हुकूमते बरतानिया की कारगुज़ारी

जब जंग का आग़ाज़ हुआ उस वक़्त मुल्क की यह हालत थी। हम ने शरीफ़े मक्का और इब्ने सऊद दोनों की ख़िदमात हासिल करने की कोशिश की और उन्हें तुर्कों के ख़िलाफ़ बरअंगेख़्ता किया।

वहाबी और इब्ने सऊद तो पहले ही हमारे या यूं कहिए कि हुकूमते हिन्दे के दम साज़ थे। 1865 ई० का वाक़या है कि उस ज़माने में एक बरतानवी वफ़्द बसर करदगी करनेल लयोस बेली रियाज़ गया था। उस वफ़्द ने ख़ानदान इब्ने सऊद से एक मुआहदा किया था ज़िसकी पासदारी हमेशा मल्हूज़ रही है। अगरचे कोई बाक़ायदा अहद नामा मुरत्तब नहीं किया गया था, लेकिन उस पर भी वहाबियों ने मुझे बताया कि वह इस मुआहदा की तक्मील अपना फ़र्ज़ ख़्याल करते हैं।

मौजूदा इब्ने सऊद और उसका वालिद अब्दुर्रहमान जो ज़ईफुल-उम्र और वाजिबुल-एहतराम बुज़ुर्ग है। 1885 ई० से 1901 ई० तक कुवैत में मुक़ीम रहे। शैख़ कुवैत उनका हामी व मददगार था। उसी की बरकत है कि यह फिर अपनी खोई हुई सलतनत हासिल करने के लिए बाहर निकले जिस ज़माने में यह ख़ानदाने कुवैत में था उस ज़माने में बरतानवी पोलीटिकल अफ़्सर और रेज़िडेंट बू शहर से उनके तअल्लुक़ात थे, जब यह ख़ानदान रियाज़ पहुंचा उस वक़्त यह तअल्लुक़ात दोस्ताना क़ाइम रहे। कप्तान शेक्सपियर आंजहानी पोलीटिकल अफसर कुवैत अरबों के मद्दाह और गहरे दोस्त थे। उनकी वसातत से सिलसिल-ए-तअल्लुक़ात मरबूत व मज़्बूत, अल-ग़रज़ हमारे और इब्ने सऊद के दर्मियान बाहमी इत्तिहाद और एतमाद का सिलसिला तो पहले ही से क़ाइम था। तुर्क तो आबा व अज्दाद से उसके दुशमन चले आते थे। 1914 ई० में जंगे अज़ीम के छिड़ने से पेशतर उस ने तुर्कों के ख़िलाफ़ ऐलाने जंग किया था और उसमें यहाँ तक कामयाबी हासिल की थी कि अल-हिसा पर क़ब्ज़ा कर लिया था। जबल शुमार के बसने वाले भी उसके दुशमन थे। इसलिए इब्ने सऊद ने शरीके जंग होने में तअम्मुल नहीं किया। जनवरी 1915 ई० में वह मैदाने जंग में उतरा, लेकिन शोमई क़िस्मत! कप्तान शेक्सपेयर जो उसके साथ था जंग जुराब में मारा गया। और इब्ने सऊद की प्यादा फौज में दग़ाबाज़ों ने अपने हाथ

दिखाए। नतीजा यह हुआ कि उस जंग में जिसका आग़ाज़ फ़ातिहाना था सख़्त शिकस्त खानी पड़ी। इस वाक़या के बाद हमारी और इब्ने सऊद की हिम्मत टूट गई और मुद्दत तक हम मैदाने जंग में नहीं उतरे।" (ज़मींदार सफः अव्वल, 7 फरवरी 1922 ई०)

(3)
अशर्फ़ियों की थैली

नामा निगार मज़्कूरा मज्लिस क़ाहिरा और सरपरस्ती का किस के मरतबा क़ानून इंतिख़ाब के ज़िक्र में लिखता है कि :

जब कसरत राय से इंतिख़ाब अमल में आएगा। उस वक़्त देखें लेंगे। अमीर इराक़ अरब में महज़ अजनबी आदमी की उक़्अत रखता है लिहाज़ा वक़्त आएगा कि वह हमारे सामने ठहर न सकेगा। पस जो अज़्म करना है हुकूमत ने सोचा वह यह है कि अमीर फ़ैसल को पहले मुल्क में भेजा जाए मुसम्मम हो गया कि यह होना ही चाहिए तैयारियाँ होने लगीं साथ ही इस अज़्म के इस अम्र की भी पूरी कोशिश की गई कि अवाम की नज़र से इस हक़ीक़ते कुबरा को पोशीदा रखा जाए कि बरतानिया का हाथ इस में नहीं है और फौरन निज़ाम अमल उसके लिए मुरत्तब होने लगा वही निज़ामे अमल जो कभी सर परस्ती का किस ने अपने लिए बनाया था इब्ने सऊद को कांटे की तरह खटकता था, लेकिन अंजुमन इत्तिहाद अरबी के पास एक सीधा साधा नुस्ख़ा था और वह अशर्फ़ियों की थैली थी। (ज़मींदार सफः अव्वल, 10 फरवरी 1922 ई०)

(4)
अशर्फ़ियों का तोड़ा

"एक दूसरे हक़ीक़त निगार ने इस हक़ीक़त से बहस करते हुए कि दो बरस से भी कम मीआद में करनल लार्नस ने वहाँ बीस हज़ार अशर्फ़ियाँ तक़्सीम कर दें। यह कहा था कि उसका तो तअज्जुब नहीं कि उन्हें वहाँ इक़्तिदार हासिल हुआ बल्कि उसका तअज्जुब है कि अब

मुतलक़ इक़्तिदार नहीं रहा और अगर बज़ा से उनके में होता तो कभी अरब नज़्म व नस्क़ न करता, बल्कि मैं ख़ुद बादशाह बन बैठता। इब्ने सऊद को इस तरह बइत्मीनान अशर्फ़ियाँ को तोड़ा हवाला करके टाल दिया।" (ज़मींदार सफ़: अव्वल 11 फरवरी 1922 ई०)

(5)

साठ हज़ार पौंड सालाना की रिश्वत

तुर्कों की नाकाबन्दी

"फिर भी उन्होंने (नज्दियों) ने हमें जंग के आख़िरी दौर में तुर्कों की नाकाबन्दी में माकूल मदद दी। जो जबल शुमार और बन्दर कुवैत के रास्ता अशियाए रसद हासिल कर रहे थे। और 1918 ई० में इब्ने रशीद के मुल्क पर चढ़ दौड़े।"

इस साल उन्होंने सरपरसती का किसके पास बग़दाद में एक सिफ़ारत भेज कर यह ज़ाहिर किया कि हमारे सब्र का पैमाना लब्रेज़ हो चुका है या तो शाह हुसैन को अपना रवैया बदलने के लिए ख़ास तंबीह कर दी जाए वरना हम इंतिक़ाम गीरी पर मज्बूर हो जाएंगे। अमीर फ़ैसल को बग़दाद में शाही तख़्त पर बिठाना मज़ीद ज़ुल्म था। इब्ने सऊद ने साफ़-साफ़ कह दिया कि मेरे गर्द दो भट्ठियाँ सुल्गा दी गई हैं, फिर मैं कैसे हाथ पाँव तोड़ कर ख़ामोश बैठ सकता हूँ। मज़ीद बरआँ एक तीसरी ख़तरनाक तर मुसीबत यानी अब्दुल्लाह मावराए यर्दुन पर क़ाबिज़ है। सरपरस्ती का किस ने इस एहतिजाज के जवाब में उसे "शाह नज्द" के नाम से मुख़ातब किया इस ख़ुशामद, तमल्लुक़ और साठ हज़ार पौंड सालाना की रिश्वत से जो माह बमाह अदा होती रहेगी। इब्ने सऊद को ख़ामोश रखने की उम्मीद की जाती है। (ज़मींदार सफ़: अव्वल बाबत 12 फ़रवरी 1122 ई०)

इब्ने सऊद नज्दी और उसकी हुकूमत की "इस्लाम परस्ती" और "नसारा कुशी" का यह इज्माली नक़्शा है जिसे वही अख़्बार शाए कर चुका है जो आज "नज्दीयत नवाज़ी" के अलम्बरदारों में चोटी का

"मुजाहिद" समझा जाता है।

साहिबो! आपने देख लिया कि नज्दी बाग़ी किस तरह मुख़ालेफ़ीने इस्लाम से मिल कर तुर्कों को सफ़: हस्ती से मिटा देने की कोशिश करते रहे हैं।

दुशमन के दोस्त, दोस्त के दुशमन हैं बेसबब
देखो वहाबियों की यह आदत अजीब है

वहाबियों की सलेबी लड़ाइयाँ

ज़मींदार की शहादत

ऊपर जो इक़्तिबासात में दर्ज कर चुका हूँ। वह मैंने खुद "ज़मींदार" के परचों से नक़ल किए हैं। ज़ैल में मुअज़्ज़ज़ रोज़ नाम-ए-सियासत" लाहौर के हवाला से "ज़मींदार" की राय जो उस ने हड़बोंग से पहले ज़ाहिर की थी दर्ज करता हूँ।

"जनाब मुफ़्ती हिमाबतुल्लाह साहब सिक्रेट्री अंजुमन मुईनुल-इस्लाम लाहौर ने 8 जून 1920 ई० का ज़मींदार पढ़ कर सुनाया जिसमें वहाबियों को मफ़्ज़ी लिखा गया है और वहाबियत के लफ़्ज़ को बग़ावत और किज़्ब व बुहतान का मुतरादिफ़ ज़ाहिर किया गया था और लिखा था कि इब्ने सऊद अंग्रेज़ों का वज़ीफ़ा ख़्वार है और इस्लाम की नहीं बल्कि सलेब की लड़ाइयाँ लड़ता है।" ("सियासत" बाबत 19 सितम्बर 1925 ई०)

बरतानिया का पिट्ठू इब्ने सऊद

मिस्टर अली साहब का फतवा

मशहूर लीडर जनाब मिस्टर मुहम्मद अली साहब एडीटर हमदर्द "कामरेड" ने (जो आजकल इब्ने सऊद के ख़ास नअ़त ख़्वानों में दाख़िल हैं) इस तक़रीर में जो आपने ख़िलाफ़ते कॉंफ़्रेंस कराची में फ़रमाई थी। इब्ने सऊद के मुतअल्लिक़ फ़रमाया कि :

अगर किसी वक़्त शरीफ़े मक्का अमीर फ़ैसल बरतानिया के बरख़िलाफ़ हो जाएं तो बनज़र हिफ़्ज़ मा तक़द्दम एक दूसरे पिट्ठू को भी तैयार कर

लिया है और वह इब्ने सऊद है जिसे साठ हज़ार पौंड (9 लाख रुपया) सालाना .... दिए जाते हैं ताकि बवक़्त ज़रूरत उसको शरीफ़ की जगह बिठा दिया जाए।"

(तक़ारीर मिस्टर मुहम्मद अली साहब मत्बूआ ग़नी अल-मुबाते दिल्ली हिस्सा दोम स० 67)

ग़रज़ जो लोग आज इब्ने सऊद को "फ़रिश्त-ए-रहमत" साबित करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं वही कुछ अरसा पहले उसको ग़द्दार बरतानिया का पिट्ठू और नसारा परस्त वग़ैरह ख़िताबात दे चुके हैं। अब मुझ पर तो किसी साहब को नाराज़ न होना चाहिए। नाराज़ होने वाले साहिबों को चाहिए कि वह अपनी क़लम और अपनी ज़बान को मारे गुस्सा के काट खाएं जिस से क़बल अज़ वक़्त "शरीफ़ीर प्रोपेगण्डा" हो चुका है और अब वह अपने इस भर्म की कोई सफ़ाई नहीं पेश कर सकते -

दिल की नहीं तक़्सीर मक्नन्द आंखें हैं ज़ालिम
यह जा के न लातीं वह गिरफ़्तारी न होता!

नज्दियों की मज़्हबी कहानी

उनकी अपनी ज़बानी

मुदई! लाख पे भारी है गवाही तेरी

नज्दियों के बातिल और फ़ासिद अक़ाइद इस क़द्र वाज़ेह हैं कि बड़े-बड़े अकाबिर उलमा व मुहद्देसीन उनकी तरदीद में किताबें तहरीर फरमा चुके हैं। खुद शैख़ नज्दी मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब आंजहानी के हक़ीक़ी भाई शैख़ सुलेमान बिन अब्दुल-वहाब अपने गुम्राह भाई की तरदीद करने पर मज्बूर हो गये थे, लेकिन आज तक नज्दियों के हिन्दुस्तानी चेले यही कहते रहे कि जिन अक़ाइद को नज्दियों की तरफ़ मन्सूब किया जाता है वह उन से बरीउज़्ज़िम्मा हैं मगर बाबतल पर कब तक पर्दा रह सकता है। क़ुदरत ने खुद नज्दियों के हाथों उसको चाक करा दिया -

आईना देख अपना सा मुँह ले के रह गये
नज्दी को दिल न देने पर कितना ग़रूर था

अब्दुल-अज़ीज़ इब्ने सऊद मौजूदा अमीर बहद ने मक्का मुअज़्ज़मा पर क़ाबिज़ होने के बाद अपने मख़्सूस अक़ाइद के प्रोपेगण्डा के सिलसिले में किताब "मज्मूअतुत्तौहीद" को शाए करके गुज़िश्ता हज के मौक़ा पर मुफ़्त तक़्सीम किया। इस मज्मूआ में मुख़्तलिफ़ रसाइल हैं जिनके नाम भी मुख़्तलिफ़ हैं, मगर सफ़्हात का नम्बर मुसलसल है यह कुल मज्मूआ ४०४ सफ़्हात पर मुश्तमिल है मैं इस किताब का बिल-इस्तीआब मुताला नहीं कर सका, क्योंकि मैंने यह किताब एक साहब से आरियतन ली थी इसलिए काफी वक़्त तक मेरे पास न रह सकी, ताहम मुतफ़र्रिक़ मक़ामात के मुताला के बाद चन्द इबारात मिल गईं जिन से नज्दियों के अक़ाइद का अन्दाज़ा हो सकता है। एक और मुस्तक़िल रिसाला "अल-हिदायतुस्सुन्नीया" के नाम से इब्ने सऊद के हुक्म से शाए हुआ है, लेकिन बख़ौफ़े तत्वील नमूना के तौर पर सिर्फ़ मज्मूआ मज़्कूरा की चन्द इबारतें मआ तरजमा ज़ैल में नक़ल करता हूँ।

नबी करीम से तवस्सुल नाजाइज़

तरजमा : पस अगर हज़रत उमर और सहाबा का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात से आपके इंतिक़ाल के बाद तवस्सुल करना जाइज़ होता तो वह हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ कर हज़रत अब्बास की तरफ़ मुतवज्जह न होते उस से मालूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी वफ़ात के बाद वसीला बनाना जाइज़ नहीं। (मज्मूअतुत्तौहीद मत्बूआ उम्मुल-कुरा मक्का मुअज़्ज़मा सफ़: 217, 1323 हिज०)

अस्अलुका बेअंबियाइका कहना भी मक्रूह

खुलासा : खुदा को किसी का वास्ता देकर पुकारना मक्रूह है पस यूं न कहे कि ऐ खुदा मैं फुलां या तेरे फ़रिश्तों या तेरे नबियों की तुफ़ैल तुझ से सवाल करता हूँ।" (यह अक़ीदा जम्हूर अह्ले सुन्नत के ख़िलाफ़ है।)

नबी करीम से तलबे शफ़ाअत हराम

तरजमा : पस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके ग़ैर से शफ़ाअत तलब करना उनकी वफ़ात के बाद और आपके दूर होने के वक़्त दुआ करने वाले से उसको अल्लाह ताआला पसन्द करता है। (मज्मूअतुत्तौहीद सफ़: 223)

नज्दी ने जिस हदीस को आड़ बनाया है उसका वह मतलब ही नहीं समझे और इस तरह उन सही अहादीस को पसे पुश्त डाल दिया जिन से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात पाक से आपके इंतिक़ाल के बाद तवस्सुल जाइज़ साबित होता है।

कुफ़्री टकसाल के नए-नए सिक्के

वहाबियों के बनाए हुए "काफिरों" की मुख़्तसर फ़ेहरिस्त

नज्दी ताइफ़ा मुसलमानों को काफिर बनाने का जिस क़द्र शौक़ रखता है वह तमाम काफिर गरों के जज़्बाते तक्फ़ीर से बढ़ चढ़ कर है। उनके मुख़्तरेआ अक़ाइद की कसौटी पर न सिर्फ़ बरैलवी, न सिर्फ़ देवबन्दी, न सिर्फ़ फ़िरंगी महल्ली, बल्कि हमारे हाँ के ग़ैर मुक़ल्लेदीन, कारकुनाने ख़िलाफ़त और हामियाने नज्दीया भी मुसलमान साबित नहीं हो सकते, बल्कि मैं अर्ज़ करता हूँ कि खुद नज्दी ताइफ़ा भी अपने अक़ाइद की बिना पर काफिर हो जाता है। मैं उनके ऐसे अक़ाइद की निहायत मुख़्तसर फ़ेहरिस्त हदिय-ए-नाज़िरीन करता हूँ :

(1) काफिरों से मदारात करने वाला काफिर (2) काफिरों के कहने पर अमल करने वाला काफिर। (3) काफिरों को उमराए इस्लाम के पास ले जाने वाला और उनको हम मज्लिस बनाने वाला काफिर (4) काफिरों से किसी अम्र में मशवरा करने वाला काफिर (5) मुसलमानों के उमूर में सेकिसी एक मस्अला इमारत (व ख़िलाफ़त) वग़ैरह में काफिरों से काम लेने वाला काफिर (6) काफिरों के पास बैठने और उनके हाँ जाने वाला काफिर (7) काफिरों से खुश मिजाज़ी के साथ पेश आने वाला काफिर (8) काफिरों का इकराम करने वाला काफिर (9) काफिरों से अमन तलब करने वाला काफिर (10) काफिरों की ख़ैर

ख़्वाही.......करने वाला काफिर (11) काफ़िरों से मुसाहिबत व मुआशरत रखने वाला काफिर (काफिरों को सरदार कहने वाला काफ़िर (13) इल्मे तिब जानने वाले को "हकीम" कहने वाला काफिर (14) काफिरों के मुल्क में उनके साथ रहने वाला काफिर। यह मुख़्तसर फ़ेहरिस्त है उन लोगों को जो नज्दियों के नज़्दीक काफिर हैं। यह फ़ेहरिसत किताब मज़्कूर के सफः 87,86 से नक़ल की गई है। बनज़रे इख़्तिसार असल इबारतें नहीं लिखी गईं। असल किताब देख कर हर शख़्स शक़ी कर सकता है।

मैं उनके मज़्कूरा मसाइल पर तब्सेरा करने की ज़रूरत नहीं समझता। खुदा ने जिस शख़्स को थोड़ी सी अक़्ल भी अता फरमाई है वह नतीजा निकाल सकता है कि नज्दी अपने ख़्याल व मज़्हब पर क़ाइम रह कर हम मुसलमानों को किसी तरह भी मुसलमान नहीं समझ सकते और वाक़ेआत उसकी ताईद करते हैं कि वह तमाम मुसलमानों को काफिर व मुश्रिक जानते हैं, चुनांचे तायफ़ शरीफ़ में उन लोगों ने सैंकड़ों बेगुनाह मुसलमानों को काफिर और मुश्रिक समझ कर शहीद किया, जैसा कि उलमाए देवबन्द भी उसकी तस्दीक़ फरमा चुके हैं।

हाथी के दाँत

मैं हैरान हूँ कि एक तरफ़ तो नज्दियों का इस क़द्र तशद्दुद कि काफिरों से हर क़िस्म का मशवरा करना और उन से खुश मिज़ाजी के साथ पेश आना भी कुफ़्र। और दूसरी जानिब उनका यह तरज़े अमल कि अंग्रेज़ों से रिशवत लेकर तुर्कों पर हमले किए, उनकी नाकाबन्दी की। ख़लीफ़-ए-इस्लाम से बग़ावत व ग़द्दारी करते रहे। बरतानिया के दोस्त बने रहे और हाल ही में ख़बर आई है जो "ज़मींदार" वग़ैरह में भी शाए हो चुकी है कि जद्दह में अन्क़रीब एक कॉफ़्रेंस मुनाक़िद होने वाली है, जिसमें नुमाइन्दगान हिजाज़ व नज्द व बरतानिया जमा होंगे। मैं पूछता हूँ कि जब हर अम्र में काफिरों से मशवरा तलब करना कुफ़्र है तो मस्अला हिजाज़ ऐसे मज़्हबी मुआमला में बरतानिया की शिर्कत को मन्ज़ूर कर लेना कहाँ का इस्लाम है? -

एक क़ासमी वह धूम थी नज्दी के "ज़ुह्द" की,
मैं क्या कहूं कि रात मुझे किस के घर मिले

नज्दी तौहीद की करिश्मा साज़ियाँ

इमाम राज़ी व दीगर अकाबिरे उम्मत की तक्फ़ीर

तरजमा : और यह ख़ालिद अज़हरी शारेह "तौज़ीह" के तौहीद से जाहिल होने को माने नहीं। जैसे कि वह लोग भी तौहीद से जाहिल थे जो ख़ालिद अज़हरी की निस्बत ज़्यादा इल्म वाले थे और माकूल में उनकी तसानीफ़ हैं। मसलन फ़ख़्र राज़ी और अबू माशर बल्ख़ी वग़ैरह जिन्होंने तौहीद के मस्अले में ग़लतियाँ कीं।(मज्मूअतुत्तौहीद सफ़: 230)

मस्अला : इसी किताब के सफ़: 190 में लिखा है कि "अर्रजुलु ला यकूनु मुस्लेमन इल्ला इज़ा आरफ़त्तौहीद" यानी कोई शख़्स मुसलमान नहीं हो सकता जब तक तौहीद का आरिफ़ नहीं, मतलब यह कि अगर तौहीद से जाहिल होगा, तो काफिर है और यहाँ चूंकि इमाम राज़ी वग़ैरह को तौहीद से जाहिल कहा गया है इसलिए लाज़मी नतीजा यह निकला कि वह नज्दियों के नज़्दीक मआज़ल्लाह काफिर हैं। (क़ासमी अफ़ल्लाहु अन्हु)

मुसन्निफ़ क़सीदा शरीफ़ पर कुफ़्र का फतवा

तरजमा : यह जाहिल मोतरिज़ क़सीदा बुर्दा के अबयात को उनके सही मफ़्हूम से फेरना चाहता है। इन अबयात में वह मज़ामीन मिस्रह हैं जो शिर्क फ़िर्रबूबियह शिर्क फ़िल-उलूहिया और अल्लाह के इल्म और उसके मुल्क में मुशारिकत पर दलालत करते हैं। और उनमें शिर्क और गुलू इस दरजा का है कि उसके ख़िलाफ़ मानी मुराद लिए जाने का एहतमाल भी नहीं। (हवाल-ए-मज़्कूरा)

नाज़िरीने किराम! देखिए इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ऐसे सुतूने इस्लाम और दूसरे बुज़ुर्गों को किस तरह साफ़ अल्फ़ाज़ में "ताहीद से जाहिल" क़रार देकर नज्दियों ने अपनी ख़बासत का सुबूत दिया है और किस तरह क़सीदा बुर्दा शरीफ़ को शिर्क कह कर उसके बुज़ुर्ग मुसन्निफ़ और उसके पढ़ने वालों को जिन में हज़ारों उलमा व सुलहा भी दाख़िल हैं मुश्रिक बना कर कुफ़्र परवरी का मुज़ाहरा किया गया है।

चूं ख़ुदा ख़्वाहद कि पर्दा कस दर्द
मैकश अन्दर तअ्न-ए-पाकां बर्द

इन इबारात को पढ़ कर शैखुल-इस्लाम अल्लामा ज़ैनी दहलान मुहद्दिस शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के इस क़ौल की पूरी तस्दीक़ हो जाती है कि नज्दी छठी सदी के बाद के तमाम मुसलमानों की तक्फ़ीर करते हैं।

कानों से सुना करते थे जादू भी है इक शय
आंखों से तरी नर्गिस फ़तां ने दिखा दिया

नज्द में नई शरीअ़त

इस मज्मूआ के सफ़ः 1990, 1991 ई० में नज्दियों ने सवाल व जवाब के तरज़ पर अपना एक अक़ीदा लिखा है जो उनके बदतरीन और ख़तरनाक तशद्दुदात में से एक है। इख़्तिसार को मल्हूज़ रख कर उसका सिर्फ़ तरजमा दर्ज करता हूँ। असल मक़्सद के बयान करने में अगर मेरी कोई ख़्यानत साबित कर देगा तो मैं एलानिया इस अपनी ख़्यानत के एतराफ़ का वादा करता हूँ। उसका बामुहावरा तरजमा यह है :

उस शख़्स के हक़ में आपका क्या फतवा है जो इस्लाम में दाख़िल हुआ और उस से मुहब्बत करता है लेकिन मुश्रिकों से अदावत नहीं करता या अदावत करता है लेकिन उनको काफिर नहीं कहता या उसने कहा कि मैं मुसलमान हूँ मगर ला इलाहा इल्लल्लाह कहने वालों को मैं काफिर नहीं कह सकता। अगर वह उसके मानी न समझते हों और उस शख़्स के मुतअल्लिक़ आप क्या फतवा देते हैं जो इस्लाम में दाख़िल हो और इस्लाम से मुहब्बत करता है लेकिन वह यह कहता है कि मैं क़ुब्बों को नहीं गिराता, हालांकि मैं जानता हूँ कि क़ुब्बे न नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न नुक़्सान। मगर मैं उस से तअर्रुज़ नहीं करता (यानी उनको नहीं गिराता) पस इन सवालात का जवाब यह है कि कोई शख़्स मुसलमान नहीं हो सकता, जब तक वह तौहीद को न समझे और उसके मूजिबात पर अमल न करे। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक़ न करे। इन उमूर में जिनकी आपने ख़बर दी और जिस काम से आपने मना फरमाया उस से रुक न जाए और जिस काम के करने

का आपने हुक्म फरमाया वह न करे और आप पर और आपके लाए हुए अहकाम पर ईमान न लाए पस जिस शख़्स ने कहा कि मैं मुश्रिकों से अदावत नहीं करता वह उन से अदावत करता है मगर उनकी तक्फ़ीर नहीं करता या उस ने कहा मैं ला इलाहा इल्लल्लाह कहने वालों से तअर्रुज़ नहीं करता अगरचे वह कुफ़्र व शिर्क का इर्तिकाब करते हों और दीने इलाही से अदावत रखते हों या उस ने कहा कि मैं कुब्बों से तअर्रुज़ नहीं करता (यानी उनको नहीं गिराता) तो ऐसा शख़्स मुसलमान नहीं। बल्कि यह उन लोगों में से है। जिनके हक़ में अल्लाह तआला फरमाते हैं।

तरजमा : और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाए और किसी के मुंकिर हुए और चाहते हैं कि ईमान और कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें। यही हैं ठीक-ठीक काफिर और हम ने काफिरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

एक ग़ौर तलब नुक्ता

नज्दी मुफ़्ती इस इबारत में साफ़ लिखता है कि अगर कोई शख़्स इस्लाम में दाख़िल हो कर इस्लाम से मुहब्बत करता हो और उसका यह भी एतक़ाद हो कि कुब्बे न नफ़ा पहुंचा सकते हैं और न नुक़्सान, लेकिन वह उनको नहीं गिराता तो फ़क़त इस "जुर्म" के बाइस क़तअ़न व यक़ीनन काफिर है। इसके साथ इस हक़ीक़त को पेशे नज़र रखा जाए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मज़ारे अक़्दस पर जो गुंबदे ख़ज़रा है वह भी दूसरे बुज़ुर्गों के मज़ारात के कुब्बों की तरह एक कुब्बा है। अब दो सूरतें हैं या तो (ख़ाक बदहन आदा) उसको गिरा दिया जाएगा। इस सूरत में इब्ने सऊद के वादों की मिट्टी पलीद हो जाएगी और या वह उसको नहीं गिराएगा लेकिन इस सूरत में ताइफ़ा नज्दीया अपने क़ौल के मुताबिक़ क़तअ़न काफिर और यक़ीनन जहन्नमी होगा।

दो गू न रंज व अज़ाब अस्त जान मज्नूं रा
बलाए सोहबते लैला व फ़ुर्क़ते लैला

ख़ातमा सुख़न

मैंने यहाँ तक नज्दी जमाअत की सियासी व मज़्हबी हालत पर एक इज्माली बहस की है। अह्ले इस्लाम खुद अन्दाज़ा लगा लें कि ऐसी ख़तरनाक जमाअत का मरकज़ इस्लाम पर तसल्लुत मक़ासिदे इस्लामिया के लिए किस हद तक मुफ़ीद हो सकता है। बाक़ी रह गई यह बात कि उन्होंने वादा किया है कि हम ख़ानदाने शरीअत को हिजाज़ से निकाल कर उसका इंतिक़ाम मुसलमानाने आलम के सुपुर्द कर देंगे। सो ज़ाहिर है कि एक मुल्क पर क़ाबिज़ हो जाने के बाद कौन उसको छोड़ सकता है।

हम को मालूम है वादा की हक़ीक़त लेकिन
दिल के खुश करने को बेशक यह ख़्याल अच्छा है

नज्दीयत का पोल

इस नाम का एक छोटा सा रिसाला जनाब मौलवी मुहम्मद बहाउल-हक़ क़ासमी अमरतसरी ने तालीफ़ फरमाया है जो रिसाला हन्फ़ी के साथ शाए हुआ है और उसकी अलाहिदा कापियाँ भी तादादे कसीर में छाप ली गई हैं। ताकि वह लोग जिन्हें रिसाला हन्फ़ी के मुलाहिज़ा का इत्तिफ़ाक़ नहीं होना, मुताला फरमा सकें।

उस रिसाला में दो उनवान हैं। एक सियासी दूसरा मज़्हबी। सियासी उनवान जिस क़द्र लिखा गया है। वह "ज़मींदार" के 1922 ई० के फ़ाइल से लिया गया है और उसके मुतअल्लिक़ जिस क़द्र कहानी ज़ब्त तहरीर में आई है वह ज़मींदार की ज़बानी है और मज़्हबी उनवान के नीचे खुद क़रनुश्शैतान इब्ने सऊद मरदूद की शाए करदह किताब मज्मूअतुत्तौहीद से इक़्तिबासात लिए गये हैं जो नज्दी मल्ऊन मज़्कूर ने मतबा उम्मुल-कुरा मक्का मुअज़्ज़मा में छपवा कर मुफ़्त तक़्सीम की है इस किताब या मज्मूआ में क़रनुश्शैतान अव्वल मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब और उसकी ज़ुर्रियत के तस्नीफ़ करदह चन्द रिसाले हैं। हिन्दुस्तान के शैतानी अख़्बारात मुतअद्दिद मज़ामीन में नज्दी मल्ऊन के एतक़ादात पर पर्दा डालने की कोशिश कर चुके हैं और हर ज़बान की मुस्तनद तारीख़ों को उमूमन और अल्लामा ज़ैनी दहलान जैसे मुहक़्क़िक़ व क़ाए

निगार और शैख़ सुलेमान नज्दी, और मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब को खुसूसन झुठलाने की नाकाम सई हो चुकी है मगर उनको क्यध मालूम था कि ज़रूर उन्हीं का आक़ा और वली नेमत क़रनुश्शैतान सानी उनकी सारी कोशिशों पर एक दम पानी फेर देगा और खुद एक किताब के ज़रिए से अपने हिन्दुस्तानी चेलों, एजेंटों और दलालों का मुँह काला कर देगा।

पहले उनवान का मुताला से नाज़िर किताब इन नताइज पर पहुंचता है कि -

(1) ख़ानदाने शैख़ नज्दी लानतुल्लाहे अलैहि अपने खुरूज के ज़माना से अब तक सलतनते उस्मानिया का बाग़ी रहा। बरसरे पुरख़ाश रहा हत्ता कि 1912 ई० में जंगे अज़ीम के शुरू होने से पहले वह बइम्दाद कप्तान शैक्सपेयर अंग्रेज़ी अफ़्सर तुर्कों को शिकस्त दे चुका था और अल-हिसा तुर्कों से छीन कर अपने क़ब्ज़े में कर चुका था, मगर दफ़अतन कप्तान शैक्सपेयर के मारे जाने से नज्दियों की फतह मुब्दल बशिकस्त हो गई।

(2) मौजूदा क़रनुश्शैतान मल्ऊन जैसे इब्ने सऊद अलावा साठ हज़ार पौंड सालाना वज़ीफ़ा के अशर्फ़ियों की थैलियां बतौर रिश्वत सिर्फ़ इस ग़रज़ से ले चुका है कि तुर्कों के मफ़ाद को नुक़सान पहुंचे।

(3) पहले यह ख़ानदान अपने जदीद मज़्हब को तल्वार के ज़ोर से फैलाता था, मगर मौजूदा क़रनुश्शैतान ने मुहब्बत से अपने मुबल्लेग़ीन के ज़रिया से इशाअत की और कामयाबी हासिल की।

पहले दो उमूर के मुतअल्लिक़ तो हमें कुछ लिखने की ज़रूरत नहीं क्योंकि इन उमूर को पहले भी क़ारेईने किराम इसी अख़्बार अल-फ़क़ीह में मुलाहिज़ा फरमा चुके हैं। मगर शैतानी अख़्बारात ने मुसलमानों से इन उमूर को मख़्फ़ी रखने की कोशिश की और उनका ज़िक्र तक अख़्बारात में न किया। शैतानी एजेंट जानते थे कि अगर उनके अख़्बारों के मुताला करने वाले इन हक़ीक़तों से वाक़िफ़ हो गये और असल मुआमला उनके सामने खुल गया तो शैतानी प्रोपेगण्डा को शिकस्त हो जाएगी और तारद पोद बिखर कर रह [illegible]

तनवरे शिकम के लिए ईंधन का मुहैया हो जाना बेहद दुशवार हो जाएगा। अगर यह लोग शैतानी एजेंट व दलाल न होते और ग़ैर जानिबदाराना हैसियत रखते तो तमाम हक़ीक़तों की चेहरा कुशाई उनका फ़र्ज़े मन्सेबी होता, मगर उनकी सुनहरी वर्द पहली मस्लेहतों ने उन्हें दियानतदारी से रोका और यह लोग अगरचे बज़ाहिर ख़ामोश थे, मगर ज़बाने हाल से पुकार कर कहते थे।

ऐ दियानत बर तू लानत अज़ तौबा बख़े याफ़्तम
दे ख़्यानत बर तो रहमत अज़ तू गंजे याफ़्तम

ताहम हमें लाहौर के शैतानी अख़्बार उर्फ़ ज़मींदार से यह पूछने का हक़ हासिल है कि जब 1922 ई० में माहे फ़रवरी तक तुम इस अपने आक़ा और वली नेमत मल्ऊन नज्द के बेईमान बाग़ी मुसलमानों का दुशमन इस्लाम का बदख़्वाह सलतनते बरतानिया का पिट्ठू समझते थे तो आज कौन सी मन्तिक़ की बिना पर वह शैतान ग़ाज़ी और सुल्तान और उसका बेरहम लश्कर मुजाहिदीने इस्लाम बन गये और फिर उसी शैतान को जो सदियों से दुशमने इस्लाम रह चुका है। नौ साल के बाग़ी पर किस दलीले शरई से तरजीह हो सकती है।

अमर सोयम के मुतअल्लिक़ हम अपने क़ारेईने किराम की तवज्जोह शैतानी प्रोपेगण्डा के इस जुज़्व की तरफ़ मुन्अतिफ़ कराते हैं, जिसमें बयान किया जाता है कि शैतानी गरोह हंबली मज़्हब का पैरू है और हम शैतानी गरोह से जो उनको हंबली बना रहा है पूछते हैं कि हंबली तो इस इलाक़ा के लोग हमेशा से चले आते हैं, मगर वह कौन सा जदीद मज़्हब है जिसकी इशाअत शैतानी गरोह पहले तल्वार से कर रहा था बाद में मुहब्बत व उखुव्वत के ज़रिए से। इसका जवाब यह तो नहीं हो सकता कि हंबली मज़्हब की इशाअत थी, क्योंकि सारा नज्द और उसके क़ुर्ब व जवार का इलाक़ा मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब मल्ऊन क़रनुश्शैतान अव्वल के पैदा होने से मुद्दतों पहले हंबली था। ज़मींदार हम पर 1922 ई० में यह ज़ाहिर कर चुका है कि वह अपने नए मज़्हब की इशाअत करता था, इससे साबित हुआ कि शैतानी एजेंटों का यह बयान कि वह हंबली मज़्हब रखते हैं, बिल्कुल ग़लत किज़्ब बयानी और आमा मुस्लेमीन को धोखा देने की ग़रज़ से है।

हम उम्मीद करते हैं कि यह रिसाला शैतानी जमाअत की रूह सियाही के लिए काफी ज़रिया है और जो हज़रात उसे ग़ायर नज़र से मुलाहिज़ा फरमाएंगे वह ज़रूर इस नतीजा पर पहुंचेंगे कि शैतानी जमाअत अपने रूहानी मूरिस आला शैख़ नज्दी और मौजूदा क़रनुश्शैतान की हिमायत और शैतानी प्रोपेगण्डा की इशाअत के लिए हर क़िस्म की बेईमानी दरोग़ या फ़ी किज़्ब बयानी रवा रखती है।

बाब (6)

मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी की रिपोर्ट की तल्ख़ीस

जिस वक़्त नज्दियों की फौजें हिजाज़ में तहलका मचा रही थीं। मुक़द्दस मज़ारात मुन्हदिम किए जा रहे थे। इस वक़्त तमाम आलमे इस्लाम के मुसलमानों में उमूमन और हिन्दुस्तान के मुसलमानों में खुसूसन इज़्तिराब और बेचैनी की लहर दौड़ रही थी, चुनांचे उसके तदारुक के लिए मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी मुक़र्रर की गई। इस कमेटी की कारकरदगी के बारे में रईसुल-अहरार मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने मक़ालात लिखे, जिन को रईस अहमद जाफ़री ने तरतीब दिया और इदारा इशाअत उर्दू हैदराबाद दकिन ने 1944 ई० में शाए किया।

मक़ामात मुक़द्दसा के एहतराम का वादा

सुल्तान नज्द का तार मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी के नाम -

बहरैन १० अक्तूबर को हस्बे ज़ेल तार प्राइवेट सिक्रेट्री सुल्तान नज्द बहरैन से मौसूल हुआ। आला हज़रत ने मुझे हिदायत की कि मैं आपके तार के जवाब में आपको उसका यक़ीन दिला दूँ कि मुक़ामाते मुक़द्दसा का पूरा एहतराम किया जाएगा और जुमला मरासिम जारी रखे जाएंगे और उसमें किसी क़िस्म का फ़र्क़ न आएगा। हम ने हिजाज़ में महज़ इसलिए दस्ते अन्दाज़ी की है कि इस्लामी मक़ामात और हरमैन शरीफ़ैन को ग़ैर मुस्लिम मुदाख़लत से महफ़ूज़ रख कर मज़्हबी इबादत में सहूलत मुहिम पहुंचाई जाए और हिजाज को आराम देकर तमाम दुनिया-ए-इस्लाम के इत्मीनान का बाइस बनें। प्रोइवेट सिक्रेट्री सुल्तान नज्द।

मौलाना शौकत अली साहब का तार, सुल्तान नज्द के नाम।

सहाब-ए-किराम के मज़ारात की बेहुर्मती के मुतअल्लिक़ परेशान कुन अफ़्वाहें हो रही हैं मेहरबानी करके सही हालात की इत्तिला दीजिए। (शौकत अली)

सुल्तान नज्द का जवाब मौलाना शौकत अली साहब के नाम :

"इस्लामी मज़ारात हमारे लिए क़ाबिले एहतराम हैं"

इस्लामी मज़ारात और खुसूसन सहाबा के मज़ारात हमारे लिए बहुत ज़्यादा क़ाबिले एहतराम हैं। आप इत्मीनान रखिए हमारी फौजें मुक़द्दस क़वानीन की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करेंगी। (अब्दुल-अज़ीज़ सुल्तान नज्द)

जो वफ़्द अमीर अली और सुल्तान इब्ने सऊद के पास जद्दह गया था। उसकी रिपोर्ट शाए हो चुकी है। रवानगी के वक़्त वफ़्द को हस्बे ज़ैल हिदायात दी गईं।

नक़ल, हिदायते वफ़्द हिजाज़ ज़ेर सरकरदगी सैयद सुलेमान साहब नदवी।

1. मुसलमानाने हिन्द चाहते हैं कि हिजाज़ में शरअ् इस्लामी के उसूलों पर जम्हूरी हुकूमत क़ाइम की जाए, जिसमें हिजाज़ की अन्दरूनी आज़ादी को पूरे तौर पर क़ाइम रखते हुए तमाम वह मसाइल जो हिजाज़ की इस्लामी मरकज़ी हैसियत से तअल्लुक़ रखते हैं। मुसलमानाने आलम की मर्ज़ी व मशवरा से तय होने चाहिएं।

2. मुन्दरजा बाला जम्हूरियत की कशमकश के लिए एक ऐसी इस्लामी मुतमिर का इंइक़ाद किया जाए जिसमें तमाम इस्लामी हुकूमतों के नमाइन्दा शामिल हों।

(इसी क़िस्म की सात और हिदायात का भी तज़्किरा किया गया है। क़ादरी)

रिपोर्टर ने बैतुल-मुक़द्दस के हवाले से 22 अगस्त 1925 ई० को लनदन से एक तार भेजा, जिसने क़ुदरतन हर एक मुसलमान के क़ल्ब को सख़्त सदमा पहुंचाया और दूसरे म्मालिक के मुसलमानों की तरह हिन्दुस्तान के मुसलमानों में भी एक हीजान पैदा कर दिया, तार के अल्फ़ाज़ यह थे। लनदन 22 अगस्त बैतुल-मुक़द्दस।

मूसिक़ इत्तिला मिली है कि वहाबियों ने मदीना पर हमला शुरू कर दिया है। दो दिन हुए कि गोला बारी भी हुई है, जिस से बहुत नुक़्सान

हुआ है। मस्जिदे नबवी के कुब्बा को जिस में रसूलुल्लाह की क़बर है, सदमा पहुंचा है और सैयदना हम्ज़ा (रसूलुल्लाह के चचा) की मस्जिद शहीद कर दी गई है।

ताज़ा तरीन इत्तिला यह मौसूल हुई है कि क़बरे मुबारक पर गोलियों के निशात हैं।

गुज़िश्ता सदी के मुहरिकात और इन अक़ाइद की बिना पर जो आम तौर पर अह्ले नज्द के ख़िलाफ़ इस क़द्र गुलू था कि वह वाक़या दरयाफ़्त करने के लिए तहक़ीक़ात को भी क़तअ़न ग़ैर ज़रूरी समझते थे, बरअक्स उसके ख़िलाफ़ कमेटी उन इत्तिलाआत की बिना पर जो बाद में मौसूल हुईं। मज़ीद तहक़ीक़ात को ज़रूरी समझती थी। नीज़ मदीना मुनव्वरा के मक़ाबिर व मआसिर को हर क़िस्म के सदमा से महफ़ूज़ रखने के लिए किसी एहतियात को नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहती थी, दूसरी तरफ़ जूं-जूं जंग ख़त्म होने के क़रीब पहुंचती जाती थी, हिजाज़ में जम्हूरियत के क़याम और मुतमिर के इंएक़ाद से मसाइल ज़्यादा अहमीयत अख़्तियार करते जाते हैं। इन तमाम पहलुओं पर ग़ौर करते हुए कमेटी ने फ़ैसला दिया कि हस्बे ज़ैल अस्हाब का एक वफ़्द बसर करदगी। मौलाना सैयद सुलेमान नदवी हिजाज़ भेजा जाए।

1. सैयद सुलेमान नदवी (रईस वफ़्द)
2. मौलाना मुहम्मद इरफ़ान।
3. मौलाना ज़फ़र अली ख़ाँ।
4. सैयद खुर्शीद हुसैन।
5. मौलाना अब्दुल-माजिद साहब। बदायूनी।

बदक़िस्मती से सैयद सुलेमान नदवी साहब रईसुल-वफ़्द, मौलाना अब्दुल-माजिद साहब बदायूनी और सैयद खुर्शीद हसन हम्राह न जा सके।

"वफ़्द ने क्या किया।"

वफ़्द 18 नवम्बर को राबेग़ पहुंचा। सुल्तान इब्ने सऊद और हिजाज़ और नज्द के मुख़्तलिफ़ हल्क़े के अश्ख़ास और साहिबुर्राय लोगों से मिला और मक्का, मदीना, जद्दह और उन बिलाद के दर्मियान के इलाक़ा के हालात बचश्म खुद देखने के बाद इन वजूहात की बिना पर जिनका ज़िक्र वफ़्द की रिपोर्ट में है। 26 जनवरी 1925 ई० को जद्दह

से रवाना हो कर ६ फरवरी को वापस मुम्बई में आ गया। वफ़्द के ज़िम्मा तीन काम थे।

1. मक़ाबिर व मुशाहिद के बाब में हस्बे मसलक मज्लिसे सई व एहतमाम।

2. मुस्तक़्बिल हिजाज़ के मुतअल्लिक़ ख़िलाफ़ते कमेटी 5 अक्तूबर 1924 ई० को जिस मसलक का एलान कर चुकी है। उसके वास्ते मक़्बूलियते आम्मा हासिल करने की सई और क़ोशिश।

3. मुतमिर इस्लाम के तलब और इंएक़ाद के मुहिम्मात पर गुफ़्तगू करना। उसके साथ-साथ मदीना मुनव्वरा में रौज़ा अतहर के गुंबदे मुबारक और मस्जिदे सैयदना हम्ज़ा वग़ैरह के मुतअल्लिक़ जो इत्तिलाआत आई थीं। उनके मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ात।

अव्वल के मुतअल्लिक़ सुल्तान इब्ने सऊद की तरफ़ से न सिर्फ़ यह इत्मीनान दिलाया गया कि मदीना मुनव्वरा के मुशाहिद व मक़ाबिर इन सदमात से महफ़ूज़ रहेंगे, जो मक्का मुअज़्ज़मा के मुशाहिद व मक़ाबिर को पहुंचे थे, बल्कि हाफ़िज़ वहबा ने 26 नवम्बर 1925 ई० को सरकारी तौर पर आकर वफ़्द को इत्तिला दी कि मस्जिद बू क़ुबैस की तामीर हो गई है। मज़ारे नबवी की तामीर का काम दूसरे दिन सुबह से शुरू हो जाएगा और दीगर मक़ामात के तहफ़्फ़ुज़ के मुतअल्लिक़ अहकामात सादिर होंगे, जिन पर वफ़्द ने तमाम अरकान के दस्तख़त लिए।

4. दिसम्बर 1925 ई० को हस्बे ज़ैल तार भेजा।

24 नवम्बर को मक्का पहुंचे और सुल्तान से मुलाक़ात की 26 को मदीना जा रहे हैं जहाँ से वापसी पर तमाम मुआमलात पर गुफ़्तगू होगी। मस्जिद बू क़ुबैस की तामीर हो गई। मज़ारे नबवी की तामीर हो रही है। दूसरे मुशाहिद, मक़ाबिर व मआसिर के तहफ़्फ़ुज़ के लिए वसाइल अख़्तियार किए जा रहे हैं, मदीना के मुतबर्रक मक़ामात के बारे में सुल्तान ने अपने लड़के को जो वहाँ कमाण्डर हैं। यह हुक्म भेजा है कि हमारी हिदायत के मुताबिक़ अमल करें।

सुल्तान ने एक ख़त अपने लड़के अमीर मुहम्मद के मुतअल्लिक़ भी भेजा कि मदीना में फौजों के दाख़िला के वक़्त मक़ाबिर व मुशाहिद का पूरा एहतमाम किया जाए। उनको किसी क़िस्म का सदमा न पहुंचे और इन मक़ामात के मुतअल्लिक़ वफ़्द ख़िलाफ़त के मशवरा पर अमल

किया जाए, अमीर मुहम्मद ने इन हिदायात की पूरी पाबन्दी की और मदीना मुनव्वरा की मसाजिद, मआसिर, मक़ाबिर और क़ुब्बों वग़ैरह को हर क़िस्म के सदमा से महफ़ूज़ रखा, और मुसलमानों के इत्मीनान के लिए हस्बे ज़ैल तार के ज़रिया दुनियाए इस्लाम को उसकी इत्तिला भी खुद अपने नाम से दी।

आपको मुबारकबाद देता हूँ कि मदीना इंतिहाई अमन व अमान से तस्लीम हो गया। तमाम मक़ामाते मुक़द्दसा महफ़ूज़ हैं और उनका एहतराम किया जा है।

वफ़्दे ख़िलाफ़त ने जो इस वक़्त मदीना में मुक़ीम था। मुसलमानाने आलम के इन जज़्बात का एहतराम करने के लिए जो मदीना मुनव्वरा के मक़ाबिर व मुशाहिद से वाबस्ता थे, सुल्तान का ख़ास तौर पर शुक्रिया अदा किया और दर्ख़्वास्त की कि जब तक दुनिया-ए-इस्लाम हिजाज़ के मुस्तक़्बिल का आख़िरी फ़ैसला न करे, हिजाज़ सुल्तान के हाथ में बतौर अमानत रहेगा। सुल्तान इसी क़ाबिले तारीफ़ उसूल पर कारबन्द रहेंगे।

मदीना जाते हुए राबेग़ में वफ़्द की क़्यादत दौलते ईरान के क़ौन्सिल मुऐयना शाम, ऐनुल-मुल्क, जो सरकारी हैसियत से गुंबदे ख़ज़रा वग़ैरह के मुतअल्लिक़ अफ़्वाहों की तहक़ीक़ के लिए आए थे. .... सुल्तान इब्ने सऊद ने सफ़ीरे ईरान के ज़रिया दौलते ईरान को तहरीरी वादा दिया है कि अगर मक्का मुअज़्ज़मा के मुन्हदिम शुदह मक़ाबिर व मआसिर को कोई तामीर करना चाहे, तो सुल्तान की तरफ़ से कोई मुज़ाहिमत न होगी। इम्साल हज में इस बयान की निहायत मोतबर ज़राए से मज़ीद तस्दीक़ हुई, अब इस ख़त की अक्स नक़ल हासिल करने का इंतिक़ाम किया गया है और उम्मीद है कि बहुत जल्द हम तक पहुँच जाएंगी।

इक़्तिबास अज़ ख़त मौलाना ज़फर अली खान मुअर्रिख़ा यकुम जनवरी 1926 ई० जद्दह।

जमीअते मरकज़ीया ख़िलाफ़त की हिदायात और काग़ज़ात से भी, जो हमारे काम की असास हैं और जिन्हें मैंने बनज़र ग़ायर देखा है, यही वाज़ेह मालूम होता है कि हम इस खुसूस में, यानी मस्अला मा बेही अल-बहस में अज़्मतुस्सुल्तान से गुफ़्तगू करने के मजाज़ नहीं हैं। पटना की क़रार दाद और मुतअल्लेक़ा वफ़्द के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं।

हिजाज़ के मुस्तक़्बिल और मुजव्वज़ा मुतमिर इस्लामी के मस्अलों पर ग़ौर किया गया और फ़ैसला किया गया कि जमीअते मरकज़ीया ख़िलाफ़त की तरफ़ से जल्द अज़ जल्द एक वफ़्द हिजाज़ भेजा जाए, जो ज़्यादा से ज़्यादा छेः अरकान पर मुश्तमिल हो, ताकि सुल्तान इब्ने सऊद के साथ मुतमिर इस्लामी के इंएक़ाद और उस इंएक़ाद के इब्तिदाई ज़रूरी, इंतिज़ामात के मुतअल्लिक़ इशारा करे। वफ़्द को इस बात की भी कोशिश करनी चाहिए कि जमीअते मरकज़ीया ख़िलाफ़त ने मुस्तक़्बिल हिजाज़ के मुतअल्लिक़ पाँच अक्तूबर 1924 ई० को जो हिक्मते अमली वज़अ् की थी। उसे आलमगीर तौर पर तस्लीम करा लिया जाए। नीज़ हस्बे ज़रूरत जमीअते ख़िलाफ़त के आम मुल्क की मुताबिक़त में कुब्बों और मक़्बरों के तहफ़्फ़ुज़ की सई करनी चाहिए।

उसके बाद क़रारदाद में यह मज़्मून दर्ज है कि अगर ज़रूरत पड़े, तो वफ़्द ताक़्याम मुतमिर हिजाज़ में ठहर सकता है। नीज़ यह बताया गया है कि जमीअते ख़िलाफ़त के मुन्सरिम सदर (मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद) जमीअत की क़रारदादों और मस्लक के मुताबिक़ एक मुफ़स्सल याददाश्त मुरत्तब करें, जो रईसे वफ़्द के हवाला की जाए। इसी क़रार दाद के ख़त कशीदा जम्हूरियत के बाब में गुफ़्तगू की लिबास बन सकते हैं, लेकिन अज़्मतुस्सुल्तान के साथ नहीं, बल्कि दुनियाए इस्लाम के वफ़ूद व नुमाइन्दों के साथ।"

जम्हूरियत के फ़ौरी क़्याम की निस्बत भी मेरे दिल में बाज़ शुबहात बदस्तूर बाक़ी हैं और फिर मेरे नज़्दीक मज्लिसे ख़िलाफ़त और मुसलमानाने हिन्द की इज़्ज़त व हुर्मत का इक़्तिज़ा यह है कि इस मस्अला को मज़ीद इस्तिशारा के लिए मुल्तवी कर दिया जाए।

इक़्तिबास अज़ जवाब शुऐब कुरैशी मुअर्रिख़ा 2 जनवरी 1926 ई० (जद्दह)

रज़्द लेयूशन के अल्फ़ाज़ न सिर्फ़ हम को ख़िलाफ़ते कमेटी के रज़्द लेयूशन को (मुतअल्लिक़ जम्हूरियत) पेश करने की इजाज़त देते हैं, बल्कि हुक्म देते हैं रज़्द लेयूशन तहक्कुमाना है, उसके अल्फ़ाज़ यह हैं। "वफ़्द को चाहिए कि क़बूलियते आम हासिल करने की कोशिश करे। वह दफ़ा जिस में मुफ़स्सल अरबी याददाश्त मुरत्तब करने का ज़िक्र है। रज़्द लेयूशन के न माने हो सकती है और न है। ख़िलाफ़ते कमेटी की

पालीसी हिजाज़ में जम्हूरी हुकूमत के मुतअल्लिक़ कामिल तौर पर मुसलमानों के मुख़्तलिफ़ुल-ख़्याल तबक़ों से मशवरा और मस्अला के हर पहलू को सोचने के बाद तय की गई थी। बर्दी वजह इसमें तब्दीली का कोई इम्कान नहीं है। मरकज़ी ख़िलाफ़ते कमेटी की पालीसी फ़िर्क़ावाराना पालीसी नहीं और चूंकि इसकी बुनियाद उसूल पर है, लिहाज़ा सुकूते मदीना यंबूअ् या जद्दह जैसे वाक़ेआत का इस पर कुछ असर नहीं हो सकता। इसमें कोई तग़ैयुर नहीं हो सकता। ख़िलाफ़ते कमेटी मिट जाएगी, लेकिन इस पालीसी को न छोड़ेगेगी।"

सुल्तान इब्ने सऊद की मुलूकीयत के एलान के दीगर अस्बाब जो कुछ भी हों, मगर उस से इंकार नहीं किया जा सकता कि मौलाना ज़फ़र अली साहब का ज़िक्र क़ाबिले अफ़्सोस रवैया भी उसका बहुत बड़ा बाइस हुआ ग़र्ज़कि 8 जनवरी 1926 ई० को जब कि वफ़्द ख़िलाफ़ते जद्दह ही में मौजूद था। सुल्तान इब्ने सऊद ने यह ग़लत उज़्र पेश करके कि दुनियाए इस्लाम ने दो महीना तक उनकी दावते मुतमिर का कोई जवाब नहीं दिया और अह्ले हिजाज़ ने उनको बादशाह हिजाज़ होने पर मज्बूर किया अपनी बादशाहते हिजाज़ का एलान कर दिया और इन तमाम ओहदों की सहूलियत का एलान कर दिया, जो उन्होंने रियाज़ से निकलते वक़्त और मदीना मुनव्वरा और जद्दह के सुकूत से बेश्तर मक्का में बित्तक्रार और बित्तस्रीह ख़िलाफ़ते कमेटी को बिल-खुसूस और दुनियाए इस्लाम को बिल-उमूम दिए थे। इन मज़ारात और उसके साथ अह्ले नज्द के फ़ित्ना के डर की बेहक़ीक़ी, जिसका इज़ाफ़ा सुल्तान ने एक हफ़्ता बाद किया। क्या तीसरे वफ़्द की हिजाज़ी रिपोर्ट से साफ़ साबित है, जिसका इक़्तिबास हम ज़ेल में दर्ज करते हैं और अपने ज़ाती तहक़ीक़ात और मुशाहिदा के बाद हम उसकी पूरी तस्दीक़ करते हैं।

अब रहा एलाने मुलूकियत और अह्ले हिजाज़ का सुल्तान को उस पर मज्बूर करने का मस्अला तो हम बकसरत अह्ले हिजाज़ से मिले, मक्का वालों से मिले, अह्ले जद्दह से मिले, बद्दुओं से मिले, ग़र्ज़कि हर तब्क़ा के लोगों से मिले और उनके ख़्यालात दरयाफ़्त किए और पूरे वसूक़ के साथ कह सकते हैं कि न वह ख़ानदान शरीफ़ की हुकूमत चाहते हैं। न सुल्तान इब्ने सऊद की और सिर्फ़ यह कहना उन पर इत्तिहाम है कि वह कहते हैं कि बैरूने हिजाज़ के मुसलमानों को जिनको

सुल्तान ने उनकी ज़बान से अग्यार व अजानिब कहा है। हमारे सियासी इंतिज़ाम से कोई तअल्लुक़ नहीं है, बल्कि उनकी दिली ख़्वाहिश है कि दुनियाए इस्लाम उनके मस्लक के नज़्म व नस्क़ में हिस्सा ले लेकिन हम ने महज़ उस पर इक्तिफ़ा नहीं किया, बल्कि उन अश्ख़ास से जा कर मिले, जिनकी निस्बत बयान करता था कि इस तहरीक में पेश-पेश थे और उन सब ने बयान किया कि उनको इस वाक़या का ज़्यादा से ज़्यादा एक शब पहले इल्म हुआ और यह कि वह इस फ़ेअ्ल पर ख़ौफ़ से मज्बूर हुए। बताया जाता है कि यंबूअ्, अली, तबूक में भी सब लोगों ने बरज़ा व रग़बत और बिला जब्र व इकराह ऐसा किया, बल्कि औरों के साथ मिल कर सुल्तान को मज्बूर करने में हिस्सा लिया और वाक़या यह है कि जुमेरात के दिन, इन सब जगह ला सिल्की के ज़रिए हिदायात भेजी गईं कि वह जुमा के दिन बाद नमाज़ बैअ़त करें और खुद मिस्टर फ़लबर को इस अम्र का जुमेरात ही के दिन इल्म था हक़ीक़त यह है कि सुल्तान के दिल में यह बात पहले ही से मौजूद थी और अगर इसको मज़ीद तक़्वियत की ज़रूरत थी, तो उनके शाही वज़रा वग़ैरह ने उसको क़वी कर दिया और उसकी इब्तिदा उन्होंने उस एलान से की जो बैअ़त से क़ब्ल उम्मुल-कुरा में उन्होंने शाए किया जिसमें उन्होंने सिवाए ख़िलाफ़ते कमेटी के तमाम दुनियाए इस्लाम पर दो महीने तक उनकी दावते मुतमिर का जवाब न देने का इल्ज़ाम लगाया है, हालांकि जैसा हम लो ऊपर लिख चुके हैं। अव्वल तो दावत नामा नामुकम्मल थी। दूसरे दो महीने जवाब आने के वास्ते हरगिज़ काफ़ी न थे अलावा बरीं यह वह ज़माना था कि जिदाल व क़िताल जारी था, खुद जंग का नतीजा अगर ग़ैर यक़ीनी न था तो कम अज़ कम इतनी जल्द जंग से ख़त्म हो जाने की किसी को तवक़्क़ु न थी, तो फिर ऐसी मुद्दत तक जवाब न आने पर जो सिर्फ़ मक्तूब जाने और आने ही के लिए काफ़ी थी। आलमे इस्लाम को मुल्ज़िम क़रार देना कहाँ तक क़रीब इंसाफ़ है।

फिर बैअ़त के बाद के एलानात को लें। पहले एलान में सिर्फ़ यह दर्ज है कि हम को हिजाज़ियों ने मुलूकियत पर मज्बूर किया। लेकिन जब उस पर दुनियाए इस्लाम को इत्मीनान न हुआ और मुख़्तलिफ़ जगहों से इस्तिफ़्सारी तार आए, तो दूसरा बयान निकला कि एक तरफ़ तो हिजाज़ियों ने मज्बूर किया और दूसरी तरफ़ सुल्तान के बेटे फ़ैसल

ने अपनी फौज के साथ फित्ना की धमकी दी और कहा कि अगर तुम ने बादशाहत कुबूल न की, तो हम तुम को खुद ग़रज़ समझेंगे। इस दलील के अनोखे पन से हमें सरोकार नहीं, लेकिन वाक़या यह है कि नज्दियों में से खुद शैख़ अब्दुल्लाह बिन बल्हीद साहब को जो क़ाज़ियुल-कुज़ात और शैखुल-इस्लाम हैं और मक्का में मौजूद थे। इस अम्र का ऐन वक़्त बैअत तक कोई इल्म नहीं था। उन्होंने खुद इस अम्र को हमारे सामने तस्लीम किया और दूसरी तरफ़ अमीर फ़ैसल से हमारी गुफ़्तगू हुई, तो उन्होंने अपने वालिद के एलाने मुलूकियत की वजह सिर्फ़ अह्ले हिजाज़ का जब्र बताया। उम्मुल-कुरा के एडीटर यूसुफ़ यासीन ने भी जो खुद सुल्तान के कातिबे सिर्री हैं और सुल्तान की तरफ़ से तमाम एलानात लिखते हैं। अपनी ला इल्मी का इज़्हार करते हुए इस ग़लती का एतराफ़ किया, जो सुल्तान ने एलाने मुलूकियत की वजह से की है। इसके बाद सुल्तान का यह दावा कहाँ तक सही हो सकता है। कमेटी खुद अन्दाज़ा कर सकती है, लेकिन जैसा कि उनके रवैया माक़बल को पेशे नज़र रखते हुए तवक़्क़ु की जा सकती थी। मौलाना ज़फ़र अली ख़ाँ ने एलाने मुलूकियत के बाद सुल्तान के फ़ेअ्ल के लिए उज़ाते तावील व तौजीह पेश करने और मुलूकियत की खुल्लम खुल्ला हिमायत करनी शुरू कर दी! चुनांचे अपनी रिपोर्ट में सिफ़ारिश की।

मेरी राय में कम अज़ कम बहालाते मौजूदा जिहाज़ के अन्दर अच्छे इंतिज़ाम की यह वाहिद सूरत थी, जिस हद तक बैअ़त का तअल्लुक़ है। मैं बवसूक़ कह सकता हूँ कि इस में कोई जब्र का इस्तेमाल नहीं हुआ, इसलिए कि जो लोग ज़ी राय कहलाने के मुस्तहिक़ हैं, वह पहले ही इस तरफ़ माइल थे। मुझे यक़ीन है कि उसकी (सुल्तान की) ज़ात अरब के लिए अलल-उमूम और हिजाज़ के लिए अलल-खुसूस निहायत अज़ीमुश्शान और नादीदह बरकात का सरचशमा बनेगी। इनशाहुल्लाहुल-अज़ीज़ मेरी राय में इस्लाह अहवाल अरब व हिजाज़ का इक़्तिज़ा यह है कि मौजूदा सूरत इंतिज़ाम को कुबूल कर लिया जाए।

बरअक्स उसके हिजाज़ी रिपोर्ट में यह सिफ़ारिश की गई।

हमारी राय में उसूलन, अख़्लाक़न, क़ानूनन आला इस्लामी मफ़ाद के हक़ में अरब क़ौमीयत के मुस्तक़्बिल और आज़ादी-ए-अरब के लिहाज़ से हम को इस फ़ेअ्ल पर इज़्हारे नाराज़गी करना है अगर हम

अरब में अमन व अमान चाहते हैं, तो हिजाज़ को शख़्सी अज़्दहों के दाइरा से बाहर रखना चाहिए। हुकूमते जम्हूरी के अलावा मस्अला हिजाज़ का अगर कोई और हल किया गया, तो वह अरब में फ़ित्ना फ़साद के दरवाज़े खोल देगा और इस तरह वहाँ अग़यार को असर क़ायम करने का मौक़ा मिलेगा। हिजाज़ में जम्हूरियत न सिर्फ़ ऐन क़रीने मस्लेहत और आला मक़ासिदे इस्लामी को पेशे नज़र रखते हुए ज़रूरी, बल्कि उमूमन मुम्किन है और इंतिज़ामे हिजाज़ के लिए रौशन ख़्याल ईमानदार ज़ी असर वतन और इस्लाम से मुहब्बत करने वाले भी लालच और ज़ाती इग़राज़ से बाला तर हिजाज़ी यक़ीननन कम अज़ कम इस तादाद में ज़रूर मिल सकते हैं। जितने सुल्तान इब्ने सऊद को नज्द और हिजाज़ दोनों के इंतिज़ाम के लिए नज्द से मिल सके। हिजाज़ की आम्दनी कसीर है, क्योंकि सिर्फ़ महसूल दरआमद बर आमद ही छेः लाख पौंड सालाना वसूल होता है। हिजाज़ से मुख़्तलिफ़ टैक्स के ज़रिए जो रुपया वसूल होता है, वह उसके अलावा है और यह कसरते हिजाज के साथ बराबर बढ़ सकता है उसके अलावा ज़कात की मद भी है, जो आज सुल्तान इब्ने सऊद भी हासिल कर रहे हैं। नज्द की इस फौज का ख़र्च आज भी हिजाज़ ही पर चढ़ रहा है। सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि बाज़ मसारिफ़ जो ख़ास नज्द से तअल्लुक़ रखते हैं, वह भी हिजाज़ी ने अदा किए, उनके अलावा इन कसीर औक़ाफ़ की आम्दनी जो दुनियाए इस्लाम के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में हिजाज़ के लिए हैं। यह सब मिल कर हमारी राय में हिजाज़ के इख़राजात के लिए काफी होने चाहिएं। इस पर भी मज़ीद तजरबा के बाद थोड़ी बहुत इम्दाद की ज़रूरत पड़े, तो दुनियाए इस्लाम बख़ुशी देने के लिए तैयार होगी।

हम हरगिज़ नहीं कहते कि सुल्तान इब्ने सऊद अंग्रेज़ों के हाथ बिक गये हैं, मगर उन पर अंग्रेज़ी असर ज़रूर हे, लिहाज़ा सियासी मसालेह को पेशे नज़र रखते हुए एहतियात शर्त है, वरना हिजाज़ में इजारों के हुसूल की कोशिश अब भी जारी है अगर ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास और बरवक़्त काम न किया गया, तो उसके नताइज के मुतअल्लिक़ कुछ नहीं कहा जा सकता। सबसे अहम चीज़ यह है कि सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ की सारी जमाअत में उनके बाद कोई मुशख़्ख़स ऐसा नहीं है, जो अपने मुल्क नज्द की हिफ़ाज़त और तंज़ीम कर सके। चेह जायकि वह हिजाज़

में क्यामे हुकूमत का ज़िम्मेदार हो। अगर खुदा नख़्वास्ता सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ दुनिया से रुख़्सत हो जाएं, तो उनके तेरह लड़कों और भाईयों में हिजाज़ तक़ीम हो कर टुक्ड़े-टुक्ड़े हो जाएगा, और दूसरे उमरा की तरह उन में ....अंग्रेज़ों का मुलाज़िम होगा। इसलिए ज़रूरत है कि हिजाज़ की मौजूदा हुकूमत की तरफ़ पूरे तौर पर तवज्जोह करके आइन्दा के तमाम ख़तरात का इंसिदाद कर दिया जाए।

अगर मज़्हबी रवादारी कोई चीज़ है, तो इस लिहाज़ से भी यही मुनासिब मालूम होता है कि हिजाज़ पर किसी एक फ़िर्क़ा को मुसल्लत किया जाए। ख़ास कर ऐसे फ़िर्क़ा को जो अपने अक़ाइद में इंतिहा दर्जे का गुलू रखता हो। ग़र्ज़ेकि हर पहलू से हम यही मशवरा देंगे कि ख़िलाफ़ते कमेटी मुस्तक़्बिल हुकूमत हिजाज़ के मुतअल्लिक़ अपने फ़ैसला पर बदस्तूर क़ायम रहे कि वही बदतरीन चीज़ है।

दोनों रिपोर्टों पर ग़ौर करने के बाद मरकज़ी ख़िलाफ़ते कमेटी ने अपने इज्लास मुनाक़िदा 1926 ई० में हस्बे ज़ैल रज़्द लेयूशन पास की।

मरकज़ी ख़िलाफ़ते कमेटी अफ़्सोस के साथ इस तरज़े अमल से अपना इख़्तिलाफ़ ज़ाहिर करती है, जो हुकूमते हिजाज़ के तऐयुन व एलान के लिए अख़्तियार किया गया है। कमेटी के नज़्दीक इसका सही तरीक़ा वही था, जो खुद सुल्तान मौसूफ़ ने अपने बार-बार के एलानात में ज़ाहिर किया था, यानी मुजव्वज़ा इस्लामी मुतमिर मुनाक़िद हो और वह एहाली हिजाज़ के मशवरा के बाद हुकूमते हिजाज़ का फ़ैसला करे। मरकज़ी कमेटी इन अज़ीमुश्शान इस्लामी मक़ासिद को पेशे नज़र रखते हुए, जिनका हुसूल सरज़मीने हिजाज़ और आलमे इस्लामी की दाबिस्तगी पर मौकूफ़ है सुल्तान मौसूफ़ को उनके एलानात पर अज़ सरनौ तवज्जोह दिलाती है और उम्मीद करती है कि वह मुजव्वज़ा व मौऊदह मुतमिर को जल्द अज़ जल्द तलब फरमाएंगे और आलमे इस्लामी की उन उम्मीदों की कामयाबी का ज़रिया होंगे, जो आज उनकी ज़ात से वाबस्ता हैं।

इस सिलसिला में मरकज़ी कमेटी यह बात भी ज़ाहिर कर देना चाहती है कि वह अपने इस मसलक पर बदस्तूर क़ायम है, जिसका इज़्हार मज्लिसे आमिला की तज्वीज़ 5 अक्तूबर 1924 ई० मुसद्देका ख़िलाफ़ते कॉंफ़्रेंस बल्गाम में कर चुकी है। कमेटी के नज़्दीक सरज़मीने

हिजाज़ के अमन व निज़ाम और आलमे इस्लामी के मफ़ाद व मसालेह के लिए ज़रूरी है कि आइन्दा हिजाज़ में जो हुकूमत भी क़ायम हो, वह आलमे इस्लामी की राय आम्मा के मुताबिक़ हो और मुलूके सलातीन की मुस्तबदाना हुकूमत की जगह ख़िलाफ़ते राशिदा इस्लामिया के नमूना पर हो, जिसमें किसी ख़ास ख़नादान या नस्ल की जगह अह्ले हल्ल व अक़्द के इंतिख़ाब पर अमीर के नसब व अज़्ल का दारो मदार होता है। ख़िलाफ़ते कमेटी ने अपनी तज्वीज़ मुतज़्किरा सदर में इसी लिए जम्हूरियत का लफ़्ज़ इस्तेमाल कियाथा, क्योंकि इस मक़्सद के इज़्हार के लिए मौजूदा ज़माना की बोल चाल में यही लफ़्ज़ अक़रब है।

इंएक़ाद मुतमिर की तारीख़ का तऐयुन

बैनल-इस्लामी मस्अला, कॉंफ्रेंस के मस्अला की अमली तौर पर इब्तिदा इसी तार से होती है, जो मरकज़ी ख़िलाफ़ते कमेटी ने 7 अक्तूबर 1924 ई० को सुल्तान इब्ने सऊद और अमीर अली की जंग के सिलसिला में मुतहारिबैन के नाम रवाना किया था उस ने लिखा था कि-

हिन्दुस्तानी मुसलमानों की यह राय है कि मज़्कूरा बाला उसूल परप उस वक़्त अराकीने हिजाज़ की एक आरज़ी जम्हूरी हुकूमत क़ायम की जाए (यानी हिजाज़ पर जो तमाम दुनियाए इस्लाम का मरजा है कोई बादशाह या सुल्तान हुक्मरानी नहीं कर सकता, बल्कि वहाँ एक दिमक़्राती रिपब्लिकन हुकूमत होनी चाहिए, जो ग़ैर मुस्लिमों के असर से बिल्कुल पाक हो, और मुस्तक़्बिल हुकूमत का मस्अला मुतमिर इस्लामी के फ़ैसला पर छोड़ दिया जाए।

इसमें मुतमिर के इंएक़ाद और उसके ग़ायत व ग़रज़ दोनों का बित्तस्रीह तज़्किरा कर दिया गया है, इसके जवाब में जो तार सुल्तान ने 24 अक्तूर को बराहे बहरैन भेजा, उसमें ख़िलाफ़ते कमेटी के उसूल मुतअल्लिक़ तरज़े हुकूमत हिजाज़ को सही तस्लीम करते हुए तज्वीज़े इंएक़ाद मुतमिर और उसकी ग़रज़ व ग़ायत से इन अल्फ़ाज़ में इत्तिफ़ाक़ किया कि "आख़िरी फ़ैसला दुनियाए इस्लाम के अख़्तियार में है।"

अगले महीना सुल्तान ने अपनी इस तक़रीर में जो उन्होंने रियाज़

से मक्का चलते वक़्त की थी और जिसका खुलासा अब्दुल्लाह कि बलीहद साहब ने बज़रिया तार 22 नवम्बर 1924 ई० को कमेटी के नाम बग़रज़े इत्तिला आम भेजा था, इस अम्र को और वाज़ेह कर दिया था, तार के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल थे।

"आज के बाद से मक्का में बजुज़ शरीअत के और कोई सुल्तान न होगा, सब की गर्दनें उसके सामने झुकेंगी, चूंकि इस मस्अला से जुमला मुसलमानाने आलम का तअल्लुक़ है, इसलिए वहाँ की पालीसी दुनियाए इस्लाम की मर्ज़ी के मुताबिक़ होगी, हम जुम्ला आलमे इस्लाम के नुमाइन्दगान की एक कॉफ़्रेंस मक्का में मुनाक़िद करेंगे और हर मस्अला पर राय दी जाएगी, जिससे बैतुल्लाह शरीफ़ गुनाहों और जाती इग़राज़ से पाक रहे और हुज्जाज को हरमैन शरीफ़ैन के सफर में अम्न व आफ़ियत नसीब हो।

चुनांचे इसी ग़रज़ से सुल्तान ने ख़िलाफ़त कमेटी के नुमाइन्दों को बज़रिया तार मुरसला 3 नवम्बर 1924 ई० मक्का आने की दावत दी और कमेटी से दर्ख़्वासत की कि वह उनकी तरफ़ से दूसरे मुल्हिक़ा इस्लामी म्मालिक को भी दावत पहुंचाए।

मक्का पहुंचने के बाद सुल्तान ने मुतमिर इस्लामी को दावत दी, जो दिसम्बर में हिन्दुस्तान पहुंची, उसके अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अस्सलतनतुन्नज्दीया व मुल्हिक़ातुहा अदद 224

मिनजानिब अब्दुल-अज़ीज़ बिन अब्दुर्रहमान आल फ़ैसल आल सऊद

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू!

मैं आप हज़रात की दवामी सेहत व आफ़ियत की उम्मीद करता हूँ, मैं इसमें सआदत समझता हूँ कि आपके और इस्लाम और मुसलमानों के हर ख़ैर ख़्वाह और ख़ैर तलब के हाथ की तरफ़ हाथ बढ़ाऊं।

मुझे पूरा यक़ीन है कि हमारे बाहमी (इत्तिफ़ाक़) व तआवुन से तमाम अक़्वामे इस्लामिया का मुस्तक़्बिल शानदार हो जाएगा।

ऐ ग़ैरमन्द व बाहमीयत भाई! मैं उन लोगों में से नहीं हूं, जो लड़ाई

और फ़ित्ना व फ़साद को दोस्त रखते हैं, मेरे नज़्दीक सुलह और अम्न और बाहमी मुहब्बत और इक़्तिसादी तरक़्क़ी और फ़ारिगुल-बाली से ज़्यादा कोई चीज़ महबूब नहीं कि इसमें अन्दरूनी इस्लाह का पूरा-पूरा मौक़ा मयस्सर होता है, लेकिन हमारे पड़ोसियों, यानी शुरफ़ा (मक्का) ने हमें पन्द्रह साल तक न्याम से तल्वार निकाले रहने और जंग के मसाइब में मुब्तला रहने पर मजबूर रखा, शरीफ़ों का इस जंग से सिवाए उसके कोई मक़सद न था कि हमारे मुल्क व माल पर क़ब्ज़ा कर लें और हम को खुदा की इबादत और मस्जिदे हराम से जिस में अल्लाह तआला ने तमाम मुसलमानाने आलम को बराबर दरजा का हक़्दार क़रार दिया है, रोक दें, उन्होंने मुक़द्दस बैतुल-हराम को इस क़िस्म की बद आमालियों की गन्दगी से मुलव्विस किया कि एक मुसलमान उसको बर्दाश्त नहीं कर सकता।

आख़िर हम ने ख़ुदा के पाक शहरे मक्का मुअज़्ज़मा और बाक़ी बला व मुक़द्दसा की तत्हीर और उस ख़ानदान के अफ़राद से नजात दिलाने के लिए इल्म जिहाद बुलन्द किया, क्योंकि शरीफ़ी ख़ानदान के अफ़राद के गुज़िश्ता कारनामों और सियाहकारियों को देखते हुए उन से मुफ़ाहिमत और नेक नीयती की कोई उम्मीद बाक़ी न रही थी।

और मैं इस खुदाए बरतर की क़सम खा कर जिस के क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में मेरी जान है, कहता हूँ कि मेरा मक़सद हिजाज़ पर तसल्लुत या हुकूमत करना नहीं है, हिजाज़ मेरे हाथ में इस वक़्त तक अमानत है, जब तक कि अह्ले हिजाज़ खुद अपने में से ऐसे हाकिम का इंतिख़ाब न कर लें, जो आलमे इस्लामी की बात मानने वाला और इन अक़्वामे इस्लामिया और तब्क़ाते मिल्लीया के ज़ेरे निगरानी रहे, जिन्होंने अपनी ग़ैरते मिल्लीया और हमीयते दीनीया का सुबूत मुबहम पहुंचा दिया है। मसलन हिन्दुस्तानी मुसलमान हमारा वह मत्महे नज़र, जिसका आलमे इस्लामी से हम ने वादा किया है और जिसके लिए हम शम्शीर बकफ़ रहेंगे। मुज्मलन हस्बे ज़ेल हैः

1. हिजाज़ की हुकूमत तो हिजाज़ियों का हक़ है, लेकिन आलमे इस्लामी के जो हुकूक़ कि हिजाज़ से मुतअल्लिक़ हैं, उनके लिहाज़ से हिजाज़ तमाम आलमे इस्लामी का है।

2. हम एक इस्तिफ़्ता आम अन्क़रीब जारी करेंगे, जिस में हाकिम

हिजाज़ के इंतिख़ाब और आलमे इस्लामी की निगरानी के मुतअल्लिक़ इस्तिफ़्सार होगा, उसके लिए वक़्त की तऐयुन बाद में की जाएगी, और फिर हम इस अमानत (हिजाज़) को इन उसूल के मातहत उस हाकिम के सुपुर्द कर देंगे।

दफ़ा 1. ज़रूरी होगा कि असासे हुकूमते शरीअ़ते नब्वीया मुतह्हरा पर क़ायम किया जाए।

दफ़ा 2. हुकूमते हिजाज़ दाख़िली उमूर में मुस्तक़िल होगी, लेकिन उसे यह अख़्तियार न होगा कि किसी के साथ जंग का एलान करे और ज़रूरी है कि एक ऐसा निज़ाम मुक़र्रर कर दिया जाए कि अगर हुकूमते हिजाज़ ऐलाने जंग करना भी चाहे, तो यह निज़ाम उसको रोक सके।

दफ़ा 3 : हुकूमते हिजाज़ किसी हुकूमत के साथ सियासी मुआहदा न कर सकेगी।

दफ़ 4 : हुकूमते हिजाज़ ग़ैर मुस्लिम हुकूमत के साथ इक़्तिसादी मुआहदा नहीं कर सकती।

दफ़ा 5 : हिजाज़ की हुदूद का तऐयुन और माली अदालती निज़ाम का बनाना, इन नुमाइन्दों के सुपुर्द होगा, जो आलमे इस्लामी से इसी काम के लिए मुन्तख़ब हो कर आएंगे। हर मुल्क के नुमाइन्दों की तादाद हुकूमत के एहात-ए-इक़्तिदार के लिहाज़ से मुऐयन की जाएगी, जो उसको आलमे इस्लामी और अरबिस्तान में हासिल है, इन नुमाइन्दों के साथ तीन नुमाइन्दे जमीअ़ते मरकज़ीया ख़िलाफ़ते हिन्द और जमाअते अह्ले हदीस और जमीअत उलमाए हिन्द के भी शामिल होंगे।

बिलादे मुक़द्दसा हिजाज़ के मुतअल्लिक़ हमारा इदारा यह है और इसी पर इन्शाअल्लाहु तआला हम मुस्तक़्बिल में अमल करेंगे।

हम को क़वी उम्मीद है कि आप अपने मन्दूब भेजने में जल्दी करेंगे और नीज़ यह भी बताएंगे कि इस मुतमिर आलमे इस्लामी के इंएक़ाद के लिए मुनासिब वक़्त कौन सा होगा, क़ाबिले बयान यह बातें थीं और आख़िर में आप हमारी जानिब से तहीया और एहतराम कुबूल फरमाएं।

(महर सुल्तान) अब्दुल-अज़ीज़ बिन अब्दुर्रहमान

इस में दो नक़्स थे, एक तो तमाम म्मालिके इस्लामी को मदऊ नहीं

किया गया, मसलन तुर्की जैसी अहम हुकूमत को दावत नहीं दी गई, दूसरे यह कि इन शराइत के ज़रिया जिनकी तस्रीह दावात नामा में है, बाज़ निहायत अहम उमूर में मुतमिर के अख़्तियारात को महदूद करने की कोशिश की गई थी, लेकिन ऐलान मुलूकीयत के बाद सुल्तान की बातों से साफ़ मालूम होता था कि उन्होंने इंएक़ाद मुतमिर के ख़्याल को तर्क कर दिया है, चुनांचे जिस वक़्त वफ़्द ने उन से जद्दह में मुलाक़ात के दौरान में इंएक़ाद व मुतमिर के मस्अला का ज़िक्र किया, तो साहिबे मम्दूह ने उसको यह कह कर टालना चाहा कि जब आलमे इस्लामी जमा हो जाएगी, और मौलाना इरफ़ान साहब और शुऐब क़ुरैशी साहब के इसरार के बाद ख़िलाफ़ते कमेटी की इस तज्वीज़ से इत्तिफ़ाक़ किया कि हज के मौक़ा पर मुतमिर मुनअक़िद हो, लेकिन उसके साथ साफ़ फ़रमा दिया कि जहाँ तक हिजाज़ के सियासी इंतिज़ामात का तअल्लुक़ है हिजाज़ियों ने यह तय कर लिया है कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि आलमे इस्लाम हमारे सियासी मुआमलात में मुदाख़लत करे और इसी सिलसिला में हिजाज़ियों की तरफ़ यह अल्फ़ाज़ मन्सूब किए।

लेकिन चूंकि कोई जुज़्व चाहिए, वह कितना ही अहम क्यों न हो उसका मजाज़ नहीं है कि मल के अख़्तियारात महदूद कर सके, वफ़्द के मुजव्वज़ह मुतमिर इस्लामी के अख़्तियारात पर मस्लेहतनत बहस नहीं की और इस मस्अला को मिम्बरान मुजव्वज़ा मुतमिर पर छोड़ दिया।

मुतमिर इस्लामी

मार्च 1926 ई० में सुल्तान इब्ने सऊद ने मुतमिर इस्लामी के लिए नया दावत नामा भेजा और यह ख़िलाफ़त कमेटी के वफ़्द की कोशिशों का नतीजा था कि इस मरतबा हुकूमते तुर्की को भी शिर्कत की दावत दी गई।

दावत नामा में तब्दीली

लेकिन ताज़ा दावत नामा की इबारत पिछले दावत नामा से भी ज़्यादा नाक़िस थी, अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर था कि सुल्तान नहीं चाहते थे कि तशकील हुकूमते हिजाज़ का मस्अला मुतमिर के सामने आए, मुतमिर

के इग़राज़ व मक़ासिद में सिर्फ़ हरमैन शरीफ़ैन और उनके साकिनैन की ख़िदमत और हरमैन की मुस्तक़्बिल के ख़तरात से हिफ़ाज़त और हुज्जाज व ज़ाइरीन के लिए वसाइल राहत व आसाइश की कसरत और हर एक जरिया से बिलादे मुक़द्दसा के इन हालात की इस्लाह थी, जो सब मुसलमानों के लिए ग़ैर मामूली अहमीयत रखते हों, दावतनामा के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल थे :

मलिकुल-हिजाज़ व सुल्तान नजद अब्दुल-अज़ीज़
साहिबुस्सियादह रईस जमीअ़तुल-ख़िलाफ़त मुम्बई

हरमैन शरीफ़ैन और उनके साकिनैन की ख़िदमत और हरमैन की मुस्तक़्बिल के ख़तरात से हिफ़ाज़त और हुज्जाज व ज़ाइरीन के लिए वसाइले राहत व आसाइश की कसरत और हर एक जरिया से बिलादे मुक़द्दसा के इन हालात की इस्लाह जो सब मुसलमानों के लिए ग़ैर मामूली अहमीयत रखते हैं और अपने वादों और उन उहूद को जो हमने अपने ऊपर लाज़िम कर लिए थे, पूरा करने और उन दियारे ताहिरा की ख़िदमत गुज़ारी में तमाम मुसलमानों की शिर्कत और बाहमी मुआवनत व मुहब्बत की ख़्वाहिश रखने की बिना पर हम ने ख़्याल किया कि मुतमिर आलमे इस्लामी के इंएक़ाद के लिए जो तमाम बिलादे इस्लामिया और शुऊबे इस्लामिया की नुमाइन्दा हो, यह वक़्त मुनासिब है, चुनांचे 20 ज़ी क़अ्दा 1344 हिज० को यह मुतमिर मुनअक़िद होगी, हम ने तमाम उन मुसलमानों को जिनको हरमैन के उमूर के साथ तअल्लुक़ है और मुलूके इस्लाम को दावत भेज दी है, हमें उम्मीद है कि आपके नुमाइन्दे तारीख़ मुक़र्ररह पर मुतमिर में मौजूद होंगे, खुदा हम सब का अपनी मेहरबानी से कारसाज़ रहे।

मुल्कुल-हिजाज़ व सुल्तान नज्द..........अब्दुल-अज़ीज़

मुतमिर के इग़राज़ व मक़ासिद और उसके अख़्तियारात को साफ़ करने के लिए जमीअ़त उलमा हिन्द ने सुल्तान को तार भेज कर दरयाफ़्त किया कि मुतमिर तशकीले हुकूमत हिजाज़ के मस्अला पर भी ग़ौर करेगी या नहीं, जमीअ़त उलमा के तार के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

अज़्मतुस्सुल्तान इब्ने सऊद के दावत नामा का जवाब

अज़्मतुस्सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ मक्का मुअज़्ज़मा

आपका तार पहुंचा, दावत का शुक्रिया, जमीअतुल-उलमा अपने मन्दूब भेजने को तैयार रहे, मगर जमीअत अदब के साथ अर्ज़ कर देना चाहती है कि इस्लाम के मरकज़ को हमेशा के लिए वसाइस अजानिब से मामून करने और तमाम आलमे इस्लामी को उसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार बनाने के लिए तश्कील हुकूमते हिजाज़ का अहम मस्अला ज़ेरे बहस आना ज़रूरी है।" (मुहम्मद किफ़ायतुल्लाह) इसका जवाब सुल्तान की तरफ़ से हस्बे ज़ैल आया।

जमीअत उलमाए दिल्ली :

मलकुल-हिजाज़ व सुल्तान नज्द, अब्दुल-अज़ीज़

तरजमा : मुझे आपका तार मिला, मैं आपके मज़्मून का शुक्रिया अदा करता हूँ, जिस से आपकी इंतिहाई फ़हम और दीनी ग़ैरत ज़ाहिर होती है।

बिलादे मुक़द्दसा मुसलमानों की जानों और दिलों की हिफ़ाज़त में हैं और खुदा की इनायत व निगहबानी से वह वसाइसे अजानिब से भी महफ़ूज़ व मस्ऊन हैं और जब तक हम उन में हक़ के साथ क़ायम हैं और हमारी रफ़्तार शरीअत के मुवाफ़िक़े रहे और हम ख़्वाहिशाते नफ़सानिया के रास्ते से बचे रहें, तो इन बिलादे मुक़द्दसा की हालत अज़ीमुश्शान हो जाएगी, पर इस उम्मत के आख़िरी दौर की इस्लाह इस चीज़ के बेग़ैर नहीं हो सकती जिस से पहले दौर की इस्लाह हुई थी, खुदाए तआला हम सबको इन बातों की तौफ़ीक़ दे जिन में ख़ैर और भलाई हो।

इससे सुल्तान का मन्शा और भी वाज़ेह हो गया, लेकिन चूंकि मुसलमानों के जुम्ला इज्तिमाई और मज़्हबी मसाइल और बिल-खुसूस इन मसाइल के बसूरते अहसन हल करने का बेहतरीन, बल्कि वाहिद ज़रिया जो उनके मुश्तरेका मरकज़े अरब से मुतअल्लिक़ हैं, बैनल-इस्लामी मुतमिर हो सकती है, लिहाज़ा बावजूद उसके कि दावतनामा में नुक़्स मौजूद थे और यह मालूम न था कि नियाबत किसी उसूल और किस हिसाब से होगी, जमीअत ख़िलाफ़त क़ी मज्लिसे आमिला ने अपने

इज्लास मुनाक़िदा 18 अप्रैल 1926 ई० बमक़ाम दिल्ली में मुतमिर के दावत नामा को कुबूल किया और 20 अप्रैल को मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी ने हस्बे ज़ैल हज़रात को मुन्तख़ब किया कि वह मुसलमानाने हिन्दुस्तान के नुमाइन्दों की हैसियत से मुतमिर में शरीक हों।

मौलाना सैयद सुलेमान साहब नदवी, रईस

मौलाना शौकत अली साहब

मौलाना मुहम्मद अली साहब

शुऐब क़ुरैशी साहब (रुक्न व सेक्रेट्री)

चूंकि अभी यह तय नहीं हुआ था कि मुतमिर में मुख़्तलिफ़ म्मालिके इस्लामी की आम्दनी किस उसूल और किस हिसाब से होगी, न यह ही यक़ीन के साथ कहा जा सकता था कि कितने म्मालिक मुतमिर में शिर्कत करेंगे और ख़िलाफ़ते कमेटी के पेशे नज़र यह था कि तश्कील हुकूमते हिजाज़ जैसा अहम मस्अला जिस पर तमाम दुनियाए इस्लाम के मुस्तक़्बिल, अख़्लाक़ी, इक़्तिसादी, सियासी और इज्तिमाई तारीख़ का दारो मदार है, नाक़िस और ग़ैर नुमाइन्दा मुतमिर के सामने फ़ैसला की ग़रज़ से पेश न हो ताकि इस तारीख़ी ग़लती का दोबारा एआदा न हो, जिसका ख़मियाज़ा मुसलमान आज तक भुगत रहे हैं, लिहाज़ा जमीअ़ते आमिला ने अपने इज्लास मुनाक़िदा 18 अप्रैल 1926 ई० बमक़ाम दिल्ली में रेज़ोलेशन के दो हिस्से कर दिए थे।

(1) कि वफ़्द इन तमाम उमूर पर बहस व मुबाहसा करे, जिनका ज़िक्र दावते आम्मा में है।

(2) लेकिन तश्कील हुकूमते हिजाज़ का मस्अला अगर मुतमिर में पेश किया जाए, तो उसमें शिर्कत से इंकार करे, लेकिन उसको हिदायत की गई थी कि सुल्तान इब्ने सऊद से बच के तूर पर गुफ़्तगू कर ली जाए और हमारा नुक़्त-ए-निगाह उनके रूबरू पेश करके उनको हम ख़्याल बनाने की कोशिश की जाए।

रेज़ोलेशन के अल्फ़ाज़ हस्बे ज़ैल हैं :

मुतमिर हिजाज़ के मुतअल्लिक़ तय पाया कि दावत नामा मन्ज़ूर किया जाए और जिन इग़राज़ व मक़ासिद का ज़िक्र इसमें किया गया है, इस पर बहस व मुबाहसा व तबादल-ए-ख़्यालात किया जाए और आइन्दा तश्कीले हुकूमत हिजाज़ के लिए इंएक़ाद मुतमिर की बाबत

सुल्तान इब्ने सऊद से गुफ़्तगू की जाए और तश्कीले हुकूमते हिजाज़ का मस्अला इस मुतमिर में पेश हुआ, तो उसमें शिर्कत से इंकार किया जाए अगर सुल्तान इब्ने सऊद से बच के तूर पर गुफ़्तगू कर ली जाए और हमारा नुक़्त-ए-निगाह उनके रूबरू पेश करके उनको हम ख़्याल बनाने की कोशिश की जाए।"

हिजाज़ जाकर जब मुतमिर के ऐजण्डा को देखा, जिस में अल-बिलादु व हुकूमतेहा की मुद सबसे अव्वल थी और उन मन्दूबीन की तादाद को देखा, जिन को सुल्तान ने खुद मुक़र्रर किया था, तो मालूम हुआ कि ख़िलाफ़त कमेटी अगर यह पेश बन्दी न करती, तो बड़ी सख़्त ग़लती की मुर्तकिब होती।

रेज़ोलेशन के हिस्सा दोम के सिलसिला में वफ़्द ने सुल्तान से तीन मरतबा गुफ़्तगू की जिसकी तफ़्सील दूसरी जगह दर्ज है, इन मुलाक़ातों के दौरान में सुल्तान ने जिन ख़्यालात का इज़्हार किया, उनको पेशे नज़र रखते हुए वफ़्द ने उसको क़ब्ल अज़ वक़्त और नामुनासिब ख़्याल किया कि महज़ मस्अला तश्कील हकूमते हिजाज़ पर मज़ीद तफ़्सीली गुफ़्तगू करने के लिए सुल्तान से इन्टरव्यू (मुलाक़ात) के लिए दर्ख़्वास्त करे।

मुतमिर के इंएक़ाद की तारीख़ का इल्तवा :

मुतमिर के इंएक़ाद की तारीख़ इब्तिदा 20 ज़ी क़अ्दा 1344 हिज० मुताबिक़ 2 जून 1926 ई० थी, लेकिन चूंकि मुस्तक़िल म्मालिक इस्लामी के नुमाइन्दे नहीं आए थे, इसलिए तारीख़े इंएक़ाद दो मरतबा बदलनी पड़ी, ताकि इन म्मालिक को शिर्कत का मौक़ा मिल सके।

आख़िरी इल्तवा 7 जून 1926 ई० को किया गया था, लेकिन जब 7 जून तक भी इन म्मालिक के नुमाइन्दे न आए, तो उस दिन मुतमिर का इफ़्तिताह हुआ।

म्मालिके इस्लाती जो मुतमिर में शरीक हुए :

इनके दो हिस्से हैं, एक तो वह जो क़ब्ल अरजह शरीक हुए, जिन के नाम मआ उनके नुमाइन्दों के अस्मा के हस्बे ज़ैल हैं :

हिन्दुस्तान : (1) ख़िलाफ़त कमेटी : मौलाना सैयद सुलेमान साहब नदवी, रईस

मौलाना शौकत अली साहब

मौलाना मुहम्मद अली साहब

शुऐब कुरैशी साहब रुक्न व सेक्रेट्री।

(2) जमीअ़तुल-उलमा हिन्द :

मौलाना किफ़ायतुल्लाह साहब, रईस।

मौलाना शब्बीर अहमद साहब।

मौलाना अहमद सईद साहब।

मौलाना अब्दुल-हलीम साहब।

मौलाना अबुल-मआरिफ़ मुहम्मद इरफ़ान साहब

(3) जमाअत अह्ले हदीस :

मौलाना सनाउल्लाह साहब, रईस

मौलाना अब्दुल-वाहिद ग़ज़नवी साहब।

मौलाना इस्माईल ग़ज़नवी साहब।

मौलवी हमीदुल्लाह साहब।

2. रूस :

कशाफुद्दीन बिन क़व्वामुद्दीन, रईस

रज़ाउद्दीन।

मुस्लेहुद्दीन बिन ख़लील

अब्दुल-वाहिद बिन अब्दुर्रऊफ़, मेहदी

ताहिर इल्यास

मूसा जा अल्लाह

अब्दुर्रहमान बिन इस्माईल (सेक्रेट्री)

3. - जावा :

उमर सईद चोकर वामी नोतो

हाजी मन्सूर

शैख़ मुहम्मद बाक़र

शैख़ जनान तैयब

4. - फ़िलस्तीन :

सैयद अमीनुल-हुसैनी, रईस

इस्माईल आफ़न्दी अल-हाफ़िज़

उजाज आफ़न्दी नवैहज़न

5. - बैरूत व शाम :

अश्शैख़ हसन अल-मुल्की, शाम
शैख़ बहजतुल-बैतार, शाम
महमूद मनह हारून, शाम
नामज़द करदह सुल्तान, शाम
अब्दुल-ग़नी औफ़ी बुक अकअकी, बैरूत
हसन आफ़न्दी अल-मक्की, बैरूत

6. : मिस्र : जमीअत ख़िलाफ़ते बेवादीयुन्नील :

अबुल-अज़ाइम माज़ी रईस।
सैयद कामिल उस्मान आफ़न्दी।
सैयद मुहम्मद अबुल-अज़ाइम

7. : सूडान :

मुदस्सिर बिन इब्राहीम, नाम्ज़द करदह सुल्तान।
शैख़ अबुल-क़ासिम अहमद हाशिम।

8. : उसैर :

तौफ़ीक़ शरीफ़, (शामी)
अब्दुल-अज़ीज़ अल-अक़ीक़ी (नज्दी)
अबू ज़ैद (मिस्री)

9. : नज्द :

अब्दुल्लाह बिन बलीहद, रईस
हाफ़िज़ दहबा।
अब्दुल्लाह व मलूजी।
शैख़ हम्दुल-ख़तीब
यूसुफ़ यासीन, (शामी)

10. : हिजाज़ :

शरीफ़ शर्फ़ अदनान
अब्दुल्लाह शैबी
शैख़ इस्माईल मबीरीक
शरीफ़ हज़ायम अबुल-बतीन
सुलेमान क़ाबिल यख़्त बिन बनियान
सऊद व शीशबा, इब्राहीम आइज
मुहम्मद नसीब
मुहम्मद मुग़ैरबी

शरीफ़ अली बिन अल-हुसैन अल-हारेसी

अब्दुल्लाह अल-फ़ज़ल अन्नज्दी

आरिफ़ अल-अहमदी

जिन हज़रात को सुल्तान ने उनकी ज़ाती हैसियत से बतौर ख़ास मदऊ किया था।

11. सैयद रशीद रज़ा, (मिस्री)

अब्दुज़्ज़ाहिर।

मन्सूर महमूद।

अब्दुस्सलाम हैकल।

हिस्सा दोयम में वह म्मालिक हैं जो बाद हज्जे मुतमिर में शरीक हुए, उन म्मालिक के और उनके मन्दूबीन के नाम हस्बे ज़ैल हैं, उन में से अक्सर क़ो इब्तिदाअन शिर्कत में तअम्मुल था, लेकिन हिन्दुस्तानी नुमाइन्दों के खुलूस और कारगुज़ारी से मुतअस्सिर हो कर शिर्कत पर आमादा हो गये।

तुर्की : अदीबे सरवत बुक।

अफ़ग़ानिस्तान : जनरल गुलाम जीलानी ख़ाँ।

यमन : हुसैन बिन अब्दुल-क़ादिर।

उसैर : अल्लामा शनीफ़्ती (इद्रीसी)

मिस्र : अल्लामा ज़वाहरी।

मिसीरी बुक।

अमीन तौफ़ीक़।

नोट : मिस्री वफ़्द की आमद पर सूडानी हज़रात और वादी-ए-मनील की जमीअत ख़िलाफ़त के नुमाइन्दे वापस चले गये, लेकिन ईरान आख़िर तक शरीक न हुआ।

हम को निहायत अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि हुकूमते नज्द की जानिब से यह कोशिश की गई कि इंतिख़ाब नुमाइन्दगी व तनासुब के उसूल को पसे पुस्त डाल कर मुतमिर को अपने हम ख़्याल व हम्नवा अश्ख़ास से भर दिया जाए, चुनांचे नज्द के 5 हिजाज़ के 13 असीर के जिसके तीन हिस्सों में से सिर्फ़ एक हिस्सा सुल्तान इब्ने सऊद के हाथ में है, तीन और सबको खुद सुल्तान ने नामज़द किया, सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा नहीं किया गया, बल्कि बाज़ हज़रात को जो सुल्तान की

मुलूकियत के हामी थे। इंफ़िरादी हैसियत से मिम्बर मुक़र्रर किया गया और उनको राय वग़ैरह के मुआमला में वही हुक़ूक़ थे, जो बाक़ायदा मुन्तख़ब शुदह मिम्बरों को थे, उसके अलावा बाज़ सूरतों में तो सुल्तान ने म्मालिक ग़ैर की तरफ़ से जो उनके मातहत भी न थे, नुमाइन्दे मुक़र्रर कर दिए, इस तरह 59 नुमाइन्दों में से जो हज से पहले मुतमिर में शरीक थे, 26 सुल्तान के नामज़द करदह थे, उस में अगर हिन्दुस्तान की जमाअत अह्ले हदीस के चार नुमाइन्दों को शामिल कर लिया जाए। तो 59 शुरका मुतमिर में से 30 सुल्तान इब्ने सऊद की तक़रीबन हर बात में ताईद करने वाले थे, यह तनासुब तो उस वक़्त हुआ, जबकि बैरूनी म्मालिक ने एक-एक से ज़्यादा नुमाइन्दा भेजे, अगर वह सिर्फ़ एक ही एक नुमाइन्दा भेजते, तो मुतमिर में क़िल्लत व कसरत के मस्अला की जो सूरत होती ज़ाहिर है।

अलावा उसके शुरका की राय पर असर डालने के लिए उन नाज़ैबा तरीक़ों के इस्तेमाल से भी इज्तिनाब नहीं किया गया, जिनको कोई सहीहुल-उसूल व सही मस्लक पब्लिक काम करने वाला रवा नहीं रखेगा।

मुतमिर को हामियों से भरने के बाद खुद सुल्तान ने उसी तश्कीले हुकूमत को दाख़िल एजेंडा कर दिया, जिसको वह मुतमिर के सामने पेश करने के रवादार न थे और जिस को उन्होंने निहायत एहतियात और एहतमाम से दावत नामा से ख़ारिज कर दिया था। यह हालत देख कर हम ने साफ़ अल्फ़ाज़ में कह दिया कि मुसलमानाने हिन्द हरगिज़ गवारा नहीं कर सकते कि तश्कीलै हुकूमत हिजाज़ जैसा अहम मस्अला उस वक़्त तक मुतमिर के सामने आए, जब तक कि मुतमिर में नयाबत के उसूल और फ़ैसला के क़वाइद व ज़वाबित के तहते मुतमिर का इज्लास न हो और सुल्तान की इफ़्तिताही तक़रीर के बाद ही हम ने इंतिख़ाबे ओहदेदारान उनके मस्अला के पेश होते ही नियाबत और क़िल्लत व कसरत के तय करने के सवाल और उसके साथ-साथ मुतमिर के क़ानून असासी के पूरे मस्अला को उठाया, उस पर एक सब कमेटी मुआयना वसाइक़ और दूसरी सब कमेटी क़ानूने असासी बनाने के लिए मुन्तख़ब की गई और हमारे एतराज़ व मुख़ालिफ़त के बाइस हुकूमते हिजाज़ का मस्अला ऐजेंडा और नीज़ सुल्तान की इफ़्तिताही

तक़्रीर से ख़ारिज कर दिया गया।

पहली कमेटी के मिम्बरों के नाम हस्बे ज़ैल हैं :

(1) मौलाना मुहम्मद इरफ़ान साहब।

(2) यूसुफ़ यासीन साहब।

(3) मन्सूर साहब।

दूसरी कमेटी के लिए हस्बे ज़ैल हज़रात मुन्तख़ब हुए।

(1) मौलाना शौकत अली (हिन्दुस्तान)

(2) रज़ाउद्दीन (रूस)

(3) मुहम्मद अमीन अल-हुसैनी (फ़िलस्तीन)

(4) हाफ़िज़ वहबा (नज्द)

(5) मौलाना किफ़ायतुल्लाह (जमीअ़तुल-उलमा, हिन्दुस्तान)

(6) अब्दुल्लाह बिन बलीहद (नज्द)

(7) उमर सईद चोकर दामी नोतो (जावा)

(8) शरीफ़ शर्फ़ अदनान (हिजाज़) रईस मुतमिर

(9) शुऐब कुरैशी

(10) उजाज़ नौबहज़ (बतौर मुआविन व मुशीर)

(11) मन्सूर।

इंतिख़ाब ओहदेदारान मुतमिर

लेकिन इंतिख़ाब ओहदेदारान क़िल्लत और कसरत के तऐयुन के मस्अला के तये हुए बग़ैर अमल में आया।

सदर : हमने इस मस्लेहत से कि तुर्की सबसे मुम्ताज़ और बड़ी इस्लामी हुकूमत है और उससे भी ज़्यादा इस मस्लेहत से कि तुर्कों और अरबों के कुलूब से गुज़िश्ता वाक़ेआत की नागवार तल्ख़ी दूर हो जाए और बाहम व गरमल कर काम करें और नीज़ इस बिना पर भी कि वह मजालिस के निज़ाम व कार्रवाई के तरीक़े से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं, यह

तज्वीज़ पेश की कि तुर्की वफ़्द के रईस को मुतमिर का सदर बनाया जाए, मौलाना सनाउल्लाह साहब ने नुमाइन्दगाने नज्द की ताईद के साथ उसके ख़िलाफ़ शरीफ़ शर्फ़ अदनान पाशा का नाम पेश किया और अब्दुल-वाहिद ग़ज़नवी साहब ने तहरीक की कि सुल्तान इब्ने सऊद सदर मुतमिर हों, राय लिए जाने पर कसरत राय से शरीफ़ शर्फ़ अदनान रईस मुन्तख़ब हुए, नाइब सदर की जगह के लिए हस्बे ज़ैल अस्हाब के लिए राय दी गई और मौलवी सुलेमान नदवी रईस वफ़्दुल-ख़िलाफ़ा और रज़ाउद्दीन रईस वफ़्द रूसिया नायब सदर मुन्तख़ब हुए, नामूस आम तौफ़ीक़ शरीफ़ साहब मुक़र्रर हुए।

मुतमिर का क़ानून असासी : लजना क़ानून असासी ने जो क़ानून बनाया और जिस को मुतमिर ने बिल-इत्तिफ़ाक़ मन्ज़ूर किया, वह बतौर ज़मीमा शामिल रिपोर्ट है, इसमें मुतमिर के अग़राज़ व मक़ासिद और उसके निज़ाम वग़ैरह के मुतअल्लिक़ जुम्ला उमूर बितफ़्सील दर्ज हैं।

जिस वक़्त यह क़ानून बना और मन्ज़ूर हुआ, उस वक़्त तुर्की, अफ़्ग़ानिस्तान, यमन और मिस्र के नुमाइन्दे मौजूद न थे, लिहाज़ा वह उसके मुतअल्लिक़ बहस व मुबाहसा में शिर्कत न कर सके, लेकिन उनकी शिर्कत के बाद उनको क़ानूने असासी पर राय देने का हक़ दिया गया है और उनकी राय को मुतमिर यक़ीनन निहायत उक़्अत और अहमीयत देगी।

लज्ना इक़्तिराहिया : मुख़्तलिफ़ इक़्तिराहात पर ग़ौर करने और उनको तरतीब देने के लिए जो आज़ा मुतमिर में पेश करना चाहते थे, मुतमिर ने तय किया कि एक लजना "लजना इक़्तिराहात" के नाम से मुन्तख़ब की जाए, जिस में हर मुल्क के नुमाइन्दे इन उसूलात के हिसाब से हों जो क़ानूने असासी के मातहत उसको हासिल हैं, उस लजना इक़्तिराहिया के लिए मिम्बर हस्बे ज़ैल थे।

हिन्दुस्तान : मौलाना मुहम्मद अली, मौलाना किफ़ायतुल्लाह, मौलाना सनाउल्लाह, मौलाना शब्बीर अहमद।

नज्द : अब्दुल्लाह बिन बलीहद, हाफ़िज़ वहबा, यूसुफ़ यासीन।

हिजाज़ : रईस मुतमिर शरीफ़ शर्फ़ अदनान, हिजाज़ की भी

नियाबत करते थे।

जावा : उमर सईद चोकर दामी नातो, हाजी मन्सूर।

रूस : कशाफुद्दीन, मुस्लेहुद्दीन।

शाम : अब्दुल-ग़नी ऊनी बुक अकअकी।

फ़िलस्तीन : सैयद अमीन अल-हुसैनी।

उसैर : अब्दुल-अज़ीज़।

मिस्र : अबुल-अज़ाइम माज़ी (हुकूमते मिस्र के वफ़्द आने के बाद अल्लामा ज़वाहरी मिम्बर हुए)

सूडान : मुदस्सिर बिन इब्राहीम (हुकूमते मिस्र के वफ़्द के आने के बाद उनकी जगह अल्लामा ज़वाहरी मिम्बर हुए)।

इसके अलावा ओहदेदारान मुतमिर बहैसियत ओहदेदारान उनके मिम्बर थे, बाद हज हस्बे ज़ैल अस्हाब का उसमें इज़ाफ़ा हुआ।

तुर्की : अदीब सरवत बुक।

अफ़ग़ानिस्तान : जनरल ग़ुलाम जीलानी ख़ाँ।

यमन : हुसैन बिन अब्दुल-क़ादिर।

मिस्र : अल्लामा ज़वाहरी।

उनकी शिर्कत के बाद सूडान और मिस्र के दूसरे नुमाइन्दे लजना से ख़ारिज हो गये।

लजना के इंतिख़ाब के बाद मुतमिर का बाक़ायदा काम शुरू हो गया, सब से अहम इक़्तिराहात का तैयार करना था, जो इक़्तिराहात हमारी तरफ़ से पेश हुए, उनकी तफ़सील आगे पेश की जाएगी, इस सिलसिला में हम को दूसरे इस्लामी म्मालिक के नुमाइन्दों से बकसरत मिलने का, और इन से तबादल-ए-ख़्यालात का मौक़ा मिला, और बावजूद इन कोशिशों के जो मुख़्तलिफ़ म्मालिक के नुमाइन्दों में इत्तिफ़ाक़ राय और इत्तिहादे अमल को रोकने की जारी थीं। स्पैन में निहायत मुख़्लिसाना तअल्लुक़ात और मुफ़ीद खुशगवार मुअस्सिर और आइन्दा के लिए उम्मीद अफ़्ज़ा इत्तिफ़ाक़ राय और इत्तिहाद अमल क़ायम करने में कामयाबी हुई, इसमें हम को हमारे भाईयों के खुलूस, जोश, हुब्बे मज़्हब व मिल्लत व दानिशमन्दी से बहुत मदद मिली।

लेकिन कमेटी को खुशी होनी चाहिए कि उसके नुमाइन्दे अपने सही उसूल की पाबन्दी, एतदाल, सुलह जो रवैया और बेग़र्ज़ी से म्मालिके इस्लामी के इन

[...]इत्तिफ़ाक़ अनासिर को एक नुक़्ता पर लाने में कामयाब हुए।

हमारा हरगिज़ यह मक़्सद नहीं कि शुरका मुतमिर की गिरांनुमाया ख़िदमात की कम क़रदी करें, न हम नागवार इम्तियाज़ करना चाहते हैं, लेकिन यह महज़ इज़्हारे वाक़या है कि मुतमिर की तमाम अहम और दक़ीक़ क़रारदादों में से बेशतर नुमाइन्दगान जमीअ़तुल-उलमा और जमीअ़तुल-ख़िलाफ़ा की थीं, मुतमिर की कार्रवाई में हिन्दुस्तान ने निहायत नुमायाँ और मुम्ताज़ हिस्सा लिया और यही वजह थी कि मुख़्तलिफ़ुल-ख़्याल नुमाइन्दगान मुतमिर ने भी मुतमिर की कार्रवाई के इख़्तिताम पर इज्लासे आम में इस अम्र का एतराफ़ करते हुए नुमाइन्दगाने हिन्द की तारीफ़ की।

उस जगह हम को निहायत अफ़्सोस के साथ कहना पड़ता है कि लजना इक़्तिराहिया और मुतमिर की कार्रवाई दोनों में नुमाइन्दगाने नज्द का रवैया जो हुकूमते नज्द के आला हुक्काम और नामज़द शुदह मिम्बर थे, निहायत अफ़्सोसनाक था, जब कभी कोई ऐसा इक़्तिराह पेश किया गया, जिस को उनकी हुकूमत नहीं चाहती थी, तो उन्होंने उसको ख़ारिज रखने में किसी ज़रिया के इस्तेमाल करने में चाहे वह जाइज़ हो या नाजाइज़ उज़्र न किया, चुनांचे मआसर व मक़ाबिर के मुतअल्लिक़ रेज़ोलेशन लजना इक़्तिराहिया में भी पेश हो गये और मुतमिर में भी, लेकिन मुतमिर के आख़िरी दिन और कोई इक़्तिराह बाक़ी न रहा कि पेश हो, लेकिन वह इक़्तिराह पेश न किया गया, नुमाइन्दगाने नज्द की बराबर कोशिश जारी रही कि उस रेज़ोलेशन को टाल दिया जाए, हत्ता कि जब हमारी तरफ़ से एहतिजाज किया गया, तो उन हज़रात ने साफ़ कह दिया दिया कि उस से फित्ना व फ़साद पैदा होगा, उसको पेश नहीं होना चाहिए, लेकिन जब सूरत नाज़ुक हो गई और दूसरे म्मालिक के नुमाइन्दों ने भी सख़्ती से एतराज़ किया और हमारी ताईद की तो बिल-आख़िर तोअन व करहन पेश गिया गया और यह वर्ताव तन्हा इस रेज़ोलेशन के साथ नहीं किया गया।

अब हम इन तजावीज़ को ज़िक्र कर देते हैं, जिनको हमारी तरफ़ से मुतमिर में पेश किया गया, इन तजावीज़ की इबारत तय करने में हम को मुख़्तलिफ़ुल-ख़्याल शुरका मुतमिर का लिहाज़ रखना पड़ा, लिहाज़ा यह अल्फ़ाज़ वह हैं, जिन पर हम मुख़्तलिफ़ म्मालिक के

नुमाइन्दों को जमा कर सके, इन तजावीज़ के मुरत्तब करने में हम ने अल्फ़ाज़ और ज़बान पर इसरार को छोड़ कर सिर्फ़ मतलब का लिहाज़ रखा और उसूल को हाथ से जाने न दिया।

वह तजावीज़ जो हमारी तरफ़ से पेश हुईं और मुतमिर ने क़ुबूल कीं।

नोट : रेज़ोलेशन की असली इबारत जो बाद तरमीम वग़ैरह मुतमिर ने क़बूल की, मंगाने के मुतअल्लिक़ मुतअद्दिद मरतबा रईस मुतमिर साहब से दर्ख़्वास्त की गई, लेकिन अब तक दस्तियाब न हो सकी, लिहाज़ा सिर्फ़ इन रेज़ोलेशन की इबारत दी जाती है, जो मौजूद है।

तरजमा : मुझे उम्मीद है कि मुतमिर हस्बे ज़ैल तजावीज़ मन्ज़ूर करेगी।

(1) हत्तल-मक़्दूर बहुत जल्द मआसर मुन्हदिमा को बना दिया जाए।

(2) जो क़बरों गिरा दी गई हैं, उनकी तामीर और उनकी हैयत एक कमेटी पर जो सुन्नी शीआ उलमा से मुरक्कब हो छोड़ दी जाए, यही कमेटी इस मस्अला पर इंतिहाई ग़ौर से काम करेगी और इसका फ़ैसला आख़िरी होगा।

मुहरिक : मौलाना शौकत अली

मुअय्यद : शुऐब क़ुरैशी

(2) हरम में इमामत चारों मज़ाहिब के इमाम बारी-बारी से करें।

मुहरिक : शुऐब क़ुरैशी

मुअय्यद : मौलाना मुहम्मद अली

(3) जज़ीरतुल-अरब में ग़ैर मुस्लिमों को इक़्तिसादी इम्तियाज़ात न दिए जाएं।

मुहरिक : शुऐब क़ुरैशी

मुअय्यद : मौलाना मुहम्मद अली

इन बिलादे मुक़द्दसा में ग़ैर इस्लामी मुदाख़लत का सद्दे बाब करने के लिए यह मुतमिर ज़रूरी समझती है कि हिजाज़ में ग़ैर मुस्लिमों को किसी क़िस्म के इक़्तिसादी इम्तियाज़ात अता न किए जाएं और हर इस्लामी कम्पनी से भी मुआहदा करते वक़्त इन दो दफ़आत का इज़ाफ़ा किया जाए।

अलिफ़ : जब फ़रीक़ैन मुआहदा में इख़्तिलाफ़ हो, तो फ़रीक़ैन को अदालत हिजाज़ की तरफ़ रुजूअ् करना होगा और वह उसके फ़ैसला को तस्लीम करने पर मज्बूर होंगे।

(ब) कम्पनी के हिस्सेदारान को इजाज़त न होगी कि वह अपने हिस्से ग़ैर मुस्लिमों के हाथ फ़रोख़्त करें।

मुहरिक : शुऐब कुरैशी

मुअय्यद : मौलाना मुहम्मद अली

(4) अस्सेदाद गुलामी

मुहरिक : मौलाना किफ़ायतुल्लाह व शुऐब कुरैशी

मुअय्यद : मूसा जारल्लाह।

(5) जद्दा, मक्का, अरफ़ात के दर्मियान सड़क बनना चाहिए।

हिजाज़ में रेलवे लाइन की तामीर का जो फ़ैसला हम ने किया है, उसकी तक्मील के वास्ते बरसों की कोशिश और कसीरुल-माल दरकार है, इसलिए हमें चाहिए कि बतदरीज इस काम को शुरू कर दें, इस सिलसिला में हुकूमते हिजाज़ का अव्वलीन फ़र्ज़ है कि वह जद्दा से मक्का और मक्का से मदीना और अरफ़ात तक सड़कें हम्वार कराने का काम शुरू कर दे, ताकि उन पर मोटरें और गाड़ियाँ चल सकीं। नीज़ जिन मक़ामात पर क़ाफ़िले उतरते हैं, वहाँ सराएं बनवाने और ज़रूरी आराम व आसाइश के सामान मुहैया करे, यह छोटा सा काम इस बड़े काम की तम्हीद होगा, जो हज के रास्तों में रेलवे लाइन तामीर कराने के लिए हमारे पेशे नज़र है। इसलिए मुद्दत तक इंतिज़ार करना नागुज़ीर है।

मुहरिक : मौलाना शौकत अली

मुअय्यद : मौलाना सुलेमान नदवी

(6) तबलीग़ इस्लाम

मुहरिक : शुऐब कुरैशी

मुअय्यद : मौलाना मुहम्मद अली

(7) अमीर मिम्बर अपनी ज़बान में रेज़ोलेशन पेश कर सकता है।

मुहरिक : शुऐब कुरैशी

मुअय्यद : मौलाना मुहम्मद इरफ़ान

(8) आज़ादिए मज़्हब

मुहरिक : मौलाना किफ़ायतुल्लाह

मुअय्यद : मौलाना मुहम्मद अली

वह तजावीज़ जो पेश की गईं और बराहे रास्त लजना इक़्तिराहिया की तरफ़ से सुल्तान को बग़रज़ इत्तिला भेज दी गईं।

(1) मताफ़ व मुस्आ

मुहरिक : शुऐब कुरैशी

मुअय्यद : मौलाना इरफ़ान

वह तजावीज़ जो मुतमिर में पेश की गईं, लेकिन मन्ज़ूर न हुईं।

(1) क़त्ल मोमिन के ख़िलाफ़।

अल्लाह तआला ने अपनी (मुक़द्दस) किताब में इरशाद फरमाया है कि जो शख़्स क़सदन किसी मुसलमान को क़त्ल करे। उसकी जज़ा जहन्नम है, जिस में वह हमेशा रहेगा, उस पर ख़ुदा का ग़ज़ब और फ़टकार होगी और उस के लिए अल्लाह तआला ने बड़ा अज़ाब मुक़र्रर कर रखा है।"

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि मेरे बाद तुम लोग काफिर मत बन जाना, (इस तरह कि) एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को क़त्ल करने और फरमाया आपने जो शख़्श लोहे से अपने भाई की तरफ़ इशारा करता है, मलाइका उस पर लानत करते हैं और फरमाया आप ने मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ और उसका क़त्ल करना कुफ़्र है और फरमाया आपने हर मुसलमान का ख़ून माल और आबरू, दूसरे पर हराम है और फरमाया आपने कि तुम्हारे ख़ून तुम्हारे माल और तुम्हारी आबरू तुम लोगों पर हराम हैं, जिस तरज आज के दिन, इस महीने और इस शहर में हराम है, लिहाज़ा मुतमिर हर मुसलमान से जो अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और क़्यामत के दिन पर ईमान रखता है, दर्ख़्वास्त करती है कि दीगर मुसलमानों का ख़ून, माल व मताअ् और आबरू अपने लिए हराम समझे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फरमान को कि मोमिन की मिसाल (बाहमी मुहब्बत व मुवद्दत में) एक जिस्म की तरह है। हर आन और हर वक़्त अपना नसबुल-ऐन बनाए।

मुहरिक : शुऐब कुरैशी

मुअय्यद : मौलाना मुहम्मद अली

चूंकि इस मस्अला का ज़िक्र दावत नामा में न था और उनकी

हुकूमतों की तरफ़ से उन को इस बारह में कोई हिदायत न दी गई थी। इसलिए तर्क, अफ़ग़ान, यमनी और मिस्री नुमाइन्दों ने इस मस्अला में राय देने से एहतराज़ किया।

(2) मुआहदात मा बैन हिजाज़ व दोल ग़ैर बग़रज़ इत्तिला पेश किए जाएं।

तरजमा : मैं तज्वीज़ पेश करता हूँ कि मुतमिर, हुकूमते हिजाज़ से दर्ख़्वास्त करे कि मुआहदात काग़ज़ात रस्मी जिन का किसी इलाक़ा से तअल्लुक़ हो और जिसे हुकूमते मौजूदा या साबेक़ा ने दीगर हुकूमतों के साथ क़ायम किया हुआ अगर उसे दस्तियाब हों, तो उसे शाए कर दे।

मुहरिक : मौलाना मुहम्मद अली

मुअय्यद : मौलाना शौकत अली

(नुमाइन्दगाने हुकूमते नज्द ने उसको सियासी मुदाख़लत क़रार देकर उन दस्तावीज़ात के पेश करने से इंकार किया और कहा कि यह मुआमला मुतमिर में पेश नहीं हो सकता।)

वह तजावीज़ जो लजना इक़्तिराहिया ने नामज़ूर कर दें

(1) हिजाज़ में क़नासिल मुसलमान होने चाहिएं।

तरजमा : सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वसीयत के मुताबिक़ जिसकी आपने ऐसे वक़्त में वसीयत की थी, जबकि बिस्तरे विसाल पर आराम फरमा रहे थे, यह मुतमिर एलान करती है हिजाज़ के मुक़द्दस मक़ामात में ग़ैर मुस्लिम लोगों की सुकूनत को मुसलमान पसन्द नहीं करते और इसलिए मुतमिर उन हुकूमते अजनबीया से जो हिजाज़ में क़नासिल रखना चाहती हैं उम्मीद करती है कि क़नासिल मुसलमान मुन्तख़ब किए जाएं।

मुहरिक : मौलाना मुहम्मद अली

मुअय्यद : मौलाना शौकत अली

(2) आज़ादि-ए-जज़ीरतुल-अरब

मुहरिक : नुमाइन्दगान जमीअतुल-उलमा हिन्द

मुअय्यद : जमीअतुल-खुलफ़ा हिन्द, फ़लस्तीन व शाम

उसके अलावा ज़ैल की वह जावीज़ हैं जो औरों की तरफ़ से पेश हुई, लेकिन हम ने उनकी ताईद या तरमीम की।

(1) इस्लाह अहवाले सहीहा

(2) हिजाज़ रेलवे की वापसी

(3) कुरबानी के ज़बीहा के मुतअल्लिक़

(4) जद्दह व मक्का और मक्का व मदीना के दर्मियान रेलवे लाइन बनाने के मुतअल्लिक़।

(5) उक़्बा व मुआविन की वापसी के मुतअल्लिक़।

(1) हुकूमते नज्द के नुमाइन्दों ने हिजाज़ में हथियार लगाने के ख़िलाफ़ तज्वीज़ पेश की, लेकिन चूंकि उसका निफ़ाज़ सिर्फ़ ग़ैर नज्दियों के ख़िलाफ़ ही होता और चूंकि ऐसी सूरत में मुसलमान अदाइगी फ़रीज़-ए-जिहाद के लिए आमादा व मुस्तइद न रह सकते थे, लिहाज़ा हम ने मुख़ालिफ़त की, बिल-आख़िर तज्वीज़ नामन्ज़ूर हुई।

(1) यह तज्वीज़ पेश की गई थी कि रेलवे लाइन की तामीर और तदाबीर सेहत की तक्मील के लिए हुज्जाज से (1) बन्दर्गाह जद्दह पर उतरते ही 20 कुरूश और लिए जाएं। (2) ऊंट, मोटर और खच्चर पर मज़ीद टैक्स के नाम से रुपया लिया जाए। (3) मिना में हर कुरबानी पर दस कुदश वसूल किए जाएं। हम ने कहा कि इन तमाम कामों के लिए जो कुछ लिया जाए बरज़ामन्दी बतौर चन्दा साहब इस्तिताअत से लिया जाए, जबरिया टैक्स की सूरत में जो अदाइगी फ़रीज़ा में दुश्वारी पैदा करे न लिया जाए, हमारी मुख़ालिफ़त पर तज्वीज़ नामज़ूर हुई।

नए क़वानीन की रू से, चूंकि नामूस आम (जनरल सिक्रेट्री) और लजना तन्क़ीदीया के इंतिख़ाब मुतमिर के आख़िरी दिन होना चाहिए थे, लिहाज़ा 5 जुलाई को उन ओहदेदारान के इंतिख़ाब का मस्अला पेश हुआ, मगर चूंकि बरवक़्त बिला मज़ीद मशवरा और तलाश के ऐसे अहम ओहदों के वास्ते नाम पेश नहीं किए जा सकते थे, लिहाज़ा इस कार्रवाई को तीन महीने के लिए मुल्तवी किया गया और सिर्फ़ यह तय किया गया कि लजना तन्क़ीदीया के मिम्बरों में एक तुर्क, एक मिसरी एक हिन्दुस्तानी, एक हिजाज़ी, एक नज्दी और एक शाम और फ़िलस्तीन से होगा और हर मुल्क वाले अपने-अपने नुमाइन्दे को नामज़द करके भेज देंगे, नामूसे आम के लिए दो नाम पेश किए गये हैं, एक अमीर

शकीब अरसलान का और दूसरा शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ शादेश का, लेकिन उनके इस्तिम्ज़ाज के बग़ैर इसका फ़ैसला नामुम्किन था, लिहाज़ा इस मस्अला को भी मुल्तवी रखा गया, इस तरह मुतमिर की कार्रवाई ख़त्म हो गई।

मुतमिर हर साल होनी चाहिए

यह वह बातें हैं जो क़दीम और बड़ी से बड़ी जमाअतों में मौजूद हैं, मुतमिर का यह पहला ही साल था और इन्शाअल्लाह रफ़्ता-रफ़्ता इन तमाम नक़ाइस का इज़ाला हो जाएगा, इनकी वजह से मुतमिर की अहमीयत कम नहीं हो सकती और न उसकी दिल्चस्पी में कमी होनी चाहिए।

मुतमिर का हर साल होना ज़रूरी है, इस वास्ते कि जैसा हम शुरू में कह चुके हैं। मुसलमानों के तमाम इज्तिमाई व मज़्हबी मुश्किलात और ख़ास कर हिजाज़ के मसाइल के हल और इत्तिहाद के हुसूल का वाहिद जरिया मुतमिर है।

हम को चाहिए कि लजना तन्क़ीदीया को जल्द से जल्द क़ायम करके उसको हत्तल-इम्कान क़वी और मुस्तहकम बनाने की कोशश करें, ताकि वह मुसलमानों की ख़्वाहिशात के पूरा करने और मफ़ादे इस्लामी की हिफ़ाज़त व निगरानी का मुअस्सिर कारगर आला हो जाए।

यह रिपोर्ट नाक़िस रहेगी अगर हम अपने इन भाईयों की मुहब्बत व खुलूस और मुफ़ीद मशवरा और मदद का शुक्रिया अदा न करें, जो तुर्की, अफ़्ग़ानिस्तान, मिस्र, यमन, जादह, रूस, शाम, फ़िलस्तीन और सूडान वग़ैरह से अपने-अपने म्मालिक के नुमाइन्दे हो कर आए थे, इन सब में इम्तियाज़ करना दुश्वार है, लेकिन सैयद अमीन अल-हुसैनी रईसुल-वफ़्द फ़िलस्तीन और अश्शैख़ उजाज नौ बहज़ कातिबुल-वफ़्द फ़िलस्तीन का ख़ास तौर पर शुक्रिया अदा करना चाहते हैं, अव्वलुज़्ज़िक्र ने अपनी तदबीर और असर से मुतअद्दिद मरतबा पेचीदा से पेचीदा गुत्थियों को सुल्झाया और बहुत से नाज़ुक मसाइल को बहुस्न व ख़ूबी तय कराने में मदद दी, मुअख़्ख़रुज़्ज़िक्र अगर न होते और अपनी बिरादराना मेहनत और खुलूस से अपनी ग़ैर मामूली लुग़त अरबी व अंग्रेज़ी की वाक़्फ़ीयत को हमारे लिए वक़्फ़ करके हमारी तरजमानी की

ज़हमत गवारा न करते तो हम इस मुअस्सिर तरीक़ा से मुसलमानाने हिन्दुस्तान के जज़्बात और मुतालिबात की तरजमानी करने से क़ासिर रहते, क्योंकि उर्दू से अरबी में तरजमा करने के लिए किसी अह्ल ज़बान का मिलना दुश्वार था और अरकान मुतमिर में से दोनों ज़बान के जानने वाले खुद बहस व मुबाहसा में हिस्सा ले रहे थे, जिस की वजह से उन पर यह बार न डाला जा सकता था।

हम को अफ़्सोस है कि हम कमेटी और पब्लिक को वफ़्द की कोशिशों और मुतमिर की कार्रवाई से वक़्तन फ़वक़्तन जैसा चाहिए था आगाह न कर सके, लेकिन इसकी वजह यह थी कि हुकूमते नज्द ने यह उज़्र करके तार लिसान रमज़ी (कोड) में हैं, उनके भेजने से इंकार कर दिया, हालांकि कोड की किताब और तार के मामूली ज़बान में माना तार के हम्राह भेजे जाते थे और इस से पहले इसी कोड में वही दफ़्तर हमारा तार एक भेज चुका था।

इस हुक्म की असली वजह यह थी कि हुकूमते नज्द नहीं चाहती थी कि मुतमिर की वह कार्रवाई जो उसे नापसन्द हो, या कोई इत्तिला जो उसके ख़िलाफ़ हो बैरूनी दुनिया को भेजी जाए और हत्तल-मक़्दूर उसको रोकने की आख़िर तक कोशिश करती रही। इसी ग़रज़ से हमारी ख़त व किताब पर संसर मुक़र्रर किया गया था जिसकी हम को निहायत मोतबर ज़रिया से ख़बर मिली थी।

सुल्तान इब्ने सऊद से मुलाक़ात

ऐन उस वक़्त ख़बर जो हम को मिली, वह यह थी कि मदीना मुनव्वरा में जन्नतुल-बक़ीअ् के मज़ारात के कुब्बे गिरा दिए गये, इस ख़बर ने हम लोगों पर एक बिजली सी गिरा दी, साहिल पर उतर कर जद्दह में उस ख़बर की पूरी तौसीक़ हो गई, जहाज़ पर हुकूमत की तरफ़ से जद्दह के हुक्काम और आयान ने हमारा इस्तिक़्बाल किया और शैख़ मुहम्मद नसीब के घर हम को मेहमान उतारा गया। थोड़ी देर के बाद टेलीफ़ोन पर मक्का से सुल्तान ने हम को खुश आम्दीद कहा। हम ने रस्मन उनकी इनायत व मेहरबानी का शुक्रिया अदा किया और दूसरे दिन मक्का मुअज़्ज़मा में सुल्तान से हमारी पहली सरकारी मुलाक़ात 27

मई 1926 ई० को हुई। ख़िलाफ़त और जमीअ़तुल-उलमा के अरकान सब साथ मिल कर गये, इस मुलाक़ात में ज़्यादा तर रस्मी तौर से बाहमी सलाम व तहनियत और मिज़ाज पुर्सी होती रही और रईसे वफ़्द ने हमारी तरफ़ से उनकी इनायतों और मेहरबानियों का शुक्रिया अदा किया और हिजाज़ के मुआमलात के लिए मुतमिर के इंएक़ाद की तहसीन की और उसकी अहमीयत जताई, मौलाना शौकत अली साहब ने मौक़ा से यह कहा कि हिजाज़ के मुआमला में सब से अहम यह है कि ग़ैरों को उसमें मुदाख़लत का मौक़ा न दिया जाए, यह तमाम दुनियाए इस्लाम की दौलत है और यह तन्हा किसी की मिल्क नहीं, इसी सिलसिला में कहा कि मुम्किन है कि आप हर चीज़ पर हम से बेहतर इल्म रखते हों, लेकिन एक चीज़ हम आप से बेहतर जानते हैं, यानी ग़ैर क़ौमों को हम आप से बेहतर जानते हैं, क्योंकि डेढ़ दो सौ बरस से हम को उनका तजरबा है, सुल्तान ने कहा कि हम ने अपनी हुकूत के लिए दो उसूल ऐसे मुक़र्रर किए हैं जो हमेशा के लिए नाक़ाबिले तब्दीलल हैं, एक यह कि हमारा मरजा किताब व सुन्नत का फ़ैसला होगा, दूसरा यह कि हमारी हुकूमत में अजनबी की मुदाख़लत किसी हालत में गवारा न होगी, मौलाना मुहम्मद अली साहब ने कहा कि दो उमूर आपके ज़ेहन नशीन हो जाने चाहिएं, एक यह कि हम मुश्रिक नहीं और किताब व सुन्नत पर हमारा भी ईमान है, दूसरा यह कि हिजाज़ तमाम मुसलमानों का है, इसलिए हम यहाँ अजनबी नहीं और हिजाज़ की ख़िदमत करना, हमारा अश्आर होगा। मौलाना सैयद सुलेमान साहब ने सुल्तान को मुख़ातब करके कहा कि दुनिया में कौन ऐसा मुसलमान है, जिसको किताब व सुन्नत से एराज़ हो, जहाँ तक अल्फ़ाज़ का तअल्लुक़ है तमाम मुख़्तलिफ़ इस्लामी फ़िर्क़े उनको यक्सां तस्लीम करते हैं और उनको क़ुबूल करते हैं, बहस जो कुछ है वह उनके मानी में है, हर फ़िरक़ा उसका मुद्दई है कि वह किताब व सुन्नत के मुताबिक़ है, कोई ऐसा फ़िरक़ा भी है, जो यह कहता हो कि हम किताब व सुन्नत से रूगरदान हैं और किसी हुक्म को किताब व सुन्नत के मुताबिक़ समझते हुए भी हम उसकी मुख़ालिफ़त करते हैं, बल्कि इख़्तिलाफ़ ख़ुद तावील और तफ़्सीर में है, या अहादीस की तज़्ईफ़ व तौसीक़ में है। या दलाइल की क़ुव्वत व ज़ुअ़फ़ में है और यह इख़्तिलाफ़ नया नहीं है, बल्कि हमेशा का है,

इसलिए यह मुनासिब नहीं कि एक फ़िर्क़ा दूसरे फ़िर्क़ा को दलाइल के बजाए कुव्वत के ज़ोर से अपने मसाइल तस्लीम कराते, खुद अहले सुन्नत में मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़े हैं और उनमें आरा व मसाइल का भी इख़्तिलाफ़ है, इसलिए यह मौक़ा नहीं कि हम इस मौजूदा कशमकश के ज़माना में इन मसाइल को छेड़ें, इस वक़्त हम को ज़रूरत है कि कुफ़्र के मुक़ाबला में तमाम इस्लामी फ़िर्क़ों को यक्जा करें, न यह कि इन बाहमी इख़्तिलाफ़ात को ज़्यादा बढ़ाएं, इसी सिलसिला में मौलाना शब्बीर अहमद साहब रुक्न जमीअतुल-उलमा ने फरमाया कि तावील व तफ़्सीर के इख़्तिलाफ़ात मौजूद हैं और उसकी मिसालें दें और फ़िक़्ही हैसियत से यह तफ़्तीश पेश की गई उमूर में शिर्क और कुफ़्र का फ़त्वा देना चाहिए और किन में नहीं, फिर मौलाना किफ़ायतुल्लाह साहब सदर वफ़्द जमीअतुल-उलमा ने आख़िर में सुल्तान का शुक्रिया अदा किया और इत्तिहाद व मुहब्बत का पैग़ाम दिया। आख़िर में सुल्तान ने कहा कि बेहतर हो कि इन उमूर में आप हमारे यहाँ के उलमा से गुफ़्तगू कर लेते, मैं मुंफ़िज़ हूँ, मुफ़्ती नहीं, हमारे उलमा-ए-कुरआन व हदीस के मुताबिक़ जो फ़ैसला करते हैं। मैं उसको नाफ़िज़ कर देता हूँ, इसी गुफ़्तगू पर हमारी पहली मुलाक़ात ख़त्म हुई।

दूसरी मुलाक़ात

हमने अपनी पहली मुलाक़ात को इस बिना पर कि इसमें शुरका की कसरत थी और दीगर हिजाज़ी और नज्दी हज़रात व मुशीरान कार मौजूद थे, इज़्हार मतलब के लिए काफी नहीं समझा इसलिए दूसरे दिन उन से तन्हाई की मुलाक़ात की ख़्वाहिश की और सुल्तान ने उसका मौक़ा दिया बिना बरीं सैयद सुलेमान नदवी साहब व मौलाना शौकत अली साहब, मौलाना मुहम्मद अली साहब और मौलाना किफ़ायतुल्लाह साहब २८ मई १९२६ ई० की सुबह को सुल्तान से मिलने गये, आज वफ़्द के अरकान ने निहायत सफ़ाई से अपने ख़्यालात पेश किए और मज्लिसे ख़िलाफ़त की तजावीज़ का ज़िक्र किया, सुल्तान के वादे याद दिलाए, खुसूसियत के साथ शौकत अली साहब के इत्तिहाद इस्लामी और हिजाज़ के मुश्तरक हमर के साथ दुनियाए इस्लाम के तअल्लुक़ात का ज़िक्र किया और कहा कि इस वक़्त ज़रूरत है कि तमाम मुसलमान

मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ हों, न यह कि उनमें मज़्हबी इख़्तिलाफ़ पैदा किया जाए, आपने कुब्बों, मआसिर और मज़ारात के इंहिदाम को जो तरज़े अमल अख़्तियार किया है, उसका नतीजा यह होगा कि तमाम मुसलमानों में नए सिरे से अक़ाइद की ख़ाना जंगी शुरू हो जाएगी, हम ने बड़ी मुश्किलों से अपने मुल्क में उन ख़ाना जंगियों का ख़ात्मा किया है और तमाम इस्लामी फ़िर्क़ों को मिला कर एक मुत्तहिदा सफ़ क़ायम की है, लेकिन इस तरज़े अमल से जो आप अख़्तियार कर रहे हैं, हमारी कुव्वतें दोबारा मुंतशिर और परागन्दा हो जाएंगी और तमाम दुनियाए इस्लाम ख़ाना जंगियों की दूसरी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाएगी। अलावा अज़ीं यह मुल्क तमाम मुसलमानों का मुश्तरेका हरम है। यहाँ कोई इस्लामी फ़िर्क़ा इस बात का हक़ नहीं रखता कि वह सिर्फ़ अपने ख़्याल के मुताबिक़ इस हरम और आसार मुतबर्रेका और मक़ाबिर व मुशाहिद में ऐसा तसर्रुफ़ करे, जो दूसरे फ़िर्क़ों के नज़्दीक सही नहीं। हम किसी सूरत में यह तस्लीम नहीं कर सकते कि मज़्हब इस्लाम के अहम मसाइल का फ़ैसला सिर्फ़ नज्द के चन्द उलमा के हाथों में दे दें हम ने शिकायतन कहा कि मदीना मुनव्वरा के मक़ाबिर व मआसिर का हम से वादा किया गया था और कहा गया था कि मुतमिर इस्लामी के फ़ैसला के बेग़ैर उसके मुतअल्लिक़ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी, लेकिन यह किस क़द्र तअज्जुब अंगेज़ है कि उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी की गई और दुनियाए इस्लाम की ख़्वाहिश के बरख़िलाफ़ उसके इस्तिस्वाब के बेग़ैर उनको मुन्हदिम कर दिया गया, सुल्तान ने कहा कि आपने जो कुछ कहा वह सही है और मैं भी दिल से यही चाहता था, लेकिन मुश्किल यह है कि आप लोग हमारी क़ौम से वाक़िफ़ नहीं हैं, हमारी क़ौम के मुतअस्सिब क़बाइल ने हम को धमकी देकर लिखा कि हम ने हिजाज़ में जिहाद इसलिए किया था और जान व माल इसलिए कुरबान किया था कि किताब व सुन्नत को क़ायम किया जाए और मरासिमे शिर्क का इस्तीसाल हो, इसलिए कुरबान किया था कि किताब व सुन्नत को क़ायम किया जाए और मरासिमे शिर्क का इस्तीसाल हो, इसलिए जल्द अज़ जल्द इन कुब्बों और इमारतों को मुन्हदिम कर दिया जाए, वरना हम आ कर उनको अपने हाथों से गिरा देंगे, अब हमारे लिए दो ही चार-ए-कार थे। एक यह कि हम उनको बज़ोर रोकें और दूसरे यह कि

हम उनको खुद उसकी इजाज़त दे दें, पहली सूरत में एक ख़ाना जंगी पैदा हो जाती दूसरी सूरत में फ़ित्ना व फ़साद पैदा होता, अह्ले मदीना को तकालीफ़ का सामना करना पड़ता और शायद दीगर इमारतों को सदमा पहुंचता, फिर हम ने यह देखा कि उनका मुतालबा ग़ैर शरई नहीं है, बल्कि जो कुछ वह चाहते हैं, वह खुदा और रसूल के हुक्म के मुताबिक़ है और किताब व सुन्नत के ऐन मुवाफ़िक़ है। इस बिना पर मैंने क़ाज़ियुल-कुज़ात से ख़्वाहिश की कि वह खुद मदीना जा कर इस काम को अंजाम दें और जो चीज़ खुदा व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ है, उसमें किसी मुसलमान को इख़्तिलाफ़ न होना चाहिए, मौलाना मुहम्मद अली साहब ने सुल्तान की तवज्जोह दुनिया की मौजूदा हालत की तरफ़ मब्ज़ूल कराई और कुफ़्फ़ार की ताक़त और मुसलमानों की कम्ज़ोरी का दर्दनाक मुरक़्क़ा खींचा और फिर आलमे इस्लाम के इस हिस्सा की आरज़ुओं और उम्मीदों को ज़ाहिर किया, जो बहम्दुलिल्लाह बेदार हो चुका था। इन मुसलमानों की बार-बार उम्मीदें बंधीं, लेकिन एक बार भी पूरी न हुईं शब में उनकी आंखें निहायत बेताबी और बेसब्री से एक शुआअ् उम्मीद की मुतलाशी थीं, बार-बार सुबह काज़िब ने उन्हें धोखा दिया, मगर सुबह सादिक़ नमूदार न हुई, आख़िरी बार उनकी नज़र खुद सुल्तान पर पड़ी और उनकी उम्मीदें सुल्तान की ज़ात से वाबस्ता हो गईं, वह सुल्तान से बड़ी-बड़ी तवक़्क़ुआत रखते थे और सुल्तान के मुतअल्लिक़ उनके दिल में बड़ी-बड़ी तमन्नाएं और आरज़ुएं थीं और वह सुल्तान को मलकुल-हिजाज़ के मन्सब से कहीं ज़्यादा जलीलुल-क़द्र मन्सबे इस्लामी पर देखने के मतवक़्क़ु थे, उन्होंने सुल्तान से कहा कि आप क्यों इस छोटे से मन्सब पर राज़ी हो गये और उसके हुसूल को अपना मत्महे नज़र बना लिया उन्होंने ग़ालिब का शेअ्र -

तौफ़ीक़ बअन्दाज़-ए-हिम्मत है अज़ल से
आंखों में है वह क़तरा कि गौहर न हुआ था

पढ़ कर कहा कि वह क़तरा जो सदफ़ में जा कर मोती ही बनने पर क़ाने है, पेरिस की रक़्क़ासा के गले की ज़ीनत भी बन सकता है, लेकिन हम चाहते हैं कि सुल्तान वह क़तर-ए-आब हों जो एक मुसलमान की आंख का आंसू बन कर रौज़-ए-रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर गिराया जाए।

सैयद सुलेमान साहब ने मक़ाबिर व मआसिर के मुतअल्लिक़ सुल्तान से इल्मी गुफ़्तगू की और कहा कि मज़्हबी हैसियत से मक़ाबिर व मआसिर दोनों की अलग-अलग हैसियतें हैं, मक़ाबिर की तामीर और बिना के मुतअल्लिक़ अहादीस और फ़िक़्ह में तस्रीही अल्फ़ाज़ मुमानेअ़त के मिलते हैं। गो एक फ़रीक़ उनकी तावील करता है और वह ऐसा नहीं समझता, ताहम उसकी एक शरई हैसीयत है और इसलिए ज़रूरत है कि उलमाए इस्लाम के सामने खुले तरीक़े से इस मस्अला को पेश करके उनके मुतअल्लिक़ फ़तवा तलब किया जाए जो यक़ीनन कसरते तादाद के लिहाज़ से हक़ के ख़िलाफ़ न होगा, लेकिन मआसिर, यानी वह मक़ामाते मुक़द्दसा जिनको आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या सहाब-ए-किराम से कोई ख़ास निस्बत है, उनकी हिफ़ाज़त या उनकी तामीर देना कि मुमानेअत से अहादीसे नबवी का दफ़्तर तमाम तर ख़ाली है, उस पर अगर बहस हो सकती है, तो सिर्फ़ उनकी सेहते इस्नाद या अद्मे सेहत से, अल्बत्ता उन मआसर में अगर जाहिल मुसलमान ऐसे आमाल करें जो शरअ़ के ख़िलाफ़ हों, तो मिस्ल दूसरी चीज़ों के यह हुकूमत का फ़र्ज़ है कि वहाँ ऐसे निगरां या पुलिस के सिपाही मुक़र्रर करे जो ज़ाइरीन को इन आमाल से बाज़ रखें, सुल्तान ने उसके जवाब में कहा कि मैं मज़्हबी आलिम नहीं हूँ, इसलिए इसका जवाब नहीं दे सकता, आप इस बारे में हमारे उलमा से गुफ़्तगू कीजिए और इसलिए उलमा की एक मज्लिस तरतीब देने का ख़्याल है।

तीसरी मुलाक़ात

तीसरी बार हम में से दो अरकान शौकत अली, मुहम्मद अली, जनाब शैख़ अबुल-अज़ाइम माज़ी के हम्राह सुल्तान से जा कर ले, इस मुलाक़ात को शैख़ अबुल-अज़ाइम ने सुल्तान से ख़त व किताबत के ज़रिया से तय किया था और तय करने के बाद हम से अपने हम्राह चलने की दर्ख़्वास्त की, शैख़ अबुल-अज़ाइम मिस्र में वादी नील की ख़िलाफ़त कमेटी के बानी और सदर में और हम से और हमारी जमीअत से मुहब्बत करते थे, उनका मन्शा यह था कि बीच में पड़ कर हमारी जमीअत और सुल्तान के दर्मियान कोई समझौता करा दें, उनके पास सुल्तान के मुक़र्रेबीन में से एक साहब तशरीफ़ लाए थे और उन

से कहा था कि जमीअत ख़िलाफ़त और सुल्तान के दर्मियान कुछ ग़लत फ़हमी थी जिसे सुल्तान दूर करना चाहते हैं हम ने कहा कि अगर सुल्तान हम से फिर मिलना चाहते हैं, ताकि गुफ़्तगू करने से किसी नतीजा पर पहुंचें, तो हम खुशी से जाने को तैयार हैं, उन्होंने जवाब दिया कि सुल्तान मिलना चाहते हैं। हम को शुरू की दो मुलाक़ातें करने के बाद उसकी बहुत कम उम्मीद थी कि सुल्तान इब्ने सऊद हमारे दोनों अहम मस्अलों यानी तशकीले हुकूमते हिजाज़ और मआसर और मक़ाबिर की दोबारा तामीर में कोई तशफ़्फ़ी आमेज़ जवाब दे सकेंगे, ताहम अगर कोई माकूल सूरत निकल सके, जिस से जमीअत ख़िलाफ़त के इन अहकाम की तामील करा सकते, तो उसके लिए हम हर तरह तैयार थे। शैख़ अबुल-अज़ाइम साहिबे सुल्तान के पास बैठे थे हमारे अरकान दूसरी तरफ़ कुछ फ़ासिले पर बैठे थे, अव्वल गुफ़्तगू सुल्तान और शैख़ अबुल-अज़ाइम के दर्मियान होती रही और अरकान ख़ामोश बैठे सुन रहे थे, शैख़ अबुल-अज़ाइम की ख़्वाहिश थी कि अगर हम सुल्तान की इम्दाद कर सके या उन से तशफ़्फ़ी पा सके, तो उन में उनकी खुशी और नेक नामी दोनों की थी, इसलिए उनकी गुफ़्तगू सुल्तान की मदह व तौसीफ़ से शुरू हुई थी उसके दर्मियान में हमारे इख़्लास और जोश इस्लामी की भी तारीफ़ थी इस मुलाक़ात में सुल्तान इब्ने सऊद ज़्यादा जोश और कुछ ग़ैज़ में भी मालूम होते थे, क्योंकि उन्होंने अपनी गुफ़्तगू में ज़रा ज़ोर की आवाज़ से कहा कि मैं तैयार हूँ कि हिजाज़ को छोड़ कर चला जाऊं, बशर्ते कि शौकत अली, मुहम्मद अली अपनी फौजें लाएं और अमने हिजाज़ की ज़िम्मेदारी ले लें, जिस पर हम में से शौकत अली साहब ने मज्बूर हो कर गुफ़्तगू में शिर्कत की और शैख़ अबुल-अज़ाइम के हम्राहियों में से मुहम्मद कामिल साहब के ज़रिया से सुल्तान से अर्ज़ किया कि वह अमीर हैं और हम फ़क़ीर, वह साहिबे सलफ़ हैं, जिस का वह बार-बार ज़िक्र कर चुके हैं और हमारी गर्दन में गुलामी का तौक़ है, लेकिन उनकी तरह हमारे दिलों में भी इस्लाम की ख़िदमत का शौक़ और उसकी मुहब्बत मौजूद है। और हम भी जान व माल कुरबान करने को हर वक़्त तैयार हैं, आज हम कोई इंतिज़ाम यहाँ के अमन का नहीं कर सकते, लेकिन खुदा के फ़ज़्ल पर भरोसा

करके यह कह सकते हैं कि इन्शाअल्लाह आइन्दा उसका इंतिज़ाम हो सकेगा, इस वक़्त हम सुल्तान के सवाल का सही जवाब दे सकेंगे।

हम ने अर्ज़ किया कि मज़ारात के मुतअल्लिक़ आप अपनी क़ौम से यह कह सकते हैं कि उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ आपने मज़ारात को मुन्हदिम करा दिया और उनकी खुशी पूरी कर दी, लेकिन हिजाज़ मुसलमानों का मुश्तरक और मुक़द्दस मरकज़ है और उसके बारे में आलमे इस्लाम को फ़ैसला करने का हक़ है, इस लिए मज़ारात के मस्अला को आलमे इस्लामी के उलमा पर छोड़ देना चाहिए और उनका फ़ैसला उस बारह में क़तई होगा, आलमे इस्लाम उसको कभी क़ुबूल नहीं कर सकता कि उसके उलमा की राय की कोई उक़्अत न हो और सिर्फ़ नज्द के उलमा जो चाहें, उस मुश्तरेका हरम में कर गुज़रें, गुफ़्तगू तेज़ थी, सुल्तान ने हमारी माक़ूल तज्वीज़ का यह जवाब दिया कि मैं उलमा-ए-आलम से मशवरा करूंगा, मगर अख़ीर में यह देखूंगा कि उनका फ़ैसला इत्तिबा हुवा पर तो नहीं, इस पर मुहम्मद अली साहब ने पूछा कि उसको किस तरह जांचिएगा। जवाब सुल्तान ने यह दिया कि किताब और सुन्नत एक है, मगर उसकी तफ़्सीर व तावील में इख़्तिलाफ़ होता है और बहरहाल तमाम आलम के उलमा की तफ़्सीर व तावील यक़ीनी तौर पर उलमा-ए-नज्द की तफ़्सीर व तावील के मुक़ाबला में ज़्यादा मोतबर होनी चाहिए, तो फिर मुबहम अल्फ़ाज़ में सुल्तान ने वही किताब व सुन्नत का ज़िक्र किया और आख़िरी फ़ैसला अपने ही हाथ में रखना चाहा।

बाहर निकलने के बाद हम से शैख़ अबुल-अज़ाइम माज़ी ने एक और बात कही जिसका तज़्किरा करना यहाँ ज़रूरी मालूम होता है और जिस से एक अजीब व ग़रीब ज़हनियत का पता चलता है, शैख़ अबुल-अज़ाइम ने मुझ से यह कहा कि जमीअ़त ख़िलाफ़त और शौकत अली व मुहम्मद अली और उनकी जमाअत जो जम्हूरियत की मुवाफ़िक़त में ज़ोर देते हैं, तो उसमें उनकी ज़ाती अर्ज़ी पोशीदा है। वह यह चाहते हैं कि जम्हूरियत हिजाज़ का पहला सदर खुद शौकत अली हो।

इस ख़बर को सुनने के बाद सुल्तान से गुफ़्तगू का मौक़ा नहीं आया, मगर उनके मुक़र्रेबीन से हम ने कह दिया कि अगर हम को ज़ाती मन्फ़अत मन्ज़ूर होती, तो उसको पूरा करने के लिए हिजाज़ आने

ज़रूरत न थी, जहाँ दौलत व सरवत की जगह रेत और ऊंट की मेंगनियाँ होती हैं, ऐश व आराम के सामान तो हिन्दुस्तान में बदरज-ए-औला मौजूद थे, अगर हम को दुनियावी हविस होती तो हम हिजाज़ न आते और इस जद्दो जहद में न पड़ते, वहाँ अंग्रेज़ों से दोस्ती करते, ऐश व आराम का सामान मुहैया करते हम को और हमारी जमाअत को हिजाज़ से कुछ लेना मन्ज़ूर नहीं, हम हिजाज़ को कुछ न कुछ देने आए हैं, यहाँ से सिवाए जन्नत के कुछ लेना नहीं चाहते, हम को हिजाज़ मुक़द्दस में हुकूमत का शौक़ नहीं है, अगर जारोब कशी और गन्दगी और मैला उठाने वालों की ज़रूरत हो, तो हम फ़ख्र के साथ मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा की यह ख़िदमत क़बूल करके नजाते दारैन हासिल करेंगे, जहाँ तक हम ने तहक़ीक़ात की है, कोई वजह नहीं मालूम होती कि शैख़ अबुल-अज़ाइम की इस गुफ़्तगू को हम झूठ समझें और सुल्तान के मुक़र्रेबीन मेंसे जिन से उसका ज़िक्र किया गया एक ने भी उसकी तरदीद नहीं की।

आख़िरी मुलाक़ात

गो सुल्तान से से उसके बाद भी कई दफ़ा मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर मुलाक़ातें हुईं, मगर उनमें मुआमलात के मुतअल्लिक़ कोई बाज़ाबता गुफ़्तगू नहीं हुई, इसलिए उनका ज़िक्र ज़रूरी नहीं, आख़िरी मुलाक़ात मुतमिर के ख़त्म होने के बाद मक्का से रवानगी के दिन 6 जुलाई 1926 ई० को हुई।

इस मुलाक़ात का इंतिज़ाम शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ अतीक़ी ने किया था और वही लेकर हम सब लोगों को जिन में अरकाने जमीअ़तुल-उलमा भी थे, सुल्तान के पास गये, सुल्तान ने निहायत ख़न्दा पेशानी के साथ हम में से हर एक के साथ मुसाफ़हा किया और रुख़्सत और वेदाअ़ की तक़रीब से पुर मुहब्बत कलिमात अदा फरमाए। हम ने उनकी मेहमानी और इनायत का शुक्रिया अदा किया, सुल्तान ने कहा, हम मुसलमानाने हिन्दुस्तान के निहायत मम्नून हैं और यक़ीन जानिए कि तमाम दुनिया के मुसलमानों में सिर्फ़ हिन्दुस्तान ही के मुसलमानों पर भरोसा करता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि उनकी तमाम कोशिशें बेग़रज़ाना हैं और उनका दिल और ज़बान एक है, मेरा ख़्याल था कि हुकूमते हिजाज़ के लिए

जिन अह्ले फ़न की ज़रूरत है, उनके मुतअल्लिक़ मैं आप लोगों से दर्ख़्वास्त करूं, इस मौक़ा पर हम लोगों ने इस ख़िदमत की बजा आवरी के लिए मुस्तएदी ज़ाहिर की और सैयद उमर साहब टोंकी का नाम पेश किया, जो इत्तिफ़ाक़ से इस साल हज में जर्मनी से बर्क़ियात की तक्मील करके आए थे, सुल्तान ने निहायत खुश हो कर उन से मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और शैख़ अतीक़ी को हुक्म दिया कि वह सैयद उमर साहब को बुला कर लाएं।

इसी सिलसिला में हम ने मुस्आ में ऊंटों के बिठाने से जो तंगी हो जाती है और हाजियों को तक्लीफ़ होती है, उसकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई, सुल्तान ने कहा कि यह अम्र खुद हमारे ज़ेहन में था, मुस्आ का मैदान उस से पहले बहुत ज़्यादा था, मगर लोगों ने क़ब्ज़ा करके अपने मकानात बना लिए और मौजूदा मैदान बहुत तंग हो गया, ज़रूरत है कि उसको वसीअ् किया जाए, फिर हम ने रमी में ऊंटों के बेतहाशा दौड़ाने के मुतअल्लिक़ अर्ज़ किया कि उस से हाजियों को बहुत तक्लीफ़ हुई, सुल्तान ने कहा बेशक इस से हाजियों को तक्लीफ़ हुई, इसी लिए हम ने यह इरादा किया है कि आइन्दा उलमा से इस बारे में फतवा तलब करें और आइन्दा ऊंटों पर सवार हो कर रमी करने से लोगों को रोक दें, ताकि आम हाजियों को तक्लीफ़ न हो, इसी तरह दूसरे इंतिज़ामात का तज़्किरा आया।

आख़िर में रुख़्सत होते हुए सुल्तान ने कहा कि सफर का तमाम सामान मुहैया हो गया है या नहीं, अगर किसी चीज़ की ज़रूर हो, तो बयान कीजिए, हम ने शुक्रिया अदा किया और कहा कि तमाम सामान बहम्दुलिल्लाह मुकम्मल हो गया है और उन्होंने फिर कहा कि एक छोटे से ख़ेमा का साथ होना भी ज़रूरी है, अगर न हो, तो वह साथ कर दिया जाए। हम ने दोबारा शुक्रिया अदा किया और कहा कि उसका सामान भी हो चुका है, उसके बाद सुल्तान निहायत गर्मजोशी से हम लोगों से मिले और हम उन से रुख़्सत हुए।

लजना तहज़ीरिया में शिर्कत

मुतमिर इंएक़ाद के पहले ग़ालिबन सैयद रशीद रज़ा साहब ने मज्लिसे इस्तिक़्बालिया की तरफ़ से मुतमिर का एक निज़ाम और

दस्तूरुल-अमल तैयार किया था, हमारे पहुंचने के तीसरे दिन 16 ज़ीक़अ़दा 1344 हिज० को हाफ़िज़ वहबा साहब का ख़त वफ़्द के नाम आया कि मुतमिर से पहले मुतमिर के निज़ाम व क़वाइद पर ग़ौर करने के लिए एक मज्लिस बनाम लजना तहज़ीरिया मुक़र्रर की गई है, जिसमें हर वफ़्द की तरफ़ से एक-एक मिम्बर शरीक होगा। उस वक़्त तक सिर्फ़ जादह और हिन्दुस्तान के वफ़ूद पहुंचे थे, इस बिना पर मौलाना किफ़ायतुल्लाह साहब (जमीअ़तुल-उलमा हिन्द) मौलवी सनाउल्लाह साहब (अह्ले हदीस कॉंफ्रेंस) सैयद सुलेमान साहब (मज्लिसे ख़िलाफ़त) हाजी मन्सूर (शिर्कतुल-इस्लाम जावा) सैयद रशीद रज़ा (रुक्न ख़ास) हाफ़िज़ वहबा (नाज़िम मज्लिसे इस्तिक़्बालिया नुमाइन्दा हुकूमत) दारबा नाजा में तीन दिन तक बाद नमाज़े अस्र जमा हो कर पेश करदह निज़ाम नामा पर मुबाहिसा और तबादल-ए-ख़्यालात करते रहे और ख़िलाफ़त व जमीअत के नुमाइन्दों ने निज़ामनामा के इन वाक़ेआत के मुतअल्लिक़ तरमीमें पेश कीं, जो मुतमिर या इस्लामी जम्हूरिया के इक़्तिदार और कुव्वत को मुंहसिर या बहुत महदूद करते थे, खुसूसन इस्लामी म्मालिक वालों की नियाबत और नुमाइन्दगी को आबादी और तादाद के उसूल पर पेश किया, मगर अफ़्सोस कि कसरत राय ने हमारा साथ न दिया। अगर उस वक़्त यह चीज़ तय हो जाती, तो मुतमिर के दिन उस में बर्बाद न जाते, बहरहाल उस लजना तहज़ीरिया का काम तीन दिन जारी रहा और उस में निज़ामनामा के आधे हिस्से पर नज़र सानी की जा सकी।

मज्लेसुल-उलमा

31 मई 1926 ई० को हमारे वफ़्द को सरकारी इत्तिला दी गई कि कल बाद जुहर उलमा का एक जल्सा दार बानाजा में इस ग़रज़ से मुनअक़िद होगा कि बाज़ मज़्हबी मसाइल में बाहम गुफ़्तगू की जाए, इस मज्लिस में मिस्र, शाम, फ़िलस्तीन, सूडान, जावा और हिन्दुस्तान के वफ़ूद के अलावा जो उस वक़्त तक पहुंच चुके थे, हिन्दुस्तान और दीगर मुल्कों के आम उलमा को भी शिर्कत की दावत दी गई थी, जिन में अह्ले हदीस की तादाद ख़ासी थी, हमारे वफ़्द के तमाम अरकान ने भी शिर्कत की, सुल्तान की तक़रीर से जल्सा का आग़ाज़ हुआ, इस

तक़रीर में यह कहा गया था कि हम तमाम मुसलमानों का यह फ़र्ज़ है कि हम किताब व सुन्नत को मज़बूत पकड़ें और अपने फ़िर्क़ा वाराना ख़्यालात को छोड़ कर किताब व सुन्नत पर मुत्तहिद हो जाएं। उनके बाद रशीद रज़ा साहब ने तक़रीर की, जिस में सरतापा अह्ले नज्द की मद्दाही थी और उनको रूए ज़मीन का बेहतरीन मुसलमान क़रार दिया गया था, बाद अज़ीं मिस्र व शाम और सूडान के उलमा ने यके बाद दीगरे उठ-उठ कर सुल्तान की तारीफ़ें कीं उनकी दावत पर लब्बैक कहा, मुहम्मद अली साहब ने उठ कर कहा कि हम इसी किताब व सुन्नत के नाम पर आप से अपील करते हैं कि आप मुलूकियत छोड़ कर जम्हूरियत अख़्तियार कीजिए और क़ैसर व किसरा के बजाए सिद्दीक़ व फ़ारूक़ की सुन्नत अख़्तियार कीजिए, मौलवी अब्दुल-हलीम साहब (जमीअतुल-उलमा) ने इस्लाम के दूसरे फ़िर्क़ों के साथ रवादारी की ज़रूरत ज़ाहिर की और उसकी शिकायत की कि बाज़ अह्ले नज्द दूसरे मुसलमानों को ज़रा-ज़रा सी बात पर काफिर व मुश्रिक कह बैठते हैं, मौलाना किफ़ायतुल्लाह साहब (जमीअतुल-उलमा) ने उसकी ताईद में तक़रीर की, उस पर सुल्तान और इब्ने बलीहद क़ाज़ियुल-क़ुज़ात ने मुश्तमिल हो कर उसका जवाब दिया और अफ़्सोस है कि हिन्दुस्तान के अह्ले हदीस अस्हाब ने शोर व ग़ज़ीब बरपा किया इसी अस्ना में सैयद सुलेमान साहब ने खड़े हो कर इस्लामी रवादारी के मुतअल्लिक़ तक़रीर की और कहा कि हम को मालूम हुआ है कि अह्ले नज्द यहाँ मामूली बातों पर मसलन सिग्रेट और हुक़्क़ा पीने पर लोगों को मारते हैं और ज़रा-ज़रा सी बात पर तशद्दुद करते हैं। यह सही नहीं है। इसी तरह सुना है कि रमज़ान में तरावीह दो तीन रोज़ तक 20 रकअत पढ़ी गई और उसके बाद हुक्मन सब को आठ रकअत पढ़ने पर मज्बूर किया गया। सुल्तान ने कहा कि सही नहीं, मैंने खुद कई रोज़ तक बीस रकअत तरावीह पढ़ी, मगर बाद को मक्का के दुकानदार मेरे पास आए और कहा कि हम लोग कारोबारी आदमी हैं। बीस रकअत पढ़ने में वक़्त ज़्यादा लगता है, इसलिए आठ रकअत पढ़ने की इजाज़त दीजिए। उस पर हम ने अमल किया और उसके बाद अब्दुल्लाह शैबी, सैयद हुसैन नायबे हरम वग़ैरह चन्द सरकारी मक्की अश्ख़ास जो मौजूद थे उन्होंने उसकी ताईद की, पहला इज्लास इस तरह ख़त्म हो गया।

दूसरे दिन फिर बाद नमाज़े जुहर इस मज्लिस का जल्सा हुआ, सुल्तान उस दिन शरीक न थे सब से पहले सैयद सुलेमान साहब ने मस्अला मक़ाबिर व मआसिर पर एक पुर ज़ोर तक़रीर की और आयात व हदीस और तारीख़ व सैर के हवाले से अपने मद्दुआ को साबित किया। उन्होंने कहा कि हम यहाँ मज्लिसे ख़िलाफ़त की तरफ़ से तीन बातें लेकर आए हैं।

अव्वल यह कि किताब व सुन्नत पर अमल के साथ-साथ इन उमूर में उस्अत देनी चाहिए, जिन में खुद सहाबा व ताबईन मुख़्तलिफ़ थे, मुक़र्रिर ने उसकी मुतअद्दिद मिसालें अहादीस और अमले सहाबा से पेश कीं फिर कहा कि -

दूसरी चीज़ यह है कि किताब व सुन्नत के नताइज का सबसे पहला मंज़र खुद हुकूमत को होना चाहिए कि तरज़े अव्वल के मुताबिक़ ख़लीफ़ा का इंतिख़ाब शरई औ विरासत से पाक हो।

तीसरी चीज़ मक़ाबिर व मआसिर का मस्अला है। इस मस्अला में यह बात जान लेना चाहिए कि यहाँ दो चीज़ें हैं, मक़ाबिर व मआसिर और उन दोनों के अहकाम अलग-अलग हैं, मस्अला मक़ाबिर की निस्बत उस पर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि अहादीसे सहीहा में बेना अलल-कुबूर और तख़्सीसे कुबूर वग़ैरह की मुमानेअत आई है। गो एक मुख़्तसर फ़रीक़ के नज़्दीक उसका माना कुछ और हों, इस बिना पर अगर सुल्तान तममा दुनियाए इस्लाम के उलमा के फ़ैसला का इंतिज़ार करते, तो यक़ीनन उनको नाउम्मीदी न होती और इस तरह ज़िम्मेदारी बजाए, उनकी ज़ात के या अह्ले नज्द के तमाम दुनियाए इस्लाम पर बट जाती। मआसर का सिलसिला उस से अलग है, मआसर से मुराद वह मक़ामात हैं, जिनको अंबिया या सहाबा की तरफ़ किसी हैसियत से निस्बत है, कुरआन व हदीस और आसारे सलफ़ में कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जो इन मआसिर में इमारतों के बनाने या मसाजिद बना देने से मना करती हो, बल्कि कुरआने पाक, अहादीस, सैर, और आसार में ऐसे मआसिर का ज़िक्र है, इस बिना पर उन मआसिर की इमारतों को मुन्हदिम करा देना शिद्दत और गुलू के सिवा कोई शरई तौजीह नहीं रखता, हम को मालूम है कि जाहिल मुसलमान वहाँ बाज़ ग़ैर शरई आमाल करते हैं, उन आमाल को रोकना चाहिए था या यह इमारतें या

बाज़ इबारतें जो ग़ैर शरई तौर पर या ग़ैर मुस्तनद मवाक़े पर बनाई गई थीं। उनकी तस्हीह की जाती, मसलन मूलिदे नबवी की मौजूदा शक्ल यक़ीनन सही न थी, मगर ज़मान-ए-सलफ़ में उसकी शक्ल मस्जिद की थी, जिसमें नमाज़ पढ़ी जाती थी, मगर मौजूदा शक्ल हक़ीक़ी मूलिद के कमरा की बनाई गई थी, जो सही व मुस्तनद न थी, उसकी तस्हीह कर देनी चाहिए थी और ग़िलाफ़ कठरा, संग मर मर की सिल वग़ैरह हटाई जा सकती थी, मगर नफ़्से इमारत को तोड़ डालना शिद्दत और गुलू की इंतिहा है, मक़ामे इब्राहीम, सफ़ा व मरवा, ... वग़ैरह तमाम आसार व मआसिर इब्राहीमी हैं, क्या उनको भी मुन्हदिम कर दिया जाएगा, ग़र्ज़कि एक .... तक़रीर थी और इस तक़रीर का किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, जब कि रशीद अहमद रज़ा साहब ने उठ कर कहा कि चूंकि हम इत्तिहाद के तालिब हैं। इसलिए बहुत सी बातों का जवाब देना नहीं चाहते और दो एक आलिमों ने वअ्ज़ के रंग में तक़रीरें शुरू कीं, तो हाफ़िज़ वहबा ने कहा कि हम यहाँ शाइरी के लिए नहीं आए हैं, हम को काम करना है, इसलिए बेहतर है कि हम पाँच छेः आदमियों की एक कमेटी बना लें, जो मुतमिर से पहले निज़ामिया मुरत्तब करे सैयद सुलेमान साहब की मैं इस तज्वीज़ में यह तरमीम चाहता हूँ कि इस मज्लिस में वही अरकान वफ़ूद मुन्तख़ब हों, जो किसी जमाअत या जमीअत के बाक़ायदा नुमाइन्दा हों, माज़ी अबुल-अज़ाइम साहब (मिस्री) ने उसकी ताईद की, सैयद रशीद रज़ा और उनके बाज़ दीगर रुफ़क़ा ने इस तरमीम की मुख़ालिफ़त की, मुहम्मद अली साहब और शौकत अली साहब ने हाफ़िज़ वहबा की इस नफ़्से तज्वीज़ की मुख़ालिफ़त की और कहा कि इस मज्लिस को इस क़द्र मुख़्तसर न बनाया जाए, बल्कि इसको वसीअ् रखना चाहिए और हर शख़्स को उसमें मौक़ा देना चाहिए, बहरहाल यह जल्सा बिला नतीजा ख़त्म हो गया और फिर मुतमिर से पहले कोई बाक़ायदा जल्सा न हो सका।

जन्नतुल-बक़ीअ् के मज़ारात का इंहिदाम

26 मई को अक्बर जहाज़ साहिल पर लंगर अन्दाज़ हुआ, उस वक़्त सबसे पहली जो वहशतनाक और जिगर गुदाज़ ख़बर हमें मौसूल हुई,

वह जन्नतुल-बक़ीअ् और दीगर मक़ामात के मज़ारात के इंहिदाम की थी, लेकिन हम ने उस ख़बर के कुबूल करने में तअम्मुल किया, इसलिए कि सुल्तान इब्ने सऊद ख़िलाफ़त कमेटी के दूसरे वफ़्द को तहरीरी वादे दे चुके थे कि वह मदीना मुनव्वरा में तमाम मबानी मआसिर को अपनी अस्ली हालत पर बाक़ी रखेंगे और उन में किसी क़िस्म का तग़ैयुर रवाना रखेंगे, जब तक कि मुतमिर इस्लामी कोई आख़िरी फ़ैसला न कर दे, इस मज़्मून का एक बलाग़ भी सुल्तान ने दूसरे वफ़्द को लिख कर दिया था, जिसे हिन्दुस्तान में शाए किया गया और जिसकी वजह से मुल्क में अमन व सुकून पैदा हो गया था। सफ़ीर ईरान को तो वह एक तहरीर भी लिख कर दे चुके थे। जिस में उन्होंने वादा फरमाया था कि न सिर्फ़ मदीना मुनव्वरा के मज़ारात की हिफ़ाज़त की जाएगी, बल्कि अगर दुनियाए इस्लाम मक्का मुअज़्ज़मा की मुन्हदिम शुदह की इमारात को दोबारा बनवाना चाहे, तो उनकी तरफ़ से कोई मुज़ाहिमत न होगी।

जब तीसरा वफ़्द हिजाज़ गया, तो उस से सरकारी तौर पर कहा गया कि मक्का की मसाजिद और मक़ाबिर की तामीर और मक़ाबिर के तहफ़्फ़ुज़ के मुतअल्लिक़ अहकामात सादिर हो गये हैं और मदीना के मआसिर का पूरा एहतराम व तहफ़्फ़ुज़ किया जाएगा और सुल्तान ने अपने बेटे अमीर मुहम्मद को एक ख़त लिखा कि वह मदीना में कोई ऐसा वाक़या पेश न आने दें, जिसकी वजह से दुनियाए इस्लाम में इंतिशार और हीजान पैदा हो, और मदीना मुनव्वरा के मआसिर व मक़ाबिर के बाब में वफ़्द ख़िलाफ़त के मशवरा के मुवाफ़िक़ काम करें।

लेकिन जद्दा पहुंच कर हम ने सबसे पहले एक रुक्न को हुकूमत शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ अतीक़ी से जब उस ख़बर की हक़ीक़त दरयाफ़्त की, तो उन्होंने तस्दीक़ की और यह फरमाया कि नज्दी क़ौम, बिदअत और कुफ़्र की इस्तीसाल को अपना पहला फ़र्ज़ ख़्याल करती है और इस मस्अला में वह दुनियाए इस्लाम के मसालेह की कोई परवाह नहीं करेगी, ख़्वाह दुनियाए इस्लाम खुश हो या नाराज़।

मक्का पहुंच कर जब हम ने सुल्तान से इस मस्अला में गुफ़्तगू की, तो उन्होंने, जो जवाब दिया, वह हमें मुत्मइन नहीं कर सका और न दुनियाए इस्लाम की अक्सरीयत को मुत्मइन कर सकता है, जैसा कि

हम दूसरे मक़ाम में इस बहस की तफ़सील लिख आए हैं।

इस सिलसिला में सबसे ज़्यादा दिल्चस्प वह फतवा है, जिसे उलमा-ए-मदीना के नाम से उम्मुल-क़ुरा ने शाए किया है और यह लिखा है कि कुब्बों के हदम का फ़तवा खुद अह्ले मदीना ने दिया था, लेकिन मदीना पहुंच कर जब हम ने उसकी तहक़ीक़ात की, तो जो इंकिशाफ़ात हुए उनकी तफ़्सील हस्बे ज़ैल है :

इस फ़तवो की हक़ीक़त के मुतअल्लिक़ जो हालात हम से बयान किए गये हैं, वह यह हैं कि क़ाज़ी अब्दुल्लाह बिन बलीहद जब मदीना मुनव्वरा पहुंचे, तो उन्होंने उलमाए मदीना को अपने मकान में बुलवाया, उलमाए मदीना उनके मकान पर जमा हो गये, तो क़ाज़ी अब्दुल्लाह बिन बलीहद मकान के अन्दर थे, उनके हक़ीक़ी भाई हमद बिन बलीहद पहले बाहर निकले और उलमाए मदीना को इन अल्फ़ाज़ से मुख़ातब किया।

उलमाए मदीना ने कहा कि हम सिवाए खुदा वन्दे कुद्दूस के किसी की परस्तिश नहीं करते और हम बहम्दुलिल्लाह मुसलमान और मोमिन हैं।

इसके जवाब में हम्द बिन बलीहद ने कहा कि कुफ़्फ़ार भी बिल्कुल ऐसा ही किया करते थे और मा नअ्बुदुहुम इल्ला लेयुक़र्रबूना इलल्लाहि जुल्फ़ा।" कह कर अपनी बुतपरस्ती और कुफ़्र नवाज़ी से इंकार किया करते थे।

उलमाए मदीना ने इस एतराज़ का जवाब दिया, मगर हमद बिन बलीहद ने जवाब की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं की, कहा जाता है कि वह उलमाए मदीना को सख़्त अल्फ़ाज़ से मुख़ातब करते रहे।

उसके बाद क़ाज़ी अब्दुल्लाह बिन बलीहद तशरीफ़ लाए, तो उन्होंने उलमाए मदीना से हस्बे ज़ैल मसाइल के मुतअल्लिक़ सवालात किए।

(1) क्या क़बरों पर कुब्बे तामीर करना जाइज़ है या नहीं। अगर जाइज़ है, तो इसका सुबूत लाओ और अगर जाइज़ नहीं, तो उनका हदम ज़रूरी है या नहीं।

(2) ग़ैरुल्लाह की निदा करने वाले का शरअन क्या हुक्म है?

(3) क़बरों पर चिराग़ जलाना, चादरें चढ़ाना और उनका तवाफ़ करना शरअन क्या हुक्म रखता है जो लोग इन अफ़आल का इर्तिकाब करते हैं, वह मुसलमान हैं या मुश्रिक?

उलमा-ए-मदीना ने उन से गुज़ारिश की कि हम आपस में मशवरा

करके आपको जवाब देंगे, उस पर अब्दुल्लाह बिन बलीहद क़ाज़ियुल-क़ुज़ात ने सख़्त लहजा में फरमाया, क्या तुम अब जा कर पढ़ोगे और फिर जबाब दोगे, मगर उलमाए मदीना ने कहा कि हम बेग़ैर किसी मशवरा के कोई जवाब नहीं दे सकते, चुनांचे उन्हें मुहलत दी गई और दूसरे दिन उलमाए मदीना ने बाहमी मशवरा के बाद क़ाज़ियुल-क़ुज़ात साहब को हस्बे ज़ैल जवाब दिया।

आप अपने इस्तिफ़्ता में से मस्अला कुबाब के अलावा बाक़ी तमाम मसाइल को हज़फ़ कर दीजिए, क्योंकि इन मसाइल में कोई शख़्स भी आप से इत्तिफ़ाक़ नहीं करेगा, हम में से किसी एक शख़्स का भी यह ख़्याल नहीं कि वह मुसलमान को काफिर या मुश्रिक कहना रवा रखता है।

मस्अला कुबाब के मुतअल्लिक़ उलमाए मदीना की दो जमाअतें थीं, एक जमाअत का यह ख़्याल था कि कुब्बों की तामीर शरअन मम्नूअ् नहीं, जिसे उन्होंने क़ाज़ी साहब के सामने बड़ी जुरअत के साथ ज़ाहिर किया, इसी जमाअत में मौलाना अब्दुल-बाक़ी साहब फ़िरंगी महल्ली थे।

दूसरी जमाअत का ख़्याल यह था कि अगरचे तामीरे कुबाब जाइज़ नहीं, मगर उनका हदम भी ग़ैर ज़रूरी है। इसलिए कि उनके गिरा देने से सारी दुनियाए इस्लाम में एक ज़बरदस्त शोरिश पैदा हो जाएगी, जो मुसलमानाने आलम के तशतुत और तफ़रीक़ का बाइस होगी और बजाए उसके दुनियाए इस्लाम को हिजाज़ के साथ कोई हम्दर्दी हो, सख़्त बेज़ारी पैदा हो जाएगी और उसके ख़तरनाक नताइज अह्ले हिजाज़ और हुकूमते हिजाज़ दोनों के लिए बदतरीन साबित होंगे।

इन मसाइल में क़ाज़ी अब्दुल्लाह बिन बलीहद और उलमाए मदीना के दर्मियान बड़ी देर तक बहस व मुबाहिसा होता रहा, उनके ज़िम्न में मस्अला हयातुन्नबी भी आया, जिस के मुतअल्लिक़ उलमाए मदीना ने अपने अक़ाइद व ख़्यालात का साफ़-साफ़ इज़्हार किया, मगर मुआमला बहस व दलाइल की हद से बाहर था, क़ाज़ी बिन बलीहद नज्दी क़ौम में बहुत ज़्यादा होशियार और दौरे हाज़िर की मौजूदा सियासत के ज़बरदस्त माहिर माने जाते हैं, दूसरे दिन उन्होंने यह सूरत अख़्तियार की कि जो उलमा उनकी मुख़ालिफ़त में ज़्यादा पेश-पेश थे उन्हें छोड़ कर बाक़ी उलमा को बुलवाया और उन्हें धमका कर यह कहा कि तुम को वही लिखना होगा, जो हम चाहते हैं, मशाहीर उलमा में से जिन को

मदऊ किया गया था, मौलाना अब्दुल-बाक़ी और अल्लामा दाग़िस्तानी के सिवा बाक़ी हज़रात ने बादल नाख़्वास्ता दस्तख़त कर दिए और उसके बाद वह सब कुछ हो गया, जिस की वजह से आज सारी दुनियाए इस्लाम में हीजान और इज़्तिराब पैदा हो गया है।

यह है उलमाए मदीना के फ़तवे की हक़ीक़त, जिसे "उम्मुल-कुरा" में शाए करके यह साबित करना चाहा है कि उलमाए मदीना भी हदम कुबाब के मुवाफ़िक़ थे।

कुबाब के इंहिदाम के मुतअल्लिक़ जो बयान उम्माले हुकूमत के ज़रिया से हम तक पहुंचा है, वह यह है कि क़ाज़ी अब्दुल्लाह बलीहद जब मदीना मुनव्वरा में पहुंच गये, तो उनके आने के दो चार रोज़ बाद एक शब को चन्द गुतगुतों ने हज़रत हलीमा सअ्दिया के रौज़ा को गिराना शुरू कर दिया, इसकी इत्तिला गवर्नर को दी गई, उन्होंने उन गुतगुतों को गिरफ़्तार करा लिया और जबले ख़ाना भेज दिया, उनकी गिरफ़्तारी के बाद गुतगुतों में बहुत ज़्यादा जोश पैदा हो गया और तक़रीबन सत्तर आदमियों का एक वफ़्द अब्दुल्लाह बिन बलीहद क़ाज़ियुल-कुज़ात के पास आया और उसने इस गिरफ़्तारी के ख़िलाफ़ सख़्त एहतिजाज किया और यह मुतालबा किया कि गिरफ़्तार शुदह गुतगुतों को फ़ौरन रिहा कर दिया जाए और उन्हें इन कुबाब के तोड़ने की इजाज़त दी जाए, वरना हुजूमी कार्रवाइयाँ करेंगे और उसके नताइज बहुत ख़तरनाक होंगे, कहा जाता है कि क़ाज़ी अब्दुल्लाह बिन बलीहद ने ला सिल्की के ज़रिया से सुल्तान को इन वाक़ेआत व हवादिस की इत्तिला दी और सुल्तान ने हदमे कुबाब की इजाज़त दे दी हदमे कुबाब के मुतअल्लिक़ जितनी मालूमात हम हासिल का सके, उसे बिला कम व कास्त हम ने रिपोर्ट में लिख दिया है, सुल्तान कुछ फरमाते हैं, उनके उम्माल कुछ और इरशाद फरमाते हैं और उलमाए मदीना के बयानात से हक़ीक़त से हक़ीक़त दूसरी मालूम होती है, बहरे कैफ़ हालात व वाक़ेआत कुछ ही हों, सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ के तमाम हतमी और वाजिबुल-ईफ़ा वादों के बावजूद मदीना मुनव्वरा के तमाम कुब्बे गिरा दिए गये और ऐन उस वक़्त जबकि मुसलमानों की तमाम तर तवज्जोह और कोशिश को इन मुआमलात पर सर्फ़ करना चाहिए था, जिन पर मुसलमानों की ज़िन्दगी का दारो मदार है, आलमे इस्लामी को एक ज़बरदस्त फ़ित्ना में मुब्तला

कर दिया गया।

उस से भी ज़्यादा अफ़्सोसनाक चीज़ यह है कि गुतगुतों की इस वहशत से मक्का मुअज़्ज़मा की तरह मदीना मुनव्वरा की बाज़ मसाजिद भी न बच सकें और कुबाब कुबूर की तरह यह मसाजिद भी तोड़ दी गईं, जिनकी तफ़्सील यह है :

मसाजिद मदीना मुनव्वरा जिनको तोड़ा गया।

1. मस्जिद फातिमा मस्जिदे कुबा, छत और दीवारों का अक्सर हिस्सा तोड़ा गया है।
2. मस्जिद सनाया (जंगे उहुद में जहाँ दन्दाने मुबारक शहीद हुआ था, वहाँ यह मस्जिद बनाई गई थी। छत और दीवारों का अक्सर हिस्सा टूटा हुआ है।)
3. मस्जिद (छत और दीवारों का अक्सर हिस्सा टूटा हुआ है)
4. मस्जिद माइदा (छत और दीवारों का अक्सर हिस्सा टूटा हुआ है)
5. मस्जिद इजाबा (थोड़ी सी दीवार और कुबा तोड़ा गया है)

उन में उन मसाजिद को शामिल नहीं किया गया है, जिन में क़बरें हैं, और क़बरों को मस्जिद से अलाहिदा करने के लिए मस्जिद के बाज़ हिस्सों को तोड़ा गया है।

मक़ाबिर जो तोड़े गये हैं, उनकी तफ़्सील सफः 311, 312 पर दर्ज है, कुब्बे और दीवारें किसी की मौजूद नहीं हैं।

क़बरें

जो दिखाई नहीं देती हैं

जो दिखाई देती हैं

जिनके तावीज़ को सदमा पहुंचा है या पहुंचाया गया है।

जिनका तावीज़ सालिम है।

क़ब्र हज़रत ज़ैनब

क़ब्र हज़रत फ़ातिमा

क़ब्र उम्मे कुलसुम

क़ब्र हलीमा सैयदा

क़ब्र हज़रत उस्मान

हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हुम

जो बिल्कुल ज़मीन से हमवार कर दी गयी हैं कुबूर अहले बैयत

यहां एक छोटा सा चबूतरा था जिस पर तावीज़ थे तावीज़ और चबतूरा दोनों तोड़ दिये गये हैं और क़ब्रों की जगह तख़्ते जड़े हुए हैं।

जिन के मुतअल्लिक़ यह बयान किया जाता है कि वह मिट्टी और कंकर के नीचे दबी हुई हैं, उनका कोई निशान नज़र नहीं आता, उस मिट्टी पर जिसके नीचे उन कुबूर का दफन होना बयान किया जाता है। मज़्दूरों ने पत्थर और गारे के तावीज़ बना दिए हैं।

1. मज़ार अज़्वाज मुतह्हरात (यह तादाद में नौ थे, अब मिट्टी पर एक जदीद कच्चा तावीज़ बना दिया गया।)
2. क़बर हज़रत फ़ातिमा, सुग़रा बिन्ते हुसैन।

3. क़बर सैयदना अक़ील इब्ने जाफ़र सादिक़।
4. क़बर सैयदना इब्राहीम बिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।
5. क़बर सैयदना उस्मान इब्ने मज़ऊन। (यह क़बर जन्नतुल-बक़ीअ़ में सब से पहले बनाई गई थी और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान को अपने दस्ते मुबारक से दफ़न किया था।)
6. क़बर हज़रत इमाम मालिक।
7. क़बर हज़रत नाफ़े, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत सअद बिन अबी वक़ास (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम) की क़ुबूर का कोई निशान मौजूद नहीं है)

गुंबदे ख़ज़रा और मक़ामे इब्राहीम पर जो इमारत बनी है, उसके इंहिदमा के मुतअल्लिक़ भी हम ने बहुत गर्म अफ़्वाहें सुनी थीं, सुल्तान इब्ने सऊद साहब उसकी तरदीद करते हैं और यक़ीन दिलाते हैं कि ऐसा हरगिज़ न होगा, सुल्तान के गुज़िश्ता वादों और उनकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी को पेशे नज़र रखते हुए कमेटी खुद फ़ैसला कर सकती है कि कहाँ तक उनके इस क़ौल पर एतमाद किया जा सकता है।

नज्दी हुकूमत का तअस्सुब मज़्हबी

यहाँ तक जिन मुशाहिदात और तज्रिबात का हम ने ज़िक्र किया है, वह हिजाज़ में हर शख़्सी और ख़ानदानी हुकूमत के यक्सां ख़िलाफ़ हैं, लेकिन उनके अलावा चन्द मज़ीद वजूह भी ऐसे मौजूद हैं, जिनके बाइस सुल्तान नज्द की हुकूमते हिजाज़ के लिए ख़ास तौर पर नामौज़ूं है, मुल्की गीरी की हवस के अलावा जो एक फ़ातेह और बादशाह को

दुनिया तलब बना देती है। यहाँ तअस्सुब मज़्हबी और गुलू दीनी मुस्तज़ाद है और सारी इस्लामी दुनिया के ख़िलाफ़ जो नज्दियों की हम अक़ीदा नहीं है, एक हरब अक़ाइद छिड़ी हुई है। यह बहुत मुम्किन है कि सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ हक़ीक़तन अपने दीन में इस क़द्र गुलू करने वाले और तशद्दुद के ख़्वाहाँ न हों जितने कि मशाइख़े नज्द हैं, लेकिन मुल्क गीरी के लिए जो आला उनके पास है, यानी क़ौम नज्द उसको एक सदी से ज़्यादा से ज़्यादा यही सिखाया गया है कि उसके अलावा सब मुसलमान मुश्रिक हैं और नज्दियों की गुज़िश्ता सदी की तारीख़ भी यही बताती है कि उनके हाथ कुफ़्फ़ार के ख़ून से कभी नहीं रंगे गये, जिस क़द्र ख़ूंरेज़ी उन्होंने की है, वह सिर्फ़ मुसलमानों की है। हम यहाँ कोई मज़्हबी बहस छेड़ना नहीं चाहते, लेकिन इस क़द्र कहना नागुज़ीर है कि हम ने नज्दियों को इन जुज़्ईयाते दीन में जिस में उनके और दूसरे मुसलमानों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ है, बहुत सख़्त पाया और वह ज़रा-ज़रा सी बात पर हुज्जाज को मुश्रिक कह देते थे, हालांकि बाज़ अफ़आल का जिन पर मुसलमानों को यह ख़िताब दिया जाता था, अक़ाइद से कोई भी तअल्लुक़ न होता था, सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ के मज़्हबी ख़्यालात कुछ ही क्यों न हो, उनकी तमाम तर कुव्वत यही लोग और उनको लड़ाई पर इसी तरह आमादा किया जा सकता है, कि इस मुल्क गीरी की जंग का नाम जिहाद रखा जाए और जिस मुल्क को छीनना मक़्सूद हो, उसके लोगों को शिर्क कहा जाए, हम ने बारहा देखा कि जो हुज्जाज मक़ाम इब्राहीम की जाली को या उसके नफ़्ल या कुन्डों को छूते थे, उनको बेद से मारा जाता था और "अन्ता मुश्रिक" कहा जाता था, जो हुज्जाज जन्नतुल-मुअ़ला में ज़्यारते क़ुबूर का जाते थे, उन में से अक्सर पिट कर आते थे, ख़ुद हम में से चन्द ने हाफ़िज़ वहबा मुशीर ख़ास अमीर फ़ैसल से जो नाइब जलालतुल-मलिक हैं, पूछा कि हम और हमारे साथ की ख़्वातीन जन्नतुल-मुअ़्ला में ज़्यारते क़ुबूर के लिए जाना चाहती हैं उसके मुतअल्लिक़ मोटर का कुछ इंतिज़ाम हो सकेगा। उन्होंने फरमाया कि कल सुबह मोटर आ जाएगी और एक शख़्स आपके साथ भेज दिया जाएगा। ताकि आपको आदाबे ज़्यारत क़ुबूर बताए हम नेकहा कि हम अपने मज़्हब के मुताबिक़ इन आदाब से वाक़िफ़ हैं, ताहम कोई हरज नहीं है अगर आपका एक नुमाइन्दा मौजूद

हो दूसरे दिन सुबह को हम शैख़ अब्दुल्लाह बिन बलीहद नज्दी क़ाज़ियुल-कुज़ात मक्का मुकर्रमा से मुलाक़ात करने गये वापस होते वक़्त ख़्याल हुआ कि जिस मोटर का हाफ़िज़ वहबा ने वादा किया था उसको शैख़ अब्दुल्लाह बिन बलीहद साहब ही के मकान पर मंगवालें, चुनांचे वहाँ से मोटर के लिए टेलीफ़ोन किया गया जो अब आया कि सुल्तान आपको ज़्यारते कुबूर की इजाज़त नहीं देते, इसलिए कि फ़साद होने का अन्देशा है हम को यह सुन कर जिस क़द्र तअज्जुब हुआ, उसका अन्दाज़ा करना कुछ मुश्किल नहीं, इसलिए हम से सरीहन वादा किया गया था कि ज़्यारते कुबूर के लिए सरकारी मोटर सुबह को आ जाएगी और एक नज्दी हमारे साथ होगा, जिसकी मौजूदगी इस अम्र कर ज़ामिन होती कि बिदआत का इर्तिकाब न किया जाएगा, हम ने इस तअज्जुब अंगेज़ जवाब का ज़िक्र शैख़ अब्दुल्लाह बिन बलीहद से किया जिस पर उन्होंने फरमाया कि मैं खुद तुम्हारे साथ चलता हूँ और हुक्म दिया कि हमारे लिए सरकारी मोटर उनके मकान पर भेज दी जाए, इस पर हाफ़िज़ वहबा का जवाब टेलीफ़ोन से मौसूल हुआ कि आज यौमे जुमा है, मोटर नहीं मिल सकेगी, लेकिन कल या परसों भेज दी जाएगी, नायब मुदीर हरम उस वक़्त मौजूद,थे, उन्होंने हम से कहा कि इस अम्र को ख़ूब शोहरत दीजिए, इसलिए कि जब लोगों को मालूम हो जाएगा कि नज्दी क़ाज़ियुल-कुज़ात खुद आपको ज़्यारते कुबूर के लिए ले गये, तो फिर किसी नज्दी की मजाल न होगी कि और किसी हाजी को रोके या मारे और हुज्जाज भी मुत्मइन हो जाएंगे, हमन ने दूसरे दिन मोटर का इंतिज़ार किया और कोई वजह न थी कि उस दिन मोटर न मिलती, मगर बावजूद कई बार टेलीफ़ोन करने के मोटर न आई, इसलिए मज्बूर हो कर तीसरे दिन हम ने गाड़ियों का खुद इंतिज़ाम किया। जन्नतुल-मुअ़ला हमारी क़्यामगाह से तक़रीबन दो मील के फ़ासिला पर थी और हम और हमारे साथ की ख़्वातीन में चन्द ऐसे लोग थे जो बसबब इम्राज़ व नातवानी धूप में इतनी दूर कच्ची रेतीली सड़क पर पैदल न चल सकते थे और गो मक्का मुअज़्ज़मा की गाड़ियाँ हिन्दुस्तान के पक्कों के बराबर भी आरामदेह न थीं, लेकिन उनके इस्तेमाल के सिवा कोई चारह न था। शैख़ अब्दुल्लाह बिन बलीहद को टेलीफ़ोन किया कि हम में से बाज़ आप के मकान पर आ रहे हैं, आप तैयार हो

जाएं, ताकि हस्बे वादा हम आपके हम्राह जन्नतुल-मुअल्ला जा सकें, हम उनके मकान पर पहुंचे तो नौकर ने कहा कि शैख़ साहब सो गये हैं, मगर मैंने टेलीफ़ोन मिलते ही इत्तिला कर दी थी और फिर इत्तिला किए देता हूँ और उसके साथ ही साथ हम से पूछा कि क्या आपने सुल्तान से इजाज़त ले ली ६ घण्टा भी बाद शैख़ साहब खुद तशरीफ़ लाए और उन्होंने भी यही सवाल किया कि आपने सुल्तान से इजाज़त ले ली? उन से अर्ज़ किया गया कि अम मस्नून में किसी के इज़्न व इजाज़त की क्या ज़रूरत है और आप तो खुद हमें अपने हम्राह ले जाने का वादा फरमा चुके थे, चूंकि बावजूद वादे के मुतवातिर तीन दिन मोटर नहीं मिली, इसलिए दूसरी सवारी का हम ने खुद बन्दोबस्त कर लिया, उस पर शैख़ साहब ने फरमाया कि हाँ मैंने वादा किया था, लेकिन मुनासिब यही है कि सुल्तान से कह कर एक आम क़ाइदा जारी करा दिया जाए, जिस से हम ने भी इत्तिफ़ाक़ किया, चुनांचे चन्द उलमा की मुशावरत के बाद कुछ क़वाइद जिस में औक़ात और आदाब ज़्यादा शामिल हैं, सुल्तान के हुक्म से मुक़र्रर कर दिए गये हैं और मुतमिर के ख़त्म होने से क़ब्ल हम मआ अपने साथ की ख़्वातीन और चन्द दीगर मिसरी, फ़िलस्तीनी और शामी अराकीन मुतमिर के मुलिद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मुलिद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू दारा अरक़म और जन्नतुल-मुअल्ला वग़ैरह देखने के लिए सरकारी मोटर में गये, जो चीज़ ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र है, वह हमारे सवाल के जवाब में क़ाज़ी अब्दुल्लाह बिन मलीहद का क़ौल है कि नज्दी भी यौमे जुमा या यौमे सब्त को अपने हाँ ज़्यारत क़ुबूर के लिए जाते हैं, मगर वह समझते हैं कि उनके अलावा और मुसलमान जो ज़्यारते क़ुबूर को जाते हैं, वह शिर्क करने के लिए जाते हैं।

खुद सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ ने जो बात हम से और वफ़्द जमीअ़तुल-उलमा से कही वह उस से भी ज़्यादा सूरते हालात को बेनक़ाब करती है।

इस मुलाक़ात में जो जन्नतुल-बक़ीअ़ के हदमे क़ुबाब व क़ुबूर के लिए बिल-खुसूस सुल्तान से की गई थी। हम ने उन से पूछा कि आख़िर इसमें इस क़द्र जल्दी क्यों की गई, मुतमिर का इज्लास तीन चार हफ़्ते बाद होने ही वाला था, उस वक़्त तक इंतिज़ार करने में क्या हरज था,

तो सुल्तान ने फरमाया कि मेरी भी यही राय थी, मगर मेरे पास चार हज़ार नज्दियों का (हम को मालूम हुआ है कि इस में बाज़ मशाइखे नज्द भी शामिल थे) नज्द से पैग़ाम आया कि तुम अर्ज़े मुक़द्दस हिजाज़ की तत्हीर के लिए यहाँ से गये थे अरसा हुआ कि मदीना तुम्हारे क़ब्ज़ा में आ गया, लेकिन तुम ने अब तक उसकी तत्हीर नहीं की और क़ुबाब और पुख़्ता कुबूर इसी तरह मौजूद हैं, अगर तुम यह काम नहीं करना चाहते या नहीं कर सकते, तो हम खुद आएंगे। और उनको तोड़ेंगे, उनके आने से शर व फ़साद का अन्देशा था, इसलिए मैं ने खुद ही इस काम को कर दिया, मुहमल का वाक़या जिस में इस मुहमल पर जो सुल्तान की इजाज़त से मिस्र से आया था और जिस के साथ बैंड सुल्तान के कहने से जद्दा ही में छोड़ दिया गया था, सूरते हालात को और भी नुमायां कर देता है, फौजी बिगुल पर न सुल्तान को न उलमा-ए-नज्द की जानिब से, कोई एतराज़ था, लेकिन मुहमल को सनम क़रार दिया गया और बिगुल को मज़ामीर में दाख़िल समझा गया, यही नहीं, बल्कि मुहमल और मिस्री फौज और उसके अफ़्सरों पर मिना के बाहर पत्थर बरसाए गये, हुकूमते सुल्तान की जानिब से जो लोग मुहमल के साथ थे, उनके मना करने की कुछ परवाह न की गई और न सुल्तान के बेटों और खुद उनके बाज़ रखने से नज्दी बाज़ आए और बावजूद आयते करीमा (रफ़सा वला फुसूक़ा वला जिदाला फ़िल-हज्जे) मुसलमानों के हाथ से मुसलमानों का ख़ून मनहर मिना के पास बहा, अगर मान भी लिया जाए कि सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ को अपने मज़्हब की जुज़्ईयात ....तअस्सुब नहीं और वह तशद्दुद को पसन्द नहीं करते, तब भी इन वाक़ेआत से साफ़ ज़ाहिर है कि नज्दी क़ौम अब उनके बस की नहीं रही और जो तअस्सुब व तशद्दुद का सबक़ उसको एक सदी से ज़ायद अरसा पढ़ाया गया है, उसका यह नतीजा हुआ कि इन उमूर में सुल्तान नज्द उन पर हुकमरान नहीं, बल्कि ज़मामे हुकूमत हिजाज़ खुद उन के हाथ में है और तौअन नहीं तो करहन सुल्तान को उनकी नाज़ बिरादरी करना पड़ती है, कुबाब और तज्सीस अपने सिवा और मुसलमानों को क्यों मुश्रिक समझते हैं, लेकिन मत्बाकू को पीने या लबों के न कतरवाने से नज्दियों के नज़्दीक आदमी क्योंकर मुश्रिक हो जाता है। यह बात समझ में आना मुश्किल है। 1343 हिज० के हज के मौक़ा पर मजालिसे

ख़िलाफ़त और जमीअतुल-उलमा के नुमाइन्दे मक्का मुअज़्ज़मा में थे और जो रिपोर्ट नुमाइन्दगान मजालिसे ख़िलाफ़त ने अपनी वापसी पर शाए की है, उस में मुतअद्दिद वाक़ेआत इस क़िस्म के दर्ज हैं कि नज्दियों ने लोगों से सिग्रेट पीने पर सख़्त कलामी की और बात बढ़ जाने पर उनको मारा, इन वाक़ेआत में पहला वाक़या बाबुस्सलाम के एक कुतुब फ़रोश का था, जिसकी मोंछें बड़ी थीं, नज्दी ने उन्हें पकड़ कर कहा कि यह मुश्रिकाना मोंछें कैसी हैं, उस पर कुतुब फरोश को गुस्सा आ गया और उस ने भी सख़्त कलामी की और दोनों में जंग हो गई जिस में कुतुब फ़रोश के दो चोटें लगीं, नुमाइन्दगान मजालिसे ख़िलाफ़त अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं कि हम खुद मौक़ा पर पहुंच गये और उस शख़्स का नाम और चोटों के निशानात लिखे, इसका बयान क़लमन्द कर लिया और हाफ़िज़ वहबा गवर्नर मक्का को दिखला कर उन्हें तवज्जोह दिलाई कि वह इस क़िस्म के वाक़ेआत का इंसिदाद करें, दूसरे दिन इसी बाबुस्सलाम में एक दूसरा वाक़या पेश आया गोया वह सिग्रेट पीने के मुतअल्लिक़ न था और नुमाइन्दगाने ख़िलाफ़त ने इस वाक़या की भी इत्तिला हाफ़िज़ वहबा साहब को कर दी, इसके बाद भी चन्द वाक़ेआत का ज़िक्र है, बिल-आख़िर वह तहरीर करते हैं कि हम ने हाफ़िज़ वहबा गवर्नर मक्का को बज़रिया टेलोफ़ोन इत्तिला दी कि वह बहुत जल्द क़यामगाह पर तशरीफ़ लाएं, ताकि वाक़ेआत के आइन्दा इंसिदाद के मुतअल्लिक़ मशवरा करके कोई फ़ैसला किया जाए, चुनांचे उसी वक़्त हाफ़िज़ वहबा तशरीफ़ लाए। हम ने बहुत ज़ोर के साथ उन से कहा कि आप बहुत जल्द इंतिज़ामात कीजिए, ताकि आइन्दा इस क़िस्म का कोई हादसा पेश न आए, हाफ़िज़ वहबा ने सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ से मिल कर निहायत अच्छा इंतिज़ाम किया, सिग्रेट फरोशी के मुतअल्लिक़ हमने हाफ़िज़ वहबा से कहा कि आप इस में इस्लाहात करें और अह्ले मक्का को उसके तर्क करने के लिए मुफ़ीद मशवरे दें लेकिन सिवाए हुकूमत के दूसरे शख़्स को क्या हक़ है कि वह किसी शख़्स को सिग्रेट पीता हुआ देख कर उसे सज़ा भी दे दे? हाफ़िज़ वहबा ने फरमाया कि जिस बद्दू ने किसी सिग्रेट पीने वाले को मारा है। तहक़ीक़ात के बाद उसे इन्शाअल्लाह क़रार वाक़ई सज़ा दी जाएगी, इसलिए कि किसी क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की पादाश में किसी मुज्रिम को हुकूमत ही सज़ा दे

सकती है, बावजूद नुमाइन्दगान मजालिसे ख़िलाफ़त की इन मसाई और हुकूमत के इन वादों के बज़ाहिर नज्द का हर बद्दू अपने आपको उसका मजाज़ समझता है कि सिग्रेट नोशी या इसी क़िस्म के अफ़आल पर लोगों से सख़्त कलामी करे और अगर सख़्ती का सख़्ती से जवाब दिया जाए, तो उनको मारे और हुकूमत की तरफ़ से मुज्रिम की खुद सज़ा वही करे बज़ाहिर यह चीज़ इतनी आम है कि जिस वक़्त मुहमल का वाक़या पेश आया, उसके आध घन्टा के अन्दर ही जो ख़बर सारे मिना में गर्म थी वह यह थी कि किसी नज्दी ने मिस्री फौज के किसी आदमी को सिग्रेट पीते देख कर उसे "अन्ता मुश्रिक" कहा और मारा जिस पर नज्दियों और मिस्री फौज में लड़ाई छिड़ गई, वाक़या सिग्रेट नोशी से मुतअल्लिक़ न था, लेकिन बज़ाहिर इस क़िस्म के वाक़ए अक्सर पेश आते रहते थे और लोगों ने क़रीन क़्यास समझा कि नज्दियों ने सिग्रेट नोशी को अपने अक़ीदे के मुताबिक़ हराम समझा, हालांकि पीने वाले के मज़्हब में वह बिल्कुल मुबाह था और खुद ही कोतवाल और खुद ही क़ाज़ी बन कर खुद ही हद्दे शरई भी मुज्रिम पर क़ायम कर दी।

हम को मालूम हुआ है कि शुहदा में दो बंगालियों को सिग्रेट पीने पर नज्दियों ने इस क़द्र मारा कि वह बेहोश हो गये, इसी हालत में वह मक्का मुकर्रमा में लाए गये और हुकूमते हिन्द की तरफ़ से जो अस्पताल वहाँ था, उसमें उन बंगालियों ने बेहोशी ही की हालत में जान दे दी और हम को यह भी मालूम हुआ है कि बरतानवी क़ौन्सिले मुतऐयना जद्दह इस बारे में कोई कार्रवाई कर रहा है।

हिजाज़ पर फ़क़त सुल्तान नज्द की नहीं बल्कि कुल क़ौम की बादशाहत

हमारे दौराने क़्याम में हुज्जाज ने मुतअद्दिद बार हम से नज्दियों के तअस्सुब और तशद्दुद की शिकायत की, लेकिन हम को नहीं मालूम कि हुकूमत ने किसी मुज्रिम को भी सज़ा दी हो, उनको पुलिस ने खुद हमारे वफ़्द के कातिब अख़्तर अली साहब को हरम शरीफ़ में सिर्फ़ इस कुसूर पर गिरफ़्तार करके हवालात में डाल दिया कि पुलिस वाले हरम शरीफ़ में सोने वालों को बेद मार-मार कर उठा रहे थे, तो उन्होंने महज़

अज़राहे तरह्हुम उनको समझाया कि लोगों को हरम पाक में इस तरह न मारना चाहिए, उस कहने पर पुलिस वाले निहायत बर अफ़्रोख़्ता हुए और कहा तुम बड़ी वकालत करने आए हो, चलो तुम भी हवालात में दाख़िल हो और यह कह कर उन्हें हवालात में डाल दिया, बन्द करने के बाद उनकी दाढ़ी भी नोची, लेकिन हम ने नहीं सुना कि किसी ऐसे नज्दी को भी ज़्यादा अख़्तियारात इस्तेमाल करके अपने नज़्दीक एक सिग्रेट पीने वाले या ज़्यारते कुबूर करने वाले मुज्रिम को सज़ा दी हो हक़ीक़त यह है कि अह्ले नज्द को जुज़्इयाते फ़िक़्ह व अक़ाइद में गुलू ही नहीं है, बल्कि वह अपने आपको मजाज़ समझते हैं कि जिस चीज़ को वह मिल कर समझें उसकी नही से गुज़र कर उस पर खुद ही एक मन घड़त हद्दे शरई क़ायम कर दें और मुल्ज़िम को सज़ा भी दे दें, आज हिजाज़ पर फ़क़त सुल्तान नज्द की हुकूमत नहीं है, बल्कि उलमाए नज्द और नज्दी क़बाइल भी हिजाज़ियों पर हुक्मरान हैं, हमने मज़्हबी तअस्सुब और तवाफ़ व सई व ज़मज़म और रास्तों में एक हद तक मुज्रिमाना ग़फ़्लत के सिवा अह्ले नज्द की कोई और शिकायत नहीं सुनी, इस्तेहसाल बिल-जेहर और औरतों पर दस्तदराज़ी वग़ैरह से जहाँ तक हम को इल्म है, उनका दामन बिल्कुल पाक है, लेकिन इस फ़र्क़ को मल्हूज़ रखने के बाद यह कहना मुबालग़ा न होगा कि वह और बातों में अपने क़लमरू में दोल यूरोप की इस्तेमारी फौज की तरह महकूम क़ौम पर अपने को हुक्मरान और उसको इसी तरह हक़ीर समझते हैं और इस अपने खुद साख़्ता क़ानून का निफ़ाज़ करने में अपने आपको क़ानून से बालातर समझते हैं, मौजूदा निज़ामे हुकूमत को अगर हिजाज़ में क़ायम रखा गया, तो इसके सिर्फ़ यही माना न होंगे कि एक नज्दी बादशाह की शख़्सी और ख़ानदानी हुकूमत अह्ले हिजाज़ पर क़ायम हो गई, बल्कि एक बड़ी हद तक उसके यह भी मानी होंगे कि एक पूरी ऐसी क़ौम की हुकूमत इन क़ौम के हाथ में हो गई, जिसे हाकिम क़ौम अपने से ज़लील तर बल्कि शिर्क के गुनाहे अज़ीम की मुज्रिम समझती है और अपने हर फ़र्द को मजाज़ समझती है कि वह महकूम मुज्रिम क़ौम के हर फ़र्द जब जी चाहे और जिस तरह जी चाहे सज़ा दे ले, मुलूकियत की मसाइब से से तो पहले भी एक दुनिया वाक़िफ़ थी, मगर दोल यूरोप के इस्तेमार ने हम जैसी महकूम क़ौमों को इस हालत में बर्दाश्त करना

होती हैं, जबकि उन पर एक दूसरी क़ौम मुसल्लत हो और बजाए एक बादशाह के वह क़ौम की क़ौम उन पर बादशाहत करे, फ़र्क़ सिर्फ़ इस क़द्र है कि दोल यूरोप को सिर्फ़ अपनी दुनियवी बरतरी का घमण्ड होता है और यहाँ हाकिम क़ौम को महकूम क़ौम पर तफ़व्वुक़ दीनी का भी गुरूर है और इस बिना पर वह महकूम क़ौम को ख़सरद्दुनिया वल-आख़िरह के दो गुना अज़ाब में मुब्तला समझती है।

उमूरे दुनियवी में भी अद्मे मसावात

दुनियवी उमूर में भी हिजाज़ की नज्दी हुकूमत मसावात को मल्हूज़ नहीं रखती, चुनांचे जहाँ तक हमें इल्म है, नज्दी हुज्जाज से वह महासिल नहीं वुसूल किए गये जो बाक़ी दुनियाए इस्लाम के हुज्जाज से वसूल किए गये थे और जिन की रोज़ अफ़्ज़ूं और बिल्कुल ग़ैर मतवक़्क़ा तरक़्क़ी से हुज्जाज नालां थे, तवाफ़, इस्तिलाम, मक़ामे इब्राहीम पर अदाइगी नवाफ़िल, ज़मज़म, मिना और सई व रमी, जिमार वग़ैरह में हाकिम और महकूम क़ौमों में एक हद तक इसी तरह का फ़र्क़ नज़र आता था, जो हिन्दुस्तान में गोरों और कालों में नज़र आता है और हाल में बावजूद मुतमिर की सब्जेक्ट कमेटी के फ़ैसला के जो क़ानूने अस्लहा जारी किया गया वह इस फ़र्क़ को साफ़ नुमायाँ कर रहा है।

उलमा-ए-नज्द और अद्मे मसावात

यह अद्मे मसावात अवाम हीत क महदूद नहीं है, बल्कि उलमाए नज्द भी उस में शामिल हैं। हम इस मौक़ा को कभी नहीं भूल सकते, जबकि सुल्तान की दावत पर बहुत से लोग बेत बानाजा में जमा हुए थे और बिदआत के मुतअल्लिक़ बहस व मुबाहिसा हुआ था, मौलाना अब्दुल-हलीम रुक्न वफ़्द जमीअतुल-उलमा ने इस मौक़ा पर बिल्कुल सही फरमाया था कि बिदआत सिर्फ़ बिना अलल-कुबूर तक महदूद नहीं हैं, बल्कि तक्फ़ीर अह्ले क़िब्ला भ्ज़ी उस में दाख़िल है और अफ़्सोस है कि बाज़ अह्ले नज्द उस से एहतराज़ नहीं करते, हालांकि वह "तमस्सुक बिल-किताब वस्सुन्नह" के दावेदार हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि जिस ने हमारा कलिमा पढ़ा, हमारे क़िब्ला

की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ी और हमारा ज़बीहा खाया वह हम से है, उस पर सुल्तान नज्द बहुत बुरा फ़रोख़्ता हुए और "अना अन्नज्द" कह कर नज्दियों की हिमायत करने और फरमाने लगे कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया है कि जो हमारी क़बरों को पूजे और हमारी मोहतरम हस्तियों से दुआ करे, वह भी हम में दाख़िल है? उसका तो मौलाना अब्दुल-हलीम साहब ही ने उसी वक़्त जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़िब्ला और ज़बीहा की शिर्कत पर क़िसी और चीज़ को मुस्तज़ाद भी नहीं फरमाया था, मगर सबसे ज़्यादा तक्लीफ़ देह यह अम्र था कि शैख़ अब्दुल्लाह बिन बलीहद ने निहायत दिरिश्ती और रऊनत के लेहजा में कहा कि उस शख़्स को मेरे सामने बिठाया गया, तो उन्होंने उसी लेहजा में मौलाना से सवाल किया कि इबादत क्या है, उस पर मौलाना किफ़ायतुल्लाह साहब रईस वफ़्द जमीअतुल-उलमा को दख़ल देना पड़ा, मौलाना निसार अहमद साहब ने भी जो जमीअतुल-उलमा के वफ़्द के रुक्ने थे, मगर शरीक वफ़्द न हो सके थे। हमें इत्तिला दी कि ऐन मस्जिदुल-हराम में एक मुबाहिसा के दौरान में इन्हीं शैख़ अब्दुल्लाह बिन बलीहद ने उनको पंखा फेंक कर मारा, हक़ीक़त यह है कि उलमा-ए-नज्द बज़ाहिर उसके दावेदार मालूम होते हैं कि शरीअत हुक़्क़ा का इल्म उन्हीं को हासिल है और यही नहीं कि उनका मज़्हब, मज़ाहिबे अरबा से बेहतर है, बल्कि उलमाए नज्द को भी वह उलमाए अहनाफ़ से बेहतर जानते हैं, इन्हीं हालात से मज्बूर हो कर हम ने मशवरा व मईयत वफ़्द जमीअतुल-उलमा से मुतमिर में एक तहरीर पेश की थी, कि तमाम मज़ाहिबे इस्लामिया के मुत्तबईन को अर्ज़े पाक हिजाज़ में इबादाते मनासिक और आमाल में आज़ादी हासिल होनी चाहिए और किसी को मज्बूर न किया जाए कि किसी चीज़ पर जो उसके मज़्हब में जाइज़ है आमिल न हो या किसी चीज़ पर जो उसके मज़्हब में जाइज़ नहीं अमल करे और किस मज़्हब में किया चीज़ दाख़िल नहीं, उसका फ़ैसला सिर्फ़ उसी मज़्हब के उलमा मुस्तनद व मोतबर करें और दूसरे मज़्हब के उलमाउस में मुदाख़लत न करें, गो यह तहरीक बिल-आख़िर मन्ज़ूर हुई, लेकिन उस पपर सख़्त मुबाहिसा हुआ और साफ़ मालूम होता था कि यह नामज़दगान सुल्तान को बतैयब

ख़ातिर कबूल न थी, हदम शुदह मबानी व मआसिर की तामीर व तहफ़्फ़ुज़ के मुतअल्लिक़ जो तहरीक हम ने पेश की थी और जिस में खुद बाज़ नामज़दगान सुल्तान के मशवरा पर हम ने अमल करके तरमीम कर ली थी, उसको भी नामज़दगान सुल्तान ने एक हफ़्ता तक मुतमिर में पेश होने न दिया और यह सिर्फ़ आख़िरी इज्लास मुतमिर में बदिक़्क़त तमाम और बाद ख़राबी बिस्यार पेश और मन्ज़ूर हो सकी।

नतीजा

इन हालात में हमारे नज़्दीक नज्दी क़ौम के एक ख़ानदान की शख़्सी और विरासती हुकूमत क़ायम करना और भी ज़्यादा ख़राबियों का बाइस होगा और शख़्सी, ख़ानदानी और क़ौमी तसादुम के अलावा हर वक़्त अक़ाइद व इबादात के तसादुम का भी अन्देशा रहेगा, अह्ले हिजाज़ शरीफ़ी हुकूमत से नालां थे, मगर उसकी वजह हुकूमत का ज़ुल्म व तअद्दी थी। अह्ले हिजाज़ मौजूदा नज्दी हुकूमत से अलावा और वजूह के इस वजह से भी नालाँ हैं कि अब मज़्हबी ज़ुल्म व तअद्दी का भी इज़ाफ़ा हो गया है और उसके जारी रहने का उन्हें सख़्त अन्देशा है।

हवस मुल्कगीरी क़यामे अम्न के मनाफ़ी है

अगर हम मुत्मइन हो जाएं कि इस तरह ख़ौफ़ व तमअ् से क़ायम की हुई अमन पायेदार भी होगी, तब भी हम इस अम्र को नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकते कि अन्दरूने मुल्क की लूट मार बन्द करना न हुज्जाज व ज़ाइरीन, न बाशिन्दगान हिजाज़ के लिए काफी है, क्योंकि लुटेरे कबाइल की तग व दो महदूद होती है, बरख़िलाफ़ उसके जंगजू और हमला आवर बादशाहों और दीगर मुल्क गीरों की तग व दो ग़ैर महदूद होती है जो क़त्ल व ग़ारत एक सिकन्दर एक हिलाकू, एक चंगेज़, एक तैमूर, एक पिनोलीन या मौजूदा ज़माने की एक इस्तेमारी दौलत मुतम्मिद न के मुतामे और जूअ् अल-अर्ज़ का नतीजा होती है, वह क़ज़्ज़ाकों और डाकुओं की क़त्ल व ग़ारत से हज़ारों गुना ज़्यादा होती है। हम ने हाल ही में देखा है कि बरसल्ज़ के शहर में उसकी मुतमद्दिन हुकूमत ने पूरा अमन व अमान क़ायम कर रखा था और लोग इत्मीनान

से अपने घरों में रहते थे और सफर करते थे, लेकिन जंग अवी छिड़ जाने पर हर दो फ़रीक़ की तरफ़ से जो नबर्द आज़माई हुई, उस में वह बड़े-बड़े बाज़ार और उमरा के सुकूनती मुहल्ले जिन में ख़स व ख़ाशाक का नज़र आना भी तक़रीबन नामुम्किन था, इस तरह तबाह व वीरान हो गये कि बड़े-बड़े लुटेरे क़बाइल के क़त्ल व नहब के बाइस कोई छोटा सा क़रिया भी उस से पहले तबाह व वीरान नज़र न आया होगा, न मासूम से मासूम इंसान की जान महफ़ूज़ थी, न माल, बूढ़े और बच्चे इसी तरह जंग की नज़्र हुए, जिस तरह कि बाक़ायदा फौज के मुसल्लह सिपाही और औरतों की इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त न की जा सकी, आतिशे जंग ने एक लम्हा में सदियों के क़ायम करदह अम्न को जला कर फूंक दिया, अगर अर्ज़े पाक हिजाज़ बज़ोर शमशीर मुल्क गीरी की रज़्मगाह बन गई, तो सुल्तान नज्द का क़ायम करदह अम्न व अमान किस काम आएगा? हम ऊपर कह चुके हैं कि ईमान, इराक़, शर्क़ उर्दुन, मिस्र व यमन के तअल्लुक़ात सुल्तान नज्द से कैसे हैं, अगर उनको या उनके हिमायतों को यह दावा है कि उन्होंने अर्ज़े पाक हिजाज़ को अपनी तल्वारों और नेज़ों की नोकों और बन्दूक़ों की गोलियों से लिया है, तो कौन चीज़ उसके माने हो सकती है कि दूसरे भी तेग़ आज़माई करके इसी तरह इस अर्ज़े पाक पर क़ब्ज़ा कर लें, हक़ीक़त यह है कि सुल्तान नज्द ने हिजाज़ियों से भी बज़ोरे शम्शीर नहीं लिया है, अह्ले हिजाज़ को आठ बरस के शरीफ़ी मज़ालिम ने मुर्दा कर दिया था और तायफ़ वालों तक को शरीफ़ हुसैन और अमीर अली ने धोखा में रखा कि वह क़बाइले नज्द से उनकी हिफ़ाज़त करेंगे, हालांकि दोनों तायफ़ और मक्का मुकर्रमा छोड़ कर जद्दह भागे जा रहे थे, उस पर भी जद्दह बज़ोर शम्शीर नहीं लिया जा सका, शमशीर के साथ बैनल-अक़्वामी तदबीर को भी सुकूते जद्दह में दख़ल था, लेकिन यह भी मान लिया जाए कि हुकूमते हिजाज़ और अह्ले हिजाज़ दोनों से सुल्तान नज्द ने हिजाज़ को बज़ोर शमशीर लिया है, तब भी यह तस्लीम करना पड़ेगा कि और मुसलमान उमरा व सलातीन मुल्क गीरी की हवस और शमशीर ज़नी के वलवले में तेग़ आज़माई कर सकते हैं।

दीगराँ हम बकुनन्द आंचा मसीहामी कर्द

ज़ाहिर है कि बाहर का फ़ित्ना इस तरह फ़ज़ नहीं हो सकता, लेकिन

हिजाज़ में अन्दर का फ़ित्ना भी मौजूद है, और वतनी फ़ित्ना पर दीनी फ़ित्ना मुस्तज़ाद है और रिआया में इंक़लाब की ख़्वाहिश एक फ़ातेह के ज़ौक़ मुल्क गीरी से कुछ ही कम क़त्ल व ग़ारत का बाइस हो सकती है, हम को उसकी काफी से बहुत ज़्यादा शहादत मिल चुकी है कि अह्ले हिजाज़ सुल्तान नज्द के मुल्कुल-हिजाज़ बनते वक़्त न उन से ख़ुश थे, न आज उन से और हुकूमत से ख़ुश हैं।

अमीर अली की वज़ारते ख़ारजा की एक तहरीर

हमारे वफ़्द के रईस सैयद सुलेमान नदवी की सदारत में जो वफ़्द 18 दिसम्बर 1924 ई० को जद्दह गया था उसके नाम अमीर अली की वज़ारते ख़ारजा ने अपने मुरासला नम्बर 62 मुअर्रिख़ा 17 जिमादुस्सानी 1343 हिज० में लिखा था कि :

"आज के बाद से मम्लिकते हिजाज़ को मौजूदा बादशाह हिजाज़ के सिवा किसी से कोई तअल्लुक़ नहीं और न वह इसलिए किसी की तरफ़ देखती है और हिजाज़ ने क़तई इरादा कर लिया है कि वह अपने मौजूदा बादशाह से आख़िर दम तक वाबस्ता रहेगा और उसने अपने मुस्तक़्बिल ज़िन्दगी के मुतअल्लिक़ बादशाह मज़्कूरा की बैअत करके और दस्तूरी हुकूमत के क़्याम का इरादा करके अपने मुतअल्लिक़ क़तई फ़ैसला कर लिया है और यह सख़्त वक़्त जिस में हिजाज़ी क़ौम ने बेग़ैर इक्राह के बादशाह हाल की बैअत की है, ख़ुद मम्लिकते हिजाज़ की वतनी रविश और क़ौमी ख़्वाहिश पर बेहतरीन गवाह है।"

लेकिन हम ने देख लिया है कि अमीर अली के "आख़िर दम तक" वाबस्तगी के क्या मानी थे और उन "बेग़ैर इक्राह" के बैअत की अस्लियत क्या थी, हक़ीक़त यह है कि जिस वक़्त शरीफ़ हुसैन और उनकी औलाद के पंजा बजुल्म व इल्हाद से मम्लिकत हिजाज़ छोटी तो उसकी "वतनी रविश और क़ौमी ख़्वाहिश" ने साफ़ गवाही दे दी, हम ने देख लिया है कि जो गवाही इस से पहले दिल्वाई गई थी, वह किस क़द्र झूठी थी, मम्लिकते हिजाज़ आज नज्दी हुकूमत के पंजा से आज़ाद नहीं है, लेकिन उसकी वतनी रविश क़ौमी ख़्वाहिश और दोनों से ज़्यादा उसका मज़हबी मैलान साफ़ गवाही दे रहा है कि वह मौजूदा बादशाह हिजाज़ से एक लहज़ा के लिए भी वाबस्ता रहना नहीं चाहती और

बादशाह हाल की बैअ़त बेग़ैर इक्राह न थी, हमें हर तबक़ा के लोगों से मिलने का इत्तिफ़ाक़ हुआ, लेकिन हम ने सिवाए चन्द के किसी को भी जो नज्दी अक़ाइद का न था। मौजूदा हुकूमत से खुश न पाया, बहुतों ने उसकी भी शिकायत की कि जमीअत ख़िलाफ़ते हिन्द ही मौजूदा हुकूमत के क़्याम का बाइस हुई और गो हम ने उनको मुत्मइन कर दिया कि यह ख़िलाफ़े वाक़या है, ताहम उनकी आंखें हिन्दुस्तान पर लगी हुई हैं कि जिस तरह अह्ले हिन्द ने अपनी पूरी अख़्लाक़ी कुव्वत शरीफ़ हुसैन और अमीर अली के ख़िलाफ़ सर्फ़ कर दी, इसी तरह मौजूदा तरज़े हुकूमत हिजाज़ के ख़िलाफ़ भी सर्फ़ करेंगे, हिन्दुस्तान में यह भी मशहूर हुआ था कि सुल्ताने नज्द अह्ले हिजाज़ ही को मुख़्तलिफ़ ओहदों पर हिजाज़ में मामूर कर रहे हैं और "हिजाज़ लिल-हिजाज़ेईन" के उसूल पर कारबन्द हैं, लेकिन हक़ीक़त यह है कि जितने बड़े-बड़े ओहदे हैं, तक़रीबन इन सब पर नज्दी या नज्दियों के हम अक़ीदा अश्ख़ास को मुक़र्रर किया जा रहा है और जो चन्द हिजाज़ी बाज़ छोटे ओहदों पर मामूर हैं, वह भी अपनी मुलाज़िमत को आर्ज़ी समझते हैं, बल्कि बाज़ को तो अन्देशा है कि कहीं मुलाज़िमत ही से नहीं, बल्कि मम्लिकते हिजाज़ से भी ख़ारिज न कर दिए जाएं, मौसमे हज से पहले एक बड़ी तादाद जिन में से कुछ ज़रूर शरीफ़ी हुकूमत के अरकान थे, क़ैद और ख़ारिजुल-बलद कर दिए गये थे, लेकिन सही तादाद का हम को पता न चल सका, न उनके कुसूर और मौजूदा क़्याम का एक तुर्की ख़ातून ने जो उन में से एक की मुतल्लेक़ा बीवी थीं। हम से इस्तिदआ की उन बच्चों पर रहम खा कर जिन का ज़रिया मुआश सिर्फ़ उनके साबिक़ शौहर की आम्दनी का एक हिस्सा था, हम उनके साबिक़ शौहर की रिहाई के लिए हुकूमत से सिफ़ारिश करें और कम अज़ कम हुकूमत को उसी पर रज़ामन्द कर दें कि उनका कुसूर बता दियध जाए और उन पर बाक़ायदा मुक़द्दमा चलाया जाए हम उनके साबिक़ शौहर के हालात से वाक़िफ़ न थे और रिहाई की सिफ़ारिश करना हमारे इम्कान से ख़ारिज था, तमाम हम ने हाफ़िज़ा वहबा से उनके मुतअल्लिक़ ज़िक्र किया, तो हम को बताया गया कि हुकूमत के पास तहरीरी सुबूत मौजूद है कि यह सब लोग एक साज़िश में शरीक थे, जिसका मन्शा था कि मौसमे हज में इंक़लाबे हुकूमत की कोशिश की जाए और हाफ़िज़ वहबा

साहब मौसूफ़ ने हम को यक़ीन दिलाया कि उन पर बाक़ायदा खुली अदालत मे मुक़द्दमा चलाया जाएगा। हमें मालूम नहीं कि उन में से किसी पर भी मुक़द्दमा चलाया गया या नहीं, लेकिन अब सुनने में आया है कि एक बड़ी तादाद को जलावतन को दिया गया है, बहरहाल हमारी रवानगी जद्दह से दूसरे ही दिन नाफ़िज़ करदह क़ानून अस्लहा साबित होता है, जैसा कि मुतमिर सब्जेक्ट कमेटी के सामने पेश शुदह नज्दी तहरीक से भी साबित होता था कि हुकूमत हिजाज़ को अह्ले हिजाज़ की रज़ा मन्दी पर मुतलक़ भरोसा नहीं है और वह अह्ले हिजाज़ को इसी तरह मरऊब व ख़ाइफ़ रखना चाहती है, जिस तरह कि यूरोप की इस्तेमारी दौलतें मश्रिक़ी महकूम क़ौमों को मरऊब व ख़ाइफ़ रखती हैं, इन हालात में अलावा बैरूनी हमला आवरों की हवस गीरी के मौजूदा हुकूमत हिजाज़ को खुद बाशिन्दगाने हिजाज़ को ख़्वाहिश आज़ादी से भी साबेक़ा पड़ना, हमें लाज़मी मालूम होता है और हिजाज़ को मौजूदा हुकूमत के हाथ में छोड़ देने के यही माना हैं कि इस बुक़्अ-ए-मुबारका को एक रज़्मगाह बना दिया जाए, जिस में मुद्दतों आतिशे जंग मुश्तइल रहे, यह खुद मुसलमानाने आलम को हरगिज़ गवारा न होगा, लेकिन उस से कहीं बदतर वह ज़मान-ए-सुलह दामन होगा, जो ग़ैर मुस्लिम इस्तेमारी दौलतों की मुदाख़लत के बाद जो ऐसे हालात में यक़ीनी है, बज़ाहिर आने वाला है, खुदा अर्ज़े पाक हिजाज़ को जिसके हरमों की हुदूद में घांस और दरख़्त की टेहनी भी नहीं तोड़ी जा सकती और मूरिदे मगस तक महफ़ूज़ हैं, इस कश्त व ख़ून और फ़साद व सफ़क दम से बचाए, उस खुदा ने जिसने मक्का मुकर्रमा को "बलदुल-अमीन" क़रार दिया और जिसने हम से वादा किया कि मन दख़लहू कान आमिनन, बेशक उसकी क़ुदरत रखता है कि वह अर्ज़े हिजाज़ में अमन व अमान क़ायम रखे, लेकिन वह मुसब्बबुल-अस्बाब है और आज से तेरह सौ बरस बेश्तर अपने रसूल पर वह्य नाज़िल फरमा कर उसने यह काम हमारे सुपुर्द किया है कि अर्ज़े मुक़द्दस हिजाज़ को कुफ़्र व शिर्क की नजासत से पाक रखें और कुफ़्फ़ार को उसके पास भी न फटकने दें और वही मर्द आख़िर में मुबारक बन्दा है जो कुफ़्फ़ार के मुआमला को रोकने की पहले ही से कोशिश करे और कुफ़्फ़ार की मुदाख़लत के सब रास्ते ही बन्द कर दे, दोल यूरोप के दाख़िला का जो खटका शरीफ़

हुसैन की ग़द्दारी के बाद से मुसलमानाने आलम को हर वक़्त लगा रहता था एक हद तक आज भी मौजूद है, सुना जाता है कि जद्दह के तार घर को बरतानिया के दाख़िला की देहलीज़ जल्द बनाया जाने वाला है यह ख़तरा इस क़द्र परेशान कुन और वहशत अंगेज़ है कि हम कामिल सुबूत पहुंचने तक सब्र नहीं कर सकते और जो तरद्दुद और तश्वीश हम को लाहिक़ है, उस से अपने हम मज़्हबों और बिल-खुसूस मुसलमानाने हिन्द को नाआशना रखना चाहते। हमारे नज़्दीक सुल्ताने नज्द के वादों से मुसलमानाने आलम को न इत्मीनान हो सकता है न उनको इत्मीनान होना चाहिए, यह इत्मीनान उसी वक़्त हासिल हो सकता है, जबकि हिजाज़ में एक हिजाज़ी जम्हूरी हुकूमत क़ायम हो जाए और उस पर चन्द ज़रूरी उमूर में मन्दूबीन आलमे इस्लाम की निगरानी हो, उसी वक़्त यहाँ पाइदार अमन क़ायम हो सकेगा और उसी वक़्त यह बुक़्अ-ए-मुबारक आतिशे जंग से मामून व मस्ऊन होगा, उसी के लिए सुल्तान इब्ने सऊद ने रबीउल-आख़िर 1344 हिज० को मुतमिर इस्लामी की दावत दी थी और दावत नामा में तहरीर फरमाया था (हुकूमत के लिहाज़ से हिजाज़ हिजाज़ियों के लिए है और हुकूक़ मुक़द्दसा के लिहाज़ से जो दुनियाए इस्लाम को हिजाज़ में हासिल हैं, हिजाज़ तमाम दुनियाए इस्लाम के मुसलमानों के लिए है)।

इसी दावत नामा में सुल्तान ने लिखा था।

(और मैं इस खुदाए बरतर की क़सम खा कर जिसके क़ब्ज़-ए-कुदरत में मेरी जान है कहता हूँ कि मेरा मक़्सद हिजाज़ पर तसल्लुत या हुकूमत करना नहीं है, हिजाज़ मेरे हाथ में उस वक़्त तक अमानत है, जब तक कि अह्ले हिजाज़ खुद अपने में से ऐसे हाकिम का इंतिख़ाब न कर लें, जो आलमे इस्लामी की बात मानने वाला और इन अक़्वामे इस्लामिया और तबक़ाते मिल्लीया के ज़ेरे निगरानी रहे, जिन्होंने हिन्दुस्तानी मुसलमानों की तरह से ग़ैरत व हमीयत का सुबूत मुबह्म पहुंचाया है)।

इसी दावत नामा में जहाँ यह दर्ज था कि हुकूमते हिजाज़ दाख़िल उमूर में खुद मुख़्तार होगी, वहीं यह भी दर्ज था कि हुदूद हिजाज़ की ताईन और निज़ामे माली व अदालती इदारती की हिजाज़ के लिए तश्कील उन मन्दूबीन के लिए होगी, जिनको अक़्वामे इस्लाम उसका

अख़्तियार देंगी, हमारी राय में सुल्तान नज्द का यह इदारा यक़ीनन ऐसा था कि वह उस पर क़ायम रहते और आज उसका उन से मुतालबा करना चाहिए।

हिजाज़ में अमन की ख़ास ज़रूरत

हम ने हिजाज़ की सर ज़मीन के लिए क़्यामे अमन को सबसे बड़ी ज़रूरत बताया था, यह न सिर्फ़ इसलिए कि हर मुल्क में क़्यामे अमन सबसे ज़रूरी है, बल्कि इसलिए भी कि यह सरज़मीन दुनियाए इस्लाम की ज़्यारत गाह है और जब हज़रत इब्राहीम ने अपनी औलाद को इस वादी ग़ैर ज़ी ज़रअ् में बसाया था और खुदावन्दे करीम से उनके लिए दुआ की थी, तो उस रज़्ज़ाक़ ने अपनी मुसब्बबुल-अस्बाबी से हुज्जाज को उनके रिज़्क़ पहुंचाने का ज़रिया मुक़र्रर फरमाया था, एक ऐसे मुल्क में जिसकी अपनी आम्दनी बहुत ही क़लील हुआ और जिसका दारो मदार तक़रीबन तमाम तर बाहर से आने वाले हुज्जाज पर हो, हुज्जाज के आराम व आसाइश के मुतअल्लिक़ पूरा इंतिज़ाम करना वहाँ का अव्वलीन फ़र्ज़ होना चाहिए।

वफ़्द की राय दोबारा तश्कील हुकूमते हिजाज़

जमीअते ख़िलाफ़त की मज्लिसे आमिला ने हमारे इंतिख़ाब के वक़्त यह फ़ैसला किया था कि मुतमिर में तश्कील हुकूमते हिजाज़ के बारे में बहस न की जाए और जैसा कि हम ऊपर ज़ाहिर कर चुके हैं, सुल्ताने नज्द ने जमीअतुल-उलमा के तार के जवाब में गोल अल्फ़ाज़ में, लेकिन फिर भी साफ़ तौर पर ज़ाहिर कर दिया था कि मुतमिरमें इस मस्अला के पेश होने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जब मुतमिर का इफ़्तिताह करते वक़्त सुल्तान नज्द ने अपनी तरफ़ से 26 नुमाइन्दों को नामज़द किया और चार अह्ले हदीस को भी मुतमिर में शरीक किया और इस तरह 59 अरकाने मुतमिर में से तीस एक बड़ी हद तक सुल्ताने नज्द की राय के पाबन्द हो गये, तो तश्कीले हुकूमत के मस्अला को तमाम मसाइल से पेश्तर मुतमिर के प्रोग्राम में रखा गया, लेकिन इस मस्अला का सुल्तान के आख़िरी दावत नामा में न कहीं ज़िक्र था और न हमारी जमीअत ने एक ऐसी मुतमिर में हमें उस पर बहस करने की इजाज़त दी थी, जिसकी नुमाइन्दगी एक बड़ी हद तक मुश्तबेह थी,

इसलिए हम ने ग़ैर रस्मी तौर पर सुल्तान को इत्तिला दी कि हम किसी ऐसे मुबाहिसा में शरीक नहीं हो सकते और अगर उसके मुतअल्लिक़ उनके खुतबा इफ़्तिताहिया में कुछ ज़िक्र किया गया, तो जमीअते ख़िलाफ़त के मस्लक के मुताबिक़ हम उनकी मिल्कीयत के ख़िलाफ़ इज़्हार राय करेंगे, अल्बत्ता सुल्तान नज्द के साथ मुलाक़ातों में जो कुछ इस बारे में कहा गया है, वह हम ऊपर ज़ाहिर कर चुके हैं, रस्मी तौर पर उन से इस बारे में मज़ीद बहस हमें बेसूद मालूम हुई, इसलिए कि वह बादशाहत छोड़ने पर किसी तरह रज़ी न मालूम होते थे, अब हम अपने मुशाहिदात और तज्रिबात के बाद तश्कील हुकूमत के मुतअल्लिक़ अपनी राय ज़ाहिर करना चाहते हैं, हमारी राय है कि हिजाज़ में किसी क़िस्म की बादशाहत न क़ायम हो, हुकूमत किसी ख़ास ख़ानदान के साथ हरगिज़ वाबस्ता न हो, हुकूमत में विरासत का क़ोई तअल्लुक़ न हो, हुकूमत शूराइ और जम्हूरी हो और सिर्फ़ साकिनाने हिजाज़ को अरकाने हुकूमत बनाया जाए, गो जब तक उनको बैरूनी इम्दाद की ज़रूरत हो तमाम अक़्तारे आलम इस्लामी से बेहतरीन मुसलमान बतौर उम्माले हुकूमत मुलाज़िम रखे जासें।

आलमे इस्लाम की निगरानी

इस तरह हिजाज़ी हुकूमत दाख़िली उमूर में खुद मुख़्तार होगी, लेकिन चन्द उमूर में उस पर आलमे इस्लाम की निगरानी होगी, इन उमूर में सबसे मुक़द्दम हिजाज़ को ग़ैर मुस्लिमों की मुदाख़िलत से बचाना है और यह फ़र्ज़ न सिर्फ़ हिजाज़ियों या अरबों का है, बल्कि हर मुसलमान का है, जिसको या ऐयुहल्लज़ीना आमनू इन्नमल-मुश्रिकूना नजेसुन फ़ला युक़र्रेबू अल-मस्जिदिल-हरामा बअ्दा आमहुम हाज़ा। का बारगाहे ईज़्दी से हुक्म मिला है, ग़ैर गुस्लिमों की मुदाख़िलत तरीक़ा-तरीक़ा से हो सकती है। इसलिए मुदाख़िलत को किस तरीक़ा से रोका जाएगा। उसकी तशरीह यहाँ नहीं की जा सकती, अल्बत्ता ग़ैर मुस्लिमों को इक़्तिसादी इम्तियाज़ात देना बन्द करना चाहिए और ग़ैर मुस्लिम दोल के क़न्सिलों पर कम अज़ कम मुस्लिम होने की शर्त लगाई जा सकती है, दूसरा अम्र जिस में आलमे इस्लामी की निगरानी लाज़मी है, तरवीज शरीअ़ते इस्लामिया है, इसलिए किसी हिजाज़ी या अरबी हुकूमत को भी

यह हक़ नहीं दिया जा सकता कि वह शरीअकत हक़्क़ा की खुद ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे, या उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी जाइज़ रखे, अल्बत्ता तरवीजे हुकूमत की तरफ़ से शरीअत के उसी हिस्सा की की जाएगी, जो तमाम मज़ाहिबे इस्लामिया में मुस्लमा हैं, जिन मसाइल में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिद में इख़्तिलाफ़ है, उन में हर मुस्लिम मजाज़ होगा कि अपने मज़्हब के मुताबिक़ अमल करे, अल्बत्ता दूसरे मज़ाहिब और मज़्हब वालों की तौहीन और दिल आज़ारी की किसी को इजाज़त न होगी, ख़्वाह वह उसे अपने मज़्हब का जुज़ ही क्यों न समझे, उसके अलावा उन तबर्रुकात, सदक़ात और औक़ाफ़ की निगरानी भी आलमे इस्लामी के मन्दूबीन करेंगे, जो बैरूने हिजाज़ की तरफ़ से दिए या क़ायम किए गये हों, इन मोटी-मोटी बातों के अलावा कुछ और उमूर भी ऐसे होंगे, जिन में आलमे इस्लामी की निगरानी की ज़रूरत होगी, लेकिन उस वक़्त इस क़द्र तशरीह काफी है, आलमे इस्लामी के मन्दूबीन इसी तरीक़ा पर मुक़र्रर या मुन्तख़ब किए जा सकते हैं, जो मुतमिर इस्लामी के लिए पहली मुतमिर ने मन्ज़ूर किया है।

अह्ले हिजाज़ की अहलियत अह्ले नज्द से कम नहीं, बल्कि कहीं ज़्यादा है

हिजाज़ के लोगों में इंतिज़ाम मुल्की की काफी अहलियत मालूम होती है और कम अज़ कम नज्दियों से ज़्यादा वह हुकूमते हिजाज़ के चलाने की अहलियत रखते हैं। हमें नज्दियों में अह्ले हिजाज़ से बेहतर कोई शख़्स हिजाज़ पर हुकूमत करने का अह्ल नज़र नहीं आया, बल्कि अह्ले हिजाज़ को हम ने अह्ले नज्द से कहीं ज़्यादा उसका अह्ल पाया।

बाब (7)

लार्नस ऑफ़ अरबीया के ख़ुफ़िया चेहरे

लार्नस ऑफ अरबीया अरब सियासत का मशहूर अफ़सानवी किरदार है। उसे मग़रबी अह्ले क़लम ने अरबों की आज़ादी का चम्पियन बना कर पेश किया जो उन्हें तुर्कों के "चंगुल" से नजात दिलाने के लिए आप खुद उनके साथ आ मिला था। उन्होंने इस हक़ीक़त को पोशीदा रखने की कोशिश की कि वह बरतानवी एन्टेलीजेंस का अय्यार तरीन आदमी था और उसे बाक़ायदा एक अरब की हैसियत से अरबों में "प्लान्ट" किया गया था। उसे अरबों को बग़ावत पर आमादा करके ख़िलाफ़ते उस्मानिया को पारा-पारा करने और इस्राईली रियासत के क़याम की राह हम्वार करने का मिशन सौंपा गया उसकी मुकम्मल रूदाद, खुफ़िया फाइलों से अख़ज़ करके पहली मरतबा फलिप नाइटली और कूलिन सिम्पसन ने अपनी किताब "The Secret Lawrence of Arabia" में बयान की है जिसकी तल्ख़ीस ज़ुबैर हुसैन पेश करते हैं। पहली जंगे अज़ीम का वाक़या है, जब सामराजी कुव्वतें अपने आदमियों को मुख़्तलिफ़ भेस में दूसरी क़ौमों में भेजा करती थीं। अब उन्होंने तरीक़े कार बदल दिया है। वह इन क़ौमों के अन्दर ही अन्दर अपनी बसाते सियासत के मुहरे तैयार करती हैं। इस रूदाद को पढ़िए और इस्लामी दुनिया पर नज़र डालिए, सुर्ख़ व सफ़ेद सामराज के कितने ही "लार्नस" सर गरम कार नज़र आएंगे।

10 जून 1816 ई० का दिन था। मक्का के शरीफ़ हुसैन ने अपने महल की खिड़की से हवाई फायर किया। यह सिगनल था इस बात का कि तुर्कों के ख़िलाफ़ बग़ावत शुरू हो गई है। मदीना में पाँच रोज़ पहले ५ जून को लड़ाई छिड़ सकती थी, जहाँ हुसैन के चार में से दो बेटे अली और फ़ैसल पाँच सौ अरब फौजियों के साथ तुर्क फौज से अलग हो गये थे। उन्होंने तुर्क कमानडर को ख़त लिखा किय वह अपने बाप के हुक्म पर तुर्कों से तअल्लुक़ात ख़त्म कर रहे हैं और जंग का एलान।

यह इस मुहिम का नुक़्त-ए-आग़ाज़ था, जिस में आइन्दा पाँच बरसों में लार्नस ने अपने खुले और छुपे जौहर दिखाए। अमरीकी सहाफी

लादल थामस (जिसने सबसे पहले लार्नस पर किताब लिख कर उसे अज़ीम हीरो की हैसियत से पेश किया) के बक़ौल लार्नस सहराई रॉबिन हुड था और सादह लौह अरबों की की ज़बान में "ग़ाज़ी" जिस ने बिखरे हुए अरब क़बीलों को "तुर्की इस्तेमार" के ख़िलाफ़ मुत्तहिद करके दमिश्क़ पर फातिहाना यल्ग़ार की। खुद लार्नस ने अपनी मशहूर किताब "दानाई के सात सुतून" में अपनी शख़्सियत को मज़ीद रोमानवी रंग व आब दिया। लेकिन एक रुख़ और भी था जिसे कुछ लोगों ने महसूस किया, लेकिन लार्नस ने उसे दानिस्ता छुपाया। अगर वह चाहता भी तो सरकारी सिकरेट एक्ट उसका इंकिशाफ़ न करने देता।

हसब व नसब : लार्नस के क़दीम अज्दाद में सर राबर्ट लार्नस का नाम सरे फ़ेहरिस्त है जो साढ़े सात सौ बरस क़ब्ल सलेबी जंगलों में शेरे दिल रिचर्ड के हम रुकाब था और ज़मान-ए-क़रीब के अज्दाद में दो भाईयों सर हनरी और सर जान लार्नस ने हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी (1857 ई०) को कुचलने में अहम किरदार अदा किया। बाप थामस राबर्ट चीप मैन औसत दर्जे एंगलो आइरश ज़मींदार था। लार्नस, चीप मैन की चार बेटियों की स्काच सारा मेडन के बतन से था जिसके साथ सारी उम्र उसका ग़ैर क़ानूनी तअल्लुक़ रहा। मुआशी और कानूनी हालात ने उन्हें किसी एक जगह टिकने न दिया। आयरलैंड, वेल्ज़, स्काटलैंड और फ़्रांस में घूमने फिरने के बाद उन्होंने ऑक्सफोर्ड को अपना मसकन बनाया। उसी ज़माने में चीप मैन ने अपना नाम बदल कर लार्नस रख लिया। सारा से उसके तीन बेटे भी थे। थामस एड दर्ड लार्नस का नम्बर दूसरा था।

थामस एडवर्ड लार्नस ने तालीम पहले फ़्रांस के शुमाली साहिल के एक क़स्बे वेज़ड में ऑक्सफोर्ड स्कूल में हासिल की। बारह बरस का था कि किसी बात पर अपने एक हम जमाअत से झगड़ा हो गया और नौबत मार पीट तक जा पहुंची, जिसके नतीजे में उसकी टांग की हड्डी टूट गई। इस हादसे में लार्नस की जिस्मानी नश्व व नुमा रुक गई और उसका क़द छोटा रह गया। आम अंग्रेज़ का क़द पौने छेः फुट होता है, जब कि लार्नस का क़द सिर्फ़ पाँच फिट पाँच इंच था। बाक़ी जिस्म के मुक़ाबले में उसका सर बहुत बड़ा था।

होनिहार बर्दा : सत्तरह साल की उम्र में वह किसी को बताए बग़ैर घर से निकला और कारनवाल पहुंच कर राइल आरटलरी में सिपाही भर्ती हो गया। बाप को पता चला तो वह उसे बड़ी मुश्किल से वापस ले आया। अब लार्नस जीसस कॉलेज ऑक्सफ़ोर्ड में दाख़िल हो गया। तारीख़ उसका पसन्दीदा मज़्मून था। यहाँ आशमोलीन म्यूज़ियम के डायरेक्टर डी जी होगार्थ ने लार्नस की मख़्फ़ी सलाहियतों को भाँप लिया और उस पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी। आसारे क़दीमा उसका ख़ास मुतालेआती मैदान था और वह मुख़्तलिफ़ मुहिमों पर एशियाए कोचक, क़बरस और मिस्र भी गया। माहिर आसारे क़दीमा होने के अलावा वह पोलिटिकल ऐंटलिजेंस का आफ़ीसर भी था, और शर्क़े औसत से मुतअल्लिक़ उमूर पर ख़ुसूसी नज़र रखता था। होगार्थ ने एक तन्ज़ीम "राउन्ड टेबल" तश्कील दी, जिसके अरकान में बड़े-बड़े अख़्बारों के एडीटर, दानिशवर, अहम ओहदेदार हत्ता कि पराइम मिनिस्टर तक शामिल थें लार्नस ने होगार्थ के वास्ते से "राउन्ड टेबल" के अज़ाइम जज़्ब के जो अरब में उसके काम का बड़ा मुहर्रिक है।

अंग्रेज़ों में कोई दूसरा शख़्स ऐसा न था जो सलतनते उस्मानिया के बारे में होगार्थ को चेलंज कर सकता। जंग शुरू होने से बरसों पहले बज़ाहिर माहिर आसारे क़दीमा की हैसियत से वह सलतनते उस्मानियार के इलाक़ों में घूमा फ़िरा, लेकिन दर पर्दा सियासी और फ़ौजी नौइयत की मालूमात जमा करता रहा। होगार्थ ने जल्द ही अपने शागिर्द को अपने रंग में रंगना शुरू कर दिया। लार्नस कुरूने उस्ता की तारीख़ और फ़न्ने सिपहगरी में ख़ुसूसी दिल्चस्पी लेने लगा। छुट्टियों में वह फ़्रांस, इंग्लैंड और वेल्ज़ के क़िलों और जंगी मैदानों का मुताला करता, नक़्शे बनाता और फोटो लेता।

पुर इसरार सफर : ऑक्सफ़ोर्ड के ज़माने ही में लार्नस ने खुद को ऐंटलिजेंस ऐजेंट की हैसियत से तैयार करना शुरू कर दिया। वह अपने जिस्म को कुदरती मसाइब और आफ़ात बर्दाश्त करने की तर्बियत देने लगा। कई-कई दिन कुछ न खाता, शदीद जाड़ों में पैदल लम्बे-लम्बे सफर करता, साइकिल पर लगातार सवारी करता, यहाँ तक कि थक कर गिर पड़ता। यूं वह अपनी कुव्वते बर्दाश्त बढ़ा रहा था।

1908 ई० लार्नस ने अपने तहक़ीक़ी मक़ाले के लिए "मश्रिक़े उस्ता में सलेबियों का मिलेटरी आरकटेक्चर" का मौज़ूअ् मुन्तख़ब किया, जिसके लिए होगार्थ ने भी ख़ुसूसी सिफ़ारिश की। जून 1909 ई० में वह मश्रिक़े उस्ता रवाना हो गया। उसके पास होगार्थ की हिदायात पर मुश्तमिल एक शीट, एक ताक़तवर टेली फोटो लेंज़ वाला केमरा, एक पिस्तौल, एमोनेशन और सुल्ताने तुर्की के नाम लार्ड करज़न के सिफ़ारिशी ख़ुतूत थे। सफर पर रवाना होने से पहले लार्नस ने ऑक्सफ़ोर्ड में शामी पादरी से अरबी सीख ली थी और चार्ल्स डाटी से भी मिल चुका था जो अरब इलाक़ों की सियाहत की वजह से मशहूर था। मशहूर ऐंन्टलीजेंस ऑप्रेटर पीरी गोर्डन ने जो मश्रिक़े उस्ता में मुतऐयन था, उसे कुछ नक़्शे फ़राहम किए।

लार्नस छेः जुलाई को बैरूत पहुंचा और शाम के एक हज़ार मील लम्बे पैदल सफर पर रवाना हो गया। उस वक़्त शाम में मौजूदा इस्राईल, उर्दुन और लिबनान के इलाक़े भी शामिल थे। रास्ते में वह सलेबियों के क़िले का मुताला करता रहा। बैरूत से वह सैदून पहुंचा। वहाँ से बानियास, सफ़द, तबरिया, नासिरा और हीफ़ा होता उका और सुवर के रास्ते वापस सैदून पहुंच गया। फिर शुमाल में तराबुलस का रुख़ किया। वहाँ से लेइज़्कैह, इन्ताकिया, हलब, अरफ़ा और हज़्ज़ान का दौरा करने के बाद दमिश्क़ में वारिद हुआ।

इस सफर की तीन बातें क़ाबिले ज़िक्र हैं। एक तो यह कि एक मौक़ा पर किसी बद्दू ने लार्नस को पीटा और उसकी घड़ी, पिस्तौल और नक़्दी छीन ली। एक गड़रिए ने मुदाख़िलत करके उसकी जान बचाई। लार्नस की शिकायत पर तुर्क अफ़्सरों ने बद्दू को गिरफ़्तार कर लिया। उसका सामान वापस दिलवाया। दूसरी अहम बात यह है कि इस सफर में लार्नस ने अपने एक ख़त में फ़िलस्तीन पर तबसरा किया। उस ने लिखा : "यहूदी जितनी जल्दी उस सरज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेंगे उनके लिए बेहतर होगा।"

तीसरी बात यह कि उस ने आम बद्दुओं की बोल चाल, खाने पीने, उठने बैठने के अन्दाज़ और दूसरे आदात व अत्वार सीख लिए।

जासूसी के अन्दाज़ : ऑक्सफ़ोर्ड वापस पहुंच कर लार्नस

ने अपना तहक़ीक़ी मक़ाला दाखि़ल कर दिया और उसे तारीख़ में फ़र्स्ट क्लास आनर्ज़ की डिगरी मिल गई। 1910 ई० में वह ऑक्सफ़ोर्ड से फ़ारिग़ हुआ और होगार्थ ने उसे मागडालैन से वज़ीफ़ा दिल्वा कर ऐशियाए कोचक में क़राक़मश के मक़ाम पर आसारे क़दीमा की खुदाई की मुहिम में अपने साथ शामिल कर लिया, जिस की वह ब्रिटिश म्यूज़ियम की तरफ़ से निगरानी पर मामूर था।

होगार्थ की आसारे क़दीमा की यह मुहिमें बड़ी पुर इसरार थीं, वह हमेशा सियासी या फौजी नुक़्त-ए-नज़र से अहम मक़ामात का इंतिख़ाब करता। उसकी इन "आसारे क़दीमा" से मुतअल्लिक़ "सरगर्मियों" के लिए हुकूमत के मुख़्तलिफ़ इदारे सरमाया फराहम करते। गोया उसकी सरगर्मियाँ आजकल के कल्चरल फाउन्डेशन से मुशाबेह थीं, जिनकी सरपरस्ती और माली मदद अमरीकन सी. आई. ऐ. करती है।

यूरोप का मर्द बीमार : मश्रिक़े उस्ता जिस में होगार्थ और उसका शागिर्द लार्नस साज़िशों का जाल बिछाने वाले थे, गुज़िश्ता चार सदियों से सलतनते उस्मानिया के ज़ेरे नगीं था। वही सलतनते उस्मानिया जिसकी सतवत तीन बड़े बर्रे आज़मों एशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोप पर छाई हुई थी जिसकी हद्दें एडर याटिक से अदन तक और मराकश से ख़लीजे फारस तक फैली हुई थीं और जिस के जरनीलों की फौजी ज़ेहानत और सिपाहियों की शुजाअत ने यूरोप में उसकी सरहदें .... आना के दरवाज़े तक पहुंचा दी थीं। उन्नीसवीं सदी के वस्त में मग़रेबी मुल्कों में सनअती इंक़लाब आया और उसके साथ ही सलनते उस्मानिया में तोड़ फोड़ शुरू हो गई और फिर वही ईसाई मम्लिकतें हो कभी तुर्की की शौकत और सतवत से सहमी-सहमी रहती थीं, अब उसे कम्ज़ोर देख कर भूखे भेड़ियों की तरह इस पर टूट पड़ीं। फ़्रांस ने अल-जज़ाइर, त्यूनुस और मराकश छीन लिए। बरतानिया ने मिस्र में पंजे जमाए आस्ट्रया ने हंगरी के साथ मिल कर बोसनिया और हरज़ी गो वीनिया हथिया लिया। इटली ने लीबिया में दाँत गाड़े और बिल्क़ान के सूबे बग़ावत और साज़िशों के ज़रिए अलग हो गये। १८५३ ई० में ज़ादे रूस निकोलस अव्वल ने यहाँ तक कह दिया : "हमारे सामने एक बीमार शख़्स है जो किसी भी वक़्त अचानक मर सकता है।" बीसवीं सदी में

यूरोपी ताक़तों की तुर्की की मौत मुतवक़्क़ा नज़र आ रही थी और वह गधों की तरह उसके ऊपर मंडला रही थीं।

यूरोपी ताक़तों के मफ़ादात : बरतानिया, फ्रांस, रूस और जर्मनी अपने-अपने मफ़ादात का जाइज़ा ले रहे थे, बरतानिया के मफ़ादात सबसे जुदागाना थे। सुल्ताने तुर्की चूंकि तमाम मुस्लिम दुनिया का ख़लीफ़ा कहलाता था। इंडिया में बरतानिया के ज़ेरे नगीं सात करोड़ मुसलमान थे और ख़दशा था, अगर सुल्तान तुर्की ने जिहाद का एलान कर दिया, तो यह मुसलमान रिआया उसकी हिमायत में अंग्रेज़ों से बरसरे पैक़ार हो जाएगी। बरतानिया की हिक्मते अमली यह थी कि सलतनते तुर्की क़ायम रहे, क्योंकि उसके ख़ातमे की सूरत में जो ख़ला पैदा होता वह उसके लिए कहीं ज़्यादा ख़तरनाक था। तुर्की की इम्कानी तबाही के पेशे नज़र बरतानिया को अपने फौजी और मुआशी मफ़ादात का भी तहफ़्फ़ुज़ करना था और उसका इंहिसार हिन्दुस्तान के साथ राबता बरक़रार रहने पर था जहाँ उसकी आधी फौज मौजूद थी और जो बरतानवी मस्नूआत की सबसे बड़ी और बेहतरीन मन्डी था। मज़ीद बरआं हिन्दुस्तान के साथ तिजारत और दूसरे रवाबित में नहर सवेज़ शह रग की हैसियत रखती थी और सवेज़ पर कन्ट्रोल इसी सूरत में मुम्किन था, जब शाम और जज़ीरह नुमाए अरब, बरतानिया के ज़ेरे नगीं हों।

फ़्रांस के फौजी और सियासी मफ़ादात शाम से वाबस्ता थे। जर्मनी अपनी उस्अत पज़ीर मईशत के पेशे नज़र इराक़ अरब (मैसू पोटीमा) को "जर्मन इंडिया" में तब्दील करने के ख़्वाब देख रहा था और रूस ने आर्मीनिया और क़फ़्क़ाज़ पर क़ब्ज़ा करने के बाद गर्म पानियों तक रसाई के लिए इस्तंबूल की बन्दर्गाह पर नज़रें जमा रखी थीं।

मश्रिक़े उस्ता में यूरोपी ताक़तों की दिल्चस्पी का एक और ज़बर्दस्त मुहर्रिक तेल था। अगरचे दुनिया पर तेल की असल अहमियत जंगे अज़ीम अव्वल के आख़िर में आशकार हुई, मगर बरतानवी माहिरीन ने 1904 ई० ही में महसूस कर लिया था कि जंगी जहाज़ों के लिए कोयले के मुक़ाबले में तेल कहीं ज़्यादा मुफ़ीद साबित होगा। ब्रिटिश पेट्रोलियम कम्पनी ईरान में तेल दरयाफ़्त कर चुकी थी। उस कम्पनी में चरचल का

हिस्सा था। दूसरी तरफ़ जर्मनी भी बड़ी सरगरमी से मश्रिक़े उस्ता में तेल तेलाश कर रहा था। सुल्तान तुर्की ने जर्मन अफ़्सरों और माहिरीन की मदद से 1840 ई० से तुर्क फौज को जदीद खुतूत पर उस्तवार करना शुरू कर दिया था और तुर्की तेज़ी से शाहराह तरक़्क़ी पर गामज़न था। 1908 ई० में नौजवान तुर्कों ने सुल्तान अब्दुल-हमीद को इक़्तिदार से अलग कर दिया, ताहम उन्होंने मग़रेबी तरज़ पर मुल्क की तामीर व तरक़्क़ी जारी रखी। जर्मन माहिरीन की मदद से बर्लन बग़दाद रेलवे लाइन की तामीर शुरू हो गई और मश्रिक़े उस्ता में तेल की तलाश की कोशिशें भी तेज़ कर दी गईं।

दूसरी तरफ़ अफ़्ग़ानिस्तान, ईरान, मैसूपोटीमा (इराक़ अरब) शाम और ख़लीजे फारस में बज़ाहिर क़ौन्सिलों, सैयाहों, ताजिरों और माहिरीन आसारे क़दीमा के भेस में बरतानवी ऐजेंट सरगरमे अमल थे जो बर्री अफ़्वाज, बहरिया, दफ़्तरे ख़ारजा, इंडिया आफ़िस और ऐंटलीजेंस सर्विस के लिए मालूमात जमा कर रहे थे। उन ऐजेंटों में मर्दों के साथ औरतें भी शामिल थीं।

गिरफ़्तारी और रिहाई : इसी फ़ज़ा में, मश्रिक़े उस्ता की सियासत में लार्नस नमूदार हुआ। वह वस्त दिसम्बर 1910 ई० में इस्तंबूल के रास्ते क़राक़मश पहुंचा। यहाँ खुदाई की इब्तिदा 1878 ई० में हुई थी, लेकिन ख़ातिर ख़्वाह नताइज बरआमद न हुए और मन्सूबा तर्क कर दिया गया। फिर जूंही बर्लन बग़दाद रेलवे फुरात तक पहुंची, अंग्रेज़ों ने तुर्कों को मुत्तला करके अचानक अज़सरे नव काम शुरू कर दिया। जब अंग्रेज़ "माहिरीने आसारे क़दीमा" की टीम होगार्थ की सरकरदगी में क़राक़मश पहुंची, जर्मन इंजीनियर दरियाए फुरात पर पुल तामीर कर रहे थे, चुनांचे टीम के बेशतर मिम्बर जर्मनो की नक़्ल व हरकत का जाइज़ा लेते रहे, इस तरह अंग्रेज़ इस मुहिम से दोहरा मक़्सद हासिल कर रहे थे। अप्रैल 1911 ई० में होगांर्थ ने "मुहिम" लार्नस के सुपुर्द की और खुद लन्दन वापस चला गया। क़राक़मश में खुदाई का असल मक़्सद क्या था? उसका पता लार्नस के उन खुतूत से चलता है जो उस ने उस ज़माने में होगार्थ और अपनी वालिदा को लिखे। 23 मई 1911 ई० को उस ने अपनी वालिदा को लिखा :

"मेरा कैमरा बहुत मुफ़ीद साबित हो रहा है और टेली फ़ोटो मीलों दूर तक नंगी आंखों से बेहतर काम कर रहा है।"

ख़्याल रहे यह उस ज़माने का ज़िक्र है, जब फ़ोटोग्राफ़ी अभी इब्तिदाई दौर में थी और टेली लीनज़ बहुत महंगे थे और शाज़ व नादिर और इस्तेमाल होते थे, फिर लार्नस मीलों दूर से आसारे क़दीमा की खुदाई के मक़ाम पर किस चीज़ के फ़ोटो ले रहा था? 24 जून 1911 ई० को उस ने होगार्थ को लिखा :

"मैं सरमा यहीं गुज़ारने का इरादा रखता हूँ। मेरा ख़्याल है कि मक़ामी दिहातों की अरबी बोली भेस बदलने में मेरी मुआविन होगी।"

सवाल पैदा होता है कि आख़िर लार्नस को भेस बदलने की क्या ज़रूरत थी?

लार्नस की पुरइस्रार सरगर्मियों की भनक तुर्कों को भी पड़ गई और वह उसे शक व शुबहे की नज़र से देखने लगे, उसका इज़्हार लार्नस के एक ख़त से होता है जो उस ने 1912 ई० में होगार्थ को लिखा।

गर्मियों के मौसम में जब खुदाई बन्द हो जाती, तो लार्नस, दाहोम और हमूदी की हम्राही में लम्बे-लम्बे सैर सपाटे शुरू कर देता। एक दफ़ा वह ऊंट, कश्तियों में सवार करके दरियाए फ़ुरात के पार ले गया और वहीं से उन पर बैठ कर पोर्ट सईद चला गया, जहाँ कुछ अरसे क़याम किया। लार्नस के बयान के मुताबिक़ इस सफर में तुर्कों ने उसे और दाहीम को तर्क फ़ौज के भगोड़े समझ कर गिरफ़्तार कर लिया और क़ैद में डाल दिया और उन्होंने मुहाफ़िज़ को रिशवत दे कर रिहाई पाई।

औरत के भेस में : 1913 ई० की गर्मियों में लार्नस इंगलैंड वापस चला गया, दाहीम और हमूदी भी उसके हम्राह थे, उनकी वापसी मौसमे ख़ज़ां में हुई। अगले बरस जनवरी में होगार्थ की हिदायात पर लार्नस और लेवनार डोली, बरतानवी फ़ौज के कैप्टन एस. एफ़. न्यूकोमब की सरकरदगी में सहराए सैना के सफ़र पर रवाना हुए। मक़सद फ़ौजी जासूसी था। दाहीम भी लार्नस के साथ था, उन्होंने सहरा में छः हफ़्ते सफ़र किया और रास्तों और आबी ज़ख़ाइर के नक़्शे तैयार किए। ज़ाहिर यह किया गया कि वह उस रास्ते का खोज लगाना चाहते हैं, जिस पर एक मशहूर रिवायत के मुताबिक़ इस्राईली चालीस बरस

तक सहरा में भटकते फिरे थे।

उक़्बा में तर्क हुक्काम ने उस पार्टी को क़स्बे के नज़्दीक आने की इजाज़त न दी, लेकिन लार्नस ने ख़ाना बदोश औरत का भेस बदला और दाहौम के साथ चुपके से तुर्क लाइन पार करके जल्दी-जल्दी इलाक़े का सर्वे कर लिया। सफर के इख़्तिताम पर लार्नस क़राक़मश वापस आ गया। फिर यनोकोमब की तहरीक पर लार्नस और दोली, तोरूस के पहाड़ों में जर्मनों की तामीर करदह सड़क के बारे में मालूमात हासिल करने चल पड़े, जिसके ज़रिए बर्लन, बग़दाद रेलवे का तामीराती सामान पहुंचाया जा रहा था। इस सफ़र में उनकी मुलाक़ात एक अतालवी इंजीनियर से हो गई जिसे जर्मनों ने शुबहे की वजह से निकाल दिया था। उस इंजीनियर से उन्हें रेलवे से मुतअल्लिक़ आइन्दा मन्सूबों का पता चला।

जून 1914 ई० को लार्नस लन्दन चला गया जहाँ लार्ड कचेज़ ने जो उस वक़्त मिस्र में बरतानिया का एजेंट और कौन्सिल जनरल था, उसे और दुवली को सीनाई के सर्वे की रिपोर्ट लिखने के लिए कहा :

एक जासूस की मौत : 4 अगस्त 1914 ई० को जंगे अज़ीम अव्वल छिड़ गई। 29 अक्तूबर को तुर्की ने रूस पर हमला कर दिया। लार्नस, यनूकोमब, जाज्र लाइड, वौली और ईवबरे हरबरट मल्टरी ऐंटलीजेंस आफ़िस में अपनी ड्यूटी संभालने के लिए क़ाहिरा चल पड़े।

क़ाहिरा आए चन्द रोज़ हुए थे कि लार्नस की मुलाक़ात सत्तरह साला ईसाई नौजवान चार्लस बूतग़ी से हुई। वह हीफ़ा का रहने वाला था। अतालवी जहाज़ में फ़िलस्तीन से भाग कर पोर्ट सईद पहुंचा और वहाँ से क़ाहिरा। यहाँ उस ने बरतानवी फौज को तुर्कों की पोज़ीशनों से मुतअल्लिक़ मालूमात फराहम कीं। इस सिले में उसे ऐंटलीजेंस में तरजुमान रख लिया गया। लार्नस ने अपना तआरुफ़ मिल्टरी ऐंटलेजेंस से वाबस्ता लेफ़्टिनेंट की हैसियत से कराया और बताया कि उसका तक़र्रुर बहैसियत तरजुमान मन्सूख़ कर दिया गया है और अब उसे मेरा ऐजेन्ट बन कर काम करना होगा।

अगले रोज़ लार्नस ने चार्लस को ब्रिटिश ऐंटलीजेंस एजेंट की

हैसियत से हीफ़ा वापस जाने और तुर्कों के बारे में मालूमात फराहम करने की तरग़ीब दी और कहा कि जितनी रक़म की ज़रूरत हो वह फराहम करेगा, मगर चार्लस ने अपने बजाए अपने बाप की ख़िदमात पेश कीं जो अभी तक हीफ़ा में था। लार्नस मान गया और एक ख़ातून के ज़रिए चार्लस के बाप से पैग़ाम रसानी शुरू करी दी। थोड़ा अरसा ही गुज़रा था कि चार्ल्स का बाप साहिल पर मशकूक हालात में घूमता हुआ पकड़ा गया, मुक़द्दमा चला और उसे जासूसी के जुर्म में सज़ाए मौत दे दी गई।

घुटने टेक दिए : 1916 ई० के आग़ाज़ में लार्नस को एक निहायत अहम और खुफ़िया मिशन पर इराक़ भेजा गया। उसके ज़िम्मे तर्क फौजों के कमानडर इंचीफ़ से राबता पैदा करना और उसे दस लाख पौंड रिशवत देकर महसूर बरतानवी फौज को छुड़ाना था। जनरल टाउन सैंड की कमान में बरतानवी अफ़्वाज को तुर्क फौजों ने मार भगाया था और वह क़त में क़िला बन्द हो कर बैठ गई थीं। तुर्क फौज ने जिसकी कमान ख़लील पाशा कर रहा था, क़िले का मुहासरा कर लिया। दस हज़ार सिपाहियों के हिलाक हो जाने का ख़दशा पैदा हो गया था, अंग्रेज़ों ने उन्हें बचाने के लिए फौज भेजी, लेकिन ख़ूंरेज़ लड़ाइयों के बावजूद अंग्रेज़ तुर्कों का मुहासरा न तोड़ सके। जंगी चालों से मायूस हो कर बरतानवी वज़ीरे मम्लिकत बरायं जंग ने सियासत लड़ाने का फ़ैसला किया, बरतानवी वज़ीरे मम्लिकत बराय जंग कचेज़ ने ख़लील पाशा को ख़रीदने की तज्वीज़ पेश की। २६ मार्च को जनरल राबरटसन ने क़त के क़रीब जनरल आफ़िस कमानडिंग फोर्स "डी" को मुन्दरजा ज़ैल तार भेजा :

"किलियर दी लाइन 14895 सफर इंतिहाई खुफ़िया और ज़ाती कैप्टन लार्नस तुम से मशवरा करने के लिए 30 मार्च को बसरा पहुंच रहा है और अगर मुम्किन हुआ, तो वह इराक़ में मुतऐयन उस्मानी फौज के किसी कमानडर मसलन ख़लील पाशा या नजीब को ख़रीदने की कोशिश करेगा, ताकि टाउन सैंड को मुहासरे से निकाला जा सके। इस मक़्सद के लिए तुम्हें दस लाख पौंड तक रक़म ख़र्च करने का अख़्तियार दिया जाता है, चूंकि फौरी तौर पर राबते के लिए कोई मुक़ामी फ़र्द नहीं

मिल सका। इसलिए अकेले लार्नस को यह मिशन सौंपा गया है, ताहम मुम्किन है बसरा में इस मक़्सद के लिए कोई मुआविन मिल जाए।"

लार्नस 22 मार्च को क़ाहिरा से रवाना हुआ। कुवैत से जहाज़ तब्दील किया और बसरा में मुख़्तसर क़याम के बाद दरियाए दजला में लंगर अन्दाज़ एक स्टीमर में क़ायम हेडकुवार्टर को अपने आने की रिपोर्ट दी। मक़ामी बरतानवी जनरल, तुर्कों को रिशवत पेश करने के हक़ में न थे, उनका ख़्याल था कि यह हथियार डालने से कहीं ज़्यादा डालने से कहीं ज़्यादा ज़लील और शर्मनाक हरकत होगी। जिस से बरतानवी फौज का मौराल गिर जाएगा और दुशमन से इत्तिहादी ताक़तों को बदनाम करने के लिए इस्तेमाल करेगा, लेकिन चूंकि लार्नस मिशन के अहकाम चीफ़ ऑफ़ इम्पेरियल जनरल स्टाफ़ की तरफ़ से भेजे गये थे, इसलिए वह बादले नाख़्वास्ता ख़ामोश रहे, ताहम दो जरनलों ने लार्नस को अलग ने जा कर समझाने की कोशिश की कि यह मिशन एक सिपाही के वक़ार के मनाफ़ी है। लार्नस ने उनकी बातों पर कान न धरे और कहा कि उन्हें उसके मुआमले में दख़ल देने का कोई अख़्तियार नहीं है। ईवबरे हरबर्ट (जो खुद बखुद भी ऐंटलीजेंस में था) के साथ मिलकर लार्नस ने ख़लील को दस लाख पौंड की रिशवत पेश की और बाद में बढ़ा कर दुगनी कर दी, लेकिन ख़लील ने यह पेशकश पाए हिक़ारत से ठुकरा दी। टाउन सैंड के लिए बिला शर्त हथियार डालने के सिवा और कोई चारा न रहा।

हथियार डालने के मौक़ा पर लार्नस और हरबर्ट भी मौजूद थे। यहाँ भी लार्नस ने जनरल का किरदार अदा किया, हरबर्ट के हम्राह ख़लील पाशा से मिला और हथियार डालने के इंतिज़ामात तय किए। बाद अज़ां लार्नस ने ख़लील पाशा से अपनी मुलाक़ात की खुफ़िया रिपोर्ट वार आफ़िस (दफ़्तरे जंग को इरसाल की)।

खुफ़िया हिदायात : लार्नस का बुनियादी मक़्सद नाकाम रहा था, लेकिन वह दरअस्ल सिर्फ़ इसी काम के लिए मैसू पौटमिया नहीं आया था। नए क़ायम शुदह अरब बेयोरो में कर्नल क्लेटून और दूसरे अंग्रेज़ अफ़्सर अरब नशनलज़िम को बरतानवी मफ़ादात ताबे बनाने के लिए सरगरमे अमल थे। लार्नस अभ बसरा ही में था कि उसे क़ाहिरा से खुफ़िया हिदायात मिलें : "अरब बग़ावत के मन्सूबे पर अमलदर

आमद का वक़्त आ गया है क़ाहिरा में कारआमद नशनलिस्ट लीडर ख़ासी तादाद में जमा कर लिए गये हैं और उन्हें ख़ुसूसी मिशन पर बसरा भेजने का मन्सूबा बना लिया गया है.........सबसे अहम चीज़ (लोगों से राह व रस्म बढ़ाने, उन्हें ख़रीदने, और तमाम मुतअल्लिक़ा उमूर के लिए) रुपया होगा।"

लार्नस ने इन हिदायात पर पूरा-पूरा अमल किया। उस्मानी पार्लियामेंट के एक रुक्न सुलेमान फीदी का बयान है : "लार्नस ने मुझे फौज इकट्ठी करके तुर्कों के ख़िलाफ़ बग़ावत करने की तरग़ीब दी और इस ख़िदमत के सिले में बेइंतिहा सोना मुहैया करने का वादा किया, लेकिन मैंने पेशकश ठुकरा दी।"

लार्नस किस क़द्र अहमियत और लामहदूद अख़्तियारात का मालिक था। उसका अन्दाज़ा आला हुक्काम के इस ख़त से हो सकता है, जो उसे बसरा में भेजा गया :

जनरल मेक मोहन बसरा आ रहा है। हम ने उस से गुफ़्त व शुनैद की है और उस ने तुम्हारी हर तरह से मदद करने का वादा किया है, वह तुम्हारे मुतअल्लिक़ सब कुछ जानता है, ताहम अगर वह तुम्हारी मदद करने में सुस्ती करे, तो बिला झिझक हमें इत्तिला दे दो।"

तस्वीर का भयानक रुख़ : लादल थामस ने अपनी किताब में लार्नस की बड़ी शानदार तस्वीर खींची है। इस तरह फ़िल्म "लार्नस ऑफ़ अरबीया" में उसे अरबों की जद्दो जहद आज़ादी का चैम्पियन साबित किया और दिखाया गया है कि उस ने किसी तरह एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हरीफ़ अरब क़बाइल के बाहमी इख़्तिलाफ़ात की आग बुझाई और उन्हें मुत्तहिद करके एक क़ौम में बदलने की कोशिश की। हक़ीक़त उसके बरअक्स है। लार्नस की अपनी रिपोर्टें बताई हैं कि बग़ावत का मक़सद शुरू ही से अरबों पर बरतानिया का कन्ट्रोल क़ायम करना और ऐसे हालात पैदा करना था कि अरबों के इख़्तिलाफ़ात ख़त्म न हों और न वह कभी मुत्तहिद हो सकें।

जनवरी 1916 ई० में लार्नस ने एक खुफ़िया पेपर तहरीर किया, जिसका उनवान था "मक्का की सियासत" उस ज़माने में वह जनरल स्टाफ़ ऐंटलीजेंस क़ाहिरा में बराय नाम सिकेंड लेफ़्टिनेंट था, उस में

अरब बग़ावत के बारे में उसने लिखा :

"हुसैन की सरगर्मियाँ हमें मुफ़ीद नज़र आती हैं, क्योंकि यह हमारे फ़ौरी मक़ासिद से हम आहंग हैं और वह मक़ासिद हैं, इस्लामी ब्लाक की शिकस्त और सलतनते उस्मानिया का इंतिशार। तुर्कों के रुख़्सत होने के ाद जो रियासतें क़ायम करेगा। वह हमारे लिए इसी तरह बेज़रर होंगी, जिस तरह़ जर्मनी का आल-ए-कार बनने से पहले तुर्की था। अरब तुर्कों के मुक़ाबले में कम मुस्तहकम हैं। अगर उन्हें मुनासिब तरीक़े से इस्तेमाल किया जाए, तो यह सियासी लिहाज़ से एक पिच रंगी मज्मूआ बने रहेंगे। छोटी-छोटी हरीस रियासतें कभी मुत्तहिद न हो सकेंगी, लेकिन किसी भी बैरूनी ताक़त के ख़िलाफ़ बाहम मिल कर इक़्दाम करने के लिए तैयार हो ज़ाएंगी।"

अरबों के मुस्तक़्बिल के बारे में यह ख़्यालात बरतानिया के इन वादों के बरअक्स थे जो उस ने अरबों को बग़ावत पर आमादा करने के लिए किए थे। लार्नस को असले हक़ीक़त का इल्म था और यह चीज़ें उसके ज़मीर को कचोके दे रही थी, चुनांचे वह "दानाई के सात सुतून" में रक़्मतराज़ है:

"मुझे नज़र आता था कि अगर हम ने जंग जीत ली। तो अरबों से हमारे वादों की हैसियत काग़ज़ी पुर्ज़ों से ज़्यादा कुछ न होगी। अगर मैं एक मुअज़्ज़ज़ मुशीर होता, तो अपने आदमियों को हुक्म देता कि वह हथियार फेंक कर घरों को चले जाएं। उन्हें एक सराब के पीछे अपनी ज़िन्दगी ख़तरे में डालने की इजाज़त न देता, मगर मश्रिक़ी महाज़ जंग जीतने के लिए अरब तहरीक हमारा सबसे बड़ा हथियार था।"

यह शातिर अंग्रेज़ मज़ीद लिखता है : "फराड का ख़तरा मोल लेना ही पड़ा। मुझे कामिल यक़ीन है कि मश्रिक़ी महाज़ पर जल्दी और सुस्ती फतह के लिए अरबों की मदद हासिल करना ज़रूरी है और यह कि फतह हासिल करना और वादे तोड़ना हार जाने से बेहतर है।"

माले ग़नीमत की फ़िक्र : फरवरी 1915 ई० में सैनाई से नहर सवेर तक तुर्कों की इब्तिदाई कामयाब पेशक़दमी से कचेज़ को यक़ीन हो गया था कि जंग के बाद रूस और फ़्रांस मश्रिक़ी बुहैरा रूम में मौजूद रहे, तो वह मिस्र, नहर सवेज़ और आख़िर कार हिन्दुस्तान के

लिए ख़तरा बन जाएंगे। चुनांचे मिस्र और नहर सवेज़ की हिफ़ाज़त के लिए पेशगी इक़्दामात ज़रूरी थे।

लाइड जार्ज इस मक़सद के लिए फ़िलस्तीन को बेहतर समझता था। यहाँ बन्दर्गाह हीफ़ा की सहूलत मयस्सर थी और फिर मैसू पोटीमा से बज़रिया रेल राबता भी क़ायम था। अभी इस मस्अले पर बहस व तम्हीस हमारी थी कि बरतानवी मुदब्बेरीन का नुक़्त-ए-नज़र वाज़ेह तर होने लगा। वह यह कि अगर अरब इलाक़े तक़्सीम किए गये, तो बरतानिया ख़ाली हाथ रहना पसन्द नहीं करेगा। एस्कोथ ने लिखा है":

अगर हम ने दूसरी क़ौमों को तुर्की के हिस्सों पर छीना झपटी के लिए आज़ाद छोड़ दिया (और खुद तमाशा देखते रहे) तो उसका मतलब यह होगा कि हम ने अपने क़ौमी फ़र्ज़ को पसे पुश्त डाल दिया है।"

चरचल इस मुआमले में सबसे ज़्यादा पुरजोश था, उसने क़हा : बरतानिया को इस माले ग़नीमत से अपना मुनासिब हिस्सा वसूल करने की तैयारी करनी चाहिए।"

जंगी चालें : मई 1915 ई० में एस्कोइथ की सरबराही में मख़्लूत हुकूमत क़ायम हुई। तुर्की पर इत्तिहादियों का हमला गीली पोली में सख़्त हज़ीमत से दोचार किया। उसके बाद इत्तिहादियों, खुसूसन बरतानिया ने अपनी हिक्मते अमली तब्दील कर ली। अब बरतानिया का रुख़ मश्रिक़े उस्ता की तरफ़ था, जहाँ उसके दो बड़े महकमे इंडिया आफिस और फारन आफ़िस मस्रूफ़े अमल थे, लेकिन इन दोनों की पालीसी मुतज़ाद थी। फारन आफिस तुर्की के ख़िलाफ़ अरब क़ौमियत को परवान चढ़ा रहा था। जब कि इंडिया आफ़िस, हिन्दुस्तानी मुसलमानों की तुर्की से हम्दर्दी के पेशे नज़र फारन आफिस की इस पालीसी का सख़्त मुख़ालिफ़ था।

इस फ़िज़ा में "लार्नस, होगार्थ मन्सूबा" मन्ज़रे आम पर आया, यानी सलतनते बरतानिया के ज़ेरे असर अबर रियासत का क़्याम, अहम मस्अला यह था कि तुर्कों के ख़िलाफ़ खुरूज के लिए कौन सा अरब मौज़ूं रहेगा। इस पस मंज़र में अंग्रेज़ों की निगाहे इंतिख़ाब हसीन, शरीफ़े मक्का पर पड़ी। वह वाहिद शख़्स था, जिसे अरबों में आला मज़्हबी हैसियत हासिल थी। वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम की औलाद में से भी था और मक्का और मदीना के मुक़द्दस मक़ामात का मुहाफ़िज़ भी। मक्का का शरीफ़ आज़म बनने से क़ब्ल वह सतरह बरस यरग़माली की हैसियत से इस्तंबूल में गुज़ार चुका था और सलतनते उस्मानिया के बेश्तर लीडरों को जानता था। अलावा अज़ीं वह तन्हा अबर लीडर था जिसकी शोहरत (हाजियों के इंतिज़ामात के निगरां की हैसियत से) अरब से बाहर की मुस्लिम दुनिया में भी थी और उसका इम्कान था कि बेश्तर अरब क़ौम परस्त उसकी सरदारी क़बूल कर लेंगे। अंग्रेज़ों का ख़्याल था कि अगर हुसैन बरतानिया की मदद से तुर्कों के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ, तो वह कामयाबी से सुल्ताने तुर्की के इत्तिहादियों के ख़िलाफ़ एलाने जिहाद का असर ज़ाइल कर सकेगा जो बसूरते दीगर बरतानिया, फ़्रांस और रूस के मुस्लिम मक़्बूज़ात की करोड़ों मुस्लिम रिआया में बेचैनी और बग़ावत पैदा कर सकता है। इस वजह से लार्नस की नज़रों में सिर्फ़ हुसैन ही मौज़ूं अरब था। उसने 1916 ई० के आग़ाज़ में एक तवील मेमोरन्डम लिखा, जिस में अरब बग़ावत का पूरा मक़्सद, सियादत, स्ट्रेची और चालों का तज़्किरा था। जंग के बाद बरतानिया के मक़ासिद क्या होने चाहिएं, लार्नस ने वह भी बयान कर दिए थे :

"इस जंग का अगर कोई नतीजा बरामद हुआ, तो वह यह कि सुल्तान (तुर्की) की मज़्हबी बरतरी ख़त्म हो जाएगी। इंगलैंड अब कोई नया ख़लीफ़ा नहीं बना सकता, जैसा कि उस ने मिस्र के लिए नया सुल्तान बना दिया था........यह तो ऐसे ही होगा जैसे जापान रोमन केथूलक चर्च के लिए नया पोप मुक़र्रर कर दे। फिर हक़ीक़ी अरब यहाँ तक कि शामी भी ढीले मुँह वाले मिस्रीयों को पसन्द नहीं करते।

सुल्ताने तुर्की का मुतवक़्क़ा हरीफ़ और ख़िलाफ़त का सब से मौज़ूं उम्मीदवार शरीफ़े मक्का हो सकता है, जो गुज़िश्ता कई बरसों से अरब और शाम में सरगरम अमल है और अरब के सियाह व सफ़ेद का मालिक होने का मुद्दई उसे सिर्फ़ तुर्की से मिलने वाली रक़म और तुर्क अफ़्वाज ने एलान खुद मुख़्तारी से बाज़ रखा है, लेकिन हम मिस्र या हिन्दुस्तान की वसातत से मुताबादिल रक़म दे सकते हैं। यमन में बरतानिया के ख़िलाफ़ जो शोरिशें बरपा हैं, उन्हें दबाने की उसके सिवा और कोई सबील नहीं कि हिजाज़ रेलवे लाइन काट दी जाए। उसी

रास्ते से सिपाहियों को रुपया और अस्लेहा फराहम किया जाता है और उस लाइन की मौजूदगी यमन मे बरतानवी अमलदारी के लिए एक ख़तरा बनी हुई है। उसे काट कर हम हिजाज़ की सूल हुकूमत को मफ्लूज और हिजाज़ आदमी को मुन्तशिर कर सकते हैं, फिर हिजाज़ के अरब सरदार अपना खेल शुरू कर देंगे। बहरहाल हिजाज़ रेलवे लाइन को काट देने से तुर्की हुकूमत हरमैन से हाथ धो बैठेगी, गोया तुर्की शेर के मुँह से दाँत निकल जाएंगे और वह हमारे लिए बेज़रर हो जाएगा, बद्दू क़बीले रेलवे से नफ़रत क्योंकि उसकी वजह से उनकी सालाना महसूल की आमदनी कम हो गई है और वह लाइन काटने में हमारी पूरी मदद करेंगे।"

अरब लीडर की तलाश : इस रिपोर्ट से उन जंगी चालों का ख़ाका सामने आ जाता है जो लार्नस अरबों को बग़ावत पर उक्साने के लिए अख़्तियार करना चाहता था, ताहम वह तक़रीबन एक बरस बाद इस मारके में मुलव्विस हुआ। मक्का पर क़ब्ज़े में बिला शुबह कामयाबी हुई, लेकिन मदीने में बाग़ियों को हज़ीमत उठानी पड़ी। तुर्कों का मुहासरा कर लिया गया, लेकिन उन्होंने हथियार डालने के बजाए जम कर मुक़ाबला किया। उनके पास अस्लहा और ख़ूराक का वाफर ज़ख़ीरा था और फिर हिजाज़ रेलवे के ज़रिए उन्हें सामाने रस्द व जंग पहुंच रहा था। अबर डाइना मीट के इस्तमाल से वाक़िफ़ न थे, इसलिए लाइन को पूरी तरह काटने में नाकाम रहे, उस से हुसैन की परेशानी बढ़ गई, उसके दस्ते एक-एक करके साथ छोड़ रहे थे। इन हालात में उस ने बरतानिया से हिजाज़ रेलवे लाइन तोड़ने और दूर मार तोपें और पहाड़ी राइफ़लें मुहैया करने की दर्ख़्वास्त की, लेकिन बेसूद। हुसैन ने बादे अज़ाँ बयान किया कि बग़ावत शुरू होने से पहले दूसरे उमूर की तरह अंग्रेज़ों से यह तय हुआ था कि वह हिजाज़ रेलवे को काट देंगे, लेकिन ऐसा न कर सकने की वजह से अरब जद्दो जहद को शदीद धचका लगा।

अंग्रेज़ों को इसरार था कि ऐसा कोई मुआहदा तय नहीं पाया था.. .....उसके बाद जो कुछ हुआ वह यह था कि अरब ब्योरो ने सोचे समझे मन्सूबे के तहत हुसैन की इम्दाद रोक ली ताकि उसे एहसास हो जाए कि अंग्रेज़ों की मदद के बग़ैर वह कहीं कामयाब नहीं हो सकता और

...मकूल रवैया अख़्तियार करे।" इससे ज़ाहिर होता है कि बरतानिया का शुरू ही से यह प्रोग्राम था कि बग़ावत पूरी तरह बरतानिया के कन्ट्रोल में हो और उस ने हुसैन को यह हक़ीक़त बावर कराने का तहीया कर रखा था, लेकिन बरतानिया जल्दी पेशक़दमी करने पर मज्बूर हो गया, जब तुर्कों ने मक्का पर दोबारा क़ब्ज़े, हुसैन को फांसी देने और साज़िश को कुचल देने का मन्सूबा बनाया और तुर्क फौज मक्के की तरफ़ चल पड़ी।

अक्तूबर 1916 ई० मे मिस्र में ब्रिटिश एजेंसी के और नटेल सिक्रेट्री रानाल्ड स्टोर्स के हम्राह लार्नस को अरब बग़ावत का जाइज़ा लेने और माज़ूं क़ौम परस्त लीडरों को इंतिख़ाब करने के लिए जद्दह भेजा गया। लार्नस अपने इस दौरे के बारे में "दानाई के सात सुतून" में लिखा है :

"मेरा शुरू ही से ख़्याल था कि अबर बग़ावत की मुश्किलात अंग्रेज़ों और अरबों की ग़लत लीडर शिप का नतीजा हैं, न कि लीडरशिप के फ़िक़्दान का, चुनांचे अबर लीडरों का जाइज़ा लेने के लिए मैं खुद अरब गया। शरीफ़े मक्का बहुत बूढ़ा था। अब्दुल्लाह को मैंने बेहद चालाक, अली को बहुत ज़्यादा नफ़ीसुत्तबा और ज़ैद को सर्द महर पाया। फिर मैं अन्दरूने मुल्क जा कर फ़ैसल से मिला और उस में मुझे सही लीडर मिल गया, बद्दू क़बाइलियों की ख़ासी तादाद उसके साथ थी और फिर वह ऐसे इलाक़े में था, जहाँ पहाड़ियाँ क़ुदरती तहफ़्फ़ुज़ फराहम करती थीं, चुनांचे मैं खुश और मुत्मइन मिस्र वापस आ गया और अपने अफ़्सरों को बताया कि मक्के का दिफ़ा उसकी पहाड़ियाँ नहीं, फ़ैसल की फौज कर सकती है, वह इस नई इत्तिला से शशदर रह गये, उन्होंने फ़ैसल की मदद करने का फ़ैसला किया और फिर मुझे मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अरब भेज दिया गया।"

हाशमी शहज़ादा अंग्रेज़ के दाम में : इस बयान से लार्नस ने यह ज़ाहिर करने की कोशिश की है कि वह अरब बग़ावत में महज़ इत्तिफ़ाक़न मुलव्विस हो गया, हालांकि हक़ीक़त उसके बरअक्स है, जैसा कि हम मुख़्तलिफ़ दस्तावेज़ी सुबूत पेश कर चुके हैं कि अरब बग़ावत के शुअ्ले भड़काने में उसका नुमायां हाथ था। वह क़ाहिरा और हुसैन के दर्मियान राबते का काम करता रहा था। उस में अब कोई शुबह नहीं रहा कि दह पोलीटिकल ऐंटलीजेंस ऑफीसर की हैसियत से अरब

गया था ताकि मालूम करे कि बग़ावत को कुव्वत फराहम करने के लिए क्या कुछ करने की ज़रूरत है और अपनी आमद के दूसरे ही रोज़ उस ने अरब ब्योरो को सूरतेहाल की रिपोर्ट भेज दी थी, फिर हुसैन और उसके चारों बेटों में से उसकी नज़रे इंतिख़ाब फ़ैसल पर पड़ी, क्योंकि उसकी फौज ज़्यादा तर साहिली क़बाइलियों पर मुश्तमिल थी। और वह लार्नस को आज़ादाना नक़्ल व हरकत की बआसानी इजाज़त दे सकता था। अब्दुल्लाह की फौज अन्दरूनी क़बाइलियों पर मुश्तमिल थी। और वह लार्नस को आज़ादाना नक़्ल व हरकत की बआसानी इजाज़त दे सकता था। अब्दुल्लाह की फौज अन्दरूनी क़बाइलियों पर मुश्तमिल थी जो किसी अजनबी की मौजूदगी गवारा नहीं कर सकते थे। अली की सेहत कम्ज़ोर थी और ज़ैद की माँ तुर्क थी, जिस की बिना पर उसे बग़ावत से कोई ख़ास दिल्चस्पी न थी। फ़ैसला का ख़्याल था कि वह लार्नस के ज़रिए अरबों को आज़ादी से हम्कनार कर सकेगा। दूसरी तरफ़ लार्नस को यक़ीन था कि वह फ़ैसल को आल-ए-कार बना कर इस्लामी ब्लाक के टुक्ड़े-टुक्ड़े करोगे और मश्रिके उस्ता में बरतानिया का असर व रुसूख़ बढ़ा देगा।

अंग्रेज़ की अय्यारी : लार्नस़ के लिबास, आदात, गुफ़्तगू और दूसरे अफ़आल ने उसकी मशहूर दास्तान जनम देना शुरू की, वह इस दास्तान में अरब का चम्पियन, प्रिंस ऑफ़ मक्का और अरब का बेताज बादशाह बन कर उभरा, लेकिन अब यह हक़ीक़त तश्त अज़्बाम हो चुकी है कि लार्नस, अरबों की आज़ादी का हरगिज़ ख़्वाहाँ नहीं था। उसे अरबों से मुहब्बत थी, उन्हें पसन्दीदगी की नज़र से देखना था। उसने अरबों का लिबास, आदात व अत्वार, तर्ज़े तआम और अन्दाज़े कलाम सिर्फ़ इसलिए अपनाया था कि उन्हें ज़्यादा बेहतर तरीक़े से अपने मक़सद के लिए इस्तमाल कर सके। वह "तस्ख़ीरे शाम" की रिपोर्ट में लिखता है :

अगर हम शाम में अमन से रहना चाहते हैं और मैसू पोनीमिया (इराक़ अरब) पर क़ब्ज़ा और मुक़द्दस शहरों पर कन्ट्रोल करना चाहते हैं, तो उसके लिए नागुज़ीर है कि दमिश्क़ के हुक्मरान या तो हम खुद हों या फिर कोई और ग़ैर मुस्लिम ताक़त जिसके साथ हमारे दोस्ताना

तअल्लुक़ात हों।"

इसी तरह वह "सियासियाते मक्का" में रक़्मतराज़ है :

"हुसैन का ख़्याल है कि वह किसी रोज़ हिजाज़ में उस्मानी ख़लीफ़ा की जगह ले सकता है। अगर हम ऐसा इंतिज़ाम करें कि यह सियासी तब्दीली तशद्दुद आमेज़ हो, तो इस्लाम का ख़तरा हमेशा के लिए हम से दूर हो जाएगा, यानी मुसलमानों की कुव्वत बाहम मुतसादिम हो कर तक़्सीम हो जाएगी, फिर एक ख़लीफ़ा तुर्की में होगा और दूसरा अरब में। वह हमेशा दीनी जंग में उल्झे रहेंगे और यूं इस्लाम की कुव्वत व सतवत इसी तरह ख़त्म हो कर रह जाएगी, जिस तरह पोप की ग़ैर मौजूदगी में पापाई निज़ाम ख़त्म हो गया।"

लार्नस को अरबों से सिवाए उसके कि वह उन्हें बरतानवी साम्राज्य का नख़्च्चियर बनाना चाहता था और कोई दिलचस्पी न थी, इसी मक़्सद के लिए उसने सारे पापड़ बेले। अपने "सत्ताईस अटिकल्ज़" में (जो उसने पोलिटिकल अफ़्सरों के लिए लिखे थे और बताया था कि अरबों को किस तरह क़ाबू में किया जाए) वह लिखता है :

"हिजसज़ के अरबों को क़ाबू में लाना एक फन है, साइन्स नहीं... ....हमारे लिए वहाँ सुनहरी मवाक़े हैं। शरीफ़ हम पर एतेमाद करता है. ....अगर हम होशियारी से काम लें, तो बआसानी उसकी खुशनूदी हासिल करके अपना काम सर अंजाम दे सकते हैं।"

"चौथे आर्टिकल" में वह फ़ैसल से अपने तअल्लुक़ात के रौशन तरीन रुख़ से नक़ाब उठाता है :

अपने लीडर का एतमाद जीतिए और उसे क़ायम रखिए........ उसके पेश करदह मन्सूबों को कभी मुअम्मर दियाना मन्ज़ूर मत कीजिए, लेकिन यह एहतमाम ज़रूर कीजिए कि यह मन्सूबे सबसे पहले ज़ाती तौर पर आपके रू-ब-रू पेश हों। हमेशा उन्हें सराहिए और तारीफ़ कर चुकने के बाद उन में तरमीम कीजिए, इस तरह कि उसे कुछ महसूस न होने पाए और वह यही समझता रहे कि तरमीम उसकी अपनी पेशकरदह है, यहाँ तक कि वह आपकी राय से हम आहंग हो जाए। जब आप इस मक़ाम पर पहुंच जाए। तो उसे वहीं ठहरा लीजिए और उसके ख़्यालात को अपनी मज़्बूत गिरफ़्त में ले लीजिए और फिर पूरे इस्तिक़्लाल से आगे धकेलिए, लेकिन पोशीदा तौर पर ताकि उसके

सिवा कोई और शख़्स आपके दबाव से आगाह न हो सके।"

आर्टिकल नम्बर 18 और 19 से इंकिशाफ़ होता है कि लार्नस के पेशे नज़र अरबी लिबास ज़ेब तन करने का हक़ीक़ी मक़सद क्या था :

"अरब क़बीलों में अरबी लिबास ज़ैबतन करके आप उनका एतमाद और दोस्ती जीत सकते हैं, जो यूनिफ़ार्म की सूरत में नामुम्किन है, ताहम यह काम ख़तरनाक और मुश्किल है.........आपको ग़ैर मुल्की थेटर पर एक एकड़ का किरदार कई माह तक आराम के बेग़ैर मुसलसल अदा करना पड़ेगा। मुकम्मल कामयाबी का लम्हा वह होगा, जब अरब आपको अजनबी समझना छोड़ दें, वह आपके साथ बिल्कुल अपनों की सी बातें करें और आपको अपना ही एक फ़र्द समझें।"

आगे चल कर बीसवीं आर्टिकल में लिखता है :

"अगर आप अरबी लिबास पहन लीं, तो बाक़ी सब तौर अतवार भी उन्हीं के अख़्तियार करें। अपने अंग्रेज़ी दोस्तों और रस्म व रिवाज को साहिल पर फेंक दें और मुकम्मल तौर पर अरबों के रंग में रंग जाएं। इस तरह आप अरबों को उन्हीं के हथियारों से मात दे सकेंगे।"

एक शर्मनाक खुफ़िया मुआहदा : जिस वक़्त लार्नस और होगार्थ अरबों से वादे वईद में मसरूफ़ थे। फार्न आफ़िस में कुछ दूसरी पालीसियाँ तश्कील पा रही थी। इन पालीसियों के नतीजे में आख़िरकार "साएक्स पैकाट" मुआहदा मुअ़रिजे वजूद में आया, जिसके तहत सलतनते उस्मानिया के मुन्तख़ब हिस्से बरतानिया, फ्रांस और रूस ने आपस में तक़्सीम कर लिए और अरबों के लिए बहुत थोड़ा और ग़ैर अहम इलाक़ा रहने दिया। लार्नस ने फ़ैसल को इस मुआहदे से बेख़बर रखा। उसे ख़दशा था कि अरबों को इस मुआहदे की भनक भी पड़ गई, तो वह हथियार फेंक कर बैठ जाएंगे।

इस मुआहदे के तहत बरतानिया को इराक़ (जिसमें बग़दाद और बसरा शामिल थे) मिलना था और फ्रांस का शाम का बड़ा हिस्सा जिसमें मूसल का ज़िला भी शामिल था (अगरचे बाद में जब अंग्रेज़ों को पता चला कि इस इलाक़े में मश्रिक़े उस्ता के बेहतरीन आयल फीस्ड हैं, तो उन्होंने इरादा बदल लिया। फ़िलस्तीन, सैहूनी रियासत के क़याम के लिए वक़्फ़ कर दिया गया। मुआहदे की अहम खुसूसियत थी कि अरबों

...को वादों के जिस दिल्कश जाल में फांसा गया था, उन्हें पसे पुश्त डाल दिया गया, अरबों को एक भी क़ाबिले ज़िक्र इलाक़ा न मिला। उन्हें इस धोखे की ज़रा भी हवा लग जाती, तो उनके लड़ने का सवाल ही पैदा न होता और बग़ावत उसी वक़्त दम तोड़ जाती।)

मुआहदा इंतिहाई खुफ़िया रखा गया, हत्ता कि मेक मौहन को भी उस वक़्त पता चला, जब साइक्स ने उसे खुद बताया।

साज़िश का इंकिशाफ़ : इस बेख़बरी के आलम में दो साल बीत गये। नवम्बर 1917 ई० में रूस मैन माशुवेक बरसरे इक़्तिदार आए, तो उन्होंने अपने मख़्सूस सियासी मफ़ादात के तहत पहली बार इस मुआहदे से पर्दा उठाया। तुर्कों को अरब बग़ावत फ़ुरू करने का अच्छा मौक़ा हाथ आ गया, चुनांचे शाम में तुर्क कमान्डर इन्चीफ़ जमाल पाशा ने फ़ैसल को खुतूत लिख कर इस मुआहदे से आगाह किया और लिखा कि बरतानिया और फ़्रांस ने अरब को आपस में तक़्सीम करने का मुआहदा तय कर रखा है और हुसैन बरतानिया के जाल में फंस गया है, उस ने सुलह की पेशकश भी की।

लार्नस को तुर्कों की इस पेशकश का इल्म था। वह एक-एक तफ़्सील जानता था। वह फ़ैसल की ग़ैर हाज़री में उसके सिक्रेट्रेट की फाइलें देखता रहता था। वह हुसैन और फ़ैसल की ख़ते किताबत रास्ते ही में रोक कर पढ़ लेता था।

फ़ैसल ने तुर्कों के खुतूत हुसैन को न भेज दिए, जिसने एक बार उसे यक़ीन दिलाया था कि "बरतानिया का वादा सोने की तरह है, उसे जितना भी रगड़ोगे और ज़्यादा चमकेगा।" हुसैन ने टेलीग्राफ़ के ज़रिए जवाब दियाः "इत्तिहादी बहुत अज़ीम हैं और किसी क़िस्म के शक व शुबहे से बाला।" ताहम उस ने बतौरे एहतियात तुर्कों के खुतूत, मिस्र में बरतानिया के हाई कमिश्नर सर रेजनॉल्ड वंगेट को भेज दिए और पूछा, उन में कितनी सदाक़त है।

वंगेट और फारन आफ़िस के दर्मियान टेलीग्रामों का तबादला हुआ और आख़िरकार वंगेट को हुक्म मिला कि वह हुसैन को दर्ज ज़ैल जवाब दे।

"तुर्क, अरबों और उनकी हलीफ़ यूरोपी ताक़तों के दर्मियान बदएतमादी का बीज बोना चाहते हैं........हजमेजस्टी की हुकूमत हज़हाई

नस से किए हुए वादों की फिर से तज्दीद करती है।"

जमाल पाशा के जांनशीन ने "साएक्स पैकाट" मुआहदे का वह मतन शाए कर दिया, जो रूसियों ने जारी किया था। फारन आफिस मख़्मसे में पड़ गया। क़रीब था कि वह इक़रार कर लेता कि वंगेट की हिदायत और फिर फारन सेक्रेट्री मिस्टर बिल-फ़ौर की मन्ज़ूरी से जद्दह में बरतानवी एजेंट के ज़रिए एक तहरीर हुसैन को भेज दी गई। यह तहरीर हीला बाज़ी, ग़लत बयानी और झूठ का शाहकार थी। बरतानवी हुकूमत ने लिखा था कि यह मुआहदा महज़ एक चाल थी, इसका मक़सद यह था कि इत्तिहादी ताक़तों को तुर्कों के ख़िलाफ़ जंग जारी रखने में दिक़्क़त पेश न आए और यह मुआहदा अब अमली तौर पर मुर्दा हो चुका है।

लार्नस की पुरफ़रेब ज़हानत : हिजाज़ में लार्नस का अपने फ़्रांसीसी हम्ज़ाद कर्नल एडोर्ड बग़े मूंद से इस बात पर तसादुम हो गया कि अरब बग़ावत का रास्ता किया होना चाहिए। कर्नल बग़े मूंद इस मिशन का इंचार्ज था जो सितम्बर 1916 ई० में फ़ैसल पर बरतानिया के असरात का तोड़ करने के लिए जद्दह भेजा गया था। बग़े मूंद न सिर्फ़ पेशावर सिपाही था, बल्कि आलिम भी। वह मराकश और अल-जज़ाइर में ख़िदमात अंजाम दे चुका था और अरबी ज़बान बड़ी रवानी से बोलता था। अगर वह अपने मक़सद में कामयाब हो जाता, तो लार्नस ऑफ़ अरबीया की दास्तान जनम न लेती और लार्नस, प्रिंस ऑफ़ मक्का और सहराई राबिन हुड जैसे अल्क़ाबात से महरूम रहता। बग़े मूंद का ख़्याल था, बग़ावत मुनज़्ज़म और बाक़ायदा होनी चाहिए और उसे कामयाबी से हम्कनार करने के लिए ज़रूरी है कि अरबों की मदद के लिए बरतानवी और फ़्रांसीसी फौजी दस्ते बड़ी तादाद में भेजे जाएं। कर्नल मूंद की इस तज्वीज़ से अक्सर बरतानवी माहरीन भी मुत्तफ़िक़ थे, क्योंकि यह ख़्याल आम था कि बद्दू तुर्कों की मुनज़्ज़म फ़ौज के मुक़ाबले में ठहर नहीं सकते, लेकिन लार्नस ने इस तज्वीज़ की शदीद मुख़ालिफ़त की और कहा, बद्दुओं ने अज्नबियों खुसूसन बेदीनों को अपने मुल्क में दर आते देखा, तो वह फौरन अलग हो जाएंगे, इसलिए जंग बेक़ायदा और ग़ैर मुनज़्ज़म तरज़ पर होनी चाहिए और वह भी ज़्यादा तर अबर खुद लड़ें, ता हम इत्तिहादी अस्लहा, रुपया

पैसा, ख़ूराक और चन्द एक अंग्रेज़ अफ़्सरान की इम्दाद के लिए मुहैया करें। लार्नस की तज्वीज़ मान ली गई। बफ़े मूंद खुद अपनी हुकूमत की पूरी ताईद हासिल न कर सका।

ख़श्ते बुनियाद कलीसा बन गई ख़ाक हिजाज़ :

लार्नस अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ बग़ावत की पालीसी मुतऐयन करने में कामयाब हो गया था। अब उसको किसी ऐसे कामयाब इक़्दाम की ज़रूरत थी, जिस से उसकी दानाई का इज़्हार हुआ यह मक़सद उसने जुलाई 1917 ई० में बुहैर-ए-कुल्जुम की बन्दर्गाह उक़्बा पर क़ब्ज़ा करके हासिल कर लिया।

लार्नस अभी "वजह" मैं फ़ैसल के कैम्प में था कि हवैतात क़बीले का शैख़ ऊदह बग़ावत में शामिल हो गया। उस ने उक़्बा पर हमले पर नुमायां किरदार अदा किया। कुछ लोगों का ख़्याल है कि पूरा मन्सूबा दरअस्ल उसी का तैयार करदह था न कि लार्नस का कुछ और लोग उसका सहरा फ़ैसल के सर बांधते हैं।

यह मुहिम 9 मई 1917 ई० को 'वजह' से शुमाल की तरफ़ रवाना हुई उस पर बनारस के अलावा ऊदह शरीफ़ नासिर बग़ावत के पुरजोश लीडरों ....से एक .... नसीबुल-बिकरी और ज़की दरूबी और राइफ़लों से मुसल्लह तीस ऊंट तैयार थे। लार्नस ने ज़ीन के थैलों में बीस हज़ार सोने के सिक्के भी साथ रख लिए थे ताकि बशारत को दूर-दूर तक फ़ैलाया जा सके। इस छोटे से दस्ते ने दुनिया के गर्म तरीन और लक़ व दक़ सहरा में दो सौ मील का फ़ासिला तय किया और ....दोनों शामी मक़ामी क़बीलों को फ़ैसल की मदद पर आमादा करने में मस्रूफ़ हो गये। दूसरी तरफ़ लार्नस जैसा कि उस ने "दानाई के सुतून" में बयान किया है। मुल्क के शुमाल की तरफ़ लम्बे सफर पर तने तन्हा निकल खड़ा हुआ। उसका ख़्याल था कि शाम के अज़ सरे नौ जाइज़े से कुछ नई जंगी चालें आज़माने का मौक़ा मिलेगा जो सलेबी जंगों और पहली अरब फतह के वाक़ेआत से उसके ज़हन में उभरती थीं।" लार्नस 5 से 16 जून तक कैम्प से ग़ायब रहा। यह दमिश्क़ का वह मशहूर सफर था जो अभी तक मुतनाज़े फ़ी है।

लार्नस के बहुत से सवानेह निगार उसके सफर दमिश्क़ के बारे में

शक करते हैं। सलमान मूसा का दावा है कि उस ने लार्नस के दो अरब साथियों नसीबुल-बिकरी और फ़ैज़ुल-ग़स्सैन और बाज़ दूसरे अरबों का इन्टर्व्यू लिया, जिनका उस से कुछ न कुछ तअल्लुक़ रहा था। नसीब का बयान है कि लार्नस एक दिन के लिए भी कैम्प से ग़ायत नहीं हुआ था, जब कि फ़ैज़ के ख़्याल में इतने मुख़्तसर अरसे में इतना लम्बा फ़ासिला तय करना मुम्किन नहीं, उसने पूछा कि "क्या लार्नस कोई परिन्दा था?" उसने यह दलील भी दी कि .... इसलिए भी नामुम्किन है कि लार्नस चौबीस घन्टे भी खुद को पोशीदा नहीं रख सकता था और बआसानी पहचान लिया जाता, खुसूसन ऐसे इलाक़ों में जहाँ के लोग बेहद मुत्तजिस हैं। फिर जब भी अरबों से वाबस्ता कोई अंग्रेज़ किसी मिशन पर जाता, तो शरीफ़ या शरीफ़ का कोई क़ाबिले एतमाद अरब उसके हम्राह होता। सवाल पैदा होता है कि इस मुहिम में लार्नस के अरब साथी कौन थे? वह कहाँ ठहरे और उन्होंने ख़ूराक कहाँ से हासिल की? फिर लार्नस ने "दानाई के सात सुतून" और "सहरा में बग़ावत" में इतनी अहम मुहिम का ज़िक्र मुबहम अल्फ़ाज़ में क्यों किया? उस से यही नतीजा निकलता है कि दमिश्क़ का सफर महज़ मनघड़त अफ़साना है।

चेह अरज़ां फ़रोख़्तन्द ? : 19 जून 1917 ई० को उक़्बा की मुहिम दूसरे मरहले में दाख़िल हो गई। अब दस्ते में पाँच सौ अफ़राद थे, उन्होंने 2 जुलाई को बिल्लेसान में तुर्कों पर हमला कर दिया। थोड़ी देर के बाद बेनतीजा लड़ाई के बाद ऊदह ने शुतुर सवारों के साथ तुर्कों पर यल्ग़ार कर दी और घम्सान की जंग शुरू हो गई। लार्नस ने अफ़रा तफ़्री में अपने ही ऊंट के सर में गोली मार दी, तो वह उसके नीचे कुचले जाने से बाल-बाल बचा। मैदान अरबों के हाथ रहा। तीन सौ तुर्क मारे गये और एक सौ साठ क़ैदी बने.........जबकि सिर्फ़ दो अरब हिलाक हुए। अबल्लेसान की फतह के बाद उक़्बा खुद बखुद ज़ेर हो गया और 6 जुलाई को उस पर अरबों ने क़ब्ज़ा कर लिया। लार्नस एक हीरो की हैसियत में क़ाहिरा पहुंच गया। उक़्बा की फतह का मतलब था कि मदीना की तुर्क फौजों के साथ राबते का फ़ासिला छेः सौ मील और बढ़ गया।

10 जुलाई 1617 ई० को लार्नस ने अरब ब्यौरो को रिपोर्ट दी, जिस में अपने सफर दमिश्क़ का भी ज़िक्र किया और लिखा कि वह दमिश्क़ में दुशमन की लाशों के पीछे जा कर तुर्क फौज में मौजूद अरब, अली रज़ा अर्रुकाबी से मिला। उसने मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में अरब शुयूख़ से भी मुलाक़ात की और उनकी हम्दर्दियों का पता चलाया, दुशमन की जंगी पोज़ीशनों की जासूसी की। कई मक़ामात पर हिजाज़ रेलवे को नुक़्सान पहुंचाया और एक ट्रेन तबाह की।

यह बिला शुबह एक नुमायाँ कारनामा था, चुनांचे सर रेजनॉल्ड वेंगट ने लार्नस के लिए "विक्टोरिया क्रास" की सिफ़ारिश की, लेकिन चूंकि यह कारनामा इस एज़ाज़ के लिए मख़्सूस शराइत पूरी न करता था, यानी कोई अफ़्सर इस कारनामे का ऐनी शाहिद न था, इसलिए इस सिफ़ारिश पर अमलदर आमद न हो सका।

अगस्त 1917 ई० में फ़ैसल, उसकी फौजों और लार्नस को वेंगेट की कमान्ड से निकाल कर जनरल एलन बी की कमान में दे दिया गया। इस तब्दीली ने फ़ैसल और लार्नस को हिजाज़ की आज़ादी के महदूद मिलेट्री आप्रेशन से आलमी सियासत और आलमी जंग के वसीअ् और पेचीदा मैदान में ला खड़ा किया। एलन बी की मातहती में लार्नस के लिए फ़िज़ा बड़ी साज़गार थी, जिस से उस प़रे पूरा-पूरा फाइदा उठाया, उसके मुक़ाबले में खुसूसी मुराआत और लामहदूद अख़्तियारात के साथ दो लाख पौंड सोने की शक्ल में उसे दिए गये। उस सोने ने अरब बग़ावत की कामयाबी में किया किरदार अदा किया, यह अम्र अब कोई राज़ नहीं रहा........सुलेमान मूसा का कहना है : "बद्दुओं में लार्नस की शोहरत और क़द्र व मंज़िलत का बाइस सिर्फ़ सोना था, उन्होंने सोचा होगा कि जिस शख़्स के क़ब्ज़े में इस क़द्र ख़तीर रक़म है वह ज़रूर अपनी हुकूमत का अहम फर्द और बेपनाह अख़्तियारात का मालिक होगा।

लार्नस की मौत के बाद रेजनॉल्ड वेंगेट ने लिखा :

"अरब आप्रेशन की कामयाबी का वाहिद सबब वह रक़म थी जो मैं उसे बड़ी मिक़्दार में भेज रहा था, न कि उसकी शख़्सी जुरअत व हिम्मत और सूझ बूझ।"

अक्तूबर में लार्नस ने यरमूक के रेलवे पुल को उड़ाने की कोशिश की। वह शुमाल और फ़िलस्तीन के महाज़ पर तुर्कों के दर्मियान

मवासिलात का वाहिद ज़रिया काट देना चाहता था। अभी वह बारूद रख ही रहा था कि सन्तरी चौकन्ना हो गया और मिशन नाकाम रहा। वरमूक की इस मुहिम में एक और वाक़्या पेश आया। अब्दुल-क़ादिर नामी एक अरब जो अल-जज़ाइर में पैदा हुआ था। .... अचानक उस से अलग हो कर रूपोश हो गया। बग़े मूंद ने लार्नस को ख़बरदार किया था कि .... का एजेंट है। उस वक़्त लार्नस ने तवज्जोह न दी, लेकिन अब उसे भी शक पड़ गया, ताहम वह तुर्कों के मवासिलात के मरकज़ वरआ़ की जासूसी के लिए चल पड़ा। एक बूढ़े किसान के हम्राह फटे पुराने अरबी लिबास में वह क़स्बे में दाख़िल हुआ, जहाँ तुर्कों ने उसे पकड़ लिया। लार्नस अपनी इस गिरफ़्तारी का ज़िम्मेदार अब्दुल-क़ादिर और उसके भाई सईद को ठहराता है।

तुर्कों की मुश्किलात : जनवरी 1918 ई० में लार्नस ने तुफ़ैला के माअरके में हिस्सा लिया। उसने अरब ब्यौरो को जो रिपोर्ट भेजी, इसके मुताबिक़ इस मअ़रके में जंगी चालें उसने तश्कील दी थीं, उसमें नौ सौ अफ़सरों और जवानों पर मुश्तमिल तीन तुर्क इंफन्टरी बटालियन ने हिस्सा लिया, जिन में से चार सौ खेत रहे और ढाई सौ क़ैदी बना लिए गये। इस कारनामे पर लार्नस को डी.एस.ओ (Distingui Shed Service Oroer) दिया गया। जुलाई तक ग़ैर मुनज़्ज़म अरब फौज बतदरीज बाक़ायदा फौज में तब्दील हो गई (बग़े मूंद, इस अरसे में दिल शिकस्ता हो कर वापस फ़्रांस जा चुका था) अब फ़ैसल की फौज में तीन सौ शुतुर सवारों का दस्ता 35 सुरंग उड़ाने वाले मिस्री, 30 गोरखा तो बच्ची और 140 अफ़्रीक़ी थे और चालीस अंग्रेज़ (जिन की सुपर ददारी में आर्टलरी और मशीन गनों से आरास्ता बक्तर बन्द गाड़ियाँ थीं) थे।

19 सितम्बर को एलन बी तुर्कों पर आख़िरी वार करने के लिए तैयार था। इक्कीसवीं कोर ने तुर्कों के कम्ज़ोर बाएं बाज़ू पर हमला किया और उन्हें पीछे हटने पर मज्बूर कर दिया। जंग के दूसरे दिन तक बरतानवी फौज तुर्कों की सातवीं और आठवीं आर्मी को तीन अतराफ़ से घेरे में ले चुकी थी। अब सिर्फ़ उर्दुन की सिम्त का रास्ता खुला रह गया था, लेकिन इधर भी बीसवीं कोर के डवीज़न तेज़ी से

जमा हो रहे थे। दूसरी तरफ़ दरियाए उर्दुन के पार पहाड़ी इलाक़े में अरब फ़ौजें तुर्कों की सिकन्ड कवर की तरफ़ बढ़ रही थीं, इन हालात में तुर्कों के लिए शुमाल की तरफ़ पीछे हटने के सिवा और और कोई चारा नहीं रहा था। दमिश्क़ का सुकूत चन्द रोज़ की बात थी। शरीफ़ हुसैन को अपनी ख़्वाहिशात की तक्मील की मंज़िल सामने नज़र आ रही थी। अंग्रेज़ों के वादों के तिलस्म में गिरफ़्तार यह शख़्स समझता था कि शाम का मुस्तक़्बिल उसके अपने हाथों में है। दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ हुक्काम भी मुज़्तरब थे कि उसे हक़ीक़ते हाल से किस तरह आगाह किया जाए। ख़ास तौर पर जद्दह में बरतानवी एजेंट लेफ़्टिनेंट कर्नल सी.ई. विल्सन कुछ ज़्यादा ही परेशान था और उस ने खुफ़िया खुतूत के ज़रिए वेंगट को इस सूरतेहाल से आगाह किया। इस दौरान कलेटों ने साएक्स को लिखा।

"फ़वादुल-ख़तीब क़ाहिरा पहुंच चुका है और उसकी गुफ़्तगू से पता चलता है कि शरीफ़ असल सूरतेहाल से बिल्कुल बेख़बर है और .... है कि शाम और इराक़ किसी शर्त के बेग़ैर उसे मिल जाएंगे।"

वादों का नया जाल : आख़िर कार जून 1918 ई० में बरतानवी डेप्लोमेसी के ज़ेरे असर सात नेशनलिस्त लीडरों ने क़ाहिरा में एलान कियार कि वह हुसैन को बादशाह तस्लीम नहीं करेंगे, उनकी नज़रों में यह एक बद्दू और नातजरबाकार शख़्स है। ग़ालिबन साएक्स पैकाट, मुआहदे पर तुर्कों के प्रोपेगन्डे और ऐलान फ़िल-फ़ौर की वजह से एंग्लो अरब तअल्लुक़ात में जो गड़ बड़ पैदा हो गई थी, उसे दूर करने के लिए बरतानवी हुकूमत ने अरबों से कुछ नए वादा करना ज़रूरी समझा, चुनांचे उनका एलान एक दस्तावेज़ में किया गया जिसे "डेक्लरेशन ऑफ़ दी सियोन" (सात क़ौम परस्त लीडरों का एलान) का नाम दिया गया। उसकी एक कापी हुसैन और फ़ैसल को भी भेज दी गई। इस एलान के दो बड़े नुकात यह थे कि जो अरब इलाक़े जंग के आग़ाज़ से क़बल आज़ाद थे, वह इसी तरह आज़ाद रहेंगे और अरबों के आज़ाद कराए हुए इलाक़ों में "उनकी मुकम्मल आज़ादी और इख़्तियारे आला" को बरतानवी हुकूमत तस्लीम करेगी। बाक़ी इलाक़ों में रिआया की रज़ामन्दी के मुताबिक़ हुकूमत तश्कील दी जाएगी। यह

वादे किस क़द्र बेसरापा और बेमानी थे, उसका जाइज़ा हम आगे चल कर लेंगे।

इस एलान ने मुआमले को पहले से भी कहीं ज़्यादा पेचीदा बना दिया गया उसका यह मतलब था कि साएक्स पैकाट मुआहदा ख़त्म हो चुका है? क्या फ़्रांसीसियों के मफ़ादात नज़र अन्दाज़ कर दिए गये?

इत्तिहादी अफ़्वाज के पहले दस्ते के दमिश्क़ में दाख़िल होने से पाँच रोज़ क़ब्ल फारन आफ़िस ने वेंगट को दर्ज ज़ैल टेलीग्राम इरसा किया: "अगर जनरल एलन बी दमिश्क़ की तरफ़ पेशक़दमी करे, तो 1916 ई० के एंगलो, फ़्रांसीसी मुआहदे की तामील हर चीज़ पर मुक़द्दम होगी। मुम्किन हो, तो वह फ़्रांसीसियों के साथ मिल कर अरब इंतिज़ामिया से काम चलाए। हम ने इस सिलसिले में उसे तार भेज दिया है।"

चुनांचे जब आस्ट्रेलियन जनरल हीरी चावल ने, जो दमिश्क़ की तरफ़ पेशक़दमी करने वाली सवार फौज की क़यादत कर रहा था, पूछा कि शहर पर क़ब्ज़े के बाद उसी इंतिज़ामिया का क्या किया जाए, तो एलन बी ने जवाब दिया : "तुम्हें मालूम है यरोशलम में हम ने क्या किया था? बिल्कुल वही कुछ यहाँ करना होगा? तर्क वाली (सूल गवर्नर) को तलब करो, उसे हस्बे साबिक़ इंतिज़ाम चलाने की हिदायत दो और ज़रूरत के मुताबिक़ उसे पुलिस मुहैया कर दो।"

फिर चावल ने पूछा : "अरबों के बारे में क्या ख़्याल है? अफ़्वाह है कि वह शाम का नज़्म व नस्क़ संभालना चाहते हैं।"

एलन बी ने जवाब दिया : "मुझे ख़बर है, लेकिन तुम्हें मेरा इंतिज़ार करना पड़ेगा। अगर इस दौरान फ़ैसल गड़ बड़ करे, तो लार्नस के ज़रिये इस से नबट सकते हो, जो कि तुम्हारा मददगार आफीसर होगा।"

फ़ैसल बिला शुबह गड़ बड़ पैदा करने वाला था, लेकिन लार्नस से उसके निबटने की जो तवक़्क़ु की गई वह ग़लत थी, बल्कि फ़ैसल के इक़्दामात की पुश्त पर लार्नस का हाथ काम कर रहा था। एलन बी को उसकी ख़बर देर से हुई।

इत्तिहादी दमिश्क़ के दरवाज़े पर पहुंच गये और लार्नस, चावल और अल-जज़ाइरी भाईयों अब्दुल-क़ादिर और सईद के दर्मियान चपक़लश शुरू हो गई। इस कहानी का आग़ाज़ अन्दरूने शहर से हुआ।

30 सितम्बर 1918 ई० को फौज ने ख़बरदार किया कि शहर का सुकूत बस चन्द घन्टों का मुंतज़िर है। शहर की तुर्क इंतिज़ामिया ने काग़ज़ात संभाले और शहर छोड़ दिया। रवानगी से पहले गवर्नर ने अल-जज़ाइरी लीडर सईद को बुलवा भेजा और बता दिया कि तुर्क शहर ख़ाली कर गये हैं। सईद ने फौरन गवर्नमेंट हाउस पर शाह हुसैन का हाशमी परचम लहरा दिया, हुकूमत की सूबाई कौन्सिल तशकील की और हुसैन के नाम पर शाम की खुद मुख़्तारी का एलान कर दिया। बादे अज़ां उस ने शाम और लिबनान के बड़े-बड़े शहरों में तार रवाना करके तुर्क फौजों की वापसी की इत्तिला दी और हुसैन के नाम पर अरब इंतिज़ामिया बनाने की हिदायत कर दी।

पहला राउन्ड : शाम तक इत्तिहादी फौजें शहर के बाहर आ पहुंचें। सबसे आगे चौदहवां क्यूलरी ब्रेगेड था, जिसके पीछे शरीफ़ नासिर की कमान में अरब फौज थी। "दानाई के सात सुतून" में लार्नस ने दावा किया है कि अबर सबसे पहले शहर में दाख़िल हुए, लेकिन जनरल चावल उस से मुत्तफ़िक़ नहीं। उसका कहना है कि सबसे पहले एक आस्ट्रेलियन ब्रेगेड और इंडियन क्यूलरी की एक रेजमेंट शहर में दाख़िल हुई और अगले रोज़ यानी यकुम अक्तूबर को लार्नस और अरब फौज पहुंची।

25 सितम्बर को एक कॉंफ़्रेंस में जनरल एलनी ने दमिश्क़ पर क़ब्ज़ा करने के लिए चावल के मन्सूबे मन्ज़ूर किए और फ़ैसल और उसके दस्तों को उर्दुन के मश्रिक़ में मेजर जनरल सर जार्ज बारू की कमान में सौंप दिया। लार्नस राबता अफ़्सर की हैसियत से काम कर रहा था, ३० सितम्बर तक यह वाज़ेह हो गया कि दमिश्क़ पर पेश क़दमी चावल करेगा और बारू का डवीज़न रेज़र्व में रहेगा, जूंही लार्नस को इस हक़ीक़त का पता चला, वह यकुम अक्तूबर की सुबह किसी को बताए बेग़ैर बारू के कैम्प से ग़ायब हो गया। वह दमिश्क़ की फतह में पीछे नहीं रह सकता था। चावल को लार्नस की ग़ैर हाज़िरी की ख़बर साढ़े सात बजे मिली, जब वह बारू से मिलने के लिए आया :

चावल लिखता है : "बिला ताख़ीर दमिश्क़ की सूल इंतिज़ामिया तश्कील देने के लिए बेचैन था, लेकिन मेरा वाहिद सियासी मुशीर ग़ायब

हो गया था।" चुनांचे उस ने खुद शहर में जाने का फ़ैसला किया। वहाँ गवर्नमेंट हाउस के सामने लार्नस मिल गया। उसे अरबों के एक जोशीले हुजूम ने घेर रखा था, उन में से एक का तआरुफ़ लार्नस ने शुक्री पाशा के नाम से कराया। चावल लिखता है :

"लार्नस ने अपनी ग़ैर हाज़िरी का बहाना यह बनाया कि वह हालात का जाइज़ा ले कर (उसे) चावल को मुत्तला करना चाहता था, फिर उस ने बताया कि शुक्री दमिश्क़ का गवर्नर है। मैंने कहा मैं तुर्क गवर्नर से मिलना चाहता हूँ। क्या तुम उसे बुलवा सकते हो?

"तुर्क गवर्नर एक रोज़ पहले जा चुका है और शुक्री को शहरियों की अक्सरीयत ने मुन्तख़ब कर लिया है।" लार्नस का जवाब था। मैंने कमान्डर इंचीफ़ की तरफ़ से शुक्री की तक़र्रुरी मन्ज़ूर कर ली और लार्नस को राबता अफ़्सर मुक़र्रर कर दिया और हिदायत की कि वह पता करे, इंतिज़ामिया को किस क़द्र पुलिस दरकार है।"

लार्नस ने पहला राउन्ड जीत लिया था। एक अरब दमिश्क़ का गवर्नर बन गया और वह भी लार्नस का मुन्तख़ब करदह।

अल-जज़ाइरी बिरादरान : अब अमीर सईद का हाल सुनिए। तक़रीबन छेः बजे अरब फौज शहर में दाख़िल हुई, तो वह फ़ैसल के सेकन्ड इन कमांड, शरीफ़ नासिर से मिला और कहा कि वह हुकूमत संभाल ले। नासिर बीमार और थका हुआ था। उस ने पेशकश कबूल न की और सईद को हुकूमत का नज़्म व नस्क़ चलाने की तहरीरी इजाज़त दे दी। लार्नस को यह ख़बर मिली, तो वह फ़ौरन अमीर सईद के ख़िलाफ़ सरगरम अमल हो गया।

लार्नस, सईद का इस क़द्र मुख़ालिफ़ क्यों था? 28 जून 1919 ई० को उस ने जी.एच.क्यू. क़ाहिरा के चीफ़ पालीटिकल अफ़्सर के नाम जो खुफ़िया रिपोर्ट भेजी उस में इस सवाल का जवाब मिलता है। वह लिखता है : "अब्दुल-क़ादिर एक जुनूनी मुसलमान था और शरीफ़ की अंग्रेज़ नवाज़ी का शदीद मुख़ालिफ़ ....एक रात वह अज़्रक़ से रूपोश हो गया और देरअ् में तुर्कों से मिला। उसने अपने मिशन से उन्हें आगाह किया और यह भी बताया कि मैं और अली इस हफ़्ते यरमूक का पुल उड़ाने वाले हैं, चुनांचे तुर्क बाख़बर हो गये और हमारी मुहिम

नाकाम रही। उसके बाद अब्दुल-क़ादिर दमिश्क़ चला गया। मैं तुर्कों की दिफ़ाई पोज़ीशन मालूम करने के लिए भेस बदल कर देरअ् गया, जहाँ पकड़ लिया गया, क्योंकि अब्दुल-क़ादिर ने गवर्नर को मेरा हुलिया बता दिया था। गिरफ़्तारी के बाद मुझ पर बेपनाह तशद्दुद किया गया और गवर्नर ने मेरे साथ बद फ़ेअ्ली की। मुझे ज़ख़्मी हालत में हस्पताल पहुंचा दिया गया, जहाँ से मैं फरार हो गया। गवर्नर अपने फ़ेअ्ल पर इस क़द्र नादिम था कि उस ने कभी अपनी हुकूमत को मेरी गिरफ़्तारी और फरार की रिपोर्ट न दी।

"मैं अज़्रुक़ के रास्ते उक़्बा वापस चला गया........अब्दुल-क़ादिर को जब ख़बर मिली कि तुर्कों ने दमिश्क़ ख़ाली कर दिया है, तो वह फ़ौरन वहाँ पहुंचा और हुकूमत की बाग डोर संभाल ली, जब नासिर और मैं पहुंचे, तो अब्दुल-क़ादिर और सईद अपने मुसल्लह मुलाज़िमों के साथ एक क़तार में बैठे थे। फ़ैसल ने मुझ से दर्ख़्वास्त की कि उसे उन लोगों से छुटकारा दिलवाऊं। मैंने उन्हें चले जाने को कहा और बताया कि अली रज़ा की वापसी तक शुक्री अल-अय्यूबी गवर्नर होगा अब्दुल-क़ादिर ने जाने से इंकार कर दिया और कौन्सिल चैम्बर में मुझे ख़ंजर घोंपने की कोशिश की, लेकिन ऊदह ने उसे नीचे गिर लिया और नूरी शलान ने मुझे रोईला क़बीले की पनाह में दे दिया।

"अगर शाम में कोई फ़ांसी का मुस्तहिक़ था, तो वह यही दो भाई थे। मुझे दुख होता है कि सईद को इस क़द्र ढील दी गई है.......... सिर्फ़ यही हक़ीक़ी इस्लामी उख़ुव्वत का अलम्बरदार (पान स्लास्ट) है और हमारे लिए दुश्वारियां पैदा कर सकता है।"

दूसरी तरफ़ दोनों अल-जज़ाइरी भाई भी लार्नस से शदीद नफ़रत करते थे वह उसे सझमते तो अरब ही थे, लेकिन एक तो वह मुल्हिद था, दूसरे उन्हें यक़ीन था कि वह अंग्रेज़ों का जासूस है। इसलिए जब अब्दुल-क़ादिर को गोली मार दी गई, तो लोगों ने इस शुबह का इज़्हार किया कि इस क़त्ल के पसे पर्दा लार्नस का हाथ था।

ड्रामे का एक मन्ज़र : 13 अक्तूबर को एल्बनी दिमश्क़ पहुंचा और जाते ही चावल को बुलवा भेजा। उसे बताया कि फ़्रांसीसियों के साथ मुआमलात उलझ गये हैं। इसलिए वह फौरन फ़ैसल से मिलना

चाहता है। चावल ने फ़ैसल को लाने के लिए अपने ई.डी.सी. को रूल्स राइस में भेज दिया।

फ़ैसल और एल्बनीके दर्मियान क्या बात चीत हुई? उसकी तीन तारीख़ी शहादतें महफ़ूज़ हैं जो एल्बनी, लार्नस और चावल ने अलग-अलग तैयार कीं। एल्बनी का बयान बिल्कुल मुख़्तसर है।

"मैंने मुतअल्लेक़ा स्टाफ़ की मौजूदगी में शरीफ़ फ़ैसल को बताया के मैं उर्दुन के मश्रिक़ में दमिश्क़ से मआन तक के इलाक़े में अरब इंतिज़ामिया तस्लीम करने को तैयार हूँ, मगर वह फौजी इंतिज़ामिया की सूरत में मेरे सुप्रेम कन्ट्रोल में होगी। मेरे मुक़र्रर करदह दो राबता अफ़्सर, एक अंग्रेज़ और दूसरा फ़्रांसीसी, मेरे और अरब इंतिज़ामिया के दर्मियान राबते का काम करेंगे, जब तक मिल्ट्री आप्रेशन जारी रहेंगे, सुप्रेम कमान्ड मेरे हाथ में रहेगी, मैंने यह हक़ीक़त भी फ़ैसल पर वाज़ेह कर दी कि बरतानिया और फ़्रांस की हुकूमतों ने फ़िलस्तीन और शाम में इत्तिहादियों के शाना बशाना मुश्तरेका दुशमन से नबर्द आज़मा अरब फौज की महारिब (शरीक जंग हैसियत तस्लीम कर ली है।)

इसी एलबनी ने वेंगेट को एक ख़त में लिखा :

"मैंने यह फ़ैसल को ख़बरदार कर दिया है कि ज़ाती हैसियत में वह सूल गवर्नमेंट में किसी क़िस्म का कोई दख़ल नहीं दे सकता। उसे अब आराम करना, अपनी फौज की नफ़्री बढ़ाना और उसे आइन्दा पेशक़दमी के लिए तैयार करना चाहिए।"

लार्नस ने "दानाई के सात सुतून" में इस वाक़ये के ज़िम्न में हस्बे आदत बेपर की उड़ाई है और असल मुआमला गोल कर गया है।

चावल ने उस ड्रामे से अपने सिपाहियाना अन्दाज़ में यूं पर्दा उठाया है:

"फौरन कॉँफ्रेंस बुलाई गई, जिसमें जनरल सर एडमन्ड एल्बनी, मेजर जनरल सर लुइस बूलिस, चीफ़ ऑफ़ स्टॉफ़, शरीफ़ नासिर, नूरी बे अस्सईद, अमीर फ़ैसल का क़ाइम मक़ाम चीफ़ ऑफ़ स्टॉफ़, शरीफ़ नासिर सिकेंड इन कमान्ड हिजाज़ फोर्सेज़, लेफ़्टिनेंट कर्नल पी.सी. जाइस, लेफ़्टिनेंट कर्नल कारन वाल्सन शरीक थे। लार्नस तरजुमान के फराइज़ अदा कर रहा था। कमान्डर इंचीफ़ ने फ़ैसल से कहा :

1. फ़्रांस, शाम पर पास्बां ताक़त होगी।
2. फ़ैसल अपने बाप हुसैन के नुमाइन्दे के हैसियत से फ़्रांस की

रहनुमाई और मुआशी सरपरस्ती में शाम की इंतिज़ामिया संभालेगा। (शाम में लिबनान शामिल होगा न फ़िलस्तीन)

3. फ़ैसल लिबनान से कोई वास्ता नहीं रखेगा।
4. फ़ैसल को फ़ौरन फ़्रांसीसी राबता अफ़्सर रख लेना चाहिए, जो लार्नस के साथ मिल कर काम करेगा।

फ़ैसल ने उस पर शदीद एतराज़ किया। उस ने कहा उसे बरतानिया की मदद क़बूल है, लेकिन फ़्रांस का इस मुआमले से कोई तअल्लुक़ नहीं। एल्बनी के फ़रस्तादा मुशीर ने तो उसे बताया गया कि शाम, लिबनान समेत अरबों को मिलेगा। उस ने यह भी कहा कि बन्दर्गाह के बग़ैर मुल्क उसे क़बूल नहीं। उस ने फ़्रांसीसी राबता अफ़्सर या फ़्रांस की रहनुमाई हासिल करने से भी इंकार कर दिया।

चीफ़, लार्नस से मुख़ातब हुआ।

क्या तुमने उसे नहीं बताया था कि शाम, फ़्रांस के ज़ेरे हिमायत होगा?"

"नहीं जनाब, मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता।" लार्नस ने जवाब दिया।

उस पर चीफ़ ने कहा : "लेकिन तुम्हें यह तो ख़बर थी कि बिलनान से फ़ैसल का कोई वास्ता नहीं होगा।"

"नहीं जनाब, मुझे कुछ मालूम न था।" लार्नस ने फिर नफ़ी में जवाब दिया, कुछ देर बहस व तम्हीस होती रही। आख़िर चीफ़ ने फ़ैसल से साफ़-साफ़ कह दिया कि मैं (यानी सरायड मन्ड एल्बनी) कमान्डर इंचीफ़ हों और फ़ैसल इस वक़्त मेरे मातहत एक लेफ़्टिनेंट जनरल है। उसे मेरे अहकाम की बेचून व चरा तामील करनी होगी, जब तक जंग ख़त्म नहीं होती और मुआमला तय नहीं होता, उस वक़्त तक उस (फ़ैसल) को मौजूदा सूरते हाल क़बूल करना होगी। फ़ैसल ने उस फ़ैसले को मान लिया और अपने मुसाबेहीन के साथ रुख़्सत हो गया। लार्नस वहीं रहा।

फ़ैसल जा चुका तो लार्नस ने चीफ़ से कहा : "और लार्नस कमरे से निकल गया। थोड़ी देर बाद एलम्बनी भी कार में तबरीया

नया एलान, पुरफ़रेब वादे : लार्नस यूंही लन्दन नहीं गया था। उसके पेशे नज़र ख़ास मिशन था। रास्ते में वह क़ाहिरा में रुका और वेंगेट से तवील मुलाक़ात की। लन्दन पहुंच कर लार्नस ने दो हफ़्ते के अन्दर हुकूमत को एक हैरतनाक मन्सूबा पेश किया। इस मन्सूबे में उस ने तज्वीज़ किया कि साएक्स पैकाट मुआहदा तर्क कर दिया जाए और (हिजाज़ को छोड़ कर) अरब की तीन रियासतें बना दी जाएं। ज़ेर्री मैसू पोटीमा अब्दुल्लाह को बालाई मैसू पोटीमा ज़ैद को और शाम फ़ैसल को दे दिया जाए। मैसू पोटीमा की दोनों रियासतें बरतानवी मफ़ादात के ताबे होंगी और ज़ेर्री मैसू पोटीमा पर अमलन बरतानिया का कन्ट्रौल होगा।

साएक्स पैकाट मुआहदे की तरह यह मन्सूबा भी अरबों के लिए क़ाबिले एतराज़ था। इस मन्सूबे ने मश्रिक़े उस्ता के बेहतरीन इलाक़े काट दिए और उन्हें ग़ैर अरब के कन्ट्रोल में दे कर एक बड़ी और खुद मुख़्तार अरब मम्लिकत का तसव्वुर मलियामेट कर दिया।

लार्नस का यह मन्सूबा साएक्स पैकाट के मन्सूबे से भी बढ़ कर बरतानवी मफ़ादात का मुहाफ़िज़ था। दूसरी तरफ़ फ़्रांसीसी, साएक्स पैकाट मन्सूबे को एक लम्हे के लिए भी मुन्जमिद तसव्वुर करने को तैयार न थे और जिस वक़्त अंग्रेज़ शाम में तुर्कों की आख़िरी मुज़ाहमत से नबर्द आज़मा थे, वह इस मुआहदे को रूबा अमल लाने की ज़ोर शोर से जद्दो जहद कर रहे थे। शुक्री पाशा जिसे फ़ैसल की आमद तक लार्नस ने दमिश्क़ का गवर्नर बनाया था। फ़ैसल के आते ही बैरूत रवाना हो गया, वहाँ उसने गवर्नमेंट हाउस पर हिजाज़ का परचम लहराया और हुसैन की अमलदारी का एलान कर दिया। एल्बनी के दोस्तों ने आकर हिजाज़ का परचम उतारा और फ़ैसल के आदमी बग़ावत की धमकियाँ देने लगे, चुनांचे बरतानिया और फ़्रांस की हुकूमतों को एक नया एलान करना पड़ा, जिसको बड़े वसीअ् पैमाने पर फैलाया गया। बाज़ारों में मुनादी की गई और नाख़्वान्दा इलाक़ों में पढ़-पढ़ कर सुनाया गया।

इस नए एलान में बड़े दिल खुश कुन वादे किए गये। कहा गया कि

...की गुलामी का जुआ उतारने वाली आबादी को अपनी मर्ज़ी से ...मी हुकूमत तश्कील देने का हक़ होगा और इस हुकूमत को हक़ खुद ...तियारी हासिल होगा। एलान में बरतानिया और फ़्रांस दोनों ने मुत्तफ़ेक़ा ...र पर यह वादा किया कि वह ऐसी हुकूमतों के क़याम में हर मुमकिन ...वुन करेंगे और इनके वजूद पर आते ही उन्हें तस्लीम कर लेंगे।

इस मौज़ूअ् पर अब जो कैबिनेट पेपर्ज़ जारी हुए हैं, उन से आशकारा होना है कि ऐलान में अंग्रेज़ों के ज़ाती मुहर्रिकात काम कर रहे थे। उन्हें यक़ीन था कि वह अमन कॉंफ़्रेंस में साएक्स पैकाट मुआहदे से दामन छुड़ाने के लिए इस एलान को इस्तेमाल कर सकेंगे। बहरहाल ऐलान के मुहर्रिकात जो कुछ भी थे, उसका फ़ाइदा यह हुआ कि शाम में हालात फौरन पुर सुकून हो गये। छेः माह बाद यानी अमन कॉंफ़्रेंस के मौक़ा पर अरबों को पता चला कि वह किस सादगी से धोखा खा गये हैं। ऐलान की क़द्र व क़ीमत इस सियाही से ज़्यादा न थी जो उसे तहरीर करने में सर्फ़ हुई थी।

इस अरसे में लार्नस बहुत सरगरम रहा और साएक्स पैकाट मुआहदे को सुबो ताज़ करने के लिए अपने गर्द हिमायती जमा करता रहा और बड़ी बेचैनी से तड़प के पत्ते की तलाश मतें रहा, जिसे मार्सेल्ज़ में इस्तेमाल कर सके और फिर ख़िलाफ़ते तवक़्क़ो उसका रुख़ सैहूनियों की तरफ़ फिर गया।

सैहूनियों के अज़ाइम : तुर्की मुतवक़्क़ा शिकस्त क़रीब देख कर सैहूनियों ने फ़िलस्तीन में अपने क़ौमी वतन के क़याम की तैयारियाँ शुरू कर दीं जिस की बरतानवी हुकूमत ने उनके साथ साज़ बाज़ कर रखी थी। दूसरी तरफ़ बरतानिया ने फ़िलस्तीन अरबों को देने का वादा भी कर रखा था, चुनांचे एक नई मुहिम चल पड़ी जिस में लार्नस सबसे आगे था, उसने अरबों को नई सूरतेहाल क़बूल कर लेने की तरग़ीब देना शुरू कर दी। वह समझता था फ़िलस्तीन में सैहूनियों के अज़ाइम साएक्स पैकाट मुआहदे का तोड़ कर सकते हैं और इस तरह फ़्रांसीसियों को मश्रिक़े उस्ता से निकाला जा सकेगा। दमिश्क़ से वापस आए चन्द रोज़ हुए थे कि उस ने कैबिनेट की मश्रिक़ी कमेटी के सामने अपने

ख़्यालात का इज़्हार किया। इंडिया आफ़िस ने उसके ख़्यालात पर फ़ौरन गिरफ़्त की। और फिर मुहकमाजाती जंग शुरू हो गई। लार्नस, फ़ैसल को अमन काँफ्रेंस में शरीक होने के लिए यूरोप आने की दावत देता है, लेकिन जब फ़ैसल मार्सेल्ज़ पहुंचता है, तो फ़्रांस की तरफ़ से लार्नस का पुराना दुशमन बुग़े मूंद, फ़ैसल और लार्नस का रास्ता रोक लेता है।

लन्दन में लार्नस, फ़ैसल को सैहूनी लीडर ख़ानम वाइज़मन से दोबारा मुआरफ़ कराता है ताकि मश्रिक़े उस्ता के बारे में अपने मास्टर प्लान को आगे बढ़ाए, प्लान जिस में वह यहूदियों को मरकज़ी किरदार अदा करने के लिए सामने लाता है और जिस में फ़्रांसीसी हमेशा के लिए डूब जाते हैं।

पाँच मुतबादिल रास्ते : जंगे अज़ीम के नताइज ने एक तरफ़ सलतनते उस्मानिया के हिस्से बख़रे कर दिए और यूरोपी ताक़तों के साम्राजी अज़ाइम का दाइरा मश्रिक़े उस्ता तक फ़ैल गया, दूसरी तरफ़ सैहूनियों को भी फ़िलस्तीन पर क़ब्ज़ा करने का रास्ता मिल गया। जंग से पहले सैहूनियों ने तुर्क हुक्मरानों से "मुक़द्दस सर ज़मीन" में आबाद होने की इजाज़त हासिल करने की सर तोड़ कोशिश की, मगर नाकाम रहे। जंग शुरू हुई, और सैहूनियों की सरगर्मियों का मरकज़ बर्लन बन गया। लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हो गया कि योरोशलम पर इत्तिहादियों का कन्ट्रोल होगा। चुनांचे होशियार सैहूनी लीडरों ने बरतानिया और फ़्रांस के साथ पेंगें बढ़ाना शुरू कर दीं।

बरतानवी सैहूनियों का सुरख़ैल मुम्ताज़ साइन्सदाँ और कीमियादान डॉक्टर ख़ानम वाइज़मन था, जो सियासत की तरफ़ भी गहरा मैलान रखता था। वाइज़मन छोटे क़द और गठे हुए जिस्म बारेश और मस्हूरकुन शख़्सियत का मालिक था, बड़ा ही बेरहम और मुख़ालिफ़ों का ख़तरनाक दुशमन बरतानिया के सियासतदानों में उसकी मुअस्सिर लाबी पहले से मौजूद थी। अब उस ने लाबी का दाइरा वसीअ् करने की जद्दो जहद शुरू हुई।

सबसे पहले दिसम्बर 1914 ई० में सैहूनियों ने बरतानवी पार्लियामेंट

में ताक़तवर अपोज़ीशन से मुलाक़ात की और होम आफ़िस के अन्डर सिक्रेट्री हरबर्ट सिमोईल के ज़रिए अपना केस काबीना में पेश करने का फ़ैसला किया। सिमोईल ने एक खुफ़िया और किसी हद तक मुबालग़ा आमेज़ मेमोरन्डम के ज़रिए यह ख़िदमत अंजाम दी, जिसे उस ने "फ़िलस्तीन का मुस्तक़्बिल" का नाम दिया।

सिमोईल का कहना था कि एक आज़ाद और खुद मुख़्तार यहूदी रियासत के क़्याम का वक़्त अभी तक नहीं आया, ताहम सैहूनी सलतनतें बरतानिया से फ़िलस्तीन के इल्हाक़ का खै़र मक़्दम करेंगे। उसने बरतानिया को उस पर आमादा करने के लिए पुरकशिश दलाइल दिए। उस वक़्त के बरतानवी वज़ीरे आज़म स्कोइथ ने मेमोरन्डम पढ़ा और अपनी डाइरी में यह नोट लिखा : "यह टांकर्ड का ताज़ा एडीशन मालूम होता है.......मुझे मुतअस्सिर नहीं कर सका, लेकिन वह डेज़ी के पसन्दीदा क़ौल नस्ल ही सब कुछ है, की अजीब व ग़रीब तम्सील है।"

सिमोईल को किसी तरह वज़ीरे आज़म के ख़्यालात का पता चला गया और उसने मेमोरन्डम पर नज़रे सानी की और उसे मुबालग़ा आमेज़ ख़्यालात पाक करके दोबारा उसकी तशहीर शुरू कर दी। अब के उस ने फ़िलस्तीन के लिए पाँच मुताबादिल रास्ते पेश किए।

1. फ्रांस से इल्हाक़, 2. तुर्कों की तहवील में रहने दिया जाए। 3. बैनल-अक़्वामी कन्ट्रौल में दे दिया जाए। 4. खुद मुख़्तार यहूदी रियासत क़ायम हो। 5. बरतानवी इंतिदाब जिस के तहत यहूदियों की आबादकारी की हौसला अफ़्ज़ाई की जाए।

सिमोईल ने जो ज्यूश कम्यूनिटी से बरतानवी काबीना में लिया जाने वाला पहला मिम्बर था, आख़िरी रास्ते की वकालत की, लेकिन इस्कोइथ अब भी ला तअल्लुक़ रहा। ताहम मुआमला ख़त्म न हुआ और 1916 ई० में सर मार्क साएक्स ने सैहूनियों से इस मस्अले पर गुफ़्त व शुनैद शुरू कर दी। यहूदियों ने रस्मी यक़ीन दहानी करा दी कि बरतानिया की हिमायत के बदले में वह फ़िलस्तीन में बरतानवी इंतिदाब क़ाइम करने के लिए काम करेंगे, चुनांचे 2 नवम्बर 1917 ई० को फारन सिक्रेट्री मिस्टर बिल-फ़ौर ने वह मशहूर ऐलान किया, जो तारीख़ में ऐलान बिल-फ़ौर कहलाता है। ऐलान में कहा गया था :

"हज़ मेजस्टी गवर्नमेंट, फ़िलस्तीन में यहूदियों के क़ौमी वतन के क़्याम के हक़ में है और इस मक़्सद को हासिल करने के लिए ज़बरदस्त कोशिश करेगी, ताहम ऐसा इक़्दाम नहीं किया जाएगा, जिससे फ़िलस्तीन की ग़ैर यहूदी आबादी के शहरी और मज़्हबी हुक़ूक़ मुतअस्सिर होते हों।"

दस्तावेज़ी शहादत : यह ऐलान बिल्कुल मुबहम सा था, चुनांचे जब अरबों ने एहतिजाज किया, तो बरतानवी हुकूमत ने उसकी तावीलें शुरू कर दीं। उधर यह मस्अला छिड़ गया कि बरतानिया ने अरबों के साथ वाक़ई कोई वादा किया कि फ़िलस्तीन उनके हवाले कर दिया जाए, अब वह ख़ते किताबत शाए हो चुकी है जो 1915-16 में सर हनरी मेक मामिन (मिस्र में बरतानिया के हाई कमिशनर) और मक्का के शाह हुसैन के दर्मियान हुई थी और जिसके नतीजे में अरबों और अंग्रेज़ों के दर्मियान पहला मुआहदा वजूद में आया था।

जार्ज अन्तवीनू अपनी किताब "The Arab Anakening" में इस ख़त व किताबत का जाइज़ा लेने के बाद लिखता है :

"बरतानवी हुकूमत की दो दस्तावीज़ें जो हाल ही में मंज़रे आम पर आई हैं। ज़ाहिर करती हैं कि फ़िलस्तीन बिला शुबह अरबों को देने का वादा किया गया था।"

पहली दस्तवेज़ अरब ब्यौरो की रिपोर्ट है, जो होगार्थ ने नवम्बर १६१६ ई० में तैयार की। इस में मुख़्तसरन बताया गया है कि मेक माहिन और हुसैन के दर्मियान किया तय हुआ था और क्या नहीं हुआ था। मुतअल्लेक़ा शक़ में लिखा है कि अरबी बोलने वाले इन तमाम इलाक़ों की खुद मुख़्तारी तस्लीम कर ली जाए, जहाँ बरतानिया फ़्रांस के मफ़ादात को नुक़सान पहुंचाए बेग़ैर अमल के लिए आज़ाद है। शक़ में आगे चल कर दमिश्क़, हम्स और हल्ब के मग़्रिब में एक लाइन खींची गई है जो मश्रिक़ में ईरान की सरहद तक और जुनूब में ख़लीजे फ़ारस और बहरे हिन्द तक चली गई है। इन हुदूद में आने वाले तमाम म्मालिक के मुस्तक़्बिल के इंतिज़ामात अरबों और फ़्रांसीसियों पर छोड़ दिए गये हैं और सिर्फ़ अदन और इराक़ को मुस्तस्ना क़रार दिया गया है। इस शक़ की रू से फ़िलस्तीन, शाम के इस हिस्से में आया है, जो

अरबों को देने का वादा किया गया है। अरब ब्यौरो की इस दस्तावेज़ की न तो वसीअ् पैमाने पर नश्र व इशाअत की गई, न उसे मन्सूख़ किया गया।

दूसरी दस्तावेज़ पचास साल तक खुफ़िया रही। यह 27 नवम्बर 1918 ई० को लन्दन में होने वाली वार कैबिनेट की मश्रिक़ी कमेटी के एक इज्लास की हरफ़ बहरफ़ रिपोर्ट है। उसकी तफ़्सीलात पहली बार शाए की जा रही हैं। इस इज्लास में सदारत की कुर्सी पर लार्ड करज़न रौनक़ अफ़रोज़ थे। कमेटी शाम के मुआमले पर बहस व तम्हीस के बाद मस्अला फ़िलस्तीन पर ग़ौर करने वाली थी। करज़न ने अपने दस्तूर के मुताबिक़ हुकूमत के इक़्दामात का लुब्बे लबाब बयान किया :

"फ़िलस्तीन का मस्अला यह है कि अगर हम अपनी पाबन्दियों को ज़ेरे बहस लाएं, तो सबसे पहले वह आम वादा है जो 1915 ई० में हुसैन से कहा गया, जिसके तहत फ़िलस्तीन इस इलाक़े में शामिल किया गया था, जिसे मुस्तक़्बिल में खुद मुख़्तार अरब रियासत क़रार पाना है।"

लार्नस का नया मन्सूबा : नवम्बर 1917 ई० में एलान बिल-फौर के बाद यहूदियों के अज़ाइम के मुतअल्लिक़ अरबों में जो शुकूक व शुबहात पैदा हुए, उन्हें दूर करने की हर मुम्किन कोशिश की गई, चूंकि लार्नस के फ़ैसल के साथ खुसूसी तअल्लुक़ात थे, इसलिए वह अरबों को नई सूरते हाल कुबूल करने की तरग़ीब देने में पेशकश था। लार्नस समझता था कि एलान बिल-फ़ौर फ़्रांसीसियों को न सिर्फ़ फ़िलस्तीन से दूर रखेगा, बल्कि यह इस स्कीम का भी हिस्सा बन सकता है, जिसके तहत फ़्रांस को शाम से कभी दूर रखने की राह हम्वार की जा रही थी। यह बड़ा दिलेराना मन्सूबा था और लार्नस शाम में एक ऐसी अरब रियासत के क़्याम के लिए कोशां था, जिसके सरपरस्त, तो अंग्रेज़ होते, मगर मुशीर और सरमायाकार सैहूनी।

इंगलैंड पहुंचे कुछ दिन हुए थे कि ....19 अक्तूबर 1918 ई० को लार्नस और कैबिनेट की मश्रिक़ी कमेटी के इज्लास में शरीक हुआ, जिसकी सदारत लार्ड करज़न कर रहा था। इज्लास में तमाम फ़ारन सिक्रेट्री शरीक थे। एडोन मानटेगो सिक्रेट्री ऑफ़ स्टेट ऑफ़

इंडिया ने, जो बरतानिया की यहूदी कम्यूनिटी का मुम्ताज़ मिम्बर था। सैहूनियों की तहरीक की हिमायत करने से इंकार कर दिया। उसका कहना था कि क़ौमी तअल्लुक़ात नस्ली या मज़्हबी तअल्लुक़ात से ज़्यादा अहमियत रखते हैं। उसके बरख़िलाफ़ सरमार्क साएक्स ने अरबों की खुद मुख़्तारी और सैहूनियत दोनों की हिमायत की, ताहम उस ने मायूसी का इज़्हार किया कि अरब और यहूदी इकट्ठे काम करके एक नए मश्रिक़े उस्ता को जन्म नहीं दे सकते। इज्लास में बिल-फौर और एड ज्वाइन्ट जनरल भी मौजूद थे। अपने मन्सूबों को मुस्तहकम शक्ल देने का लार्नस को यह सुनहरी मौक़ा मिला था। फिर लार्ड करज़न ने जिस तरह उसका तआरुफ़ कराया, इससे उसका एतमाद और भी पुख़्ता हो गया। करज़न ने कहा : "हुकूमत का हर मिम्बर अरब में लार्नस के अज़ीम कारनामों को तारीफ़ और तहसीन की नज़र से देखता है और फ़ख़्र करता है कि एक अफ़्सर ने बरतानिया की तरक़्क़ी और इस्तेहकाम और अरब फौजों के लिए इस क़द्र काम किया है।"

लार्नस ने अपने ख़िताब में साएक्स की मौजूदगी की परवा किए बेग़ैर साएक्स पैकाट मुआहदे पर शदीद नुक्ता चीनी की। फ़ैसल और अरब शुयूख़ के ख़्यालात शुरका को बताए और फिर मश्रिक़े उस्ता से मुतअल्लिक़ अपना मन्सूबा पेश किया, जिसके मुताबिक़ बग़दाद और ज़ेरीं मैसू पोटीमा पर अब्दुल्लाह बाला मैसू पोटीमा पर ज़ैद और शाम पर फ़ैसल की हुकूमत हो। फ़्रांस को बैरूत और लिबाना के सिवा और किसी इलाक़े पर क़ब्ज़े का हक़ न दिया जाए। लार्नस ने यह भी बयान किया कि फ़ैसल बज़िद है कि वह अपनी मर्ज़ी से मुशरीर मुन्तख़ब करेगा। इस मक़्सद के लिए वह अंग्रेज़ी या अमरीकी सैहूनी यहूदियों की ख़िदमात हासिल करने के लिए बेचैन है।

कमेटी ने लार्नस को हिदायत की कि वह इन ख़ुतूत पर एक मेमोरन्डम तैयार करे।

अब लार्नस को आला मुशीर का दरजा मिल गया और उसे यह अख़्तियार दे दिया गया कि वह पेरसि में होने वाली अमन कॉंफ्रेंस में बरतानिया के मुतालिबात मनवाने की जो तदबीर भी करना चाहे कर सकता है।

कमेटी के इज्लास उसके बाद भी जारी रहे। मैसू पोटीमा के बारे में कमेटी की गिरिफ़्त मज़्बूत थी, वहाँ बरतानिया को कन्ट्रोल क़ाइम करने में कोई दिक़्क़त पेश नहीं आएगी, लेकिन यह कन्ट्रोल किस क़िस्म का हो यह तय करना अभी बाक़ी था।

इंडिया आफिस और फ़्रांस दोनों लार्नस के मन्सूबे के शदीद मुख़ालिफ़ थे, जिसकी हिमायत फारन आफ़िस का एक हिस्सा कर रहा था। फ़्रांस को ख़दशा था कि अगर साबिक़ सलतनते उस्मानिया के अरबों ने खुद मुख़्तारी हासिल कर ली, तो उसका असर शुमाली अफ़्रीक़ा में फ़्रांस की मुस्लिम रिआया पर लाज़िमन पड़ेगा। ऐसे ही ख़दशात इंडिया आफिस का नुक़्त-ए-नज़र लार्नस के लिए बहुत अहम था, चुनांचे अरसे तक हरमैन शरीफ़ैन का मुआमला तय न हो सका।

मैसू पोटीमा के बारे में लार्नस के ख़्यालात की पज़ीराई न हो सकी। तो उस ने सिफ़ारिश की कि शाम का इक़्तिदार फ़ैसल को सौंप दिया जाए, लेकिन कमेटी एक बार फिर साएक्स पैकाट मुआहदे में उलझ कर रह गई। बरतानिया फ़िलस्तीन को खुद हासिल करना - और फ़्रांसीसियों को शाम से दूर रखना चाहता था। लार्नस ने इस सूरतेहाल से फ़ाइदा उठा कर कमेटी को बताया कि उसके ख़्याल में फ़िलस्तीन और शाम में सैहूनियों और अरबों के दर्मियान तस्फ़िया कराने में कोई दुशवारी पेश नहीं आएगी, जिसके नतीजे में फ़्रांस, शाम से निकलने पर मज्बूर हो जाएगा, बशर्तेकि फ़िलस्तीन की इंतिज़ामिया बरतानिया के हाथों में रहे। कमेटी यही कुछ चाहती थी, चुनांचे पेरिस उन कॉंफ़्रेंस में कमेटी ने इस मूक़िफ़ पर मबनी तजावीज़ पेश करने का फ़ैसला कर लिया।

फ़ैसल पेरिस में : 18 नवम्बर को लार्नस ने वेंगेट के तवस्सुत से शाह हुसैन को तार भेजा कि अमन कॉंफ़्रेंस में शाह की नुमाइन्दगी फ़ैसल करे और वह (हुसैन) अपने फ़ैसले की इत्तिला तार ही के ज़रिए बरतानिया, फ़्रांस, अमरीका और इटली को दे दे। 22 नवम्बर 1918 ई० को फ़ैसल एक बरतानवी करोज़ में रवाना हुआ। फ़्रांस ने फ़ैसल को अरबों का नुमाइन्दा मानने और उसे अमन कॉंफ़्रेंस में बोलने की इजाज़त देने से साफ़ इंकार कर दिया।

बरतानवी दफ़्तरे ख़ारजा ने पेरिस में बरतानवी सफ़ीर को हिदायत की कि लार्नस को तमाम तफ़्सीलात बता दी जाएं जो कि मार्सेल्ज़ के रास्ते में है और बाक़ी मुआमला उस पर छोड़ दिया जाए। फ़ैसल को बराहे रास्त लन्दन लाने की राय मुस्तर्द कर दी गई, क्योंकि इस इक़्दाम से फ़्रांस यह समझेगा कि फ़ैसल को फ़्रांस के ख़िलाफ़ करने की कोशिश की जा रही है। फ़्रांस ने लार्नस पर इल्ज़ाम आइद किया कि इस मन्सूबे के पस पर्दा उसका हाथ कार फरमा है और फ़ैसल के इस्तिक़्बाल के लिए प्रोग्राम तैयार कर लिया। लार्नस के पुराने हरीफ़ बुग़े मूंद के ज़रिए लार्नस को कहलवाया दिया गया कि अगर वह बरतानवी करनल की हैसियत से बरतानवी वर्दी में यहाँ आता है, तो हम खुश आमदीद कहेंगे, लेकिन अरबों के लुबादे में उसे क़ुबूल नहीं किया जाएगा।

लार्नस ने उसे अपनी तौहीन समझा और फौरन लन्दन वापस चला गया। फ़ैसल ने बावक़ार तरीक़े से हालात का सामना किया और पेरिस पहुंच गया। 7 दिसम्बर को वह फ़्रांस के सदर से मिला। तीन रोज़ बाद बुग़े मूंद ने फ़ैसल को केले के मक़ाम पर लार्नस के सुपुर्द कर दिया और वह दोनों इंगलैंड चले गये।

सैहूनी लीडर का दाम : फ़ैसल 19 जनवरी 1919 ई० तक इंग्लैंड में रहा और लन्दन में शहंशाह जार्ज पंजुम ने उसका ख़ैर मक़्दम किया। वह लार्नस की मईयत में मिस्टर बिल-फ़ौर से भी मिला, लेकिन सबसे अहम वाक़या कार्लटन होटल में सैहूनी लीडर ख़ानम वाइज़ मन से उसकी मुलाक़ात थी, जिसमें मश्रिक़े उस्ता में अरबों और यहूदियों के लिए एक आरज़ी तस्फ़िया तैयार किया गया। लार्नस सुकूत योरोशलम के वक़्त फ़िलस्तीन में वाइज़ मिन से मिल चुका था और उसका बड़ा मद्दाह था। अब वह बरतानवी हुकूमत की मुकम्मल मन्ज़ूरी से फ़ैसल और वाइज़मन को एक दूसरे के क़रीब ले आया, उस ने सैहूनी लीडर के सामने मश्रिक़े उस्ता का एक नया मन्सूबा रख दिया। यह मन्सूबा लार्नस ने खुद तैयार किया था। सैहूनी उसमें मरकज़ी किरदार अदा करने वाले थे।

फ़ैसल की वाइज़ मन के साथ यह पहली मुलाक़ात न थी। वह 4

जून 1918 ई० को उक़्बा के मक़ाम पर पहले भी उस से मिल चुका था। इस मुलाक़ात में उस ने फ़ैसल को बावर कराया था कि अगर वह एक ताक़तवर और खुशहाल अरब मम्लिकत क़ायम करना चाहता है, तो सिर्फ़ हम यहूदी ही उसकी मदद कर सकते हैं। हम उन्हें रुपया भी देंगे और उनकी कुव्वत मुनज़्ज़म करने में उनका हाथ भी बटाएंगे। हम उसके बेज़रर पड़ोसी होंगे, क्योंकि हम ने तो उस वक़्त बड़ी ताक़त हैं और न मुस्तक़्बिल में उसका कोई इम्कान है। इस मुलाक़ात के बाद सैहूनी, फ़ैसल से तअल्लुक़ात उस्तवार करने में लगे रहे। उसे अरबों और इत्तिहादियों के आज़ाद कराए हुए इलाक़े का इंतिज़ाम करने के लिए रुपये की अशद ज़रूरत थी। सैहूनियों ने तख़्मीना लगाया कि इख़राजात दो लाख पौंड माहवार होंगे और 1919 ई० में फ़सल आने और उसका टैक्स वसूल होने तक आमदनी सफर रहेगी, चुनांचे फ़ैसल को क़र्ज़े और मालयाती मुशीर की पेशकश की, बशर्तेकि वह फ़िलस्तीन के मुआमले में उनकी एआनत करे।

यह एआनत किस क़िस्म की होगी, उसका फ़ैसला करने के लिए फ़ैसल और वाइज़मन कार्लटन होटल में 11 दिसम्बर को मिले। फ़ैसल का कोई मुआविन या अफ़्सर इस मुलाक़ात या उसके नतीजे में होने वाले मुआहदे से आगाह न था। वाइज़मन के अपने बयान के मुताबिक़, फ़ैसल ने साएक्स पैकाट मुआहदे पर खुफ़्गी का इज़्हार किया और उसे अरबों और यहूदियों दोनों के लिए मुहलिक क़रार दिया। अरबों ने दमिश्क़ में हुकूमत बना ली थी, लेकिन यह बहुत कमज़ोर थी। उसके पास न रुपया था न फौज के लिए एमोनेशन और आदमी। फ़ैसल की सारी उम्मीदें अमेरिका से वाबस्ता थीं कि वह इस मुआहदे को ख़त्म करा देगा। उस पर वाइज़मन ने बताया कि वह 1915 ई० से इस मुआहदे से वाक़िफ़ है और न सिर्फ़ एहतिजाज कर चुका है, बल्कि अमरीकी सैहूनियों से कह चुका है कि जब भी मौक़ा आए उसकी मुख़ालिफ़त में इक़्दाम करें।

वाइज़मन ने मज़ीद कहा कि सैहूनियों का प्रोग्राम यह है कि अमन कॉन्फ्रेंस और फ़ैसल फिलीस्तीन पर यहूदियों के क़ौमी और तारीख़ी हक़ को तस्लीम कर लें, बरतानिया ट्रस्टी ताक़त बन जाए, यहूदियों को

हुकूमत में मुनासिब हिस्सा मिले और मुल्क को इस तरह तरक़्क़ी दी जाए कि अरब किसानों के मिल्कियती हुक़ूक़ ग़सब किए बग़ैर पचास लाख यहूदियों को फ़िलीस्तीन में आबाद किया जा सके। उसके बदले में यहूदी, फ़ैसल को दिमाग़ों और रुपये की शक्ल में हर मुमकिन मदद देने को तैयार हैं। उसके जवाब मैन फ़ैसल ने कहा कि फ़िलीस्तीन में ज़मीन की कोई कमी नहीं। वाइज़मन लिखता है। "उस ने क़सम खा कर हमें यक़ीन दिलाया कि वह अमन काँफ्रेंस में एलान करेगा कि सैहूनियत और अरब तहरीक साझी तहरीकें हैं और उनके दर्मियान मुकम्मल हम आहंगी है।"

इस गुफ़्त व शनीद के नतीजे में आख़िर कार मुआहदा तय पा गया जिसकी रू से बरतानिया को ट्रस्टी शिप, सैहूनियों को फ़िलस्तीन में दाख़िला आबादकारी और हुकूमत में शिराकत का हक़ मिल गया और फ़ैसल को यहूदियों से रुपया, माली मशवरे और अमन काँफ्रेंस में सैहूनियों की हिमायत हासिल हो गई, लेकिन 3 जनवरी को जब मुआहदे के असल मुसव्वदे पर दस्तख़त करने का वक़्त आया, तो इख़्तिलाफ़ात पैदा हो गये। लार्नस ने मशहूर मुअर्रिख़ टाइन बी (जो बरतानवी अमन वफ़्द का एक रुक्न था) को बताया कि वाइज़मन ने दस्तावेज़ के ड्राफ़्ट में "जुयूश स्टेट" और "जुयूश गवर्नमेंट" के अल्फ़ाज़ शामिल कर दिए थे, जब लार्नस ने यह अल्फ़ाज़ पढ़े, तो फ़ैसल ने इसरार किया कि उनकी जगह "फ़िलीस्तीन" और "फ़िलीस्तीन गवर्नमेंट" के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए जाएं।

वाइज़मन ने फ़ैसल को मुत्मइन करने के लिए कहा कि जुयूश स्टेट का यह मतलब नहीं कि वह फ़िलीस्तीन के अरबी बोलने वाले बाशिन्दों की राह में रुकावट बनेगी। फ़ैसल ने इसरार किया कि मुआहदे के आख़िर में इस्तिस्नाई जुमला अरबी में लिखा जाए। लार्नस ने फ़ौरन मुन्दरजा ज़ैल अल्फ़ाज़ लिख दिए :

"अगर अरब हुकूमत क़ायम कर लेते हैं, जैसा कि मैंने ४ जनवरी को बरतानवी उमूरे खारजा के सिक्रेट्री को अपने मन्शूर में लिखा था, मैं इस मुआहदे की पाबन्दी करूंगा, लेकिन अगर इस में तब्दीली की जाती है, तो उस पर अमल होता है या नहीं मैं जवाबदेह नहीं हूंगा।"उसके बाद

फ़ैसल और वाइज़मन ने अपने दस्तख़त सब्त कर दिए।

अक्तूबर में फ़ैसल ने जुयूश क्रानिकल को एक इन्ट्रव्यू में बताया कि जहाँ तक वह समझा है वाइज़मन बस यह चाहता है कि यहूदियों को आबादकारी की इजाज़त, मसावी हुकूक़ और हुकूमत में मुनासिब हिस्सा मिल जाए, जब जुयूश क्रानिकल के नुमाइन्दे ने कहा कि यहूदी एलाने बिल-फ़ौर का यह मतलब लेते हैं कि उन्हें अपने क़ौमी वतन के क़याम का हक़ है, जो आख़िरकार एक यहूदी रियासत बन जाएगा, तो फ़ैसल ने कहा: "फ़िलीस्तीन को अरब मम्लिकत के अलावा किसयी और के हवाले करने के ख़िलाफ़ और इस सर ज़मीन पर अरबों की बालादस्ती क़ाइम रखने के लिए अरब अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा तक बहा देंगे।"

हुसैन और इब्ने सऊद : 18 जनवरी 1919 ई० को पेरिस में अमन काँफ़्रेंस शुरू हुई, जिस में लार्नस ने बरतानवी वफ़्द के मिम्बर की हैसियत में शिर्कत की। उसका काम फ़ैसल को "सही सिम्त में" रखना था। फ़ैसल इस खुशफ़हमी में मुब्तला था वह अरबों के लिए जो कुछ चाहता है लार्नस के ज़रिए हासिल करेगा। उधर करज़न और उसके साथी लार्नस की मदद से बरतानिया के लिए अरबों से अपनी मर्ज़ी की बातें मनवाना चाहते थे। इस दौरान मैं लार्नस और इंडिया आफ़िस की चैप्क़लश शदीद हो गई थी। लार्नस शरीफ़ को अरब लीडर क़रार देता था और इंडिया आफ़िस इब्ने सऊद को, चुनांचे पेरिस अमन काँफ़्रेंस में लार्नस को जिस बड़े मस्अले का सामना करना पड़ा वह यही था कि हक़ीक़ी अरब लीडर कौन है? शरीफ़ या इब्ने सऊद? इब्ने सऊद, हुसैन को अरब का बादशाह तस्लीम करने पर आमादा न था और हिजाज़ पर हमले कर रहा था। उसके ख़िलाफ़ हुसैन ने दो महमीं रवाना कीं जो नाकाम रही हैं। मई 1919 ई० में अब्दुल्लाह चार हज़ार पैदल फौज और दस हज़ार सवारों के साथ इब्ने सऊद को कुचलने के लिए रवाना किया।

दिलचस्प बात यह है कि इंडिया आफ़िस इब्ने सऊद को रुपया और अस्लहा फराहम कर रहा था और फारन आफ़िस अब्दुल्लाह को वहाबियों ने रात के वक़्त अब्दुल्लाह की फौज पर यलग़ार कर दी और

उसे गाजर मूली की तरह काट कर रख दिया। अब्दुल्लाह बड़ी मुश्किल से जान बचा कर भागा। इब्ने सऊद अब मक्का की तरफ़ मार्च करने की तैयारी कर रहा था कि फ़ारन आफ़िस का अल्टी मेटम मिला, वह पीछे हट जाए, वरना उसे रोकने के लिए हवाई जहाज़ भेजे जाएंगे। इंडिया आफ़िस ने भी उसे पीछे हट जाने का मशवरा दिया और इब्ने सऊद की यलग़ार थम गई (1924-25 में इब्ने सऊद ने हिजाज़ और मुक़द्दस शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया) (यह अब सऊदी अरब में शामिल हैं) अब्दुल्लाह की शिकस्त से लार्नस को बड़ी हज़ीमत का सामना करना पड़ा, क्योंकि उसने वार कैबिनेट को बताया था कि हिजाज़ पर हमले की सूरत में हुसैन, इब्ने सऊद से आसानी के साथ निबट लेगा।

कमीशन की रिपोर्ट : फ़ैसल साफ़ महसूस कर रहा था कि अमन कॉंफ़्रेंस में बरतानिया, फ़्रांस के आगे आहिस्ता-आहिस्ता झुकता जा रहा है, ताहम सदर दिल्सन की इस तज्वीज़ से लार्नस और फ़ैसल दोनों का हौसला बुलन्द हो गया कि अवाम की मर्ज़ी मालूम करने के लिए एक तहक़ीक़ाती कमीशन शाम भेजा जाए। इस कमीशन में अमरीका और बरतानिया के दो-दो नुमाइन्दे थे, लेकिन कोई फ़्रांसीसी नुमाइन्दा न था।

कॉंफ़्रेंस ने फ़ैसल के मुतालिबात पर फ़ैसला मुलतवी कर दिया और वह शाम वापस चला गया। बरतानिया इब्तिदा में बड़ा सरगरम था, लेकिन जब कमीशन ने तज्वीज़ किया कि उस की सरगर्मियों का दाइरा मैसू पोटिमा और फ़िलस्तीन तक बढ़ा दिया जाए, तो उसकी दिलचस्पी सर्द पड़ गई। आख़िरकार कमीशन के अमरीकी मिम्बरों ने अपनी रिपोर्ट पेश कर दीजिस के मुताबिक़ शाम, फ़िलीस्तीन और इराक़ को मुख़्तसर मुद्दत के लिए इंतिदाब के तहत दे दिया जाए और फिर जितनी जल्दी मुम्किन हो सके उन्हें खुद मुख़्तारी दे दी जाए।

शाम का इंतिदाब अमेरिका को और इराक़ का बरतानिया को दे दिया जाए। फ़िलीस्तीन को जुयूश का सनवेल्थ बनाने का ख़्याल तर्क कर दिया जाए। यह मशवरा किसी के लिए भी क़ाबिले क़बूल न था, यहाँ तक कि वाशिंगटन ने भी उसे नज़र अन्दाज़ कर दिया।

जिस वक़्त सैहूनी फ़िलीस्तीन के बारे में फ़ैसले के मुन्तज़िर थे और फ़ैसल दमिश्क़ में तहक़ीक़ाती कमीशन की हिमायत की आस लगाए बैठा था। लार्नस फ़ुर्सत के मौक़ा को ग़नीमत जान कर क़ाहिरा से अपने काग़ज़ात हासिल करने के लिए राइल इयर फ़ोर्स के एक तैयारे में रवाना हुआ, लेकिन तैयारा इटली में हादसे का शिकार हो गया और वह ज़ख़्मी हो कर वापस लन्दन पहुंच गया।

साज़िशों के नए जाल : बरतानवी हल्क़ों में यह एहसास बढ़ता जा रहा था कि मुस्तक़्बिल में तैल एक अहम हथियार होगा, मगर साएक्स पैकाट के मुआहदे के नतीजे में मूसल ऐसा तेल के ज़ख़ाइर से माला माल इलाक़ा फ़्रांस को मिलने वाले इलाक़े में शामि हो गया था, ताहम दिसम्बर 1918 ई० में कलीमन्सू लन्दन आया, तो लाइड जार्ज ने उस से तस्फ़िया कर लिया, जिसके तहत मूसल बरतानिया को मिल गया। उसके बदले में बरतानिया ने तेल में फ़्रांस को हिस्सा देने, दरियाए रहाइन के बाएं किनारे के मस्अले पर उसकी हिमायत करने और शाम को बैरूत और दमिश्क़ में तक़्सीम न करने का मुआहदा कर लिया, चुनांचे अमन कॉंफ़्रेंस में बरतानिया की कोई साज़िश न चल सकी। फ़्रांस अपने मूक़िफ़ पर डटा रहा और आख़िरकार बरतानिया को शाम और फ़ैसल से दस्तकश होना पड़ा।

तेल के माहिरीन का ख़्याल था कि रिआयत और राइल्टी के बारे में गुफ़्त व शुनैद इस सूरत में ज़्यादा आसान होगी, जब मश्रिक़े उस्ता में एक ताक़तवर अरब मम्लिकत की बजाए इत्तिहाद के शुऊर से आरी कई हरीफ़ रियासतें हों, चुनांचे तेल की लाबी, मश्रिक़े उस्ता में साज़िशों और रेशा दवानियों के जाल बिछाने में मस्रूफ़ हो गई।

बाब (8)

सलतनते उस्मानिया का आख़िरी ताजदार - सुल्तान अब्दुल हमीद

उस्मानी ख़लीफ़ा सुल्तान अब्दुल-हमीद को मग़रबी मुसन्नेफ़ीन बेरहम क़ातिल, क़ौम का दुशमन, ग़द्दार और ख़ाइन कहते हैं, तर्क भी एक मुद्दत तक इस प्रोपेगन्डे से मस्हूर रहे। लेकिन अब रफ़्ता-रफ़्ता इस प्रोपेगन्डे का तिलस्म टूटता जा रहा है। सुल्तान का वाहिद जुर्म यह था कि वह फ़िलीस्तीन का इलाक़ा यहूदियों के हवाले करने पर आमादा न हुए थे। हाल ही में तुर्की ज़बान में लिखी हुई सुल्तान की अपनी याद दाश्तें शाए हुई हैं। यह दाशतें उन्होंने उस ज़माने में तहरीर कीं, जब वह क़स्र बेलरबी में क़ैद थे। उन याद्दाश्तों का तरजमा अरबी में हो चुका है। हम उन्हें पहली बार उर्दू में शाए कर रहे हैं।

सुल्तान अब्दुल हमीद की याद्दाशतें

18 मार्च 1917 ई० :

जंग से पहले जर्मनी की उभरती हुई ताक़त को यूरोपी ममालिक खुसूसन बरतानिया, फ़्रांस और रूस बड़ी तश्वीश की नज़र से देख रहे थे, लेकिन मेरे नज़्दीक यूरोपी ताक़तों में तवाजुन बरक़रार रखने के लिए जर्मनी का उभरना ज़रूरी था। जर्मनी की ताक़त में रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा हो रहा था और मैं यह महसूस कर रहा था कि उसका तसादुम दूसरी यूरोपी ताक़तों से नागुज़ीर होता जा रहा है। यह ताक़तें दौलते उस्मानिया के हिस्से बखरे करने पर जिस तरह तुली हुई थीं, इसके पेशे नजर हमें यह फ़ैसला करना था कि जंग की सूरत में हमारा मूक़िफ़ क्या होगा, मेरा बहुत सा वक़्त इसी मस्अले पर ग़ौर व फ़िक्र में गुज़रना।

इस्तंबूल में बड़ी ताक़तों की जो काँग्रेस मुनअक़िद हुई, उस में उनकी नीयतें वाज़ेह हो कर सामने आ गईं। यह काँग्रेस उन्होंने ईसाई रिआया के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त की ख़ातिर नहीं बुलाई थी, जैसा कि उनका दावा था, बल्कि दरहक़ीक़त उनका मक़सद ख़ुद अपनी "आज़ादी"

का तहफ़्फ़ुज़ था, वह चाहती थीं कि उन्हें मुल्क में खुल कर खेलने की खुली छूट मिल जाए ताकि वह दौलते उस्मानिया को फाड़ने और टुक्ड़े-टुक्ड़े करने का अमल मुकम्मल कर सकें।

इस मक़सद को बर लाने के लिए यह ताक़तें दो तरीक़ों से काम कर रही थीं। अव्वल यह कि मसीही रिआया को बग़ावत पर उक्साने और मुल्क की खुशगवार फ़िज़ा को मुकद्दर करने में लगी हुई थीं। दोम, पार्लियामेंट और दस्तूर के मुतालिबात के पर्दे में हमारे अन्दर ऐसे आदमी पैदा करने की तदबीरों में मस्रूफ़ थीं जो उनके मन्सूबों को कामयाबी से हमकिनार करने में उनके मुआविन और मददगार बन सकें। हमारे नौजवानों को गुमराह करने के लिए उन्होंने अपनी हथेलियों के मुँह खोल दिए थे। अफ़्सोस यह कि हमारे बाज़ जदीद तालीम याफ़्ता तर्क नौजवान उनके हथकन्डों का शिकार हो गये। वह दस्तूरी हुकूमत के अलम्बरदार थे, लेकिन उसके पीछे जो मग़रबी फ़ल्सफ़ा कारफरमा था, उस से बिल्कुल बेख़बर थे, यह कि अजनबी ताक़तों को खुद हमारी अपनी सफ़ों में तफ़रीक़ पैदा करने का मौक़ा मिल गया था। ज़ाहिर है कि मेरे लिए ख़्यानत और तमर्रुद पर मबनी यह सूरतेहाल नाक़ाबिले बर्दाश्त थी और मुझे अपने मुल्क को उस से नजात दिलाना ज़रूरी था।

यूरोपी ताक़तों की इस काँग्रेस में एक बात और सामने आई। वह यह कि सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ ने अपने अहद में उस्मानी लश्कर और बहरिया को ताक़तवर बनाने के जो इक़्दामात किए थे, उन से जमाअतें सख़्त परेशान थीं। यह इक़्दामात गोया सुल्तान के अह्दे हुकूमत का हासिल थे, उनके मुअख़्ख़िर और कारगर होने का पता रूस के साथ जंग में चला। बद-क़िस्मती से उस्मानी फौज के अफ़्सर दो गरोहों में बट चुके थे। एक वह गरोह जो हुक्मरान ख़ानदान का मुख़ालिफ़ था और दूसरा वह जो उसका हामी और मुअय्यद था। उन दो गरोहों के दर्मियान कशमकश मैदाने जंग में भी जारी रही। अगर ऐसा न होना, तो हम रूसी लश्कर की पेशक़दमी न सिर्फ़ रोकने में कामयाब हो जाते, बल्कि जवाबी जमला करके उसे तबाह भी कर देते। इस तरह सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ ख़ान की उस्मानी फौज के मुतअल्लिक़ पालीसी कुल्लियतन नाकाम न रही थी।

ताहम उस्मानी अफ्वाज के बरअक्स उस्मानी बेड़े ने अपनी भारी

तादाद के बावजूद कोई नुमायां कारनामा अंजाम नहीं दिया। वजह यह थी कि हमारे तक़रीबन तमाम जहाज़ों की कमान अंग्रेज़ों के हाथ में थी और जब हम ने बाज़ जंगी जहाज़ों की कमान उन से लेना चाही, बरतानवी सफीर भागा-भागा क़स्रे ख़िलाफ़त में आया और किसी शर्म और ख़जालत के बेग़ैर साफ़-साफ़ कह दिया कि हम इस इक़्दाम को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेंगे। नतीजा यह कि मुझे उस्मानी बेड़ा वापस खलीज में भेजना पड़ा और बहरे अबयज में यूरोपी बेड़ों की तुर्कताज़ियों का मुक़ाबला करने वाली कुव्वत न रही। लोगों ने खुफ़िया दबाव से पैदा होने वाली इस सूरतेहाल के मुतअल्लिक़ सरासर झूठे अफ़्साने गढ़ लिए। मसलन वह कहते हैं कि चूंकि बहरी बेड़े ने अब्दुल-अज़ीज़ को तख़्ते ख़िलाफ़त से उतारने में नुमायाँ किरदार अदा किया था, इसलिए अब्दुल-हमीद ने उसे बेकार करके रख दिया। यूरोपी ताक़तों से तने तन्हा लड़ने की उस्मानी सलतनत में सकत न थी। ऐशिया के अक्सर मुसलमान मुल्कों पर अंग्रेज़ और रूस ऐसी बड़ी ताक़तें मुसल्लत थीं और उस्मानी ख़िलाफ़त का वजूद उनकी आंखों में कांटा बन कर खटक रहा था। वह उसे ख़त्म करने के दरपे थीं और उस्मानी सलतनत के अन्दर जगह-जगह बग़ावतें खड़ी कर रही थीं।

उसी ज़माने में मेरे हाथ एक ऐसा मन्सूबा लगा जो बरतानवी वज़ारते ख़ारजा के दफ़्तर में तैयार हुआ था। इस मन्सूबे में दो आदमी बुनियादी किरदार की हैसियत रखते थे। एक जमालुद्दीन अफ़ग़ानी और एक अंग्रेज़ जो अपना नाम बुलन्द बताता था। मन्सूबे में कहा गया था कि तुर्कों से ख़िलाफ़त की क़ुबा ले ली जाएगी और मक्का के शरीफ़, हुसैन को मुसलमानों का ख़लीफ़ा बनाने का एलान कर दिया जाए।

मैं जमालुद्दीन अफ़ग़ानी को क़रीब से जानता था। उस वक़्त वह मिस्र में थे। वह बहुत ख़तरनाक आदमी थे। मेहदी होने का दावा करते थे। एक बार उन्होंने मेरे सामने तज्वीज़ रखी कि वह वस्ती ऐशिया के मुसलमानों को रूस के ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमादा कर सकते हैं। मुझे ख़ूब इल्म था कि अफ़ग़ानी ऐसा करने पर क़ादिर नहीं। वह अंग्रेज़ के आदमी थे और इस बात का क़वी इम्कान था कि उन्हें अंग्रेज़ ने मेरी जासूसी के लिए तैयार किया था। मैंने फौरन इंकार कर दिया। मैंने उन्हें अबुल-हुदा अस्सैयादी अल-अली के ज़रिए इस्तंबूल आने की दावत दी

और फिर उन्हें निकलने न दिया।

ख़िलाफ़त को तबाह करने के लिए अंग्रेज़ आए दिन कोई न कोई साज़िश करते रहते थे, वह एशिया में पन्द्रह करोड़ मुसलमानों पर हुकूमत करते थे, यह लोग ख़िलाफ़ते उस्मानिया के हामी थे। मुझे इस सूरतेहाल की ख़बर थी। मैंने वस्त एशिया और दूसरे मुल्कों के मुसलमानों के साथ राब्ता पैदा करने के लिए बहुत से मुअज़्ज़ज़ अस्हाब, शुयूख़े तरीक़त और दुर्वेश भेजे। उन लोगों ने इस्लामी उखुव्वत का जज़्बा पैदा करने के लिए बड़ा काम किया। शैख़ सुलेमान आफन्दी बुख़ारी उन में से एक थे। हिन्दुस्तानी मुसलमान भी दौलते उस्मानिया के साथ गहरा जज़्बाती रिश्ता रखते थे। हम पर जब कोई इफ़्ता पड़ती है, बेचैन हो जाते हैं। हमारे साथ अंग्रेज़ों का जो तरज़े अमल था, उस से सख़्त नालाँ थे, उन्होंने मुतालबा किया था कि अंग्रेज़ी हुकूमत, दौलते उस्मानिया के साथ अमन व अमान से रहे। मुसलमानों की इस हम्दर्दी से हमें आज़माइश की गड़ियों में बड़ी तक़्वियत मिलती थी।

यही वह ज़माना था जब अंग्रेज़ जर्मनों के बारे में हमारी मम्लिकत में शुकूक व शुबहात फैला रहे थे। दरअस्ल वह यह चाहते थे कि हम जर्मनों के साथ मिल कर उनकी साज़िशों और रेशा दवानियों का मुक़ाबला न कर सकें। रूस और बरतानिया दोनों उस्मानी सलतनत को ख़त्म करने पर तुले हुए थे। अंग्रेज़ों ने इस सिलसिले में एक तज्वीज़ भी रूमियों के सामने रखी, लेकिन उन्होंने उसे मुस्तर्द कर दिया। दरअस्ल दोनों का मक़सद तो एक था, लेकिन उन में से हर एक खुद सलतनते उस्मानिया के ज़्यादा से ज़्यादा इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करना चाहता था। वह दोग़ली पालीसी पर अमल पैरा थे। एक तरफ़ अंग्रेज़ ऐशिया में रूस के बढ़ते हुए क़दम रोकने की तग व दो में लगे हुए थे। इस तरह वह एक दूसरे के आमने सामने खड़े थे, दूसरी तरफ़ उन्होंने जर्मनी के ख़िलाफ़ मुत्तहिदा महाज़ बना रखा था। मेरी नीयत शुरू में जर्मनी से मुआहदा करने की न थी, लेकिन जब यूरोपी ताक़तों के बाहमी मुआहदों का पता चला तो मेरे लिए भारी भरकम बहरी ताक़त रखने वाले मुल्क के साथ मुआहदा करने के सिवा कोई चारा न रहा।

अंग्रेज़ों की रेशा दवानियाँ जारी थीं। फ़्री मसीनरी तहरीक ज़ोरों पर थी। नौजवान तुर्क मर्द व ज़न इस तहरीक में शामिल हो रहे थे।

सालूनीका उनका गढ़ था। इधर जर्मनी ने भी अपनी निगरानी में फ़्री मसीनरी की महफ़िलें जमा रखी थीं। उनका मरकज़ मनास्तर में था। यह दोनों मरकज़ आपस में दस्त बगरीबाँ रहते। अनवर, नियाज़ी, शम्सी वग़ैरह मनास्तर के मरकज़ से तअल्लुक़ रखते थे। मैंने जर्मनी के साथ बग़दाद में रेलवे लाइन बिछाने का मुआहदा किया। तो अंग्रेज़ बिफर गये और मक़्दूनिया में हमारे ख़िलाफ़ एक मुसीबत खड़ी कर दी।

इधर हम यूनानियों से निबट रहे थे, उधर जंगे अज़ीम क़रीब तर आती जा रही थी।

20 मार्च 1917 ई० :

रूसियों ने जब उस्मानी सलतनत का बटवारा करने की बरतानवी तज्वीज़ मुस्तरद कर दी कि उस में फाइदा अंग्रेज़ों को पहुंचता था, तो अंग्रेज़ों ने मेरे साथ तअल्लुक़ात बढ़ाने शुरू किए। इब्तिदा में मैं उनकी चाल न समझ सका। कई महीने बाद हक़ीक़ते हाल वाज़ेह हो कर सामने आई। एक रोज़ अंग्रेज़ सफ़ीर मुझ से मिलने आया। वह अनातूलिया, शाम और हिजाज़ के मुतअल्लिक़ देर तक बातें करता रहा। कहने लगा: "यह इलाक़े तारीख़ की अज़ीम तरीन तहज़ीबों का गहवारा रहे हैं। यहाँ क़दीम आसार कई जगह मदफ़ून हैं। उस्मानी सलतनत को उनकी खुदाई करनी चाहिए। बड़े क़ीमती ख़ज़ाने मिलेंगे। क़दीम मूर्तियों और यादगारों की सूरत ही में नहीं, नक़द और सोने चाँदी की सूरत में भी।" उस ने मिस्र में आसारे क़दीमा की खुदाइयों का हवाला दिया।" बरतानवी हुकूमत इस मक़सद के लिए हर क़िस्म की मदद देने को तैयार रहे। मुआहदा तय पाते ही बरतानवी माहिरीन आसारे क़दीमा पहुंच जाएंगे।

मैं चूंकि अंग्रेज़ों के साथ खुशगवार तअल्लुक़ात क़ायम रखने का ख़्वाहिशमन्द था, इस लिए इस तज्वीज़ के पीछे कारफ़रमा मक़्सद पर मेरी नज़र न गई। मैंने तज्वीज़ मन्ज़ूर कर ली। फ़ौरन सदरे आज़म ख़लील रिफ़्अत पाशा को तलब किया। बरतानवी तज्वीज़ उसके सामने रखी और कहा कि वह इस सिलसिले में ज़रूरी इक़्दामात करे। आसारे क़दीमा के जो माहिरीन आएं, उन्हें हर क़िस्म की सहूलतें बहम पहुंचाए।

बेहद ताख़ीर के बाद अंग्रेज़ों ने अपने माहिरीन इस्तंबूल भेजे। मैंने सबको बारयाब किया, उनकी कामयाबी की तमन्ना की, उनके एज़ाज़ में

इशाइया दिया, जिसमें दूसरी हुकूमतों के सफ़ीर भी शरीक हुए। रूसी सफीर से बात-चीत के दौरान मैंने कहा कि अंग्रेज़ों ने तारीख़ और तहज़ीब की ख़िदमत के लिए मुझ से आसारे क़दीमा खोदने की इजाज़त तलब की थी जो मैंने दे दी है, तो दो बड़े अजीब अन्दाज़ में मुस्कुराया, जैसे उसे इस बात पर यक़ीन न हो।

बरतानवी माहिरीन के एक गरोह ने क़ैसरिया में खुदाई शुरू की, दूसरे ने मूसिल में और तीसरे ने बग़दाद के क़रीब एक मक़ाम पर, उनके साथी मक़ामी मज़्दूर और कारकुन काम कर रहे थे। हमारे आदमी अपनी जगह पर इस काम की निगरानी कर रहे थे। इन मक़ामात से सिवाए चन्द शिकस्ता बर्तनों, छोटी मोटी मूर्तियों, तांबे के पुराने सिक्कों और मक़्बरों वग़ैरह के कोई ख़ास शय बरामद न हुई। हम ने मुआहदे के मुताबिक़ यह बर्तन, मूर्मियाँ और सिक्के उनके हवाले कर दिए। इस अस्ना में बरतानवी सफीर मुझ से मिलने आया करता और हम काम की रफ़्तार और नताइज पर गुफ़्तगू करते। एक रोज़ वह आया तो ख़ासा मस्रूर और पुरजोश था एक मुरस्सा तल्वार पेश करते हुए कहने लगा यह मूसिल के क़रीब खुदाई में मिली है तल्वार टूटी हुई थी, लेकिन उसके दस्ते में क़ीमती पत्थर जड़े हुए थे, उसका कहना था कि यह तलवार किसी ज़लज़ले से ज़मीन में दब गई, उसका एक टुक्ड़ा टूट कर दूर कहीं चला गया और बाक़ी हिस्सा खुदाई के दौरान हाथ आ गया। मैंने सफीर का शुक्रिया अदा किया और उसे इंआम से नवाज़ा, मगर अजीब बात यह थी कि हमारी एन्टलीजेंस को इस तल्वार के दस्तियाब होने का कोई इल्म न था, उसकी दो ही वजूहात थीं। एक यह कि हमारे मुख़्बिरों को तल्वार के मिलने की ख़बर तक नहीं मिल सकी, दूसरे यह कि सफीर कोई ऐसा ड्रामा कर रहा था, जिस से मैं नावाक़िफ़ था। मैंने यह तल्वार बाज़ार भेज कर बाज़ ताजिरों को पेश की, उन्हें कुछ ख़बर न थी कि मुताला किया है, उन्होंने यह बताया कि तल्वार पुराने ज़माने की नहीं है। मैंने कहा नहीं यह बहुत पुरानी है और फिर मैंने उसके कई दलाइल दिए, ताहम मैं हक़ीक़त का सुराग़ लगाने में मस्रूफ़ रहा, लेकिन कुछ भी पता न चला। फिर अख़्बार में छपने वाली एक ख़बर से मुझे मालूम हुआ कि जो माहिरीन मूसिल और बग़दाद में खुदाई कर रहे थे, वह आसारे क़दीमा की तलाश छोड़ कर कुएँ खोदने लगे हैं।

अब मुझ पर उनके हक़ीक़ी अज़ाइम अयाँ हुए। दरअस्ल तेल तलाश करने के लिए उन्होंने आसारे क़दीमा ढूँढने का ढोंग रचाया था। अगर वह तेल तलाश करने की पेशकश ले कर आते, तो मेरा तर्ज़े अमल बिल्कुल मुख़्तलिफ़ होता, इसलिए कि उन्होंने माहिरीन आसारे क़दीमा का नक़ाब अपने चेहरे पर डाल लिया। फिर मुझे अपने एतमाद में लेने के लिए मुरस्सा तल्वार दरयाफ़्त करने का ड्रामा पाया।

कुछ मुद्दत बाद बरतानवी सफ़ीर ने मुझ से मुलाक़ात की और कहने लगा कि शाम और हिजाज़ के इलाक़े ज़्यादा तर सहरा पर मुश्तमिल हैं और पानी न होने की वजह से प्यास यहाँ के बाशिन्दों का सबसे बड़ा मस्अला है। पानी के फ़िक़्दान की वजह से इस इलाक़े को तरक़्क़ी भी नहीं दी जा सकती। हम इंसानियत के नाम पर इस मस्अले को हल करने और सहरा में कुएँ खोदने पर आमादा हैं, लेकिन उसके लिए कुछ शराइत हैं। पानी की तंगी ख़त्म हो जाए और सहरा में नख़्लिस्तान वजूद में आ जाएं, तो मौजूदा कुएँ जो मक़ामी लोग अब तक इस्तेमाल करते आए हैं, बन्द कर दिए जाएंगे और हमारे खोदे हुए कुओं पर हमारा कन्ट्रोल होगा।

मैंने यह तज्वीज़ मुस्तर्द कर दी, यही नहीं, बल्कि मूसल और बग़दाद में जो कुएँ खोदे गये थे, वह भी बन्द करवा दिए। अंग्रेज़ उस पर बड़े तिल्मिलाए। खुदाई वग़ैरह तो वहीं रह गई, अब उन्होंने अपनी सारी तग व दो व उस्मानी सलतनत को ख़त्म करने और ख़िलाफ़त का मन्सब हम से छीन कर मक्का के शरीफ़ के हवाले करने पर मरकूज़ कर दी। मैंने इस मन्सूबे को नाकाम बनाने के लिए दुर्वेशों का एक बड़ा क़ाफ़िला हिन्दुस्तानी मुसलमानों के पास भेजा। अंग्रेज़ों ने इस मन्सूबे का मुक़ाबला और ज़्यादा सरगरमी से किया और जज़ीरा करेट में बग़ावत करवा दी। मज़ीद यह कि एक बार फिर हमारे ख़िलाफ़ रूस और फ़्रांस से साज़बाज़ शुरू की, लेकिन रूस के ज़ार ने इंकार कर दिया। ज़ारों की हुकूमत के ख़िलाफ़ रूस में जो तहरीकें चल रही थीं, अंग्रेज़ उनकी मुआवनत कर रहे थे और मुल्क में दस्तूरी निज़ाम क़ायम करने के मुतालबे के इसी तरह मुअय्यद थे, जैसे वह उस्मानी सलतनत में दस्तूरी हुकूमत के नाम पर चलने वाली तहरीकों के हामी थे।

ठीक उस ज़माने में जब अंग्रेज़ हमारे साथ कशमकश में मसरूफ़ थे। जर्मनी ने हमारी तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया और करेट के मअस्ले पर हमारी हिमायत की और यूरोप की दूसरी हुकूमतों के मूक़िफ़ की मुख़ालिफ़त, उधर यूनान में हमारी अफ़्वाज फतहयाब हो रही थीं। इन फ़ुतूहात ने जर्मनों की आंखें खोल दी थीं, चुनांचे फ़्रांस, बरतानिया और रूस के गठजोड़ का मुक़ाबला करने के लिए कैसर जर्मनी मेरे और क़रीब हो गया। मैंने भी जवाब में दोस्ताना रवाबित बढ़ाए। मैं दरअसल इस तरह अंग्रेज़ों पर वाज़ेह कर देना चाहता था कि हमें कमज़ोर नातवां न समझो। हम जर्मन अफ़्वाज के लिए हिन्दुस्तान फतह करने के दरवाज़े खोल देने की ताक़त रखते हैं, लेकिन जर्मनी के साथ तआवुन करने के यह मायने न थे कि हमें उसके नज़्रियात व अफ़्कार से सौ फ़ीसद इत्तिफ़ाक़ था, कई उमूर व मुआमलात में हमारा नुक़्त-ए-नज़र एक दूसरे से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ था।

इन्हीं दिनों कैसर व लहलम सरकारी दौरे पर इस्तंबूल आया। मैंने उसका बड़ा शानदार इस्तिक़्बाल किया। उसके एज़ाज़ में जो दावत दी, उसमें तक़्रीर करते हुए उसे दुनिया भर में रहने वाले तीस करोड़ मुसलमानों का दोस्त क़रार दिया। कैसर ने दमिश्क़ पहुंच कर जो तक़्रीर की, उसने उसने ज़ार रूस को मुख़ातब करते हुए कहा : "दौलते उस्मानिया मौत के किनारे पर नहीं खड़ी, बल्कि वह ज़िन्दगी की तवानाइयों से पूरी तरह बहरावर है.........रूस को चाहिए कि वह मुसलमानों और उनके शर्फ़ से न खेले, कैसर के तरज़े अमल और उकसी तक़्रीरों ने मेरे पाकीज़ा जज़्बात के साज़ को छेड़ दिया।

जर्मन शहनशाह के साथ बाज़ अह्ले इल्म भी आए थे, उनमें माहिरीन आसारे क़दीमा भी थे। उन्हें भी अंग्रेज़ों की तरह पुराने आसार ढूँढने के काम से बड़ी दिलचस्पी थी। इस मक़्सद के लिए उन्होंने मूसल और उसके गर्द व नवाह का इलाक़ा मुन्तख़ब किया और मैंने उसकी इजाज़त दी दी। अब भी वही मुआमला पेश आया। मैंने सुना कि जर्मन माहिरीन आसारे क़दीमा की जमाअत भी कुएँ खोद कर पेट्रोल निकालने की फ़िक्र में है। मुझे एतराफ़ है कि मैंने धोखा खाया था। अगर जर्मन शहनशाह पेट्रौल तलाश करने के मस्अले पर मेरे साथ बात चीत करता, तो बाज़ शराइत के तहत मैं उसे इजाज़त दे देता, इसलिए कि खुद मेरा

मुल्क पेट्रोल तलाश करने का इरादा रखता था। आसारे क़दीमा की तलाश के पर्दे में पेट्रोल ढूँढने वाले माहिरीन और जासूसों को भेजने से साफ़ ज़ाहिर था कि जर्मन हम उस्मानियों के बारे में क्या नुक़्त-ए-नज़र रखते हैं।

क़स्र शाही के सिक्रेट्री तहसीन पाशा की राय यह थी कि हम जर्मन शहनशाह से एहतिजाज करें लेकिन मुझे इस से इख़्तिलाफ़ था। मैंने कहा ठीक है वह तलाश करते रहें। आख़िर वह पेट्रोल जेब में डाल कर नहीं ले जाएंगे। हम उन्हें खुदाई से निकलने वाले शिकस्ता बर्तन वग़ैरह दे देंगे और पेट्रोल अपने काम में लाएंगे कि उनसे मुआहदा पेट्रोल का नहीं, आसारे क़दीमा के नवादिरात का हुआ है।

मेरे एक मुशीर सलाहुद्दीन आफ़न्दी इस क़िस्म के मसाइल ख़ूब समझते थे। मैंने उन्हें तलब किया और अमेरिका भेजा। उस ज़माने में अमेरिका इस मैदान में बहुत तरक़्क़ी याफ़्ता था और हमारी सलतनत के साथ अच्छे तअल्लुक़ात उस्तवार करने की कोशिश कर रहा था। हम यह जानना चाहते थे कि हमारे मुल्कों में पेट्रोल है या नहीं, मगर अफ़्सोस मेरी सई बेसमर रही। सलाहुद्दीन आफ़न्दी ने अमरीका में जिन कम्पनियों से राबता क़ाइम किया, उन्होंने इस सिलसिले में किसी मर्गजोशी का इज़्हार न किया, चुनांचे उन्हें बेनीले मुराम लौटना पड़ा।

वापसी पर सलाहुद्दीन आफ़न्दी ने मुझे बताया कि अमरीकियों का ख़्याल है, वह खुद अपने मुल्क में इतना पेट्रोल निकाल लेंगे कि दुनिया भर की ज़रूरत पूरी हो जाएगी। ज़ाहिर है कि ऐसी सूरत में वह किसी दूसरे मुल्क में पेट्रोल निकालने की मुहिम में किया दिलचस्पी ले सकते हैं, जब कि यह भी जानते हों कि अमरीका से बाहर किसी मुल्क में वसीअ् पैमाने पर निकलने वाला पेट्रोल उनके तेल की क़ीमतों पर भी असर अन्दाज़ होगा।

बहरहाल अंग्रेज़ों और जर्मनों के बाद हम ने भी अपने ज़ेरे नगीं म्मालिक में पेट्रोल की बू सूंघ ली, चुनांचे मैंने जापान से तेल के कुएँ खोदने वाले माहिरीन का एक वफ़्द बुलाया, जापान की हुकूमत ने मेरी दर्ख़्वास्त मान ली। लेकिन उसके बाद क्या हुआ? मैं कुछ नहीं कह सकता, इसलिए कि थोड़ी ही मुद्दत बाद मुझे तख़्त से माज़ूल कर दिया गया।

22 मार्च 1917 ई० :

उस्मानी सलतनत को रिआया के हालात और मसाइल व मुश्किलात की ख़बर मुख़्तलिफ़ ज़राए से मिलती रहती थी। एक तो गवर्नर और क़ाज़ी अपनी रिपोर्टें दिया करते थे। दूसरे उसमानी सलतनत के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में फैले हुए तकियों और उनके मशाइख़ और दुर्वेशों के ज़रिए आस्ताने के मुतअल्लिक़ा हुक्काम यह सारी ख़बरें और रिपोर्टें इकट्ठी करके मेरे सामने पेश करते थे। मेरे दादा सुल्तान महमूद सानी ने अपनी एन्टलीजेंस का दाइरा मज़ीद वसीअ् कर दिया। अब दुर्वेश बनफ़्से नफीस सुल्तान तक अपनी फराहम करदह ख़बरें पहुंचाया करते। यह सिलसिला मेरे तख़्त नशीन होने के बाद तक जारी रहा।

एक रोज़ हमारे लन्दन में मुतऐयन सफीर मौसूरासी पाशा से मुझे पता चला कि साबिक़ सदर आज़म हुसैन ऊनी पाशा अपने ज़मान-ए-वज़ारत में अंग्रेज़ों से रुपया वसूल किया करता था। मैं उस ख़्यानत पर मबहूत हो कर रह गया। कितने ही दिन मेरी तबीअत मुकद्दर रही। इन्हीं दिनों महमूद पाशा ने मुझ से मुलाक़ात की और "नौजवान तुर्कों" के बाज़ अरकान के मुतअल्लिक़ बेहद अहम मालूमात पेश कीं। मैंने महमूद पाशा से उनका माख़ज़ दरयाफ़्त किया, तो मालूम हुआ कि पाशा ने एन्टलीजेंस का एक खुसूसी ब्यौरो क़ायम कर रखा है, इसमें बाज़ अश्ख़ास के अक़ारिब पैसा लेकर काम करते थे। यह रिश्तेदार उन लोगों से मिलते और उन से जो बात भी सुनते, उसकी रिपोर्ट महमूद पाशा को देते।

बेशक पाशा मेरा बहनोई है, लेकिन मेरे नज़्दीक यह दुरुस्त नहीं था कि सलतनत का कोई पाशा अपने तौर पर हुकूमत से बिल्कुल अलग थलक कोई खुफ़िया मुहकमा क़ायम करे। मैंने पाशा से कहा अपने इस मुहकमे को फौरी तौर पर मेरे हवाले कर दे और आइन्दा ऐसी कोई हरकत न करे। पाशा ने ख़ासी दिल तंगी के साथ मेरे हुक्म की तामील की।

मेरे लिए सबसे परेशान कुन बात यह थी कि बड़ी ताक़तें वज़ीरे आज़म तक के लोगों को ख़रीदने में कामयाब हो चुकी थीं। ऐसी सलतनत दुशमन के हाथों से कैसे महफ़ूज़ रह सकती है, जिसके बड़े-बड़े ओहदेदार रुपये से ख़रीदे जा सकते हों? इसी बुनियाद पर मैंने एन्टलीजेंस का एक खुसूसी मुहकमा क़ायम किया जिसकी निगरानी

बराहे रास्त मैं खुद करता था। यही वह मुहकमा है जिसे मेरे दुशमन जो नाबही (खुफ़िया पुलिस) का नाम देते हैं।

"जो नाबही" की फराहम करदह मालूमात की मैं पूरी तरह छान फटक करता था, इसलिए कि असली "जो नाबही" के अलावा झूठे लोग भी उन में शामिल हो सकते थे। चुनांचे जब तक पूरी तरह तहक़ीक़ात न कर लेता, उनकी फराहम करदह किसी ख़बर को सच्चा न समझता। मेरे एक बुजुर्ग सुल्तान सलीम ख़ान अक्सर कहा करते थे कि मैं अजनबियों के हाथ अपने कलीजे पर महसूस कर रहा हूँ। हमारा फ़र्ज़ है कि हम ग़ैर म्मालिक में अपने सफीर मुक़र्रर करें और अपने पैग़ाम्बर और क़ासिद बाहर भेजें ताकि जो कुछ अजनबी ताक़तें कर रही हैं, यह लोग उसकी हमें इत्तिला दे सकें और हम फौरन इन इत्तिलाआत पर कोई इक़्दाम कर सकें।

मैं खुद भी अजनबी हाथ महसूस कर रहा था, अपने कलीजे पर नहीं, उसके अन्दर वह मेरे वज़ीरे आज़मों और वज़ीरों को ख़रीद रहे थे और उन्हें हमारे मुल्क के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहे थे। यह वह लोग थे जिन पर सलतनत के ख़ज़ाने का एक बड़ा हिस्सा सर्फ़ हो रहा था। मैं उनकी कारिस्तानियों से बेख़बर रहने पर कैसे रज़ामन्द हो सकता था!

हाँ, मैंने यह खुफ़िया मुहकमा क़ायम किया और खुद उसकी निगरानी करता रहा। यह मुहकमा मुहिब्बे वतन लोगों की नहीं, ग़द्दारों और ख़ाइनों की ख़बरें फराहम करता था।

23 मार्च 1917 ई० :

जब से तख़्त व ताज मुझ से छीना गया है, इस वक़्त से अब तक मेरे दुशमन मेरे मुतअल्लिक़ कई मज़ामीन और किताबें लिख चुके हैं, उनके क़लम से ख़ून टपक रहा है। वह ऐसी-ऐसी बातें मुझ से मन्सूब करते हैं, जो कभी मेरे हाशिया ख़्याल में भी नहीं आई थीं, मेरे ज़मान-ए-हुकूमत में भी यह लोग ऐसी किताबें लिखा करते थे और मेरा तमस्खुर उड़ाते थे, लेकिन इस खुराफ़ात को मम्लिकते उस्मानिया में फ़ैला सकते थे, इसलिए अक्सर किताबें यूरोप में तबअ् होतीं और सिर्फ़ मिस्र में फ़ैला करती थीं, लेकिन अब यह झूठ बाबे आली में फ़ैलाया जा रहा है। इस वक़्त कहा जाता था कि यह लोग मुझ से ख़ौफ़ खाते हैं और इसी लिए मेरे ख़िलाफ़ लिखते रहते हैं, लेकिन अब उन्हें किस बात का

ख़ौफ़ है कि उनके क़लम मेरे ख़िलाफ़ मुसलसल चल रहे हैं? मेरे पास इक़्तिदार नहीं रहा। मैं यहाँ क़ैदी की ज़िन्दगी बसर कर रहा हूँ। किसी शख़्स के साथ मेरा राबता नहीं है, फिर वह यह किताबें किसी मक़्सद के लिए लिख रहे हैं? क्या वह ज़मीर के अज़ाब में मुब्तला हैं और जानते हैं कि मैं उनके साथ हमेशा भले मानसून की तरह पेश आता रहा हूँ।

"मैं दानिशवरों का दुशमन था" यह बात वह किसी शर्म व निदामत के बेग़ैर लिख रहे हैं। अगर दानिशवर इन्हीं जैसे लोग होते हैं और वही कुछ करते हैं जो यह कर रहे हैं, तो मैंने ऐसी अक़्ल व दानिश को ज़िन्दगी में एक दिन भी ज़रा अहमीयत नहीं दी। अगर उनकी मुराद हक़ीक़ी दानिशवरों से है, तो पहले वह खुद उसका नमूना पेश करें। मेरे साथ दलील से बात करें। उनकी दलील में वज़न हुआ, तो मैं उसे क़ुबूल कर लूँगा। मुझे ज़िन्दगी भर अह्ले दानिश की तलाश रही, लेकिन अफ़सोस कि ऐसा कोई शख़्स हाथ न आया। मज्बूरन मुझे इन मुसन्नेफ़ीन ऐसे लोगों की ख़िदमात हासिल करना पड़ें।

अगर मैं अक़्ल व दानिश और इल्म का दुशमन होता, तो यूनिवर्सिटी का इफ़्तिताह क्यों करता? मल्कीया शाहाना ऐसे मदारिस क्यों क़ायम करता? लड़कियों के लिए अलग दारुल-मुअल्लिमात किस लिए बनवाता? यूरोप की यूनिवर्सिटियों के तरज़ पर आला दर्सगाहें क्यों खोलता और तलबा को क़ानून की तालीम हासिल करने की सहूलतें और मुराआत क्यों फराहम करता? मैंने जब मलिका शाहाना में फ़ल्सफ़े की तालीम शुरू की तो तलबा ने उस पर सख़्त एहतिजाज किया और कहा कि हमें काफिर बनाया जा रहा है, लेकिन मैं जानता था कि कुफ़्र, इल्म में नहीं जिहालत में है, चुनांचे फ़ल्सफ़ा पढ़ाया जाने लगा। इसी तरह दूसरे सानमसी उलूम फ़िज़िक्स वग़ैरह की तालीम भी दी जाने लगी। मैंने ज़िन्दगी के हर शोबे के अफ़राद तैयार करने के लिए सिर्फ़ स्कूल और कॉलेज खोलने ही पर इक्तिफ़ा नहीं किया, बल्कि अस्हाब इल्म व फ़ज़ल और अदीब कहलाने वाले अश्ख़ास की माद्दी और मानवी दोनों तरह से हौसला अफ़ज़ाई की, इनमें से जवद्दत पाशा, अहमद मिदहत आफ़न्दी और मुराद आफ़न्दी (जो अपने आपको मुअर्रिख़ कहता है) ऐसे बहुत से लोग शामिल थे, उन्हें मैंने किताबें तक फराहम कीं।

मैंने कभी किसी पढ़े लिखे शख़्स से ख़ौफ़ नहीं खाया, अल्बत्ता उन अहमक़ों से ज़रूर मुज्तनिब रहता हूँ जो चन्द किताबें पढ़ कर अपने आपको आलिम फ़ाज़िल कहलवाने लगते हैं। यही लोग मग़्रिब के शैदाई हैं। मग़्रिबी क़ौमों के हाथों में खेलने वाले लोगों की तरफ़ मैंने कभी अदना सी तवज्जोह भी नहीं की और न उस पर मुझे निदामत हुई है जिस शख़्स ने अपने तीस साला अह्दे हुकूमत में हर क़रिए में एक मस्जिद और हर मस्जिद में एक मदरसा क़ायम किया हो वह इल्म और अक़्ल व दानिश का दुशमन कैसे हो सकता है? मेरे अहद में जो किताबें शाए हुईं, उन पर नज़र डालिए और उनका मवाज़ना मेरे बाद शाए होने वाली किताबों से कीजिए, यूरोप के बड़े-बड़े अदीबों, फ़ल्सफ़ियों और आलिमों की बेहतरीन तसानीफ़ मेरे अह्दे हुकूमत में छपीं, फ़रोख़्त हुईं और लोगों की बड़ी तादाद ने उन्हें पढ़ा, मैंने यूरापे की जिन चीज़ों से अपनी मम्लिकत और क़ौम को बचाना चाहा, वह यूरोप का इल्म नहीं, उसकी जिहालत का मुरक़्क़ा थीं। मैंने तलबा की बड़ी तादाद, तालीम हासिल करने के लिए यूरोप भेजी। यह सही है कि उन में से चार पाँच बिगड़े हुए निकले, लेकिन उनकी अक्सरीयत मम्लिकत के लिए मुफ़ीद साबित हुई और मुझे उन पर फख़्र है। मैंने मम्लिकत को ज़माने के दोश बदोश चलाने की कोशिश की। तख़्त पर बैठते ही मैंने पूरी मम्लिकत में टेलीग्राफ़ का निज़ाम राइज किया, हालांकि उस वक़्त यूरोप के बाज़ म्मालिक तक उस से महरूम थे। मेरी निगरानी में तीस हज़ार किलो मीटर टेलीग्राफ़ के तार शहरों में नहीं बाज़ क़रयों तक फ़ैला दिए गये। इसी तरह मैंने अपने खुसूसी अम्वाल से आबदोज़ कश्तियाँ बनाने का हुक्म दिया, हालांकि उस ज़माने में अंग्रेज़ों के पास भी आबदोज़ कश्तियाँ न थीं। मेरे बाद उन्होंने यह मन्सूबा तर्क कर दिया, तो मेरा कुसूर नहीं। मैं फिर कहता हूँ और दुख भरे दिल के साथ कहता हूँ कि मैं किसी भी अच्छी और मुफ़ीद चीज़ का दुशमन नहीं था।

24 मार्च 1917 ई० :

क़स्र बेलरबी : मेरे मुराफ़िक़ ने पूछा : आप अपनी दादाश्तें इस अन्दाज़ में क़लमबन्द कर रहे हैं गोया आप अपना दिफ़ा कर रहे हैं.........आपने अपने अह्दे इक़्तिदार में मम्लिकत के तहफ़्फ़ुज़ के लिए

जो रास्ता अख़्तियार किया, क्या किसी शख़्स को उस में शक है कि वह वाहिद और नागुज़ीर रास्ता न था?

मैंने कहा : मैं अपने खुदा और तारीख़ के हुज़ूर इस बात पर बिल्कुल मुत्मइन हूँ कि मैं ने अपने मुल्क की हिफ़ाज़त और खुशहाली की ख़ातिर अपनी हद तक बेहतरीन इक़्दामात किए। इन इक़्दामात के बग़ैर कोई चारा न था। मैंने कभी अनानियत अख़्तियार न की, हत्ताकि जिन लोगों ने मुल्क से ख़्यानत और ग़द्दारी की, उन्हें भी कभी खुद सज़ा नहीं दी, बल्कि उन्हें अदालत के हवाले किया और अदालत ने जो सजा दी, उसमें भी मैंने तख़्फ़ीफ़ कर दी। बाज़ को मुआफ़ तक कर दिया। मैं कहा करता था कि अल्लाह का कोई भी बन्दा ख़ता से ख़ाली नहीं है। अगर कोई शख़्स इस हक़ीक़त को नहीं जानता, तो अल्लाह और तारीख़ तो जानते ही हैं। मुझे इस बारे में ज़रा भी रंज और क़लक़ नहीं है।

रहा यह कि मैं अपना दिफ़ा कर रहा हूँ, तो मैं देखता हूँ कि मेरे मुल्क पर मुसीबत टूट रही है। हमारी अफ़्वाज शिकस्त खा कर दारुल-हुकूमत की तरफ़ आ रही हैं। सलतनत की अज़्मत और वक़ार ख़ाक में मिल गया है कि शायद कभी बहाल न हो सके और इस हज़ीमत व रुसवाई का सबब ख़ाइनों और ग़द्दारों की सियाह कारियाँ हैं। यह लोग तारीख़ की अदालत और उम्मत की नफ़रत और ग़ज़ब से बचने के लिए मुझे ज़िम्मेदार ठहरा रहे हैं। वह कहते हैं यह आग अब्दुल-हमीद ने जलाई है। मैं यह याददाशतें उन अबनाए उम्मत के लिए लिख रहा हूँ जो अज़ीम उस्मानी सलतनत की तबाही पर अन्दोहगीं हैं। उन्हें क़लमबन्द करने का मक़्सद यह है कि वह हर बात साफ़ और वाज़ेह देख सकें। उन्हें पता चल जाए कि इस तबाही के असल ज़िम्मेदार कौन हैं, वह इस हैरत से निकल आएं, जिस में मुब्तला कर दिए गये हैं और तारीख़ के फ़ैसले का इंतिज़ार करने के बजाए खुद सोच विचार के बाद हक़ीक़त को पहुंच सकें।

यह मुहज़्ज़ब और कल्चर्ड लोग मुझे सारी ख़राबियों की जड़ बताते हैं और किताबों पर किताबें लिख रहे हैं उनकी वतन परस्ती का तूल व अर्ज़ यह है कि एक अरमनी जब अपने सुल्तान और ख़लीफ़ा उस्मानी को हिलाक करने के लिए बम फेंकता है, तो यह उस पर तालियाँ बजाते और उसकी मदह व तहसीन करते हैं (इशारा से तुर्की शाइर तौफ़ीक़

फ़िकरत की तरफ़ जो सुल्तान अब्दुल-हमीद का सख़्त मुख़ालिफ़ था। जब एक अरमनी ने उन पर क़ातिलाना हमला किया। तो तौफ़ीक़ फ़ितरत ने उसकी शान में क़सीदा लिखा) यह मुहज़्ज़ब और कल्चर्ड लोग मुझ पर इफ़्तरा की बौछाड़ करते हैं हत्ता कि सईद पाशा ऐसे लोग भी अपने सियाह ज़मीर की रौशनाई से मुबर्रे चेहरे पर कालक मिलने से नहीं हिचकिचाते (सईद पाशा 182-1916 ई अदीब और सहाफ़ी था। मुतअद्दिद बार सदरे आज़म रहा) मैं यह याददाश्तें अपने दिफ़ा में नहीं, इसलिए लिख रहा हूँ कि लोग हक़ीक़त से आगाह हों।

यह मुफ़्तरी मज़े ले ले कर कहते हैं अब्दुल-हमीद नौजवानों को समुन्द्र में मुलाक़ात के लिए बुलाया करता था और वहीं ग़र्क़ कर देता था, लेकिन किया उनके पास कोई सुबूत है कि किसी एक नौजवान ने भी मुझ से समुन्द्र में मुलाक़ात की हो..........यक़ीनन वह अदना से अदना सुबूत भी नहीं पेश कर सकते? फिर भी यह बात बार-बार लिखते हुए उन्हें शर्म नहीं आती।

मुल्क के बेटे मेरे बेटे हैं, मैंने उन्हें हमेशा इसी नज़र से देखा है, उनकी बड़ी तादाद को मैंने मुआफ़ किया। अक्सर के उयूब से चश्म पोशी की, उनकी ख़ताओं से दर गुज़र किया, हालांकि मुझे उनकी एक-एक बात की ख़बर थी। फिर मैं उन्हें समुन्द्र की मौजों का निवाला क्यों कर बना सकता था? यह फ़ेअ्ल महज़ जुर्म ही नहीं, बल्कि सोच विचार की दावत भी देता है। मुझे इस जुर्म का मुर्तकिब गर्दानने वालों ने मेरे बाद खुद क्या किया? क्या उन्होनें खुद यही जुर्म नहीं किया, वह मुझे ग़द्दार क़रार देते हैं, हालांकि वह खुद ग़द्दारी के मुर्तकिब हुए।

मैं एक वाक़या का ज़िक्र करता हूँ। उसके आईने में उन ग़द्दारों का चेहरा देखा जा सकता है। यह उन दिनों की बात है जब रूस से जंग छिड़ी हुई थी। तूना और बिल्क़ाना के महाज़ पर हमारी फौज की कमान सुलेमान पाशा कर रहा था। एक रोज़ मुझे उसका तार मिला। उस ने इत्तिला दी थी कि फौज के बाज़ कमान्डर गिरफ़्तार किए गये हैं, उन्हें इस्तंबूल भेज रहा हूँ। यह कमान्डर पाशा के मन्सब पर फाइज़ थे, उन में से बाज़ पर ख़्यानत का इल्ज़ाम था और बाज़ पर उन्हें जारी किए जाने वाले अहकाम में तग़ैयुर व तबद्दुल का यह पाशा इस्तंबूल पहुंचे। तो मैंने उनके ख़िलाफ़ तहक़ीक़ात अपनी ज़ाती निगरानी में करवाई,

पता चला कि सुलेमान पाशा ने सुल्तान अब्दुल-अज़ीज़ ख़ान को तख़्त से माज़ूल करने में जो किरदार अदा किया था, यह लोग उस पर तन्क़ीद करते थे। सुलेमान पाशा के लिए यह बात नाक़ाबिले बर्दाश्त थी, उस ने उन पर ख़्यानत व ग़द्दारी और हुक्म अदूली का इल्ज़ाम आयद करके उन्हें गिरफ़्तार किया और गोली का चांरा बनाने के लिए इस्तंबूल भेज दिया।

यह तहक़ीक़ात रासिम पाशा ने की थी, उसने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि उन पाशाओं पर जो इल्ज़ामात लगाए गये हैं उन में से कोई इल्ज़ाम भी दुरुस्त नहीं है। मैंने उन पाशाओं को बेगुनाह क़रार दे कर रिहा कर दिया और उन्हें दूसरी ख़िदमात सौंप दें। यह सब कुछ जंग के दौरान हुआ, जब कि हमें एक-एक फौजी अफ़्सर की महाज़े जंग पर शदीद ज़रूरत थी। सलतनत के बही ख़्वाह अफ़्सर, फौज और रसूल में से इसी तरह की साज़िशें करके निकाले जा रहे थे।

सुलेमान पाशा उस पर बड़ा तिलमिलाया। उस ने एक तार सदरे आज़म अदहम पाशा को भेजा जिस में उस ने पूछा था कि कार्रवाई का क्या नतीजा निकला है..........क्या उन पाशाओं को सज़ा दी गई है।

बाब (9)

इब्ने सऊद का दौरे हुकूमत

इब्ने सऊद 22 दिसम्बर 1880 ई० को रियाज़ में पैदा हुए। 1904 ई० में बाक़ायदा अस्करी मुहिम्मात में हिस्सा लेना शुरू किया। 1910 ई० में शरीफ़ हुसैन ने इब्ने सऊद से तुर्कों की हाकमीयत आला मनवाई। 1914 ई० में इब्ने सऊद से तुर्कों की हाकमीयत आला मनवाई। 1914 ई० में इब्ने सऊद ने अल-हिसा को फतह किया। 26 दिसम्बर को इब्ने सऊद ने बरतानिया से मुन्दरजा ज़ैल मुआहदा किया।

1. बरतानिया ने इब्ने सऊद और उनकी औलाद को नज्द और अल-हिसा का हुक्मरान तस्लीम किया।
2. बैरूनी जारहीयत की सूरत में इब्ने सऊद को बरतानिया की एआनत हासिल होगी।
3. इब्ने सऊद के बैरूनी मुआमलात पर बरतानवी सियादत तस्लीम कर ली गई।
4. इब्ने सऊद ने यह तस्लीम किया कि वह अपना इलाक़ा या उसका कुछ ज़ाहिरी हिस्सा बरतानिया की मर्ज़ी के बेग़ैर किसी ताक़त के हवाले न करेंगे।
5. इब्ने सऊद अपने इलाक़े में हाजियों के क़ाफ़िला के रास्ते खुले रखेंगे।
6. इब्ने सऊद ने वादा किया कि वह कोयत, बहरैन और साहिली इमारतों के मुआमलात में मुदाख़िलत नहीं करेंगे।

इस मुआहदा की तमाम दफ़आत से वाज़ेह हो जाता है कि इब्ने सऊद बरतानिया के हाशिया नशीन बन चुके थे और उनके ज़ेरे तसर्रुफ़ इलाक़ा दरअस्ल बरतानिया की एक कालोनी से ज़्यादा न था। इब्ने सऊद ने बरतानिया से अपनी इस गुलामी की क़ीमत एक लाख पौंड सालाना मुक़र्रर की।

1916 ई० इब्ने सऊद ने इख़्वान को अपने साथ मिला लिया। 1921 ई० में इब्ने सऊद ने रशीदियों को मुकम्मल शिकस्त देकर जबलुश्शमर और हाइल के इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

23 दिसम्बर 1925 ई० को इब्ने सऊद ने जद्दह और हिजाज़ पर

मुकम्मल क़ब्ज़ा कर लिया और अपने मक़्बूज़ात का नाम मम्लिकत नज्द व हिजाज़ रखा।

1925 ई० के बाद हिन्दुस्तान की मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी इब्ने सऊद से मुज़ाकिरात करती रही, जिनका मन्शा यह था कि इब्ने सऊद तमाम बिलादे इस्लामिया के मुत्तहिदा उलमा के मशवरा से हुकूमत करे, क्योंकि सर ज़मीने हिजाज़ से तमाम मुसलमानों का तअल्लुक़ है। उसकी हैसियत बादशाह की न हो, बल्कि उसके बजाए वह एक निगरां और ख़लीफ़ा की हैसियत अख़्तियार करे, जिसमें मौरूसी बादशाहत का तसव्वुर न हो। उसके अलावा मरकज़ी ख़िलाफ़त कमेटी का यह भी मुतालबा था कि तमाम कुब्बाजात की हिफ़ाज़त की जाए और जो मुन्हदिम करा दिए गये हैं उनकी अज़सरे नव तामीर की जाए। इब्ने सऊद शुरू-शुरू में ख़िलाफ़त कमेटी की ताईद करता रहा। उनके मुतालिबात पूरे करने के वादे भी किए, लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता वह तमाम वादों से मुन्हरिफ़ होता गया। मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के तमाम मज़ारात गिरा दिए गये और 22 सितम्बर 1932 ई० को उस ने अपने मुतलकुल-एनान बादशाह होने का एलान कर दिया और नज्द व हिजाज़ पर मुश्तमिल अरब इलाक़ा का नाम सऊदी अरब रखा।

सरदार हसनी इब्ने सऊद की मुतलकुल-एनानी के बारे में लिखते हैं।

नज्द की हुकूमत क़दीम वज़ा की है, वहाँ हुकूमत इलाहिदा-इलाहिदा शोबों पर मुन्क़सिम नहीं है। न मज्लिसे हुकूमत है। न वज़ारत है, पूरी हुकूमत खुद सुल्तान की ज़ात है।

11 मई 1933 ई० को शादी हाई कौन्सिल ने सऊद को वली अहद बनाने का फरमान जारी किया। फरमान पर कौन्सिल के तमाम अरकान के दस्तख़त सब्त थे। उस कौन्सिल के सरबराह फ़ैसल थे। इब्ने सऊद ने उस फरमान की तौसीक़ कर दी।

सऊदी अरबीया पर अमरीकी असर की इब्तिदा :

1940 ई० तक अमरीका ने अमली तौर पर सऊदी अरब को नज़र अन्दाज़ कर रखा था। जद्दह में उसकी सिफ़ारती नुमाइन्दगी थी। न क़ौन्सिल ख़ाना अमरीकी दौरे के दौरान अमीर फ़ैसल ने अमरीकी अरबाबे अख़्तियार ने तबादल-ए-ख़्याल किया, दौरा कामयाब रहा और

इसी साल अमरीका ने जद्दह में अपना मुस्तक़िल लेगेशन क़ायम किया, लेगेशन क़ायम होते ही अमरीका ने ज़हरान में हवाई मुस्तक़िर्र तामीर करने की गुफ़्तगू शुरू कर दी, जिसका मक़्सद कराची के रास्ता जापान से निमटने के लिए सहूलतें हासिल करना था। मुस्तक़िर्र की तामीर 1944 ई० में शुरू हुई और 1946 ई० में यह मुकम्मल हो गया।

अक्तूबर 1946 ई० में अमीर फ़ैसल की कोशिशों से अमरीका एक्सपोर्ट बैंक ने सऊदी अरब को एक करोड़ डालर का क़रज़ा दिया, ताकि वह अपनी मईशत को बेहतर बना सके। 1947 ई० में वज़ारते ख़ारजा ने वली अहद अमीर सऊद के दौरा अमरीका का बन्दोबस्त किया, जिस में दोनों कुल्क एक दूसरे के और क़रीब आए।

1915 ई० के मुआहद-ए-दौरन के बाद से 1927 ई० के मुआहदे जद्दह तक सऊदी अरब, बरतानिया का हाशिया नशीन ख़्याल किया जाता था। 1927 ई० से 1943 ई० तक के दर्मियानी अरसा में बरतानिया को सऊदी अरब में एक चहेती क़ौम का दरजा हासिल रहा जंगे अज़ीम दोम के अवाइल में बरतानिया ने सऊदी अरब को माली इम्दाद दी। जंग से सऊदी अरब कर मईशत बुरी तरह मुतअस्सिर हुई थी, सऊदी अरब की आमनदी बड़े हिस्सा का इंहिसार हज पर था। जंग की वजह से हाजियों की तादाद कम हुई। 1943 ई० में अमरीका ने जद्दह में अपना लेगेशन क़ायम किया था, जिसे 1949 ई० में सफ़ारत ख़ाना का दरजा दे दिया गया। 1901 ई० में अमरीका ने एक खुसूसी मुआहदा की रू से चार नुकाती प्रोग्राम के तहत सऊदी अरब को फन्नी इम्दाद देना शुरू की। 18 जून 1951 ई० को दोनों मुल्कों के दर्मियान एक दिफ़ाई मुआहदा तय पाया, जिसकी रू से ज़हरान का हवाई मुस्तक़िर्र पाँच साल के लिए अमरीका को दे दिया गया। मुआहदा के मतन में फौजी मुस्तक़िर्र के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल न किए गये। इस रिआयत के एवज अमरीका ने सऊदी अरब को फौजी साज़ व सामान मुबहम पहुंचाने के अलावा सऊदी फ़िज़ाइया के पाएलेटों को तर्बियत देने का भी वादा किया। इस मुआहदा पर मुल्क के अन्दर और बाहर अरब क़ौम परस्तों ने नाक भौं चढ़ाई, हालांकि सऊदी हुकूमत मुन्दरजा बाला फ़वाइद के अलावा इस मुस्तक़िर्र का किराया भी वसूल करती थी।

सऊदी अरबीया में तेल की दरयाफ़्त का देरीना ख़्वाब : मग़रेबी म्मालिक खुसूसन बरतानिया और अमरीका मुद्दत से यह चाहते थे कि अरब से तुर्कों का इक़्तिदार ख़त्म हुआ और वह आज़ादाना तौर पर सहराए अरब में तेल की दरयाफ़्त कर सकें। चुनांचे मुहम्मद सिद्दीक़ लिखते हैं। सऊदी अरब की तारीख़ तेल की दरयाफ़्त से एक अहम मोड़ मुड़ गई। यह 29 मई 1933 ई० का ज़िक्र है। केली फ़ोर्निया की स्टैंडर्ड आयल कम्पनी ने 60 साल के लिए सऊदी अरब के मश्रिक़ी हिस्सा में तेल तलाश करने का ठीका लिया। 1934 ई० में टैक्सास कम्पनी भी उसके साथ शरीक हो गई। 1940 ई० में यक एक्सन, टैक्सास और मोबिल भी शरीक जुस्तजू हो गईं और इस तरह मज्मूई तौर पर कम्पनी का नाम अरब अमरीकी आइल कम्पनी (आरामको) पड़ा। सूबा हिसा में ज़हरान, दम्माम, बक़ीक़ और अबू हररिया के मक़ामात पर तेल के कुएँ खोदे गये। पहला कुआँ जिस से तेल निकाला गया 1938 ई० में मुकम्मल हुआ। तिजारती सतह पर 1945 ई० में पैदावार शुरू की गई।

आलमी जंग के दौरान में आरामको सही मानों में तेल की तलाश में कोई कारनामा सर अंजाम न दे सकी। यही वजह है कि तेल की आमदनी महदूद रही। उसका असर सऊदी मईशत पर पड़ा, क्योंकि हाजियों की आमद से जो आमदनी होती थी, वह न होने के बराबर रह गई थी, उन दिनों महवरी ताक़तों का पल्ला बहुत भारी था। जर्मनी ने योगो सलाविया और यूनान को सर कर लिया था। करेट पर हमले की तैयारियाँ हो रही थीं। उधर बग़दाद में महवरी ताक़तों की हिमायत में इन्क़लाब बरपा हो चुका था और अब मिस्र पर उनकी गहरी नज़र थी। जापान की नज़रें भी खलीजे फारस के तेल से माला माल इलाक़ा पर लगी थीं, इब्ने सऊद ने उमंडते हुए ख़तरात के बावजूद बर्सन और टोकियो को नज़र अन्दाज़ न किया और अपनी मईशत को बेहतर बनाने के लिए बरतानवी और अमरीकी हुकूमतों से रुजूअ् किया। उस वक़्त तक अमरीका ग़ैर जानिबदार था। इब्ने सऊद ने तीर करोड़ डालर क़रज़ा मांगा और पाँच साल की अक़्सात में वापस करने का वादा किया। शाह ने यह धमकी भी दी कि अगर क़रज़ा न मिला, तो तेल की

तलाश के मुतअल्लिक़ मुअराआत वापस ले ली जाएंगी। अमरीका की कम्पनी ने 1933 ई० में तीस हज़ार पौंड पेशगी दिए थे, लेकिन एक जदीद मम्लिकत की तामीर व तरक़्क़ी के लिए यह रक़म निहायत क़लील थी। धमकी दिए जाने के बाद कम्पनी के नुमाइन्दे जेम्ज़ ऐ मूनिट ने अप्रैल 1941 ई० में सदर लोज़ वेल्ट से मुलाक़ात की, बिल-आख़िर तय पाया कि बरतानिया से कहा जाए कि अमरीका ने हाल ही में जो 42 करोड़ 50 लाख डालर से क़रज़ा दिया था। उस में से सऊदी अरब को मत्लूबा रक़म फराहम करे, चुनांचे बरतानिया ने सऊदी अरब को एक साल के लिए चार लाख पौंड दे दिए और बतदरीज इस रक़म में इज़ाफ़ा किया हत्ता कि 1945 ई० में यह रक़म 45 लाख पौंड हो गई।

जंग ख़त्म होने के बाद सऊदी अरब में तेल की पैदावार में ख़ासा इज़ाफ़ा हुआ। 1950 ई० में सालाना पैदावार पचास लाख टन थी और उसका शुमार मश्रिक़े उस्ता में ईरान के दूसरे नम्बर पर होता था। उस वक्यत ईरान की पैदावार तीन करोड़ टन थी। 1950 ई० में सऊदी अरब को तेल से ६ करोड़ डालर आमदनी हुई। अमरीका, सऊदी तेल दरआमद करने वाले मुल्कों में सरेफ़ेहरिस्त था।

9 नवम्बर 1953 ई० को इब्ने सऊद का इंतिक़ाल हो गया और उनकी जगह उनके बड़े बेटे शाह सऊद हुक्मरान बन गये।

अब तक जो हम ने ज़िक्र किया है। यह इब्ने सऊद के दौरे हुकूमत का एक इज्माली, सियाही जाइज़ा था, अब उनक अहद में उनके ईमा पर जो मज़्हबी कारगुज़ारियाँ की गईं वह बहाउल-हक़ क़ासमी देवबन्दी से सुनिए।

देरीन-ए-ख़्वाब : जनाब बहाउल-हक़ क़ासमी (देवबन्दी) ने इब्ने सऊद की हुकूमत की कारगुज़ारियों के बारे में एक मुख़्तसर रिसाला "नज्दी तहरीक पर एक नज़र" के नाम से लिखा, उस रिसाला के शुरू में शैख़ नज्दी के बारे में उलमाए देवबन्द के तअस्सुरात पेश किए गये हैं, जिनको हम उसके किताब के तीसरे बाब में पेश कर चुके हैं, अब रिसाला का वह हिस्सा पेश कर रहे हैं, जिसमें जनाब बहाउल-हक़ क़ासमी ने हुकूमत इब्ने सऊद की कारगुज़ारियों का एक इज्माली नक़्शा खींचा है।

नजदी तहरीक के समरात

पहला समरा

काफिर साज़ी और मुश्रिक गरी : अब्दुल-अज़ीज़ इब्ने सऊद मौजूदा अमीरे नज्द ने मक्का मुअज़्ज़मा पर क़ाबिज़ हो कर अपने अक़ाइद की इशाअत के सिलसिला में सबसे पहले जो किताब शाए कराकर मुफ़्त तक़्सीम की, वह "मज्मूअतुत्तौहीद" है। उसके मुतअद्दिद मक़ामात में अच्छे ख़ासे मुसलमानों को काफिर, मुश्रिक, बिदअती और खुदा जाने किया बनाया गया है। नमूना के तौर पर सिर्फ़ एक इबारत मआ तरजमा हदिय-ए-नाज़िरीन है।

तरजमा : दुश्मनाने खुदा के बहुत से एतराज़ात हैं, जिन से वह लोगों को बहकाते हैं। उनका एक एतराज़ यह है कि हम खुदा के साथ शिर्क नहीं करते बल्कि गवाही देते हैं कि खुदा के सिवा पैदा करने, नफ़ा और नुक़्सान पहुंचाने वाला कोई नहीं उस का कोई शरीक नहीं और कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने नफ़ा और नुक़्सान के मालिक नहीं हैं। चेजाएकि (हज़रत शैख़ अब्दुल-क़ादिर जीलानी) वग़ैरह के लिए यह वस्फ़ साबित हो, लेकिन चूंकि मैं गुनहगार हूँ और अल्लाह के नज़्दीक सुलहा का बड़ा मरतबा है। इसलिए मैं उनकी तुफ़ैल से खुदा से हाजात तलब करता हूँ।" पस तो इस एतराज़ का जवाब यह दे, जो गुज़र चुका कि ऐ मुतरिज़ जिसका तूने ज़िक्र किया उसका वह लोग (मुश्रिक) भी इक़रार करते थे, जिनके साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिहाद किया था। वह इक़रार करते थे कि उनके बुत किसी चीज़ के मुदब्बिर नहीं हैं और वह (तेरी तरह) जाह और शफ़ाअत ही का इरादा रखते थे।"

इस इबारत में इस मुसलमान को मुश्रेकीने अरब से शुमार किया गया है, जो पुकार-पुकार कर तौहीद का इक़रार कर रहा है। उसको फ़क़त इस बिना पर गर्दन ज़दनी क़रार दिया गया कि वह क्यों खुदा से सुलहा का वास्ता देकर हाजात तलब करता है? कहो! नज्दियों की हिमायत करने वालो! अब भी वहाबियों की काफिर साज़ी और मुश्रिक गरी में कुछ शक है।

दूसरा समरा

कुतुब दुरूद शरीफ़ का तल्फ़ किया जाना : इब्ने सऊद मज़्कूर के हुक्म से एक और किताब छप कर मुफ़्त तक़्सीम हुई है। जिसका नाम है। "अल-हदीयतुन्नीया" इसमें लिखा है।

खुलासा मतलब : हम किसी किताब के तल्फ़ करने का हरगिज़ हुक्म नहीं देते, मगर हाँ हम इस किताब को तल्फ़ करा देते हैं। जिनमें ऐसे मज़ामीन हों जो लोगों को शिर्क में मुब्तला करें। या उनके सबब से अक़ाइद में ख़लल आता हो, जैसे रौज़ुर्रियाहीन कुतबे मन्तिक़ और दलाइलुल-ख़ैरात (यानी उनको तल्फ़ करा दिया जाता है।)

देखिए! दलाइल शरीफ़ को तल्फ़ करने का साफ़ एतराफ़ है। इस बहाना से कि इस में (मआज़ल्लाह) मुश्रिकाना कलिमात हैं, हालांकि यह वह पाकीज़ा और बाबरकत किताब है कि जिस में अव्वल से आख़िर तक कलिमात दरूद शरीफ़ के अलावा तौहीद, इश्क़े इलाही और मुहब्बत सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वलवला अंगेज़ दर्स मौजूद है। इसी वजह से हज़ारों उलमा, सुलहा और औलियाए किराम रहमतुल्लाहि अलैहिम इस मुक़द्दस किताब को हरज़े जान बनाए रहे। मौलवी सनाउल्लाह साहब उलमाए देवबन्द से हुस्ने ज़न का इज़्हार किया करते हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि दलाइलुल-ख़ैरात का वज़ीफ़ा देवबन्दी उलमा के मामूलात से है (किताब सफर नामा शैखुल-हिन्द स० 98 वत्तस्दीक़ात स० 11) क्या मौलवी सनाउल्लाह साहब नज्दियों की शिर्क बारी के तूफ़ान बेतमीज़ी से उलमाए देवबन्द को बचाने की कोशिश फरमाएंगे? (दीदह बायद)

तीसरा समरा

गुस्ताख़ी और बेअदबी : मक़ामाते मुक़द्दसा के साथ नज्दियों की गुस्ताख़ी मशहूर है, नअ्त ख़्वानाने नज्दीया अगरचे उस से इंकारी हैं, मगर ताबके? किताब "हयाते तैयबा" में (जो मौलवी सनाउल्लाह साहब के दफ़्तर में फ़रोख़्त होती है।) अगरचे नज्दियों की ख़ूब तारीफ़ की गई है, मगर बाज़ मक़ामात पर हक़ीक़त का एतराफ़ करना पड़ा है। उसमें लिखा है कि :

1803 ई० के इख़्तिताम पर मदीना भी सअद के क़ब्ज़ा में आ गया। मदीना लेकर उसके मज़हबी जोश में यहाँ तक उबाल आया कि उस ने और मक़्बरों से गुज़र कर नबी अकरम के मज़ार को भी न छोड़ा। आपके मज़ार की जवाहर निगार छत को बर्बाद कर दिया और उस चादर को उठा दिया, जो आपकी क़बर मुक़द्दस पर पड़ी थी।" (स० 209)

चौथा समरा

इस्लामी सलतनतों की मुख़ालिफ़त और उनकी तबाही व बर्बादी : वहाबी फ़िरक़ा जब से आलमे वजूद में आया है। इस्लामी बादशाहों से बराबर लड़ता रहा। इस फ़िरक़ा ने तुर्की सलतनत को मिटाने की हमेशा कोशिश की। बनज़रे इख़्तिसार चन्द सुबूत अर्ज़ करता हूँ।

(1) किताबे मज़्कूर (हयाते तैयबा) में लिखा है कि :

"अब्दुल-अज़ीज़ के बाद उसका बड़ा बेटा सअद अपने बाप से ज़्यादा पुरजोश निकला, उसने और भी फ़ुतूहात को उस्अत दी और "तुर्की सलतनत की बुनियादों को हिला दिया।" (स० 208)

फिर इसी किताब के इसी सफ़: में है :

"सअद ने बीस हज़ार फौज से सुलेमान पाशा से मुख़्तलिफ़ जंगों में पय दर पय फ़ुतूहात हासिल कीं और उसकी फौज के आगे तुर्कों की मुल्की स्प्रिट की दाल न गली।"

(2) यह तो ख़ुद तुर्की सलतनत के साथ नज्दियों का सुलूक रहा। तुर्कों के निहायत गहरे दोस्त इब्ने रशीद अमीर हाइल मरहूम और उनके ख़ानदान पर नज्दी ज़ालिमों ने अंग्रेज़ों की तरफ़दारी में जो मज़ालिम तोड़े, उसकी मुख़्तसर कहानी आली जनाब ज़फर अली ख़ान साहब एडीटर ज़मींदार की ज़बानी सुनाता हूँ। एडीटर साहब मौसूफ़ ने अपने अख़्बार में एक मज़्मून लिखा था, जिसका उनवान है। हमारे क़िबला को वहाबियों ने लूट लिया। और उसको मुन्दरजा ज़ैल सुतूर से शुरू किया गया था।

वस्ते अरब में हाइल एक ज़बरदस्त इमारत है, जिसके फ़रमांबरदार अमीर इब्ने रशीद के क़त्ल की अफ़्सोसनाक ख़बर पिछले दिनों बाज़ अंग्रेज़ी अख़्बारों में छपी थी। "लन्दन टाइम्ज़" अपनी 10 मई की

इशाअत में अमीर मग़्फ़ूर के वाक़या क़त्ल का ज़िक्र करते हुए लिखता है कि दौराने जंग में इब्ने रशीद तुर्कों का हलीफ़ था और इब्ने सऊद जो वहाबिया के अमीर हैं। दोवल मुत्तहिदा की तरफ़्दारी में उस से बरसरे पैकार थे। इब्ने रशीद का ख़ानदान कई नस्लों से क़ातिल के ख़ंजर का शिकार होता चला आया है और अब शायद बजुज़ एक तिफ़्ले शीर ख़्वार के इब्ने रशीद की नस्ल बिल्कुल ही मिट गई है।"

(ज़मींदार 12 जून 1920 ई०)

(3) आज मौलवी सनाउल्लाह साहब और उनके "याराने तरीक़त।" निहायत बुलन्द आहंगी से यह दावा कर रहे हैं कि दौराने जंगे अज़ीम में नज्दियों ने तुर्कों की हरगिज़ मुख़ालिफ़त नहीं की। हालांकि आप उस से पहले नज्दियों की मुख़ालिफ़त का इक़रार कर चुके हैं। मौलवी साहब मौसूफ़ के एक मज़्मून मुन्दरजा "ज़मींदार" का हस्बे ज़ैल इक़्तिबास मुलाहिज़ा फरमाइए जो उन्होंने एडीटर "ज़मींदार" के मज़्कूरा बाला मज़्मून के उस हिस्सा की तरदीद में लिखा था जहाँ एडीटर साहब ने हिन्दुस्तानी ग़ैर मुक़ल्लिदों को "वहाबी" कहा था। मौलवी सनाउल्लाह साहब लिखते हैं कि :

इस ख़िलाफ़े वाक़या इल्ज़ाम लगाने में उनकी दो ग़र्ज़ें थीं। एक मज़्हबी कि यह लोग (अहले हदीस) बावजूद दावा तुर्क तक़्लीद के अब्दुल-वहाब नज्दी के मुक़ल्लिद हैं। दूसरे पोलिटिकल ग़रर्ज़ तही कि गवर्नमेंट के ज़ेहन नशीन करें कि जिस तरह नज्दी लोग अपनी आला हुकूमत तुर्की के मुख़ालिफ़ हैं। यह लोग भी गवर्नमेंट के मुख़ालिफ़ हैं। इसलिए आयाने अह्ले हदीस ने इस इल्ज़ाम को दूर करने में मक़्दूर भर कोशिश की, जिसमें वह बहम्दुलिल्लाह कामयाब हो गये।"

(ज़मींदार स० 5, मुअर्रिख़ा 22 जून 1920 ई०)

आज हम भी यही लिखते हैं कि जंगे अज़ीम में नज्दियों ने तुर्कों की मुख़ालिफ़त करके उनको नुक़्सान पहुंचाना था, तो हमारा अगला दबाने की कोशिश की जाती है, हालांकि हम आपके पहले अक़्वाल की ताईद कर रहे हैं।

गुल व गुल्चीं का गिला बुलबुल लेहजा न कर
तू गिरफ़्तार हुई अपनी सदा के बाइस

पाँचवाँ समरा

जज़ीरतुल-अरब पर नसारा का क़ब्ज़ा व इक़्तिदार :

कहा जाता है कि इब्ने सऊद ने हिजाज़ में दाख़िल हो कर उसको ग़ैर मुस्लिम इक़्तिदार से पाक कर दिया है, हालांकि यह वाक़ेआत के ख़िलाफ़ है। अगर उसके जंग व जिदाल का दाई यही जज़्बा होता, तो उक़्बा व मआन पर अंग्रेज़ों के क़ब्ज़ा को कभी गवारा न करता। शरीफ़ हुसैन ग़द्दार होने के बावजूद उस क़ब्ज़ा के ख़िलाफ़ सदाए एहतिजाज बुलन्द कर चुका है (सियासत 11 अक्तूबर 1925 ई०) लेकिन इब्ने सऊद ने क्या किया? उसको रौशनी में लाने के लिए मुअज़्ज़ज़ रोज़नामा सियासत लाहौर का एक इक़्तिबास नक़ल करता हूँ।

इब्ने सऊद के अख़्बार "उम्मुल-कुरा" ने उक़्बा और मआन पर अंग्रेज़ी तसर्रुफ़ से क़बल इब्ने सऊद से मिल कर दरयाफ़्त किया कि उक़्बा और मआन की तरफ़ जो फौज जाने वाली थी, वह क्यों रोक दी गई? इब्ने सऊद ने कहा हमें इल्म है कि चन्द रोज़ में शरीफ़ी फौजें उक़्बा और मआन से निकल जाएंगी" मौलाना मुहम्मद अली अगर चाहें तो उम्मुल-कुरा की यह तहरीर उनकी ख़िदमत में भेजी जा सकती है। ज़रा इब्ने सऊद के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर कीजिए। क्या यह अल्फ़ाज़ मानी ख़ेज़ नहीं? क्या उन से साबित नहीं होता कि इब्ने सऊद को इल्म था कि अंग्रेज़ उक़्बा और मआन पर क़ब्ज़ा करने वाले हैं ग़र्ज़ेकि उक़्बा और मआन पर अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हुआ और इब्ने सऊद की मर्ज़ी से हुआ और उसकी वजह से उसको मदीना मुनव्वरा पर फौज कशी का मौक़ा मिला और अगर इब्ने सऊद इस नापाक साज़िश में अंग्रेज़ों के साथ शामिल न होता, तो अंग्रेज़ मज्बूर होते कि उक़्बा और मआन को नज्दी अफ़्वाज से बचाने के लिए शरीफ़ की मदद करें, वरना फ़िलस्तीन का अमन मख़्दूश हो जाता।" (सियासत स० 2, बाबत 8 अक्तूबर 1925 ई०)

इस मज़्मून की ताईद इस से भी होती है कि इब्ने सऊद ने उस वक़्त तक उस क़ब्ज़ा के ख़िलाफ़ कोई अमली कार्रवाई नहीं की। अगर उसका यही मतमहे नज़र होता कि हिजाज़ ग़ैर मुस्लिम असर से पाक हो जाए, तो सबसे पहले मदीना शरीफ़ पर चढ़ाई करने की बजाए

उक़्बा और रमज़ान पर अंग्रेज़ों से लड़ता, लेकिन वाक़या यह है कि अंग्रेज़ों के इस नाजाइज़ क़ब्ज़ा के ख़िलाफ़ उसकी पेशानी पर अभी तक बल भी नहीं पड़ा, फिर यह क्योंकर तस्लीम किया जा सकता है कि इब्ने सऊद हिजाज़ को ग़ैर मुस्लिम इक़्तिदार से पाक कर रहा है?

और इम्तिहान बेग़ैर तो यह आपका रफ़ीक़!
क़ाइल नहीं है भाई! किसी शैख़ व शबाब का

छठा समरा

नसारा की अबदी ग़ुलामी : शरीफ़ हुसैन और अमीर अली के क़ब्ज़-ए-हिजाज़ को इसलिए गवारा नहीं किया जाता कि वह अंग्रेज़ों के पिट्ठू और ज़ेर इक़्तिदार हैं, मगर इब्ने सऊद और उसकी हुकूमत अंग्रेज़ों के इस क़दर बेबस ग़ुलाम हैं कि शरीफ़ी ख़ानदान की ग़ुलामी को निस्बतन आज़ादी से ताबीर करना चाहिए, चुनांचे वह मुआहदा उसका नाक़ाबिले तरदीद सुबूत है, जो 1915 ई० में अंग्रेज़ों और नज्दियों के बाबैन हुआ और जिसकी तस्दीक़ 1920 ई० में हुई थी, वह मुआहदा यह है।

इब्ने सऊद और अंग्रेज़ों का मुआहदा

दफ़ा अव्वल : हुकूमते बरतानिया एतराफ़ करती है और उसको इस अम्र के तस्लीम करने में कोई उज़्र नहीं है कि इलाक़ाजात नज्द, हिसा, क़तीफ़, ह़बील और ख़लीजे फारस के मुल्हिक़ा मक़ामात, जिनकी हद बन्दी बाद को होगी। यह सुल्तान इब्ने सऊद के इलाक़ाजात हैं और हुकूमते बरतानिया इस अम्र को तस्लीम करती है कि इन मक़ामात का मुस्तक़िल हाकिम सुल्तान मज़्कूर और उसके अज्दाद हैं। उनको इन म्मालिक और क़बाइल पर खुद मुख़्तार हुकूमत हासिल है और उसके बाद उनके लड़के उनके सही वारिस होंगे, लेकिन इन वरसा में से किसी एक की सलतनत के इंतिख़ाब व तक़र्रुर के लिए यह शर्त होगी कि वह शख़्स सलतनत बरतानिया का मुख़ालिफ़ न हो और शराइत मुन्दरजा ज़ैल मुआहदा हाज़ा के भी ख़िलाफ़ न हो।

दफ़ा दोम : अगर कोई अजनबी ताक़त सुल्तान इब्ने सऊद और उसके वरसा के म्मालिक पर हुकूमते बरतानिया से मशवरा किए बेग़ैर या उसको इब्ने सऊद से मशवरा करने की फ़ुर्सत दिए बेग़ैर हमला आवर हुई, तो हुकूमते बरतानिया इब्ने सऊद से मशवरा करके हमला आवर हुकूमत के ख़िलाफ़ इब्ने सऊद को इम्दाद देगी, और अपने हालात को मल्हूज़ रख कर ऐसी तदाबीर अख़्तियार करेगी, जिन से इब्ने सऊद के इग़राज़ व मक़ासिद और उसके म्मालिक की बहबूद व महफ़ूज़ रह सके।

दफ़ा सोम : इब्ने सऊद इस मुआहदा पर राज़ी है और वादा करता है कि :

1. वह किसी ग़ैर क़ौम या किसी सलतनत के साथ किसी क़िस्म की गुफ़्तगू या समझौता और मुआहदा करने से परहेज़ करेगा।
2. ममालिक मज़्कूरा बाला के मुतअल्लिक़ अगर कोई सलतनत दख़ल देगी, तो इब्ने सऊद फ़ौरन हुकूमते बरतानिया को इस अम्र की इत्तिला देगा।

दफ़ा चहारुम : इब्ने सऊद अहद करता है कि वह इस अहद से फिरेगा नहीं और वह म्मालिक मज़्कूरा या उसके किसी दूसरे हिस्सा को हुकूमते बरतानिया से मशवरा किए बेग़ैर बेचने, रहन रखने, मुस्ताजरी या किसी क़िसम के तसर्रुफ़ करने का मजाज़ न होगा। उसको इस अम्र का अख़्तियार न होगा कि किसी हुकूमत या किसी की रिआया को बरतानिया की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ म्मालिक मज़्कूरा बाला में कोई रिआयत लाइसेंस' दे। इब्ने सऊद वादा करता है कि वह हुकूमते बरतानिया के इरशाद की तामील करेगा और उसमें इस अम्र की क़ैद नहीं है कि वह इरशाद उसके मफ़ाद के ख़िलाफ़ हो या मुवाफ़िक़।

दफ़ा पंजुम : इब्ने सऊद अहद करता है कि मक़ामाते मुक़द्दसा के लिए जो रास्ते उसकी सलतनत से हो कर गुज़रते हैं, वह बाक़ी रहेंगे और

इब्ने सऊद हुज्जाज की आम्दो रफ़्त के ज़माने में उनकी ह्रिफ़ाज़त करेगा।

दफ़ा शशुम : इब्ने सऊद अपने पेश्तर सलातीन नज्द की तरह अहद करता है कि वह इलाक़ाजात, कोयत, बहरैन, इलाक़ाजात, रुउसा व शुयूख़ अरब, अमान के इन साहिली इलाक़ाजात और दीगर मुल्हिक़ा मक़ामात के मुतअल्लिक़ जो बरतानवी हिमायत में हैं, किसी क़िस्म की मुदाख़िलत नहीं करेगा। इन रियासतों की हद बन्दी बाद को होगी जो बरतानिया से मुआहदा कर चुकी हैं।

दफ़ा हफ़्तुम : इसके अलावा हुकूमते बरतानिया और इब्ने सऊद इस अम्र पर राज़ी हैं कि तरफ़ैन के बक़िया बाहमी मुआमलात के लिए एक और मुफ़स्सल अहदनामा मुरत्तब व मन्ज़ूर किया जाएगा।

मुअर्रिख़ा 18 सफर 1334 हिजरी

26 नवम्बर 1915 ई०

महर व दस्तख़त अब्दुल-अज़ीज़ अस्सऊद

दस्तख़त बी रेड कॉक्स वकील मुआहदा हाज़ा व नुमाइन्दा बरतानिया, ख़लीजे फारस।

दस्तख़त चेस्फोर्ड नाइब मलिक मुअज़्ज़म वाइसराय हिन्द।

यह मुआहदा वाइसराए हिन्द की तरफ़ से गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया बमक़ाम शिमला 18 मई 1916 ई० को तस्दीक़ हो चुका है। दस्तख़त ऐ.एच. ग्रान्ट सिक्रेट्री हुकूमते हिन्द शोबा ख़ारजा व सियासियात।”

इब्ने सऊद अह्ले हदीस हज़रात की नज़र में

इंहिदाम कुबाब और तुर्कों की याद : मसलक अह्ले हदीस की एक ख़ातून राहील शरदानिया बिन्ते हाजी मुहममद मूसा ख़ान शरदानी ने 1324 हिज० (1924 ई०) में हज किया और अपने सफरे हज की रूदाद लिखी। उसके दा साल बाद राहील शरदानिया के भाई हारून ख़ाँ शरदानी और उनके दोस्त मुहम्मद मुक़्तदी शरवानी ने हज किए और राहील के सफर नामा ज़ादुस्सबील पर बाद के बदले हुए हालात के तहत नोअ लिखे।

हम यहाँ पर मुहम्मद मुक़्तदा शरवानी के नोट से बाज़ इक़्तिबास नक़ल करते हैं। मुहम्मद मुक़्तदा शरवानी (अह्ले हदीस) लिखते हैं।

वाक़्या यह है कि 1342 हिज० (1924 ई०) में जब राहील साहिबा ने हज किया है, तो अरब में तुर्कों की तुर्की तमाम हो चुकी थी और शरीफ़ की रज़ील हुकूमत क़ायम हुई थी, उनके वापस होने के मअन बाद सुल्तान इब्ने सऊद का दौर आया और क़त्ल व ख़ूंरेज़ी और ज़्यारत व मज़ारात की इंतिहाई बेहुर्मती अपने साथ लाया, जिस से इस्लामी दुनिया में एक तहलका अज़ीम बरपा हो गया। सदहा प्राइवेट ख़ुतूत हिन्दुस्तान पहुंचे और बीसों मज़ामीन अख़्बारात में शाए हुए, जिन में नज्दियों के ख़िलाफ़ नाला व शुयून बुलन्द किया गया मौक़ा की तहक़ीक़ात के लिए दो वफ़्द हिन्दुस्तान से गये, जिन में से एक मई 1926 ई० में हमारे बम्बई पहुंचने से पहले हिन्दुस्तान वापस पहुंच चुका था और दूसरा सैयद हबीब शाह दिलावर वापस होता हुआ हमें बम्बई में मिला और जो हालात हम बाज़ प्रोइवेट ख़ुतूत से मालूम कर चुके और अख़्बारात में पढ़ चुके थे और जो इस वफ़्द की ज़बानी मुंकशिफ़ हुए, इन सब की (मआ शय ज़ाइद) ख़ुद हमारे ज़ाती तजरबा और ऐनी मुशाहिदा ने तस्दीक़ की।

सर ज़मीने अरब की सह माहिया ख़ाक बोसी के दौरान में, जो बात हमें सबसे पहले और सबसे ज़्यादा महसूस हुई, वह यह थी कि अरब,

तुर्कों के लिए रोते और शरीफ़ियों और नज्दियों की मुसीबत को तुर्कों के साथ अपनी नाशुक्र गुज़ारी व एहसान फरामोशी का वबाल समझते थे। सारा मुल्क बिला इस्तिस्ना शरीफ़ से बवज्हे उसके ग़ायत दरजा हरीस होने और नज्दियों से बसबब उनकी इंतिहाई मज़्हबी नारवादारी के बेहद नालाँ था और चूंकि अरब एक आज़ाद क़ौम हैं इसलिए (अली नौफ़ मिन फिरऔन व मलाइर) अपने जज़्बात को मुतलक़ न छुपाते थे।

हरमैने शरीफ़ैन से बाहर की ज़्यारत गाहें और मुतबर्रक यादगारें न सिर्फ़ मुन्हदिम, बल्कि निहायत बेहुर्मती की हालत में थीं और मालूम नहीं, राहील साहिबा के हम एतक़ाद व हम मिल्लत सुल्तान इब्ने सऊद (अह्ले हदीस) ने इन दिल-ख़राश व शर्मनाक अफ़्आल की हिल्लत व इबाहत किन नुसूस से मुस्तंबत की थीं जब हम मक्का मुकर्रमा पहुंचे हैं, तो यह आलम था कि कोई शख़्स बेग़ैर सख़्त मार खाए इन मक़ामात व मकानात के क़रीब तक न हा सकता था, हत्ता कि हरम शरीफ़ के अन्दर मक़ामे इब्राहीम के दरवाज़ा को हाथ नहीं लगाया जा सकता था। मुल्तज़िम व हजर पर अदना वक़्फ़ा पर भी नज्दी पुलिस के सिपाही जो ग़िलाफ़ शरीफ़ को थामे दीवारे काबा के पुश्तबान पर खड़े रहते थे। बेद की मार मारते थे। मक्का मुकर्रमा के मदफन जन्नतुल-मुअ़ल्ला में (जहाँ हज़रत ख़दीजतुल-कुबरा रज़ि अल्लाहु अन्हा का भी मज़ार है) न सिर्फ़ क़ुबूब को ज़मीन बोस बल्कि कुबूर तक को मिस्मार कर दिया गया और उनके गर्द व पेश बोल व बराज़ पड़ा हुआ और ऊंटों के बेमहार चरता हुआ अपनी आंखों से देखा, यही नक़्शा मदीना मुनव्वरा में भी था, वहाँ के मदफ़न जन्नतुल-बक़ीअ़ के तमाम क़ुबूब व अक्सर क़ुबूर (अज़ां जुमला मज़ार हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु) ढाए जा चुके थे। कोई शख़्स शुबकि (जाली मुबारक को हाथ न लगा सकता था। न उसके क़रीब जा कर बआवाज़ सलात व सलाम पढ़ सकता था। एक क़ारी साहब सफ़ पर बैठ कर क़ुरआन शरीफ़ बजहर व लहन पढ़ा करते थे, उनको रोक दिया गया था।)

गर हमीं अस्त मुसलमानी कि वाइज़ दारद
वाए गर अज़ पस इमरोज़ बूद फरदाए

ज़ादुस्सबील की मुसन्निफ़ा राहील शरदानिया के भाई (अहले हदीस) 1946 ई० में सऊदी हुकूमत के हालात के ज़िम्न में लिखते हैं :

बिला शुबह नज्दियों ने जन्नतुल-बक़ीअ् और जन्नतुल-मुअल्ला में मुख़्तलिफ़ कुब्बों को मुन्हदिम करा कर इस तरह तुर्कों की बनाई हुई निहायत नफ़ीस इमारतों को बरबाद कर दिया।

राहील साहिबा ज़ादुस्सबील के मुक़द्दमा में लिखती हैं।

गो कि एतेक़ादन सुल्तान इब्ने सऊद और मैं एक ही मिल्लत के समझे जाते हैं, क्योंकि अल्हम्दुलिल्लाह मैं भी अह्ले हदीस हों, मगर फ़िर भी मैं वहाँ के बाज़ हालात को अफसोस की निगाह से देखती हूँ, मसलन मक़ामात मुतबर्रका के मिस्मार कर देने से हरगिज़ इस्लाम का कोई फ़ाइदा नहीं हुआ। सुल्तान इब्ने सऊद ज़रूर ग़लती पर हैं, क्योंकि हम अगर कोई एक आध मामूली काम भी जुरअत से अपनी उम्र में कर गुज़रते हैं, तो यह उम्मीद हमारे दिल में होती है कि हमारी यादगार क़ायम होगी। चेहजाएकि जिन्होंने तमद्दुने इस्लाम की शान से दुनिया की इस्लाह की, जिनके वास्ते कहा जाता है कि ज़मीन व आसमान पैदा हुए उनकी बाज़ ज़रूरी यादगारें रूए ज़मीन से नाबूद कर दी गईं। मूलिदुन्नबी फ़ातिमा को मिस्मार कर दिया गया और यह फरमाया जाता है कि उसकी सनद नहीं कि यह वही जगह है। अगर उसकी सनद नहीं कि यह वही जगह है। अगर उसकी सनद नहीं, तो ज़रूर मक्का में कोई जगह, तो वह होगी, जहाँ यह वाक़ेआत गुज़रे हुकूमते अरब का यह फ़र्ज़े ऐन था कि ऐसे मक़ामात पर जो शिर्क व बिदआत होते थे, तो उनकी रोक थाम करती, तो सवाबे दारैन हासिल होता, मगर उनकी ईंट से ईंट बजा देने से हरगिज़ कोई तक़्वियत इस्लाम को नहीं हुई। मूलिद फातिमा में गुरबा के बच्चों का मदरसा था, वह कौन सी बिदअत थी कि उसको भी न क़ायम रहने दिया गया। अस्ल में सुल्तान इब्ने सऊद अपनी बादशाही के गुर्रह में आ कर यह सब कुछ कर रहे हैं, उनको हद से हरगिज़ नहीं गुज़रना चाहिए। उनको अह्ले इस्लाम की हर मिल्लत के कुलूब का लिहाज़ करते हुए सलतनत करना मुनासिब है। वह बादशाह किया जो सिर्फ़ अपने असर से बिदआत (राहील साहिबा की बिदआत से मुराद किसी बुजुर्ग की क़बर पर फातिहा पढ़ कर उसके वसीला से मक़्बूलियत की दुआ करना है) कि न रोक सका और मक़ामात को मिस्मार करा कर अपनी कम्ज़ोरी का सुबूत दे। हम शरीफ़ की बेएतदालियों और ला परवाहियों से नालां

थे, हन्फ़ी लोग नज्दियों के मज़ालिम से हरासां हैं।)
इस्लाम को सुकून कब हासिल हुआ, इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि
अलैहि ने उस गरोह को शिर्के अशरक से राहील साहिबा की मुराद
बुजुर्गों से तवस्सुल और इस्तिग़ासा है और यह खुद इमाम अबू हनीफ़ा
और इमाम शाफ़ई व दीगर अइम्मा का तरीक़ा रहा है) कि हरगिज़
तल्क़ीन नहीं की, बल्कि लोग खुद ही सैंकड़ों साल से इस्लाह न होने के
बाइस गुम्राही में मुब्तला हो गये उनकी इस्लाह इस तरह क़रनी थी कि
हुकूमत शिर्क व बिदआत को जबरन रोकती। जैसा कि तुर्कों के ज़माना
में हर मक़ाम पर कूड़ा बरदार काम किया करते थे (तुर्कों के अहद में
बिरादरों से सरज़निश की जाती थी। तवस्सुल और इस्तिग़ासा न शिर्क
व बिदअत है न उस पर कोई बाज़ परस होती थी (क़ादरी) मगर यह
चन्द मक़ामात परबाद कर देने से आम बेचैनी मुसलमानों में पैदा होगी।

अह्ले हदीस हज़रात का तअस्सुब और अंबिया और इमामों की बेहुर्मती

राहील शरदानिया अह्ले हदीस हज़रात की तंग नज़री के बारे में लिखती हैं और दिल्ली के पंजाबी अह्ले हदीस हज़रात के बारे में रक़म तराज़ हैं।

और सब अह्ले हदीस हैं, हर एक नेक बात के शौक़ीन हैं, मुझे उन लोगों का वजूद बहुत ग़नीमत मालूम होता है और खुदा का शुक्र अदा करती हूँ, मगर अफ़्सोस है कि ज़्यादा तर यह सब मुतअस्सिब हैं, हालांकि अह्ले हदीस का मक़्सद अव्वल यह है कि तअस्सुब पास न रहे, बस तअस्सुब ने उनको दाग़ लगाया है। वरना मज़्हबी ख़्याल से यक्ता ख़ानदान है। अह्ले हदीस के नज़्दीक चारों इमामों की उक़्अत बराबर और उनके अहकाम की सदाक़त का हुक्म है, मगर मैंने देखा कि यह लोग इमामों की मंज़िलत का लिहाज़ अक्सर भूल जाते हैं और अपनी मालूमात के ज़अम में हैं। असल में यह बात कम इल्मी की वजह से है, चूंकि औरतों ही से मेरा साबेक़ा रहा था, लिहाज़ा ज़ाहिर है कि फ़िरक़ा अनास है, जो इल्म से बहुत कम तअल्लुक़ है, बस जो हालत होनी चाहिए थी हुई मेरी आदत मज़्हबी मुआमलात में मुबाहसा की नहीं है,

क्योंकि अव्वल तो मैं खुद इस मुआमला में नावाक़िफ़ हों और न आलिम से बहस कर सकती हों और न जाहिल से, क्योंकि अगर आलिम से बहस करूं तो जज़्बात मेरे ज़हन नशीन नहीं और जो जाहिल से बहस करूं, तो दोहरा गुनाह सर पर लूं। इसलिए मज़्हबी मुआमला में मुबाहसा से बहुत डरती हूँ, मगर वह लोग चूंकि अपने को हर एक अलामतुद्दहर समझते थे। इसलिए हर जाहिल से हर वक़्त मुबाहिसा होता और निहायत बुरा नतीजा उसका निकलता। उन लोगों का ख़्याल था कि बेग़ैर रफ़ा यदैन और खड़े सज्दा के नमाज़ ही नहीं होती हालांकि अह्ले हदीस के आलिमों ने हर दो की इजाज़त दी है। उन लोगों ने निहायत बुरी ख़स्लत अख़्तियार की है कि जुहला को अपनी रविश पर लाना चाहते हैं। यह तो इल्म के अह्ले होने के बाद ही हो सकता है। बर

गर हमीं मक्तब अस्त व ईं मिला!
कारे तिफ़्लां तमाम ख़्वाहद शद

का मज़्मून है। यह जाहिल दर जाहिलों ने और भी अह्ले हदीस को बदनाम किया है, जाहिलों के चेलों की यहाँ तक नौबत है कि इमामों को बुरा कहने लगे और पैग़म्बरों को अपना हम्सर बनाने लगे। यह हालत निहायत ही अफ़्सोसनाक है। उस गरोह के एक बड़े रुक्न हैं, उनका मुलाज़िम एक रोज़ हरम शरीफ़ में कहने लगा कि यह मुसल्ला इमाम के नाम क्यों बना दिए हैं और इस हन्फ़ी मुसल्ला को तो मुझे ऐसा गुस्सा आता है कि तोड़ डालूं एक दूसरा हन्फ़ी भी बैठा था, वह मारने मरने पर मुस्तइद हुआ और उसने कहा कि अगर तुम हरम शरीफ़ में न होते, तो तुम्हारा मुँ बिगाड़ देता। इस क़िस्म की बात कहाँ तक इस्लाम में जाइज़ है। कुरआन पाक में आया है कि कुफ़्फ़ारों के माबूदों को भी बुरा न कहो, ऐसा न हो कि वह बिगड़ कर तुम्हारे माबूद को बुरा कहने लगें। ग़ौर करो कि पत्थरों की बाबत यह हुक्म और रहबराने दीन की इमारात और वह भी हरम शरीफ़ का जज़ा उसके वास्ते यह अहमक़ाना अल्फ़ाज़ कहाँ तक जाइज़ हैं। अफ़्सोस कि जुहला हर जगह ख़राबी पैदा करते हैं। ऐसी बातों का नतीजा यह है कि मक्का में अह्ले हदीस का हर शख़्स दुशमन हो गया है। जहाँ तक कलामुल्लाह सुनाने को रमज़ानुल-मुबारक में कहीं जगह न मिलती थी उन में दो एक हाफ़िज़ भी थे उन्होंने चाहा कि हम भी उस सआदत में शरीक हों, मगर लोगों ने यक ज़बान हो कर कहा

कि हम हरगिज़ वहाबियों को अपनी सफ़ों में न आने देंगे। बड़ी मुश्किल से उस गर्मी में दालान के अन्दर कोना के चबूतरे पर इजाज़त मिली, तो कोई कुरआन शरीफ़ सुनने को न आता था।

और हंसू मैं कव्वा। यह खुद ही पढ़ते थे और खुद ही सुनते थे। अल्हम्दुलिल्लाह मैं भी अह्ले हदीस हूँ, मगर खुदा वन्दे आलम मुझ को इन ख़राबियों से बचाए, जिस से इस्लाम को दाग़ लगे। अह्ले हदीस के यह मानी हरगिज़ नहीं कि मशाइख़े इस्लाम की इज़्ज़त न करे और इमामों व अंबिया अलैहिमुस्सलाम की उक़्अत न पहचान कर दोज़ख़ की तरफ़ अपने को ले जाए, बल्कि अह्ले हदीस वह फ़िरक़ा है कि चारों इमामों के अहकाम की उक़्अत करता है और हत्तल-वसीअ् पुख़्ता अहादीस पर चलने की कोशिश हमारे उलमा तमाम बुज़ुर्गाने दीन की इज़्ज़त को फ़र्ज़ तस्लीम करते हैं, हाँ उनको खुदा के मरतबा तक पहुंचाना और उनकी क़बरों को माबूद बनाने व नीज़ सिवाए खुदा, दूसरे के सामने सर झुकाने को शिर्क, बल्कि कुफ़्र ख़्याल करते हैं।

हमारे उलमा हरगिज़ इब्ने अब्दुल-वहाब की रविश पर चलने का हुक्म नहीं देते, मगर अफ़्सोस है कि नीम मिलां ख़तरा ईमान हो गये और उन्होंने अहादीस जैसी चीज़ को बदनाम किया। (इब्ने) अब्दुल-वहाब के दिल में तो कोई नहीं घुसा था अगर वह फ़ासिद ख़्यालात रखता था, तो ज़रूर वह राह भूला हुआ था, हम को उस से क्या ग़रज़ वह कोई नबी न था, इमाम न था, रहा आलिम होना, तो बहुत से आलिम भी राह भूल जाते हैं और अपने इल्म के ज़अम में अपने साथ दूसरों का भी नास लगाते हैं। अहादीस में आया है, बहुत से आलिम मआ अपने घरों के दोज़ख़ की तरफ़ हंका लिए जाएंगे।

नाअह्लों की हरकात की वजह से लोगों ने अह्ले हदीस को वहाबी का ख़िताब दिया है, लेकिन हम को उस से कोई तअल्लुक़ नहीं, उलमा को चाहिए कि ज़रूर इस ख़राबी की तरफ़ मुतवज्जह हों और इस्लाह करें और बज़रिया वअ़ज़ जाहिलों को राह पर लाएं, हर मिल्लत, हर क़ौम, हर तबक़ा में ऐसे लोग जाहिल मौजूद होते हैं, चुनांचे शरीफ़ औन के वक़्त मैं किसी नीम मुल्ला ने कोई क़लिमा आंहज़रत की शान में कहा था, वह कम बख़्त अपने को अह्ले हदीस कहता था।

इब्ने सऊद की जसारतें : राहील साहिबा अह्ले हदीस हज़रात के तअस्सुब और उनकी ज़ाहीयत और जिहालत पर तबसरा करने के बाद इब्ने सऊद के शर्मनाक अफ़आल पर तबसरा करती हैं : जिस वक़्त मैंने सफरनामा लिखा था, तो शरीफ़ हुसैन का दौर दौरा था, जिसने अह्ले हदीस की मिट्टी ख़राब की थी और अब इब्ने सऊद संग ला रहे हैं। उन्होंने हन्फ़ियों को शिकस्त देने के ख़्याल से तौक़ीर इस्लाम को ही मिटाने का तहीया कर लिया है। कैसे अफसोस की बात है कि तमाम निशानात बुज़ुर्गाने दीन के नाबूद कर दिए यहाँ तक कि सरवरे काइनात की पैदाइश की जगह को मिस्मार कर दिया। इस खुदा के बन्दा के दिल में यह ख़ौफ़े खुदा न आया कि अपने राहबर के इस मक़ामे मुतबर्रक के पामाल करने से क्या दुनिया में सरसब्ज़ रहेंगे हरगिज़ नहीं, जिस तरह आज शरीफ़ हुसैन का सिर्फ़ नाम नेकी या बदी से हमारी ज़बान पर रह गया है। इसी तरह बहुत जल्द इब्ने सऊद की हरकात को याद करेंगे, मगर इस्लाम के निशानात क्या एक अदना शख़्स के मिटाने से मिट जाएंगे। ख़्याल करने की बात है कि अगर हमि एक काम मामूली अहमियत से अंजाम देते हैं, तो उसकी यादगारें क़ायम होती हैं और इस्लाम जैसे अहम काम के बानियों के निशान को मिटा देना क्या शाने ईमान हो सकती है। मैं भी शुक्र करती हूँ कि अह्ले हदीस हूँ और इस बात को मानती हूँ कि इन मक़ामात पर बिदआत और बाज़ औक़ात शिर्क (ग़ैर मुक़ल्लिदों का खुद साख़्ता) भी होता था, मगर क्या उसका तदारुक यह था कि उस जगह को भी मिटा दो। नहीं बल्कि शान बादशाहत यह थी कि इब्ने सऊद को ड़ा बरदार मुक़र्रर करते कि जो शख़्स ख़िलाफ़े शरअ् हरकते करे और हद से बढ़े, उसको ताज़ीर करके खुदा के सामने पूरे तौर पर सरखुरूइ हासिल की होती और बन्दगाने खुदा की निगाह में भी उक़्अत होती। अगर इब्ने सऊद ऐसा करते, तो आज दुनिया-ए-इस्लाम उनके पैर धो कर पीती और खुदा भी खुश होता, लेकिन सद हीफ़ इस्लाम में हमीयत बाक़ी नहीं रही है अपने एजाज़ को खुद पाइमाल करते हैं।

अहादीस शरीफ़ से कुबूरे गुंबद अगर नाजाइज़ साबित होते हैं (किसी हदीस सही में क़बर पर गुंबद बनाने की मुमानेअत नहीं है, बल्कि

बकसरत फ़ुक़्हाए इस्लाम ने उसके जवाज़ की तस्रीह की है (क़ादरी) मगर मूलिदुन्नबी या मूलिदे फातिमा वग़ैरह के गुंबद तोड़ने से क्या हासिल। उसका तो शरअ् शरीफ़ में कहीं हुक्म नहीं है। उनका क़ौल है कि उस जगह का सुबूत नहीं है कि यह मुलिदुन्नबी या हुजरा आइशा सिद्दीक़ा का है। तो मक्का में किसी जगह तो ज़रूर हुजरा आइशा सिद्दीक़ा और मुलिदुन्नबी होगा। उस जगह को तलाश करना था। अलावा उसके यह ही क्या सुबूत है कि उस जगह पर मूलिदुन्नबी या मुलिदे फातिमा नहीं है। मूलिदे फातिमा में तो मेरे जाने के वक़्त गुरबा का मदरसा था, जिसको इस्लाम सदक़ा जारिया कहता है, लेकिन उसको भी बरबाद किया मैं हरगिज़ इस बात के मानने को तैयार नहीं हूँ कि इब्ने सऊद की यह हरकतें फ़ी सबीलिल्लाह या हुक्मे शरअ् की बिना पर हैं नहीं। वह महज़ मिल्लियत के तअस्सुब से मग़्लूब हो रहे हैं वरना कलाम मजीद की नस्से सरीह से कि कुफ़्फ़ार के माबूदों को उनके सामने बुरा न कहो कहीं तुम्हारे माबूद को वह बुरा कहने न लगें, बल्कि उनकी ग़लतियाँ उन पर आसां और हिल्म से साबित करो फिर वह बताएगा कि जब बुतों को बुरा कहने से इस्लाम रोकता है, तो बुजुर्गाने दीन के वास्ते गुस्ताख़ी कहाँ तक जाइज़ है।

हम को अफ़्सोस है कि हमारे मोहतरम बुजुर्ग मौलाना मुहम्मद अली साहब और नवाब सदर यार जंग बहादुर अरब को गये और इस बारे में कुछ करके न आए, मुझ को पूरी उम्मीद थी कि यह लोग इब्ने सऊद को ज़रूर तअस्सुब से बचने पर मज्बूर करेंगे। ख़ास कर उलमा लोग तो जा कर उन से अहादीस की रू से बहस करके क़ाइल कर सकते हैं (उलमा ने इब्ने सऊद को क़ाइल तो कर लिया था, लेकिन इब्ने सऊद उन से कुब्बों और मक़ामाते मुक़द्दसा की हिफ़ाज़त) के पैहमे वादा और मुस्तहकम अहद करने के बाद उन से फिर गया उसका क्या इलाज (क़ादरी गुफ़िरा लहू) लेकिन मेरे उमूमी साहब मोहतरम सदरुस्सुदूर उमूरे मज़्हबी हैदराबाद दकिन। ऐसा आलिम शख़्स जा कर इब्ने सऊद को राहे रास्त पर न ला सका, तो सिवाए उसके कि हम इस्लाम की कम्ज़ोरी पर आठ-आठ आंसू रो कर सब्र कर लें और कुछ चारा नहीं हो सकता।

आगे चल कर लिखती हैं : इब्ने सऊद ने वह सख़्ती और वह

बेरहमी बरती है कि हर मुसलमान का दिल बहुत दुख गया, बल्कि नासूर हो गये हैं। ख़्याल करने की बात है कि हमारे बाप दादा का बनाया हुआ कुछ घर होता है। उसकी हम कैसे हिफ़ाज़त करते और और उसकी एक मुट्ठी मिट्टी पर हर दम अपनी जान देते हैं और मरने मारने पर तैयार रहते हैं, फिर यह मक़ामात हमारी निगाहों में क्यों उक़अत नहीं रखेंगे कि जब अपने क़दीम आबाई मकान की हिफ़ाज़त हम सिर्फ़ इसी लिए करते हैं कि हमारे दादा या परदादा के हाथ की निशानी है। यादगार तो हर मज़्हब ख़्वाह ईसाई हो, यहूदी हो मुसलमान हिन्दू आतिश परस्त हर एक क़ौम मैं ज़रूरी समझी जाती है। आज इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की सिर्फ़ यादगार क़ायम रहने की बिना पर हम पर हज फ़र्ज़ हुआ, वरना क्या ज़रूरत थी कि हम मिट्टी के बनाए हुए सुतूं पर कंकरी मार कर कहें कि शैतान को मारने जाते हैं। सई क्यों लाज़मी हुई। तवाफ़ किस वास्ते ज़रूरी है। यह सब निशान इस्लाम क़ाइम रखने को बरक़रार रखा गया। यह सच है कि सरवरे काइनात एक दरख़्त से पीठ लगा कर बैठते थे, चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० अल्लाहु अन्हु के हुक्म से वह दरख़्त काट दिया गया। जब अमीरुल-मुमिनीन से वजंह दरयाफ़्त की गई, तो उन्होंने फरमाया। मुझ को ख़ौफ़ है कि लोग कहीं उसको पूजने न लगें। उस से यह साबित होता है कि पूजने का ख़ौफ़ उसके काटने पर हावी हुआ, मगर बादशाह या ख़लीफ़ा किस के वास्ते है। महज़ इसलिए कि इन सब बातों की हिफ़ाज़त करे, किसी को हद्दे शरअ् से न बढ़ने दे। अगर इब्ने सऊद उसकी ताक़त नहीं रखते कि लोगों को बिदअत और शिर्क (वहाबियों का ख़ुद साख़्ता) (क़ादरी) से रोक सकें, तो वह हरगिज़ मक्का मुअज़्ज़मा का हाकिम कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं। इसको फ़ौरन किनारा करना चाहिए। हम हरगिज़ निशानात इस्लाम मिटा देने को और मुमिनीन का दिल दुखा देने के वास्ते इब्ने सऊद को हाकिम बनाने को तैयार नहीं हैं। काबा का हाकिम ख़ुदा है। बादशाही का पहला फ़र्ज़ शाने इस्लाम को क़ायम रखना है। अगर यह नहीं, तो हरगिज़ हम को हाकिम की ज़रूरत नहीं अगर तमाम निशानाते इस्लाम को मिस्मार कर दिया, तो तुम हिफ़ाज़त किस चीज़ की करोगे। मैं यक़ीन दिलाती हूँ। अगर इब्ने सऊद सऊद ने अपनी बेजा हरकतों से तौबा न की तो चन्द रोज़ की हवा है। हरगिज़

वह क़ायम नहीं रह सकते। (इब्ने) अब्दुल-वहाब ने इस्लाम के साथ सरकशी करने का बेड़ा उठाया आज उसका निशान दुनिया से नीस्त व नाबूद है, नीज़ अह्ले हदीस को कोई वहाबी कहता है, तो इस तरह बुरा मानते हैं जैसे शीआ राफ़ज़ी कहने से सिर्फ़ इसलिए हमारी निगाह में (इब्ने) अब्दुल-वहाब की उक़अत नहीं कि उस ने अमाइदीने इस्लाम की शान में गुस्ताख़ियाँ कीं इस वजह से दुनिया में फला फूला नहीं हम अह्ले हदीस गरोह को बेशक बन्दा को खुदा बनाने का हुक्म नहीं (अल्हम्दुलिल्लाह मुसलमानों में कोई शख़्स बन्दा को खुदा नहीं बनाता यह महज़ अह्ले हदीस हज़रात का इफ़्तिरा है। (क़ादरी) मगर मेहनत किसी क़द्र कैसे न करेंगे। कोई मामूली शख़्स अगर मारका का काम कर जाए, तो उम्र भर अपने अल्फ़ाज़ में उसका ज़िक्र करते हैं। फुलां शख़्स ने यह कैसा बड़ा काम किया, फिर ख़िदमत गुज़ार इस्लाम की उक़अत हमारे दिल में कैसे न होगी। कि उन्होंने वह कारहाए नुमायां किए हैं।

तुर्कों की याद : तुर्कों की ख़िदमात पर ख़राजे तहसीन पेश करते हुए, राहील साहिबा लिखती हैं।

मैंने देखा है कि तुर्कों का यहाँ बहुत असर है। हुकूमत का ज़रा जिक्र करो, तो हर किस ज़ार नज़ार रोने लगता है और हाथ फ़ैला-फ़ैला कर दुआ करते हैं कि खुदा वन्दे करीम जल्द तुर्कों का बोल बाला करे, वह लोग कहते हैं कि हम को परवाह नहीं कि हमारा बच्चा-बच्चा मारा जाए, मगर तुर्कों की सलतनत हरमैन में हो जाए। बात यह है कि तुर्क हर ख़ादिमे हरम को सिर्फ़ ख़ास से तन्ख़्वाहें देते थे और अह्ले मदीना में कोई ऐसा होगा, जिस का तअल्लुक़ हरम से न हो, इस बात की तस्दीक़ हो गई कि हर घर में किसी न किसी को ज़रूर तुर्की से तन्ख़्वाह मुक़र्रर थी और बाज़ तो चैन करते थे। अब हालत यह है कि फौज के सिपाही और पुलिस के लोगों को भी साल डेढ़ साल से पैसा नहीं मिला, यहाँ का सरकारी और ग़ैर सरकारी हर फ़र्दे बशर शरीफ़ हुसैन को बद्दुआ से याद करता है। क्या करे मरता क्या न करता, यहाँ के ख़्वाजा सराओं को आप दूर से देखें, तो सफेद पोश मालूम होते हैं और क़रीब जा कर देखो तो कई-कई पैवन्दान के जुब्बा में नज़र आएंगे।

इक़बाल का पैग़ाम इब्ने सऊद के नाम

तो हम आं मय बेगैरे अज़ साग़र दोस्त
कि बाशी ता अबद अन्दर बर दोस्त
सुजूदे नीस्त ऐ अब्दुल-अज़ीज़ ईं
बरो बम अज़ मज़ह ख़ाक दर दोस्त
तो सुल्तां हिजाज़ी मन फ़क़ीरे अम
दे दर क़िशोर मानी अमीर अम
जहाने को ज़तखुम लाइलाहा अस्त
बया बंगर बआग़ोशे ज़मीरम
सरापा दर्द दरमां न पंज़ीरम
न पिन्दारी ज़बून व ज़ार पैरम
हुनूज़म दर कमाने मय तवां रांद
ज़केश मिलते उफ़तादा तेरम
बया बाहम दर आवेज़ेम व रक़्सीम
ज़गीती दिल बरअंगेज़ियम व रक़्सियम
यके अन्दर हरीमे कूचा दोस्त
ज़चशमां अश्क ख़ूं रेज़ियम व रक़ीसम
तेरा अन्दर बयाबाने मक़ाम अस्त
कि शामश चूं सहर आइन्द फाम अस्त
बहर जाए कि ख़्वाही ख़ेमा गस्तर
तनाब अज़ दीगरां जस्तन हराम अस्त
मुसलमानेम व आज़ाद अज़ मकानीम
बरूं अज़ हल्क़ा न आस्मानीम
बमां मोख़्तन्द आं सज्दा, कज़वे
मुजस्समहाए हर ख़ुदा वन्दे बरानीम
ज़ा फ़रंगी सनम बेगाना तर शू
कि पैमाइश नमी अरज़ू महक जो
निगाहे दाम कुन अज़ चश्म फ़ारूक़
क़दम बेबाक न दर आलिम को

बाब (10)

शाह सऊद का दौरे हुकूमत

9 नवम्बर 1953 ई० को इब्ने सऊद की रिहलत के बाद शाह सऊद तख़्त नशीन हुआ। इब्ने सऊद के दौरे हुकूमत में अमीर फ़ैसल वज़ीरे ख़ारजा थे। सऊद ने बादशाह होने के बाद फ़ैसल को नायब वज़ीरे आज़म भी बना दिया। 1958 ई० में शाह ने अमीर फ़ैसल को वज़ीरे आज़म बना दिया।

अमीर फ़ैसल का दौर-ए-भारत : 1959 ई० में अमीर फ़ैसल ने नायब वज़ीरे आज़म की हैसियत से भारत का दौरा किया। भारत में अमीर फ़ैसल का शानदार इस्तिक़बाल किया गया।

रोज़नामा नवाए वक़्त लिखता है :

भारतियों ने अमीर फ़ैसल के इस्तिक़बाल में भारत सऊदी अरब ज़िन्दाबाद, राजकुमार सऊदी अरब ज़िन्दाबाद के नारे लगाए। अमीर फ़ैसल ने भारत में क़्याम के दौरान में डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, डॉक्टर राधा कृष्ण और पंडित नेहरू से मुलाक़ातें कीं और राज घाट पर महातमा गाँधी की समाधि पर फूल चढ़ाने गये, नीज़ एक गाँव रतनगढ़ में तशरीफ़ ले गये, जहाँ दिहात सुधार का काम देख कर इस क़द्र मुतअस्सिर हुए कि वहीं दस हज़ार रुपये का अतीया इनायत फरमा दिया।

याद रहे कि जो शख़्स मदीना मुनव्वरा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ा मुबारक की जालियों को चूमने की कोशिश करता है या जन्नतुल-बक़ीअ् की मुक़द्दस क़बरों को हाथ लगाने की कोशिश करता उसको नज्दी सिपाही कोड़ों से पीटते हैं, क्योंकि उस से तौहीद में फ़र्क़ आता है और मुसलमानों के दुशमन और बदतरीन मुश्रिक गांधी की समाधि पर फूल चढ़ाने से शायद तौहीद में फ़र्क़ न आता होगा। १६७४ ई० में जब शाह फ़ैसल पाकिस्तान के दौरे पर आए, तो न उन्होंने हज़रत दाता दरबार जा कर फातिहा पढ़ी न क़ाइदे आज़म के मज़ार पर जा कर ईसाले सवाब किया।

शाह सऊद का दौर-ए-भारत : 1955 ई० के अख़ीर

में शाह सऊद ने भारत का दौरा किया। हिन्दुस्तान का अख़्बार सियासत इस दौरा की बाज़ तफ़्सीलात बयान करते हुए लिखता है।

"शाह सऊद जब हिन्दुस्तान में आए, तो शिमला से आठ मील दूर आपने हिमाचल प्रदेश के लोगों का पेश किया हुआ लोक नाच का एक प्रोग्राम देखा और जनाब सदर मुअज़्ज़ज़ वज़रा ख़्वातीन और राजेन्द्र प्रसाद के जवाब में शाह सऊद ने तक़रीर फरमाई। मदरसा देवबन्द को पचीस हज़ार रुपया दिया और यह भी फरमाया कि मुझे यक़ीन है कि हिन्दुस्तान और सऊदी अरब के इत्तिहाद और दोस्ती के रिश्ते हमेशा मज़्बूत रहेंगे।"

भारत के शानदार इस्तिक़्बाल और रूह परवर तक़रीबात से मस्रूर हो कर शाह सऊद ने हुकूमत भारत को मुसलमानों को अमन से रखने की सनद इनायत फरमा दी।

रोज़नामा कोहिस्तान शाह सऊद का बयान नक़ल करता है।

मैं भारती मुसलमानों के हालात से मुत्मइन हों उनके साथ मुंसिफ़ाना बर्ताव हो रहा है।

जिन दिनों शाह सऊद भारत के दौरे पर गये हुए थे, उन दिनों रेडियो से शाह सऊद के दौरा की कमेंट्री नश्र हो रही थी। भारत में शाह सऊद के एज़ाज़ में दिए जाने वाले जल्सों, दावतों और तक़रीरों का खुलासा बयान होता था इस मौक़ा के एक ख़ास क़ाबिले ज़िक्र प्रोग्राम का ज़िक्र रोज़नामा ग़रीब लाइलपुर से सुनिए।

कमेन्ट्री के पहले और बाद और दर्मियान में जो मौसीक़ी पेश की जाती है वह हिन्दुस्तानी फ़िल्मों के गीतों की मौसीक़ी होती, जिसमें ख़ालिस हिन्दुओं ने मज़हबी फ़िल्मों की धुनें भी शामिल होती थीं और आरसी वग़ैरह के पस मंज़र में साज़ भी बजते थे।"

सतवत तौहीद क़ाइम जिन नमाज़ों से हुई
वह नमाज़ें हिन्द में नज़्रे बरहमन हो गईं

पंडित नेहरू का दौर-ए-सऊदिया अरब : शाह सऊद ने भारत से रवानगी के वक़्त हिन्दुस्तान के वज़ीरे आज़म पंडित जवाहर लाल नेहरू को सऊदी अरबीया आने की दावत दी, चुनांचे सितम्बर 1956 ई० के अख़ीर में पंडित नेहरू ने सऊदी अरबीया जाने

की तैयारी शुरू कर दी।

पंडित नेहरू के इस्तिक़्बाल के लिए जिस तुज़्क व एहतिशाम से सऊदी अरब में तैयारियाँ हो रही थीं उनके बारे में रोज़नामा इमरोज़ लिखता है।

सऊदी अरब में पंडित नेहरू की मदारात का ऐसा इंतिज़ाम किया जा रहा है जो अलिफ़ लैला के ज़ाह व जलाल की याद को ताज़ा कर देगी। हर रोज़ तायफ़ के बाग़ों से गुलाब के ताज़ा फूल तैयारा के ज़रिया उन महल्लात में लाए जाएंगे जहाँ नेहरू क़्याम करेंगे। वज़ीरे आज़म और उनकी पार्टी के लिए शाही नोशा ख़ानों में ख़ास इंतिज़ामात किए जा रहे हैं। हवा की मुस्तक़िर्र से रियाज़ में शाह सऊद के निहायत पुर शिकोह महल तक नेहरू को जुलूस की सूरत में ले जाया जाएगा, जिसकी पेशवाई शाह का मुहाफ़िज़ दस्ता और मोटर साइकिलों पर सवार फौजी करेंगे। तमाम शाहराहों को भारती और सऊदी परचमों से मुज़ैयन किया जाएगा।

रोज़नामा कोहिस्तान ने पंडित नेहरू के इस्तिक़्बाल की रिपोर्टिंग करते हुए लिखा :

रोज़नामा अल-बिलाद अस्सऊदिया ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को ख़राजे तहसीन पेश करते हुए अपने इदारिए "भारती नेहरू को अरब में खुश आमदीद" में लिखा है कि "सऊदी अरब एक रहनुमा को खुश आमदीद कहने पर फ़ख़्र महसूस करता है। मिस्टर नेहरू एक ऐसी शख़्सियत हैं जो हमेशा पुर अमन और दानिशमन्दाना पालीसी के क़ाइल रहे हैं। आख़िर में इस अख़्बार ने दुआ की है कि अमन का यह दाई हज़ारों बरस जिए "शाह सऊद की मुतमिर इस्लामी के सिक्रेट्री कर्नल अनवारुस्सादात ने भी सरकारी तौर पर रोज़नामा "अल-मज्हूरिया" में पंडित नेहरू को "एशियाई फ़रिश्ता बनाया" है। यह अख़्बार लिखता है कि ऐ एशिया के फ़रिश्ता तुम पर सलामती हो। आगे चल कर कर्नल सादात लिखते हैं। मिस्टर नेहरू की नर्म और मुलायम आवाज़ तोपों की गरज से कहीं ज़्यादा असर है, क्योंकि यह सच्चाई की अलम्बरदार है।

पंडित नेहरू की रियाज़ में आमद : रोज़नामा जंग अपनी 27, 28, 29 सितम्बर 1056 ई० की इशाअतों में लिखता है।

सऊदी अरब में नेहरू का मरहबा रसूलुस्सलाम (ऐ अमन के पैग़म्बर हम तेरा ख़ैर मक़्दम करते हैं) और जय हिन्द के नारों से इस्तिक़्बाल किया गया। सऊदी अरब की तारीख़ पहली मरतबा नेहरू के इस्तिक़्बाल के लिए नज्दी औरतें भी मौजूद थीं। यह ख़्वातीन टर्कों और कैडलॉक कारों में बैठी हुई मिस्टर नेहरू को नक़ाओं से झांक-झांक देख रही थीं। रियाज़ पहुंचने पर सऊद ने नेहरू को गले लगाया।

सर ज़मीने हिजाज़ पर पहली मरतबा भारती तराना "जाना माना गाना। बजाया" गया। पंडित नेहरू जब सऊदी अरब के दारुल-हुकूमत रियाज़ पहुंचे, तो जिन में शाह सऊद, सऊदी शहज़ादे, वज़रा और सऊदी फौज के आला अफ़्सर शामिल थे, नेहरू का इस्तिक़्बाल किया और एक फौजी अफ़्सर ने गार्ड आफ आनर पेश किया : उसके बाद नेहरू एक खुली कार में शाह सऊद के महल रवाना हो गये। रास्ते में सड़क पर दोनों तरफ़ खड़े हज़ारों अफ़राद ने नेहरू को ज़िन्दाबाद के नारे लगाए। चौबीस सितम्बर की रात को शाही महल अल-हुमरा में शाह सऊद ने नेहरू के एज़ाज़ में शाही ज़्याफ़त दी। उस कमरे को रंगारंग रौशनियों से सजाया गया था, जब नेहरू कमरे में दाख़िल हुआ, तो शाह सऊद ने आगे बढ़ कर उनकी शेरवानी के काज में सुर्ख़ रंग का एक गुलाब टांक दिया।

सिपासनामा : दहरान में सऊदी अरब के गवर्नर ने नेहरू की ख़िदमत में एक सिपासनामा पेश किया गया जिस में कहा गया कि पंडित नेहरू और उनकी हुकूमत ने इस्लाम और मुसलमानों की दोस्ती और उनके मफ़ादात के तहफ़्फ़ुज़ के लिए जो शानदार ख़िदमात की हैं, सऊदी अरब के लोग उनकी क़द्र करते हैं और उन्हें नेहरू पर फ़ख़्र है। नीज़ कहा गया कि पंडित नेहरू दुनिया अज़ीम तरीन शख़्सियतों में शुमार होते हैं। भारती सफ़ीर ने उस मौक़ा पर कहा उस दौरा से ज़ाहिर है कि नेहरू और शाह सऊद को एक दूसरे से कितनी अक़ीदत है।

नज्द में गीतांजली के भजन : भारती वज़ीरे आज़म नेहरू को रियाज़ में एक स्कूल में ले जाया गया जिसमें सऊदी अरब के शहज़ादे भी तालीम हासिल करते हैं, जब नेहरू इस स्कूल के एक कमरा में दाख़िल हुए, तो उन्हें यह देख कर बेहद खुशी हुई कि तलबा "गुरू

देव टैगोर" की गीतांजली के भजन मिल कर गा रहे थे जो स्कूल के निसाबे तालीम में शामिल है।

सऊदियों का नहरू पर भरोसा : जब नेहरू एक और कमरे में पहुंचे, तो तलबा ने उनका इस्तिक़्बाल अज़ीम गाँधी के जानशीन का नारा लगा कर कहा, उन्होंने यह नारा भी लगाया कि "अरबों का ग़ैर मुतनाज़ा दोस्त।"

पंडित नेहरू ने भी यहाँ मिस्टर गाँधी का प्रोपेगन्डा किया। उस स्कूल में शाह सऊद के भाई सताम ने नेहरू का ख़ैर मक़्दम करते हुए कहा आप अमन के हीरो........और जद्दो जहद आज़ादी में हिस्सा लेने वाले लीडरों के क़ाइद हैं, नीज़ कहा कि नेहरू एक ऐसा मज़्बूत हाथ है, जिस पर अरब भरोसा कर सकते हैं। शहज़ादे ने कहा आप अरब नहीं लेकिन हमारे भाई हैं।

जानिबैन से मुहब्बत का मुज़ाहरा : शाह सऊद ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को नए माडल की सात नशिस्तों वाली एक कैडलॉक कार का तोहफ़ा दिया, उसके अलावा सोने की एक जैसी घड़ी और अरब पोशाकें भी दीं। और नेहरू ने शाह सऊद को राजस्थान का बना हुआ पीतल का एक लैम्प दिया जिस पर कुरआन मजीद की एक आयत कुन्दा है और अरब शहज़ादों को नेहरू ने इयर कन्डीशन रेडियो सेट और भारत की बनी हुई सिलाई की मशीनें दीं।

नेहरू के दौर-ए-सऊदीया पर हिन्दुस्तानी अख़्बारात का रद्दे अमल : हिन्दुस्तान के एक सेह रोज़ा देवबन्दी अख़्बार मदीना बिजनौर ने 5 अक्तूबर 1956 ई० के इदारिया का उनवान लिखा "मरहबा नेहरू रसूलुस्सलाम"

अख़्बार मज़्कूर अपनी यकुम नवम्बर 1956 ई० की इशाअत में लिखता है :

वज़ीरे आज़म नेहरू के दौरा सऊदी अरब के मुक़द्दस मौक़ा पर जद्दह में मौलाना करम अली ने वज़ीरे आज़म की ख़िदमत में सिपासनामा पेश किया जिसके बाज़ इक़्तिसाबात यह हैं "मुहर्रम वज़ीरे आज़म हम एक ऐसी सरज़मीन पर आपका इस्तिक़्बाल करते हुए बहुत मसरूर हैं,

जिनकी निगरानी एक ऐसी मोहतरम ज़ात के हाथ में है जो हमारा मज़्हबी इमाम और ख़लीफ़तुल-मुस्लेमीन है.........हम आपकी महबूब तरीन शख़्सियत पर फ़ख़्र करने आए हैं। हमारी दुआ है कि आप हमारे अज़ीम तरीन रहनुमा की हैसियत से हमेशा ज़िन्दा सलामत रहें। मोहतरम पंडित जी हम आज आपके एहसानात का शुक्रिया अदा करते हुए बड़ी खुशी महसूस करते हैं।

मोहतरम रहनुमा पंडित जी! हम आपके इस्तिक़्बाल और खुश आम्दीद कहने के लिए जो कुछ भी कहें या करें वह सब आपकी अज़ीम तरीन शख़्सियत को देखते हुए कम है। हम आपकी ज़ात पर फ़ख़्र करते हुए आपको बरकत व सलामती का पैग़ाम्बर समझते हैं। हम ने फ़ैसला किया है कि हम सब मिल कर यहाँ अपने महबूब तरीन लीडर की आमद की यादगार क़ायम करें........आली जनाब वज़ीरे आज़म मुबारकबाद। ऐ अज़ीम शख़्सियत के मालि.......अरब हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद शाह सऊद ज़िन्दाबाद......जवाहर लाल नेहरू ज़िन्दाबाद।

भारत के हिन्दू अख़्बार तेज के इदारिया में खुश आम्दीद पैग़म्बरे अमन के तहत हस्बे ज़ैल जुमले भी मौजूद हैं।

(1) प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुनिया में पहुंचे, तो उनका इस्तिक़्बाल पैग़म्बरे अमन के नारों से किया गया।

(2) अगर हम ग़लती नहीं करते, तो इस्लाम के मानी अमन के हैं सलामती के हैं। पैग़म्बरे इस्लाम के मानी भी अमन व सलामती के पैग़म्बर के हैं।

(3) पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुल्क के बासियों ने पंडित जी की इज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिए वही लफ़्ज़ मुन्तख़ब किया जिस पर उसे नाज़ है, जिसकी वजह से दुनियाए इस्लाम में अरब देश की इज़्ज़त है।

(4) पंडित जी के इस दौरा का नतीजा क्या होगा। यह तो वक़्त बताएगा, मगर उस से कुफ़्र और काफिर के फ़ल्सफ़ा में तब्दीली हो गई है।

पाकिस्तानी अख़्बारात व रसाइल का रद्दे अमल :

सिखर............यहाँ म्यूनिस्पल मुसाफ़िर ख़ाने में एक बहुत बड़ा जल्सा

आम मुनअक़िद हुआ, जिसमें नेहरू को सऊदी अरब में "रसूलुस्सलाम" कहने पर शदीद एहतिजाज किया गया और लोगों ने शाह सऊद और हुकूमते सऊदी अरब के ख़िलाफ़ नारे लगाए। जल्सा आम आल पार्टीज़ कॉंफ्रेंस के तहत हुआ।

रोज़नामा कोहिस्तान लिखता है :

हम शाह सऊद से पूछते हैं कि क्या पंडित नेहरू का दौरा तरतीब देते हुए उन्होंने ने यह नहीं सोचा कि वह किस शख़्स को इस मुक़द्दस सरज़मीन में आने की दावत दे रहे हैं। उस शख़्स को जिसकी क़ौम और जिसकी हुकूमत के हाथ मुसलमानों के ख़ून से रंगे हुए हैं, जिसके जेब दवामान पर नामूसे रिसालत की बेहुर्मती के धब्बे हैं। हम जानते हैं कि सऊदी अरब के आसमान पर इस्लाम का आफ़्ताब गहना चुका है और वहाँ हज़रत उमर की हुकूमत नहीं है, जिनके दौर में सऊदी अरब क्या पूरे जज़ीरतुल-अरब में कोई काफिर और मुश्रिक क़दम नहीं रख सकता था, लेकिन हमें यह नहीं मालूम था कि आले सऊद की दीनी ग़ैरत इतनी बेहिस हो चुकी है कि वह मुसलमानों के दुशमन को इस्लाम के गहवारे में बुला कर सीने से लगाएंगे। शाह सऊद को यह नहीं भूलना चाहिए कि वह जिस सरज़मीन पर हुकूमत करते हैं वह तमाम दुनिया के मुसलमानों के लिए मुतबर्रक है। उस पर मुसलमानों की एक बदख़्वाह हुकूमत के वज़ीरे आज़म का इतराते फिरना दुनिया के 40 करोड़ मुसलमानों के जज़्बात को मजरूह करने के मुतरादिफ़ होगा।

एक और इशाअत में रोज़नामा कोहिस्तान लिखता है :

आल सऊद ने पहली मरतब ख़ालिस सियासी मस्लेहतों के तहत एक बुत परस्त क़ौम के नुमाइन्दे को रियाज़ बुलाया और उसके इस्तिक़बाल के लिए ख़्वातीन और बच्चों को साथ ले गये और उन से जय हिन्द के नारे लगवाए। सऊदी अरब का यह फ़ेअ्ल सरासर बिदअत है, जिसकी कोई मुसलमान भी हिमायत नहीं कर सकता। अजीब बात है कि जिन हुक्मरानों ने सहाबा की पुख़्ता क़बरें और कुब्बे तक इसलिए धाड़ दिए हों कि वह उनकी नज़र में इस्लाम की तालीमात के मनाफ़ी थे। वही हुक्मरान आज अपनी सियासी मस्लेहतों के लिए एक ऐसे शख़्स को हिजाज़ में मदऊ करके इस्तिक़बाल करते हैं जो बुत परस्तों का नुमाइन्दा है और इस्लाम के हर मक्तब-ए-ख़्याल के उलमा

का मुत्तफ़ेक़ा फ़ैसला है कि कोई बुत परस्त इस्लाम के इस गहवारे में क़दम नहीं रख सकता।

रोज़नामा कोहिस्तान ही लिखता है :

आज अरबों के अमीरुल-मुमिनीन की यह हालत हो गई है कि वह इस्लाम के बुनियादी मोतक़ेदात से इंहिराफ़ करने लगा है, कुरआने हकीम का यह वाज़ेह हुक्म है। इन्नमल-मुश्रिकूना नजसुन फ़ला युक़र्रेबुल-मस्जिदल-हरामे बअ्दा आमेहिम हाज़ा। (9/28)

मुश्रिक नापाक हैं और उन्हें इस साल के बाद मक्का मुअज़्ज़मा के क़रीब न फटकने देना।

और शाह सऊद पंडित नेहरू को सर ज़मीने मुक़द्दस पर सैर सपाटा करा रहे हैं, अब यह मालूम नहीं कि शाह सऊद के नज़्दीक पंडित नेहरू मुश्रिक की तारीफ़ से बालातर हैं या उनका ख़्याल है कि मुश्रिक को मक्का मुअज़्ज़मा के बिल्कुल क़रीब नहीं आना चाहिए, उसे किसी क़द्र दूर रख कर घुमा फिरा दिया जाए, तो कोई मुज़ाइक़ा नहीं, बहरहाल कुरआन पाक का यह मफ़्हूम ऐसा ही है जो शाह सऊद पर ही मुंकशिफ़ हुआ।

शाह सऊद पहले शख़्स है। जिन्होंने इस रिवायत को तोड़ा और सनम ख़ाने के एक पास्बान को अर्ज़े काबा पर बुलाया और सिर्फ़ बुलाया ही नहीं, बल्कि ख़िलाफ़े रिवायात इस अन्दाज़ से इस बरहमन बच्चे का इस्तिक़्बाल किया। इस्तिक़्बाल के वक़्त जो नारे बुलन्द किए गये, उनमें एक नारा दुनिया के इस्लामी हल्क़ों में ख़ास तौर पर क़ाबिले एतराज़ समझा जा रहा है। वह यह है कि पंडित जी को रसूले अस्सलाम कहा गया है जिसके मानी पैग़म्बरे इस्लाम के हैं। पंडित नेहरू के हालिया दौरे से यह तअस्सुर भी शिद्दत अख़्तियार करता जा रहा है कि सऊदी मम्लिकत जो इस्लाम के नाम पर क़ायम हुई थी। महज़ नाम की इस्लामी हुकूमत है और उसका तरज़े अमल अज़मेना उस्ता की ईसाई केबू कड़ेक हुकूमतों से क़तअ़न मुख़्तलिफ़ नहीं, जो मज़्हब के नाम पर लोगों का नाजाइज़ इस्तेहसाल करती थीं। एक और अगली इशाअत में कोहिस्तान ने लिखा :

अरे! साहब अभी तो शुरूआत हैं। काबा और बुतख़ाना को हम दोश करने के लिए शाह सऊद और पंडित नेहरू जो कोशिशें कर रहे हैं। उस

में बरहमन का तो कुछ नहीं जाएगा, अल्बत्ता मुवह्हिद जो बुत शिकनी में सुबुक दस्त होता है, उसके मस्लेहत शनासी और रूबाही आ जाएगी अल्लाहु अक्बर एक दौर वह था, जब अल्लामा इब्ने अब्दुल-वहाब के नाम लेवा यह नारा लगाते थे कि हमारे लिए कुरआन व हदीस काफ़ी हैं। अब वह गीतानजली पढ़ते और पढ़ाते हैं। यह देख कर पंडित नेहरू को कितनी मुसर्रत हुई होगी वह क्यों न खुश हों वह कहते होंगे कि भारत के मुसलमानों को हिन्दू हज़ार साल से अपना मज़्हब पढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन वह पढ़ते दिखाई नहीं देते और मेरे सऊदी अरब के एक दौरे से अरबों की नई नस्ल में गीतानजली पढ़ने का ज़ौक़ व शौक़ पैदा कर दिया। सऊदी अरब के इस तजरबे के बाद अजब नहीं कि भारत के मुसलमानों को हुक्म हो जाए कि तुम अपनी मस्जिदों में आशोब भी सुनाया करो।

इब्राहीम जलीस मुतवफ़्फ़ी 1978 ई० लिखते हैं :

फ़िदायाने रसूल व आलमियाने इस्लाम का पैग़ाम।

जलालतुल-मलिक अल्लाह आप को मुहब्बते रसूल दे।

खुदा मालूम आपको मालूम है या कि नहीं कि हिन्दुस्तान के दस करोड़ मुसलमानों ने 1947 ई० में पाकिस्तान के नाम से एक अलग मुल्क बना लिया था। उस नौज़ादा मुल्क के बनते ही दुश्मनाने इस्लाम व मुस्लेमीन ने मुसलमानाने हिन्द को अपने नरज़े में ले लिया था और फ़िर उनका क़त्ले आम शुरू कर दिया था। चुनांचे हिन्दुस्तान से मज़्लूम मुसलमानों ने अपने आबाई वतन और घरों से भाग-भाग कर मरते गिरते बख़ाने क्या क्या मसाइब बर्दाश्त करने के बाद पाकिस्तान में सुकूनत अख़्तियार कर ली। लेकिन उसके बावजूद अब भी हिन्दुस्तान में पाँच करोड़ मुसलमान मौजूद हैं, यहाँ न उनकी जानें महफ़ूज़ हैं न उनकी औरतों की इस्मतें।

लेकिन ऐ कलीद बरदार हरम!

जब आप पिछले दिनों हिन्दुस्तान के सरकारी दौरे पर आए, तो इन हालात के बावजूद आपने हिन्दुस्तानी हुकूमत को यह सनदे शाही अता फरमा दी कि :

मैं बहैसियत मुहाफ़िज़ुल-हरमैन अश्शरीफ़ैन इस बात से मुत्मइन हों कि हिन्दुस्तान में मुसलमान अमन व सुकून में हैं और उनकी जानें

महफ़ूज़ हैं। वग़ैरह वग़ैरह

यक़ीन कीजिए शाह!

आपकी इस सनदे शाही की तशहीर के बाद हमें मुहम्मद शाह रंगीले के फरमानें बेसाख़्ता याद आ गए थे और हम यह भी समझ गये थे कि तुर्क की मुसलमान क़ौम आप और आपकी हुकूमत से क्यों ग़ैर मुत्मइन रही है। इस वाक़ए के बाद आपने एक ग़ैर मुस्लिम सरबराहे मम्लिकत को सरज़मीने हिजाज़े मुक़द्दस के सरकारी दौरे की दावत दी और 4 सितम्बर 1956 ई० को भारत के वज़ीरे आज़म पंडित जवाहर लाल नेहरू जब आपके दारुल-ख़िलाफ़ा रियाज़ पहुंचे, तो आपकी हुकूमत के इकट्ठे किए हुए अवाम ने या रसूलुस्सलाम नेहरू के शर्मनाक नारों से उनका इस्तिक़्बाल किया था इस इस्तिक़्बाल करने वालों में अरब के वह क़बाइली बद्दू और औरतें भी शरीक किए गये थे। जो किसी दुशमन इस्लाम फ़रियादे क़ौम के लिए अपने दिलों में जज़्बाते एहतराम नहीं रखते। फिर सब से बड़ा इज्तिहाद जो आप जैसे क़ाते बिदआत ने किया, वह यह था कि अरब की ख़्वातीन को ग़ैर मुहरिमों के अंबोह कसीर में ला कर उन से एक ग़ैर महरिम ग़ैर मुस्लिम शख़्स का इस्तिक़्बाल, सरज़मीने हिजाज़ पर रसूल जैसे मुतबर्रक व मुक़द्दस ख़िताब से कराया।

शाहे क़िब्लां शिकन!

पंडित जवाहर लाल नेहरू को रसूल के नाम से आपने या आपकी क़ौम ने याद करके पाकिस्तान के 9 करोड़ मुसलमानों की जो दिल आज़ारी की वह नागुफ़्ता बह है। आपको किसी ने यह बात ग़लत बता दी कि पाकिस्तान में ऐसी क़ौम आबाद है जो अरबी ज़बान से नावाक़िफ़ है और अरबी ज़बान के मानी व मतालिब से आगाह नहीं है। आपके सिफ़ारतख़ाने लफ़्ज़ रसूल के लिए जो तावीलात वज़ा कर रहे हैं, उस से उनकी बेचारगी और निदामते जुर्म मुतरश्शह हो रही है।

जलालतुल-मलिक : हम मुसलमानाने आलम हैरान हैं और आप जैसे अक़ाइद मज़्हबी रखने वाले लोग एक ऐसे शख़्स को तो "रसूल" जैसे अज़ीम लक़ब से खुश आम्दीद कह सकते हैं जो बतनन व नस्लन बुत परस्त और मस्लकन ला मज़्हब है, लेकिन कोई

मुसलमान हयातुन्नबी ख़ातमुर्रुसुल हुज़ूरे रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वफ़ूरे जज़्बात व अक़ीदत लवाज़िमे एहतराम और वाजिबाते इस्तिग़ासा में या रसूलुल्लाह, या मुहम्मद, या मुस्तफ़ा कह कर याद कर ले तो उसे काफ़िर व मुश्रिक क़रार दे दिया जाता है।

यह कौन सी मन्तिक़ है? ....यह कौन सा अक़ीदा है?....... यह कौन सा मज़्हब है.........अस्तग़्फ़िरुल्लाहु रब्बी।

आप लोगों ने जन्नतुल-बक़ीअ् के तमाम आसारे मुक़द्दसा को शहीद करा दिया, सदहा अस्हाबे किबार के क़ुबूर को मिस्मार करा दिया। गुंबदे ख़ज़रा आरामगाह रसूले सर चशमा अनवारे इलाही के मआद से ज़मीन बोसी को हराम और जुर्म क़रार दिया है और आप और आपके हम मस्लक अक़ीदा लोगों ने यह हुक्म भी लगा दिया कि ख़त्मुल-मुरसलीन नबी आख़िरुज़्ज़मा हयातुन्नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो शख़्स खड़े हो कर या रसूल सलाम अलैका पढ़े वह मुश्रिक काफ़िर और इस अक़ीदे पर इसरार करे, तो मुर्तद और वाजिबुल-क़त्ल!

लेकिन आज यह क्या हुआ कि एहतरामे रसूल को बिदअत व शिर्क व कुफ़्र कहने वाले मुक़ल्लेदीने इब्ने अब्दुल-वहाब नज्दी एक ऐसी क़ौम के सरबराह का इस्तिक़्बाल या रसूलुस्सलाम के नारों से करने हैं, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दुश्मन इस्लाम है और लाखों देवी देवताओं का पुजारी है। अल्लाहु अक्बर!

ऐ शाह!

हम आज समझे कि बड़े-बड़े जो ग़ादरियों के अक़ाइद व मस्लक के आहिनी क़िलों को सियासी तक़ाज़े एक ही झटके में मिस्मार कर देते हैं।

हम पूछते हैं कि क्या आज सऊदी अरब ने किसी डाकिये या पोस्ट मैन या किसी भी पैग़ामे रसां को अह्ले ज़बान या दिहाती लोग रसूल कह कर पुकारते हैं?

हम पूछते हैं कि अरब से किसी भी गोशे में क्या कोई ऐसा बदनसीब शख़्स है, जो रसूल का लफ़्ज़ अंबिया मुरसलीन के अलावा आम आदमियों अलल-ख़ुसूस किसी मुश्रिक व बुत परस्त या ला मज़्हब शख़्स के लिए बोलता या लिखता हो।

हमारे सवालात का जवाब यक़ीनन नफ़ी में है और हम निहायत

वसूक़ के साथ कहते हैं कि हुज़ूर पुर नूर (रूही फ़िदाह) की शान में गुस्ताख़ाना ख़्यालात रखने और बारगाहे रिसालत में अपने मुआमलात साफ़ न रखने की पादाश में अरब हाकिमों से यह हिमाक़त और दीवानगी सरज़द हुई है। तवाजु व मेज़बानी अरबों का तुर्रह इम्तियाज़ है लेकिन :

ऐ कलीद बिरादरे हरम!

आपने यह भी ग़ौर किया कि सियासी इस्तेहकाम और ज़ाती हुब्बे जाह के लिए आज आपकी मेज़बानी अपनी हुदूद से बढ़ कर दुशमनी दीन और शमातते रिसालत के क़स्रे मंज़िलत और जुहूर ज़लालत की सरहदों पर आ पहुंची है।

आप तमाम हज़रात ग़ैर मशरूत तौर पर इक़रारे गुनाह कर लें। इस नाज़ुक मरहले पर तावीलात और इस्तिदलाल के सहारे बड़े शर्मनाक हैं इस रास्ते में -

बाख़ुदा दीवाना बाशद बा मुहम्मद होशियार

का अक़ीदा वाजिब लाज़िम है और तावीलात "उज़्र गुनाह बदतर अज़ गुनाह" के मुतरादिफ़ हैं। खुदावन्दे करीक आपको मुहब्बते रसूल दे और यह तौफ़ीक़ भी अरज़ां फरमाए कि आप या आपकी हुकूमत मुसलमानाने आलम की इस दिल आज़ारी के सिलसिले में नादिम हो।

एहतिशामुल-हक़ थानवी : रोज़ नामा जंग के पहले सफ़े पर जली सुर्ख़ियों के साथ एहतिशामुल-हक़ थानवी साहब का यह बयान शाए हुआ।

कराची 27 सितम्बर (स्टाफ़ रिपोर्टर) मौलाना एहतिशामुल-हक़ थानवी नेआज रात एक बयान में कहा है कि सर ज़मीने हिजाज़ के दारुल-ख़िलाफ़ा रियाज़ में भारती वज़ीरे आज़म पंडित नेहरू के इस्तिक़्बाल पर "मरहबा नेहरू व रसूलुस्सलाम" से जो नंग इस्लाम और इस्लाम सोज़ नारे लगाए गये, उन से न सिर्फ़ यह कि मुसलमानाने आलम के दीनी व मिल्ली जज़्बात ग़ैरत को नाक़ाबिले बर्दाश्त सदमा पहुंचा है, बल्कि मुतवल्ली हरमैन शरीफ़ैन की इस मुवह्हिदाना दीनदारी का पोल भी खुल गया, जिसका सारे आलमे इस्लाम में वहाबियों की तरफ़ से डंका पीटता जाता रहा है, इस से क़तअ़ नज़र कि सरज़मीने तौहीद

और गहवार-ए-इस्लाम में एक सनम परस्त बल्कि मुंकिरे खुदा और अल्लाह के बाग़ी को दावते तक्रीम देना और जो रसूल में बसने वाले मुवह्हिदीन मर्दों और औरतों से ख़ैर मक़्दम व इस्तिक़्बाल कराना पासबाने हरम के लिए कहाँ तक ज़ेब देता है या उस एहसासे ज़िम्मेदारी को कहाँ तक पूरा करता है जो हरमैन शरीफ़ैन की तौलियत पर मुसलमानाने आलम की तरफ़ से आयद होती है। खुद यह बात भी अपनी जगह इंतिहाई शर्मनाक और ग़ैर इस्लामी है कि पंडित नेहरू के लिए रसूलुस्सलाम जैसे इस्तेलाही अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए जाएं। सऊदी अरब के सफ़ारत ख़ाने से जो वज़ाहती बयान दिया गया है कि नामा निगार अरबी को अब्जद से भी वाक़िफ़ नहीं है और रसूल से क़ासिद के मानी मुराद हैं। नबी के मानी मुराद नहीं। मेरे नज़्दीक यह "उज़्र गुनाह बदतर अज़ गुनाह" का मिस्दाक़ है और मुम्किन है कि नामा निगार अरबी की अब्जद से हक़ीक़त में वाक़िफ़ न हो, लेकिन सऊदी अरब के सिफ़ारती तरजुमान से ज़्यादा वाक़िफ़े इस्लाम ज़रूर मालूम होता है और इल्ज़ाम की तरदीद करने वाले तरजुमान मुम्किन है कि अरबी की महारते ताम्मा रखते हों। मगर इस्लाम और तालीमाते इस्लाम की अब्जद से भी नाआशना मालूम होते हैं। मरहबा रसूलुस्सलाम के नारा से अदना से अदना रखने वाले को भी यह ग़लत फ़हमी नहीं होती है कि पंडित नेहरू को नबी या पैग़म्बर बना दिया या उस लफ़्ज़ से नबी के मानी मुराद लिए हैं, बल्कि यह समझते हुए भी कि रसूल से क़ासिद के ही मानी मुराद लिए गये हैं। यह एतराज़ है कि लफ़्ज़ रसूले इस्लाम और कुरआने करीम की बिल-खुसूस इस्तेलाह है जिसकी हैसियत शआइरिल्लाह और शआइरे इस्लाम की है जैसे कुरआन, मस्जिदे हराम, मस्जिदे अक़्सा वग़ैरह क़िस्म के बेशुमार अल्फ़ाज़ इस्लामी शआइर हैं जो अपने लुग़वी मानों से निकल कर इस्तेलाही मानी के लिए ख़ास हो गये हैं। अब इन अल्फ़ाज़ को लुग़वी मानी में इस्तेमाल करना बिल-खुसूस उन लोगों की तरफ़ से जिनको अरबी ज़बान के इस्तेमाल करने में हुदूदे दीन का पास रखना ज़रूरी है। क़तअन नाजाइज़ व हराम है बल्कि शआइरिल्लाह की खुली हुई बेहुर्मती और तौहीन है।

अ चूं कुफ़्र अज़ काबा बर ख़ेज़ व कजा मांद मुसलमानी

क्या किसी मुसलमान को यह इजाज़त है कि वह अपनी तस्नीफ़ का नाम किताबुल्लाह अपने घर का नाम बैतुल्लाह और अपनी मस्जिद को मस्जिदे हराम अपने बाग़ को जन्नत अपने तालाब का नाम कौसर और तन्नूर का जहन्नम और अपने पोस्ट मैंनक का नाम रसूल रख ले, हालांकि लुग़वी एतबार से यह सब नाम सही हैं। क्या कुरआने करीम में या ऐयुहल्लज़ीना आमनू ला तक़ूलू राइना व क़ालू अंजुरना। में अल्फ़ाज़ का अदब मुसलमानों को नहीं सिखाया गया है। क्या हदीस के अन्दर मुसलमानों को खुबुस नफ़्सी की मुमानेअत से यही अदबे अल्फ़ाज़ नहीं बतलाया गया है।

सऊदी अरब के सिफ़ारती तरजुमान को मालूम होना चाहिए कि मुसलमान की अरबी ज़बान भी वह ज़बान है जिस में इस्तेलाहाते कुरआन की हुर्मत का लिहाज़ रखा गया है। अगर अल्लाह के बाग़ी के एहतराम में आज नामूसे रसूल को यह कह कर भेंट चढ़ाया गया कि रसूल के मानी क़ासिद के हैं, तो आइन्दा तमाम शआइर अज़ इस्लाम की हुर्मत कभी बाक़ी न रह सकेगी। फिर सलामती और अमन का इस्तेमाल भी किस क़द्र हया सोज़ और इज़्ज़त कश है कि जिसके मुल्क में आए दिन ख़ून मुस्लिम से होली खेली जाती हो वह क़ासिदे अमन तो किया होता उस में अमन व सलामती का अदना शाइबा भी मौजूद नहीं है। खुदा की शान है कि मर्दुम खुर्द दरिन्दों को क़ासिदे अमन के लक़ब से याद किया जाए।

जुनूं का नाम ख़िरद रख लिया ख़िरद का जुनूं
जो चाहे आपका हुस्न करिशमा साज़ करे

हम आख़िर में पास्बाने हरम से साफ़ तौर पर यह कह देना चाहते हैं कि हरमैन शरीफ़ैन मुसलमानाने आलम की अमानत हैं और उन पासबानों की तरफ़ से नामूसे रसूल की बेहुर्मती कभी बर्दाश्त नहीं की जा सकती।

सैयद अबुल-आला मौदूदी : सैयद अबुल-आला मौदूदी ने 1959/60 ई० में म्मालिके अरबीया का सफर किया। उस सफर में उनके रफ़ीक़ मुहम्मद आसिम नाम के एक ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम थें मौदूदी साहब ने सऊदी अरबीया की हिन्द नवाज़ पालीसी और पंडित

नेहरू मरहबा या रसूलुस्सलाम कहने पर सख़्त तन्क़ीद की। मुलाहिज़ा फरमाइए मुहम्मद आसिल लिखते हैं :

3 बजे के क़रीब दोपहर का खाना हुआ। बिल्कुल मग़रेबी तरज़ पर मौलाना खाने के दौरान अपनी गुफ़्तगू में अरब क़ौमियत के फ़ित्ना की ख़ूब ख़बर ली और उन लोगों को बताया कि मुसलमानों के साथ हिन्दुस्तान का मुआमला अरबों के साथ इस्राईल के मुआमला से किसी तरह कम या मुख़्तलिफ़ नहीं है, लेकिन अरब क़ौमियत का नतीजा यह है कि जब आपके इस मुल्क में पंडित नेहरू आए, तो यहां के बहुत से अख़्बारात ने उन्हें रसूलुस्सलाम (अमन का पयाम्बर) का लक़ब देते हुए उनका शानदार इस्तिक़्बाल किया, लेकिन आप ही बताएं कि अगर पाकिस्तान के बन गोरियों वज़ीरे आज़म इस्राईल को अपने हाँ बुलवायें और फिर उसका इसी शान से इस्तिक़्बाल करें, तो आप लोगों की क्या कैफ़ियत होगी। अमीर अब्दुल्लाह ने इस बात की मुज़म्मत की कि बाज़ अरब हुकूमतें हिन्दुस्तान को पाकिस्तान पर तरजीह देती हैं, लेकिन अपनी मम्लिकत के मुतअल्लिक़ उन्होंने बताया कि यहाँ बहरहाल पाकिस्तान को मुक़द्दम समझा जाता है।

एक और मक़ाम पर मुहम्मद आसिम साहब लिखते हैं !

एक नौजवान ने मौलाना से सवाल किया। आप पाकिस्तानी हज़रात ने अरबों के क़ौमी मसाइल में क्या किया है? मौलाना ने इस सवाल का जवाब दिया कि हम ने अपने अरब भाईयों के मसाइल में हमेशा उनकी ताईद की है और आइन्दा भी करते रहेंगे, लेकिन इस ताईद की बुनियाद आप लोगों का यह नारा नहीं है जिसे आप अरब क़ौमियत के नाम से लगा रहे हैं, बल्कि इस बुनियाद वह दीनी राबता हे जो हमारे और आपके दर्मियान अल्लाह तआला ने क़ायम किया है। आप हज़रात इस दीनी राबता को ख़त्म करने के दरपे हैं, लेकिन इसके बावजूद हम अब तक उसकी पास्दारी कर रहे हैं और इन्शाअल्लाह आइन्दा भी करते रहेंगे, जब से पाकिस्तान मुअ्रिज़े वजूद में आया है, उसने न सिर्फ़ फ़िलस्तीन और अल-जज़ाइर बल्कि अरबों के तमाम दूसरे मसाइल में उनकी ताईद की है, लेकिन आप हज़रात को यह मालूम होना चाहिए कि हर क़ौम जो एक ख़ास मुल्क में रहती हो, उसके कुछ अपने मसाइल भी होते हैं जिन से उसे बहरहाल निपटना होता है। अगर आप लोगों को

फ़िलस्तीन और अल-जज़ाइर या दूसरे मसाइल दरपेश हैं तो हम पाकिस्तानियों का भी कशमीर का मस्अला दरपेश है। अगर यहूदियों ने आपके दस लाख अफ़राद को क़त्ल और जला वतन किया है तो हिन्दुओं ने हमारे एक करोड़ के क़रीब अफ़राद को क़त्ल और जला वतन किया है और अब तक हिन्दुस्तान और कशमीर में उनके जुल्म व सितम का सिलसिला जारी है। आप लोग अपनी याददाश्त पर ज़ोर डाल कर ज़रा मुझे बताइए कि इस पूरे अल्मिया में आप लोगों ने हमारी कहाँ तक ताईद की है? मुझे यक़ीन है कि आप लोग उसका कोई जवाब न दे सकेंगे, लिहाज़ा मैं खुद ही उसका जवाब देता हूँ। आप लोगों ने हमारी मदद यूं की है कि जब हिन्दुस्तान व कशमीर में मुसलमानों के ख़ून से होली खेली जा रही थी, तो आप लोगों ने अपनी ज़बानों पर कुफ़्ल चढ़ा लिए थे। आपके अख़्बारात ने उसकी मुज़म्मत में चन्द सतरें लिखने की ज़रूरत महसूस नहीं की, उसके मुक़ाबला में पाकिस्तान के तमाम अख़्बारात ने आप लोगों पर किसी तरफ़ से जो भी ज़्यादती हुई उसकी हमेशा मुज़म्मत की है और अब तक कर रहे हैं। काश आप लोगों की करम फरमाई यहीं तक महदूद रह जाती। मगर आपने इस्बाती ग़ैर जानिबदारी और अमन व सलामती के अलम्बरदार (अबतालु अल-हयादुल-ईजाबी व रुसुलुस्सलाम) का लक़ब देते हुए उन लोगों की तरफ़ दोस्ती व मुहब्बत का हाथ बढ़ाया, जिनके हाथ अब तक मुसलमानों के ख़ून से रंगे हुए हैं। काश हिन्दुस्तान को आप लोगों की दोस्ती का वाक़ई पास होता, मगर उसने आपको कोई उक़्अत न देते हुए इस्राईल को तस्लीम किया और अब तक तस्लीम किए हुए है। उसके मुक़ाबले में पाकिस्तान ने अब तक न इस्राईल को तस्लीम किया है और न कभी इस्राईल के किसी बाशिन्दे को अपनी सरज़मीन में क़दम रखने की इजाज़त दी है। सोचिए! अगर खुदानख़्वास्ता आप लोगों की ज़िद में हम लोग भी इस्राईल को तस्लीम कर लें और उसके साथ दोस्ती व मुहब्बत के रवाबित पैदा करने लगें और बिन गोरियों को अपने मुल्क में आने की दावत दें और उसके लिए रसूले अकरम के नारे लगा कर उसका इस्तिक़्बाल करें, तो क्या इस सूरत में आप लोग हमें कुछ भी मुलामत करने का हक़ नहीं रखते हैं? लेकिन नहीं मैं तो उसे आप लोगों के सामने एक मफ़रूज़ा के तौर पर बयान कर रहा हूँ वरना हम पाकिस्तानी

मुसलमान उसका ख़्याल तक दिल में नहीं ला सकते इसलिए कि हमारा दीन हमें उसकी हरगिज़ इजाज़त नहीं देता, लिहाज़ा मुझे उम्मीद है कि इस मफ़रूज़ा के ज़िक्र से आप लोगों की दिल आज़ादी नहीं होगी।

सऊदी अरबीया के आम अन्दरूनी हालात

सैयद अबुल-आला मौदूदी ने 1959/60 ई० में म्मालिके अरबीया का जो सफर अख़्तियार किया था उसकी पूरी रूदाद उनके रफ़ीक़े सफर एक ग़ैर मुक़ल्लिद आलिम मुहम्मद आसिम ने क़लम बन्द की है जो सफर और हज़रते ख़ल्वत और जल्वत में हमा वक़्त शरीक रहे, उन्होंने तमाम वाक़ेआत को इसी तरह बयान करने की कोशिश की है जैसा कि खुद देखा है या सुना है। हम इस सफरनामा के बाज़ इक़्तिबासात हदिया क़ारेईन कर रहे हैं जिस से सऊदी अरब के आम अन्दरूनी हालात नाज़िरीन के सामने आ जाएंगे।

कस्टम की चेकिंग : मुहम्मद आसिम साहब लिखते हैं :

कस्टम पर मुझे कोई दिक़्क़त पेश न आई। अगरचे मेरे साथ कुछ किताबें थीं और उन में से बाज़ किताबें उन लोगों की इस्तिलाह के मुताबिक़ मज़्हबी थीं, लेकिन कस्टम आफ़ीसर साहब ने उन किताबों पर शक व शुबह की निगाह नहीं डाली, क्योंकि बाज़ किताबों के देखने से उन्हें यह अन्दाज़ा हो गया कि मैं भी एक सलफ़ियुल-अक़ीदा यानी ग़ैर मुक़ल्लिद अह्ले हदीस, (सऊदी) आदी हों। इसलिए उन्होंने मेरी सख़्ती से तलाशी लेने को ज़रूरी न समझा, मुझे भी सबसे ज़्यादा डर किताबों ही का था, क्योंकि किताबों की तलाशी के सिलसिले में गुज़िश्ता सफर 1956 ई० में जद्दह के हवाई अड्डे पर हमें जिस परेशानी का सामना हुआ था वह मुझे ख़ूब याद थी। दुनिया के दूसरे मुल्कों में ग़ैर मज़्हबी किताबों की तो ख़ूब जांच पड़ता होती है, लेकिन मज़्हबी किताबों पर कोई एतराज़ नहीं किया जाता। सऊदी अरब का मुआमला उसके बरअक्स है। यहाँ दूसरी किताबों का तो यूं समझिये कि कोई नोटिस ही नहीं लिया जाता, लेकिन मज़्हब और खुसूसन अक़ाइद से मुतअल्लिक़ किताबों को बड़े शक व शुबह की निगाह से देखा जाता है और बाज़ औक़ात जब कस्टम वाले खुद उनके मुतअल्लिक़ कोई राय क़ायम नहीं कर सकते,

तो उन्हें तहक़ीक़ के लिए उलमा के पास भेज देते हैं। यानी जब तक उलमा उन्हें नाक़ाबिले एतराज़ फरार न दें, उन्हें मुल्क के अन्दर दाख़िल नहीं होने दिया जाता।

सऊदियों की इबादत की कैफ़ियत : मुहम्मद आसिम साहब लिखते हैं :

मग़्रिब की नमाज़ हम ने मुहल्ला की मस्जिद में पढ़ी मस्जिद नई बनी हुई थी और सादगी के साथ पुख़्ता कुशादा और ख़ूबसूरत मालूम हुआ कि सऊदी हुकूमत ने ख़ैर, दिमाग़, ज़हरान, रासुत्तन्नूरह, बक़ीक़ की तमाम बस्तियों और कम्पनी के मुलाज़िमीन के तमाम कुवार्टरों में ऐसी मस्जिदें तामीर करवाई हैं और उनके मसारिफ़ भी ख़ुद बर्दाश्त कर रही है। मस्जिदों का ज़िक्र आया है, तो क़ारेईन के लिए यह बात ग़ालिबन दिल्चस्पी से ख़ाली न होगी कि तमाम अरब म्मालिक में हमारे हाँ की तरह मस्जिदों में वुज़ू वग़ैरह का इंतिज़ाम नहीं होता। तमाम लोग अपने-अपने घरों से वुज़ू करके मस्जिद आते हैं। दूसरी बात यह कि तमाम अरब म्मालिक में लोग जूते पहने-पहने मस्जिदों में बेधड़क चले आते हैं और सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने से पेश्तर चटाई यावरी के क़रीब जूते उतार देते हैं, बल्कि बाज़ तो उस वक़्त भी जूता नहीं उतारते और जूतों समेत नमाज़ पढ़ लेते हैं। यह चीज़ अगरचे तमाम अरब में मुश्तरक है, लेकिन सऊदी अरब खुसूसन नज्द के बाशिन्दे तो उसमें इंतिहाई गुलू बरतते हैं। यह सही है कि मस्जिद में जूता पहन कर दाख़िल होना जाइज़ है और बकसरत मौक़ों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाब-ए-किराम ने मस्जिद के अन्दर जूतों के साथ नमाज़ पढ़ी है, लेकिन ऐसा सिर्फ़ ज़रूरत के तहत ही हुआ है। अगर मस्जिद का फ़र्श पुख़्ता न हो या धूप से गर्म हो रहा हो तो जूता पहन कर मस्जिद में दाख़िल हुआ जा सकता है और जूतों के साथ नमाज़ पढ़ी जा सकती है, लेकिन पुख़्ता फ़र्श और बेहतरीन क़िस्म की चटाइयाँ और दरियों की मौजूदगी में भी जूते लेकर मस्जिद में दाख़िल होना और जूतों समेत नमाज़ पढ़ना ख़्वाह मख़्वाह की ज़्यादती और हटधर्मी है, उसके बरअक्स हमारे हाँ हर हाल में मस्जिदों के अन्दर जूते पहन कर जाने और जूतों समेट नमाज़ पढ़ने को मस्जिद और नमाज़ के एहतराम के मनाफ़ी

ख़्याल किया जाता है, बल्कि अगर कोई शख़्स मैदान में भी जूतों समेत नमाज़ पढ़ ले, तो उस पर सख़्त एतराज़ किया जाता है, हालांकि एतदाल की राह दोनों के दर्मियान है।

मस्जिद के इमाम साहब एक नज्दी नौजवान थे जो अभी-अभी रियाज़ के किसी मदरसा से फ़ारिग़ हो कर आए थे वह नमाज़ पढ़ाने खड़े हुए तो तक्बीरे तहरीमा से पहले जेब से मिस्वाक निकाल कर मुँह में फेरने लगे और फिर इसी तरह उन्होंने उसे जेब में डाल कर नमाज़ शुरू की। नमाज़ इतनी तेज़ पढ़ाई कि हम लोगों के लिए उनका साथ देना बड़ा मुश्किल था। कुरआन इस तरह रूखे सूखे बल्कि ग़लत तरीक़े पर पढ़ा कर हमें न सिर्फ़ उसके सुनने से कोई लुत्फ़ नहीं आया, बल्कि सख़्त कोफ़्त हुई। मौलाना के बक़ौल हमारे दिहात के मुल्ला भी उन से अच्छा कुरआन पढ़ते और सुकून से नमाज़ पढ़ाते हैं।

हमारे पाकिस्तानी अहबाब ने बताया कि यह इमाम साहब तो फिर भी कुरआन मजीद ग़नीमत पढ़ते हैं वरना यहाँ की दूसरी मस्जिदों का हाल तो इससे भी बुरा है। एक तरफ़ तो मिस्रियों, शामियों और इराक़ियों की यह "तरी" है कि वह कुरआन मजीद को भी क़व्वालों की तरह गा-गा कर पढ़ते हैं और दूसरी तरफ़ नज्दी हज़रात की यह "खुश्की" कि उनके बड़े-बड़े उलमा तक गोया कुरआन मजीद को सही मख़ारिज और उम्दा आवाज़ के साथ पढ़ना बिदअत समझते हैं। फिर नज्दी हज़रात की एक खुसूसियत यह भी है कि जब वह नमाज़ पढ़ते हैं तो कभी सुकून से खड़े नहीं होते। कभी अपने कपड़े ठीक करने लग जाते हैं और कभी उन्हें याद आता है कि उनके कुर्ते के बटन बन्द नहीं हैं या उनके सर का रूमाल टेढ़ा हो गया है और वह उसे ठीक करने लगते हैं हत्ता कि बाज़ लोग तो नमाज़ के दौरान घड़ी पर वक़्त देखने में भी कोई हरज नहीं समझते। यह सब बातें अगरचे हमारे लिए नई नहीं थीं और पहले भी उनका तजरबा था, लेकिन इस सफर में क्योंकि पहली मरतबा उनका मुशाहिदा हो रहा था, इसलिए हमें सख़्त कोफ़्त हो रही थी। मौलाना तौरात गये तक बार-बार उनका ज़िक्र करते रहे।

इसी मौज़ूअ् पर एक और जगह मुहम्मद आसिम साहब लिखते हैं।

13 नवम्बर को हम अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ ज़हरान गये और वहाँ भी ग्यारह बजे साढ़े बारह बजे तक सवालात व जवाबात का सिलसिला

रहा। उस दिन जुमा था। जुमा की नमाज़ हम ने कुवार्टरों की ही एक मस्जिद में पढ़ी। ख़तीब व इमाम एक नज्दी आलिम थे। खुत्बा तो उन्होंने ग़नीमत दिया, लेकिन नमाज़ में कुरआन मजीद की क़िरअत सही न थी। ऐसा मालूम होता है कि नज्द में कुरआन मजीद की सही क़िरअत सिखाने का कोई इंतिज़ाम नहीं है और यह एतमाद कर लिया गया है कि जब यह लोग अरब हैं तो कुरआन आप से आप सही पढ़ेंगे।

आल शैख़ नज्दी के लिए मुराआत : सऊदियों की दीनी तालीमात से लापरवाही और शैख़ नज्दी की आल सके लिए खुसूसी मुराआत के सिलसिले में मुहम्मद आसिम लिखते हैं।

उस रोज़ जुमा था। नमाज़ के वक़्त से कुछ पहले उस्ताद अब्दुल-हकीम आबिदीन अपने एक दोस्त शैख़ अब्दुल्लाह अल-मुस्अरी के साथ तशरीफ़ लाए जो सऊदी हुकूमत की वज़ारते क़ानून के सिक्रेट्री हैं, उनके साथ हम युनिवर्सिटी के क़रीब एक मस्जिद में जुमा पढ़ने के लिए गये। एक नौजवान ख़तीब खुतबा दे रहा था। खुत्बा क्या दे रहा था उसने पहले से एक खुत्बा कागज़ पर लिख रखा था या कहीं से नक़ल कर लिया था और उसी को पढ़ रहा था। सुना है कि रियाज़ में बड़े-बड़े उलमा तक का यही हाल है हत्ता कि मुफ़्ती अक्बर शैख़ मुहम्मद बिन इब्राहीम भी "मज्मूआ ख़तीब अय्यामुल-जुमा" नामी किताब से एक खुत्बा ज़बानी याद करके सुना देते हैं। यह भी मालूम हुआ कि बड़े-बड़े दीनी मनासिब आल अश्शैख़ (शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल-वहाब के ख़ानदान) के लिए मख़्सूस हैं और दूसरे लोग सिर्फ़ इसी सूरत में किसी दीनी मन्सब पर मुक़र्रर किए जाते हैं ज़बकि आल शैख़ में कोई आदमी मौजूद न हो। हरमे मक्की के ख़तीब अगरचे शैख़ अब्दुल-मेमन (मिस्री) हैं लेकिन वह हरम के ख़तीब अव्वल नहीं हैं बल्कि ख़तीब आल शैख़ के एक फ़रज़न्द शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ बिन हसन हैं, जो इन दिनों वज़ारते तालीम के सिक्रेट्री थे और अब वज़ीर हो गये हैं सारा साल रियाज़ में रहते हैं अल्बत्ता कभी कभार मक्का मुअज़्ज़मा जा कर हरम में खुतबा दे आते हैं।

नज्दियों के पाकिस्तानी ग़ैर मुक़ल्लिदों से रवाबित: नज्दियों और ग़ैर मुक़ल्लिदों के रवाबित के बारे में मुहम्मद आसिम

लिखते हैं :

अमीर मुसाइद का मकान भी क़दीम रियाज़ की एक गली में वाक़े है और उस पर कोई झण्डा या अलामती निशान भी नहीं है और न डेयोढ़ी पर पुलिस का पहरा है (दो चार सिपाही अन्दर कहीं हों तो और बात है) इसलिए शैख़ का ड्राइवर उनका मकान न पहचान सका और हम एक दूसरी गली में एक दूसरे के अमीर के हाँ पहुंच गये। हमें तो ख़ैर कुछ पता ही न था, लेकिन शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ और उस्ताद अब्दुल-हकीम आबिदीन को वहाँ पहुंचते ही अन्दाज़ा हो गया कि हम ग़लत जगह आ गये हैं। वहाँ से निकलने के बाद उस्ताद अब्दुल-हकीम आबिदीन ने हमें हक़ीक़ते हाल से मुत्तला किया। उसके बाद हम अमीर मुसाइद के हाँ पहुंचे, मगर वह भी मौजूद न थे। फिर शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ हमें अपने मकान पर ले आए जो क़दीम रियाज़ ही की एक गली में वाक़े है। वहाँ उनके शागिर्दों और अक़ीदत मन्दों का हल्क़ा लगा हुआ था। मज्लिस निहायत सादा और ज़मीन पर क़ालीन के फ़र्श की थी तमाम हाज़िरीन ने रस्मी सलाम व मुसाफ़हा के बाद अपना-अपना तआरुफ़ कराया और अपने पाकिस्तानी सल्फ़ी भाईयों का हाल दरयाफ़्त करने लगे। नज्दी उलमा और उनके मुतअल्लेक़ीन जब भी किसी पाकिस्तानी या हिन्दुस्तानी मुसलमान से मिलते हैं यहाँ के अह्ले हदीस हज़रात के मुतअल्लिक़ ज़रूर सवाल करते हैं। हम ने मुज्मल अल्फ़ाज़ में उन्हें पाकिस्तान के अह्ले हदीस हज़रात की ख़ैरियत की इत्तिला दी, उसके बाद मौलाना ने शैख़ की ख़िदमत में अपनी चार अरबी किताबें रिसाला दीनीयात, इस्लाम का निज़ामे हयात, मुसलमानों का माज़ी और हाल और कुरआन की चार बुनियादी इस्तेलाहें पेश कीं।

क़दीम और जदीद तबक़ों की नज़्रियाती

कशमकश : सऊदी अरबीया में रजअत पसन्दी और तरक़्क़ी पसन्दी की जंग जारी है। एक तबक़ा उलमा का हामी है और बेश्तर मग़रेबी रंग में रंग हुआ है। इस मौज़ूअ् पर मुहम्मद आसिम लिखते हैं:

उसी रात हमें एक और सोहबत में अरब की दो अहम शख़्सियतों के दर्मियान एक दिलचस्प और गरमा गर्म बहस सुनने का इत्तिफ़ाक़ हुआ जिस से सऊदी अरब की अन्दरूनी हालत के मुतअल्लिक़ हमारी

मालूमात में बड़ा इज़ाफ़ा हुआ। उन में से एक साहब उलमा की तारीफ़ और मुदाफ़िअत कर रहे थे और दूसरे साहब कह रहे थे। कि उन उलमा की आम नौजवानों की नज़र में कोई क़ीमत नहीं है नौजवान यह समझते हैं कि यह उलमा-ए-इस्लाम के सही नुमाइन्दा नहीं हैं। "दूसरी तरफ़ से शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ बिन बाज़ का नाम लिया गया। फ़रीक़ मुख़ालिफ़ ने कहा वह बिला शुबह जरी, मुख़्लिस और अपनी हद तक आलिम हैं, लेकिन उनका दाइरा मालूमात निहायत तंग है और यह सिवाए छोटे-छोटे फ़िक़ही मसाइल बयान करने के मौजूदा ज़माने के बड़े और अहम मसाइल का इस्लामी नुक़्त-ए-नज़र से हल पेश नहीं कर सकते माना कि यह तमाम उलमा बेईमान नहीं, लेकिन आजिज़ ज़रूर हैं। पहले साहब कह रहे थे कि इस्लाह बहरहाल इन्हीं उलमा के ज़रिया हो सकती है। ज़रूरत उन से अच्छे अन्दाज़ में काम लेने की है।" दूसरे साहब कह रहे थे कि "यहाँ इस्लाह नौजवानों के ज़रिए होगी। उस वक़्त इस्लाम से इंहिराफ़, बेदीनी और मग़्रिब परस्ती की जो रूह फैलती जा रही है, उसका मुक़ाबला करना उन उलमा के बस का रोग नहीं यह उलमा अवाम को अंग्रेज़ी तालीम हासिल करने और उस ज़माना की दूसरी मुफ़ीद ईजादात के इस्तेमाल से रोकते हैं, हालांकि यह तालीम फैलेगी और उस वक़्त यह उलमा कुछ न कर सकेंगे और सिवा उसके कि उनके ख़िलाफ़ अवाम में नफ़रत बढ़ जाएगी और कुछ न होगा। दूसरी तरफ़ यह उमरा की अय्याशों को देखते हैं लेकिन कुछ नहीं कर सकते। शैख़ अब्दुल-अज़ीज़ बड़ी ही जुरअत और बेबाकाना अन्दाज़ से बादशाह और दूसरे उमरा पर तन्क़ीद करते हैं, लेकिन बादशाह और बाज़ उमरा तो बिला शुबह उनकी बड़ी क़द्र करते हैं, लेकिन आम उमरा और अस्हाबे इक़्तिदार ख़ूब समझते हैं कि उनकी गर्मी और तन्क़ीद का वज़न क्या है। इसलिए वह उनको खुश करने के लिए बस छोटे-छोटे मुआमलात में उनकी बातों को मान लेते हैं।

इन दोनों साहिबों की ज़बानी हमें यह मालूम करके बड़ी परेशानी हुई कि यहाँ के उमरा में से अमीर अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान और मुसाइद बिन अब्दुर्रहमान को छोड़ कर क़रीब-क़रीब सब ही के घरों में वह सब कुछ होता है जो उस ज़माना के किसी मग़्रिब ज़दह घराने में हो सकता है उन लोगों के बेटे और बेटियाँ अंग्रेज़ी और फ़्रंच पढ़ती और

बोलती हैं। घरों में औरतों के लिबास और वज़अ् क़तअ् पूरी तरह मग़्रिबी हैं। बाज़ तो इस हद तक आगे बढ़ गये हैं कि उनके बेटे और बेटियाँ अमरीका ही में तालीम हासिल करते हैं और उनकी उस्तानियाँ और निगरां सबकी सब अमरीकन हैं। खुदा ही बेहतर जानता है कि यह नई पोद जब बढ़ेगी और इक़्तिदार की बागें उसके हाथ में आएंगी, तो मुल्क का क्या हाल होगा।

11 बजे के क़रीब हम होटल वापस आए और बड़ी देर तक इस सूरते हाल पर अफ़्सोस करते रहे।

रियाज़ की शान व शौकत : सऊदी अरबीया के दारुल-ख़िलाफ़ा रियाज़ की शान व शौकत के बारे में मुहम्मद आसिम लिखते हैं। सुबह नाशता के बाद फ़िक्र हुई कि रियाज़ में जिन हज़रात से हमें मिलता है उन से मुलाक़ात का सिलसिला शुरू किया जाए। उस्ताद अब्दुल-हकीम आबिदीन के मुतअल्लिक़ मालूम था कि वह एक होटल "ज़हरतुश्शर्क़" में ठहरे हैं। खुब्र की मुलाक़ात के दौरान में उन्होंने हमें अपने कमरे का नम्बर भी दे दिया था। सोचा कि पहले उन से मिला जाए और फिर कोई प्रोग्राम तय किया जाए, मौलाना होटल में रहे। मैं और चौधरी साहब टैक्सी लेकर ज़हरतुश्शर्क़ गये जो रियाज़ का सबसे शानदार होटल है और उसकी सबसे शानदार सड़क शारेअ् "अल-मतार" (हवाई अड्डे की सड़क) पर वाक़े है उसके तमाम कमरे गर्मी और सर्दी दोनों मौसमों में इयर कन्डीशन हैं और इसमें एक दिन क़्याम का किराया साठ रियाल (अस्सी रुपया) फीकस है। शान व शौकत और ख़ूबसूरती के लिहाज़ से उसके पाए का होटल कम अज़ कम मेरे अन्दाज़े के मुताबिक़ न पाकिस्तान में और न मिस्र, शाम और इराक़ में है। शारेउल-मतार की ख़ूबसूरती की ख़ूबसूरती और शान व शौकत के भी क्या कहने। हमारे हाँ कराची लाहौर की कोई सड़क भी उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। उसके दोनों किनारों पर ज़राअत, मालियात, तालीम, मवासिलात और दूसरी वज़ारतों के जुदा-जुदा शानदार दफ़ातिर वाक़े हैं, जिन में से हर एक की तामीर पर लाखों रुपया सर्फ़ आया है। यह सब जदीद तरीन मग़रबी तरज़ पर बनी हुई हैं और हर एक का तरज़े तामीर निराला है। गुज़िश्ता चार साल के अन्दर सऊदी हुकूमत

तमाम वज़ारतों के दफ़ातिर रियाज़ मुन्तक़िल हो गये हैं। सिर्फ़ वज़ारते ख़ारजा और वज़ारते दाख़िला अभी तक अलत्तरतीब जद्दह और मक्का मुअज़्ज़मा में हैं, और शायद आइन्दा कई साल तक वहीं रहें :

उस्ताद अब्दुल-हकीम आबेदीन के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि वह एक दूसरे होटल "फ़न्दुकुल-यमामा" में मुन्तक़िल हो गये हैं। यह होटल भी क़रीब ही शारउल-मतार पर वाक़े है और अपनी शान व शौकत और इंतिज़ामात में "ज़हरतुश्शर्क़" से किसी तरह कम नहीं है। वहाँ उस्ताद मौसूफ़ मिल गये उन्हें जब यह मालूम हुआ कि हम एक मामूली होटल में ठहर गये हैं तो उन्होंने चाहा कि हमें शाही मेहमान बनवाने की कोशिश करें। लेकिन ख़्वाह मख़्वाह कोशिश करके मेहमान बनना हमें पसन्द न था। उस्ताद आबेदीन को साथ लेकर हम मौलाना के पास "फ़न्दुक़ इस्लाम" आए और यहाँ यही तय हुआ कि जितने भी रियाज़ में ठहरना हुआ हम इसी होटल में ठेहरे रहेंगे। मालूम हुआ कि रियाज़ में या तो इसी तरह के चन्द मामूली होटल हैं या फिर "ज़हरतुश्शर्क़" और "अल-यमामा" जैसे दो शानदार होटल हैं, जिन में ठहरना हमारी बसात से बाहर था।

सऊदी खाने : सऊदी अरबियों में किस क़िस्म के खाने खाए जाते हैं यह मुहम्मद आसिम साहब से सुनिए।

रासुत्तन्नूरा पहुंचे तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के मुलाज़िमीन कमेटी के कुवार्टरों में एक जगह डेढ़ दो सौ के क़रीब पढ़े लिखे नौजवान जमा थे और मौलाना की आमद का इंतिज़ार कर रहे थे। सलाम और तआरुफ़ के बाद उनके और मौलाना के दर्मियान सवालात और जवाबात के सिलसिला शुरू हुआ जो साढ़े दस से साढ़े बारह तक जारी रहा। तमाम सवालात सन्जीदा और इल्मी अन्दाज़ के थे। मौलाना भी मूड में नज़र आ रहे थे। हर सवाल का जवाब निहायत इत्मीनान और तफ़्सील के साथ दे रहे थे। ज़्यादा तरह सवालात सूद, आस्ट्रेलिया से दरआमद शुदह डिब्बों से गोश्त, ज़कात, ज़ब्ते विलादत और करन्सी के मुतअल्लिक़ थे, यूं तो उनके सारे ही सवालात हक़ीक़ी ज़रूरियात और मुश्किलात के तहत थे लेकिन जिस मस्अला ने उनको सबसे ज़्यादा परेशान कर रखा था वह था गोश्त का मस्अला, कम्पनी के अरब

मुलाज़िमीन आस्ट्रेलिया वग़ैरह से दर आमद शुदह डिब्बों का गोश्त बेतुका खाते हैं और इसमें किसी तरह की क़ुबाहत महसूस नहीं करते। ग़ज़ब यह है कि कम्पनी की क़न्टीन में सुव्वर के गोश्त के जो डिब्बे फरोख़्त हैं वह दूसरे गोश्त के डिब्बों के साथ मिला कर रखे होते हैं और उन पर सिर्फ़ अंग्रेज़ी (Pork) लिखा होता है। बाज़ लोग तो ख़ैर जानते बूझते यह डब्बा ख़रीदते हैं, लेकिन अक्सर या तो अंग्रेज़ी नहीं जानते या जानते हैं, मगर (Pork) का मतलब नहीं समझते इसलिए वह ग़लती से यह डब्बा ख़रीद कर खा लेते हैं। आस्ट्रेलिया से बरामद शुदह यह गोश्त चूंकि मक़ामी गोश्त के मुक़ाबला में बहुत सस्ता होता है और साफ़ सुथरा भी इसलिए उसकी ख़ूब फ़रोख़्त होती है। मौलाना ने उन लोगों को असल मस्अला समझाया और यह भी वादा किया कि अगर मौक़ा मिला, तो रियाज़ के उलमा की तवज्जोह इस तरफ़ मब्ज़ूल कराएंगे।

अरबी खानों ही के सिलसिले में मुहम्मद आसिम शाह सऊद की दी हुई एक ज़्याफ़त का हाल लिखते हैं :

मग़्रिब के बाद उन्होंने हम लोगों को खाने पर बुलाया। मग़्रिब के बाद दारुल-इमारह पहुंचे, तो अमीर खुद तो मौजूद न थे उन्होंने खाने में शिर्कत से अपनी ख़राबी सेहत की बिना पर माज़रत कर दी। उनके बड़े साहबज़ादे अमीर अब्दुल-अज़ीज़ उनकी नियाबत के लिए मौजूद थे और उसी ने हमारे साथ खाना खाया। खाने पर हमारे अलावा इबादत से शुयूख़ मौजूद थे। वज़ीरे आज़म क़तर का बड़ा लड़का और अमरीकन भी शरीक थे। खाना बिल्कुल मग़्रिबी तरज़ का था और मग़्रिबी तरज़ पर ही छुरी और कांटे से खाया गया। शाह सऊद और दूसरे उमरा की जो दावतें सिर्फ़ अरबों के लिए होती हैं वह ग़ालिबन अब भी मग़्रिबी तरज़ पर होती हैं। इस दावत पर मेरे और अख़्तर साहब के साथ एक अजीब लतीफ़ पेश आया जो शायद दूसरों के लिए तो लतीफ़ा हो लेकिन हमारे लिए निदामत का बाइस था और वह यह कि सर्विस करने वाले ख़ादिम बारी-बारी तमाम मेहमानों के सामने खाने की डिश पेश कर रहे थे। दूसरी मरतबा वह मुर्ग़ी के गोश्त की डिश लाए। मौलाना समझ गये और उन्होंने यह गोश्त न उठाया लेकिन मैं और राव साहब समझ न सके और हम ने वह गोश्त ले कर खा लिया। सर्विस करने वाले ख़ादिम हिन्दुस्तानी थे उन्होंने हमें बाद में बताया कि यह

डब्बा की मुर्ग़ी थी। हमें सख़्त अफ़्सोस हुआ। याद नहीं कि चौधरी साहब भी महफ़ूज़ रहे या वह भी मुलव्विस हो गये।

सऊदी खानों की एक और दिलचस्प रिवायत सुनिए।

जुहर के बाद मुफ़्ती अक्बर के हाँ हमारे खाने की दावत थी। तीन बजे के क़रीब हम उनके हाँ पहुंचे। मुफ़्ती साहब ने दावत का ख़ास एहतमाम किया था..........इला अन क़ाला ....उस्ताद अब्दुल-हकीम ने बकरे की सिर्री से आंख निकाली और मौलाना से पूछने लगे कि क्या आप उसे खाना पसन्द फरमाएंगे? मौलाना ने झुरझुरी ली और यह तोहफ़ा लेने से माज़ूरी ज़ाहिर की। मालूम हुआ कि अरबों के हाँ आंख को बड़ा ही मज़ेदार तसव्वुर किया जाता है और उसे बड़े शौक़ से खाया जाता है। हमारे लिए यह चीज़ें बड़ी हैरत अंगेज़ थी।

सऊदी अरबीया में लौंडी गुलामों की फ़रोख़्त :

अस्र के बाद हिन्दुस्तान के चन्द तलबा ने जो रियाज़ के कुल्लियतुश्शरईया या उसके मअ्हद में पढ़ते हैं। हमें अपने हाँ चाय पर बुलाया उस वक़्त सख़्त बारिश हो रही थी, लेकिन यह हज़रात हमें लेने के लिए बरवक़्त पहुंच गये। हमें क़दीम रियाज़ की एक गली में जाना था। बारिश से तमाम गलियों का बुरा हाल था और पर नालों से पानी गुज़रने वालों के सरों पर गिर रहा था। बड़ी मुश्किल से हम अपनी मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचे, निहायत ख़स्ता और तंग व तारीक क़िस्म का मकान था। मालूम हुआ कि कुल्लियतुश्शरीआ के तलबा के लिए क़्याम का कोई बाक़ायदा इंतिज़ाम नहीं है। अपने तौर पर तालिबे इल्म जहाँ चाहे इंतिज़ाम कर सकता है। रियाज़ के बहुत से लोगों ने नए महल्लों में पुख़्ता मकान बना लिए हैं और अपने पुराने कच्चे मकान वक़्फ़ कर दिए हैं। उमूमन तलबा का क़्याम इन्हीं मकानों में होता है। वहाँ तलबा के अलावा शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अफ़ीफ़ी से भी हमारी मुलाक़ात हुई। उन से तसर्री.......
.....यानी लौंडियों............के मस्अला पर गुफ़्तगू हुई। सऊदी अरब में उस ज़माना में भी गुलामों और लौंडियों का रिवाज है। शैख़ अफ़ीफ़ी ने बताया कि यहाँ जो गुलाम और लौंडियां आती हैं वह या तो मस्क़त और अमान की तरफ़ से आती हैं या लिबनान की तरफ़ से उनके जवाज़ की वजह सिर्फ़ यह बयान की जाती है कि लौंडी........या गुलाम......

...आख़िर यह कहती है कि मैं "लौंडी हों और मेरे आबा व अज्दाद क़दीम ज़माना से गुलाम चले आते हैं" उसके सिर्फ़ इस बयान पर उसे ख़रीद लिया जाता है और उसके लाने वाले से यह मालूम करने की ज़रूत महसूस नहीं कि जाती कि वह उसे कैसे लाया वह उसे लालच देकर भी ला सकता है। डरा कर भी ला सकता है और उसके माँ-बाप से ख़रीद कर भी ला सकता है। हाँ अगर लौंडी या गुलाम कह दे कि मुझे ज़बरदस्ती लौंडी या गुलाम बनाया गया है तो उसे आज़ाद कर दिया जाता है। मौलाना ने फरमाया कि आख़िर वह यह बात किसे कह सकती है? आज़ाद हो कर वह तन्हा जाएगी कहा? उस पर शैख़ अफ़ीफ़ी ख़ामोश हो गये उन्होंने फिर बताया कि लौंडियों के जवाज़ पर बाज़ लोग फ़ुक़्हा की किताबों से यह मस्अला भी निकालते हैं कि काफिर को फ़रोख़्त किया जा सकता है। काफिर खुद भी अपने आपकी फ़रोख़्त कर सकता है और अपने बेटे या बेटी को भी फ़रोख़्त कर सकता है, लिहाज़ा उसे या उसके बेटे या बेटी को ख़रीदा जा सकता है गोया फ़ी उनुकि़ल-फ़क़ीह तख़्रुजु सालिमन (अल-ईला बरसरे मुल्ला) वाला मुआमला है।

नोट : मुहम्मद सिद्दीक़ कुरैशी ने फ़ईल नामी किताब में लिखा है कि सऊदिया में अब यह लानत ख़त्म हो चुकी है चुनांचे वह लिखते हैं!

शाह मस्ऊद के दौरे हुकूमत में अमीर फ़ैसल के वज़ीरे आज़म का ओहदा संभालने के बाद उनका एक अहम कारनामा यह था कि उन्होंने गुलामी को ग़ैर क़ानूनी क़रार देकर इस लुग़त को ख़त्म कर दिया। यह फरमान छे: नवम्बर 1962 ई० को जारी किया गया। एक अन्दाज़े के मुताबिक़ तीस हज़ार गुलाम आज़ाद किए गये। 26 दिसम्बर 1963 ई० को न्यूयार्क टाइम्ज़ ने इंकिशाफ़ किया कि हुकूमत ने उनके मालिकों को बाईस लाख डालर अदा किए। (फ़ैसल स० 55, मुलह्हिज़न) ताहम शाही मुहल्लात की कनीज़ोंकी फौज ज़फ़र मौज इस हुक्म से अब तक मुस्तस्ना है। (क़ादरी)

सऊदी सक़ाफ़त : सऊदी सक़ाफ़त के बारे में मुहम्मद आसिम लिखते हैं :

ज़हरान में टेलीवीज़न के दो मरकज़ हैं। एक आरामको के हेड

कुवार्टर में और दूसरा इयर पोर्ट पर इयर पोर्ट के प्रोग्राम सिर्फ़ अंग्रेज़ी में होते हैं और आरामको के अंग्रेज़ी और अरबी दोनों में। यह प्रोग्राम सिर्फ़ इल्मी और मालूमाती ही नहीं होते, बल्कि उनमें हर तरह के प्रोग्राम शामिल होते हैं। अरब नौजवानों पर जिनके पास पैसा वाफर है और वक़्त भी फाल्तू है और उन पर अख़्लाक़ी लिहाज़ से भी कोई पाबन्दी नहीं है इन प्रोग्रामों का जो असर होता होगा उसका अन्दाज़ा लगाना मुश्किल नहीं है। अल-अम्र बिल-मारूफ़ वन्नहिये अनिल-मुंकर वाले सीनमा पर तो पाबन्दी लगा सकते हैं, लेकिन टेलीवीज़न से अरब नौजवानों में जो मग़्रिबी तहज़ीब की तक़्लीद के बुरे असरात फैलते हैं उनकी रोक थाम कैसे हो सकती है।

सऊदीया में आम सैर की इजाज़त नहीं : सऊदी अरबीया में आज़ादाना तौर पर कहीं जाने की इजाज़त नहीं है, इस मौज़ूअ़ पर मुहम्मद आसिम लिखते हैं :

इसके बाद मैं और चौधरी साहब वज़ारते दाख़लीया गये जिसका दफ़्तर रियाज़ के बजाए मक्का मुअज़्ज़मा में है, उसके मुदीर से मुलाक़ात हुई, उन्होंने हमें बताया कि अमीर मुसाइद के नाम पर हम ने मुदीरुल-अमन अल-आम (इंस्पेक्टर जनरल पुलिस) को हिदायात भेज दी हैं आप लोग मिलिए इन से मुदीरुल-अमन अल-आम के पास आए तो उन्होंने बताया कि हम ने तमाम मक़ामात पर आप लोगों को अत्तस्हीलात वल-इरशादातुल्लाज़िमा (ज़रूरी हिदायात और आसानियाँ) बहम पहुंचाने के लिए ता रवाना कर दिए हैं इसलिए अब आप लोग पूरे मुल्क में जहाँ चाहें फिर सकते हैं कहीं कोई वक़्त पेश आए तो पुलिस वालों से मदद लीजिए यह सब आसानियाँ अमीर मुसाइद के तार की वजह से हासिल हुईं वरना महज़ पास्पोर्ट पर एक अजनबी मुसाफ़िर के लिए सिवाए इन मक़ामात के जिन की तस्रीह उसके पास्पोर्ट पर कर दी गई हो। सऊदी मम्लिकत के अन्दर घूमना मुम्किन नहीं। जो लोग उमरा के लिए जाते हैं उन्हें सिर्फ़ मक्का मुअज़्ज़मा जद्दह और मदीना मुनव्वरा में घूमने फिरने की इजाज़त होती है।

तुर्कों की ख़िदमात : तुर्कों की ख़िदमात का एतराफ़ करते हुए मुहम्मद आसिम साहब लिखते हैं !

हम पहले मिना गये वहाँ मस्जिद मुहस्सिब और मस्जिदे अल-कबिश और बाज़ दूसरी मसाजिद बाहर ही देखें। मस्जिद मुहसिब मिना के रास्ता में है और लोगों के कहने के मुताबिक़ उस जगह बनी हुई है जहाँ हुज्जतुल-विदा से वापस आते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पाँच नमाज़ें अदा फराई थीं। मस्जिद अल-कबिश मिना के अन्दर है और यह उस जगह बनी हुई है जहाँ के मुतअल्लिक़ लोगों में मशहूर है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस जगह मेंढा ज़बह किया था यह सब मस्जिदें तुर्की अहद की बनी हुई हैं। नज्दी हज़रात के बरअक्स तुर्क और अशराफ़े मक्का बहुत खुश अक़ीदा वाके़ हुए थे इसलिए हर जगह कोई न कोई मस्जिद बना डालते थे जिनके मुतअल्लिक़ उन्हें यह ख़्याल पैदा हो जाता कि यहाँ फ़लां वाक़या पेश आया होगा इसलिए जिन उलमा ने मक्का मुअज़्ज़मा के आसार की तहक़ीक़ की है वह घरों और मस्जिदों में दारुल-अरक़म की निस्बत को तो बड़ी हद तक सही मानते हैं लेकिन दूसरे आसार की निस्बत को सही तस्लीम नहीं करते।

तुर्कों पर मज़ालिम : तुर्कों के साथ सऊदी अरबीया के हुक्काम का जो ज़ालिमाना रवैया है उस पर रौशनी डालते हुए मुहम्मद आसिम साहब लिखते हैं! रात को इशा के बाद तुर्क हज़रात ने एक जगह हमारी दावत का एहतमाम किया, जिसमें उनके अक्सर बुजुर्ग और उलमा मौजूद थे इस बहाने हमें उनके साथ इत्मीनान से मिल बैठने और उनके हालात सुनने का मौक़ा मिला। बेचारे बड़ी तक्लीफ़ और कसम्पुर्सी की हालत में हैं, उनकी सबसे बड़ी तक्लीफ़ यह है कि अगरचे उन्हें सऊदी अरब में रहते हुए एक मुद्दत गुज़र गई है, मगर अभी तक उन्हें ताबीद (मुस्तक़िल शहरियत) नहीं दिया गया जिसकी वजह से उन्हें आए दिन दफ़्रों और थानों का चक्कर लगाना पड़ता है और हर साल अपनी मुद्दते इक़ामत बढ़वाने के लिए चालीस बयालिस रियाल फ़ी कस अदा करने पड़ते हैं जब तक ताबीद न हो। वह अरब में किसी जगह शादी नहीं कर सकते, बल्कि उनका कोई आदमी मर जाए, तो आम क़ब्रिस्तान में दफ़्नाने में भी बड़ी रुकावटें और दिक़्क़तें पेश आती हैं। चीनी तुर्किस्तान के मुहाजिरीन को इस बात पर भी मज्बूर किया गया कि वह चीनी सफीर से पास्पोर्ट लें और फिर यहाँ वीज़ा ले

कर जब तक वीज़ा की तौसीअ् होती रहे मुक़ीम रहें। मुसलमान हुकूमतों के लिए मग़रिबी तसव्वुर क़ौमियत की यह तक़्लीद इस्लामी तसव्वुरात से कोई मुनासिबत नहीं रखती। अगर यह लोग कुफ़्फ़ार के ज़ुल्म व सितम से तंग आ कर मुसलमान मुल्कों में पनाह न ढूंढें तो और कहाँ ढूढें। और मुसलमान मुल्क भी उन्हें पनाह न दें तो फिर ईमान का रिश्ता उख़ुव्वत क्या मानी रखता है। यह तुर्किस्तानी मुहाजिर दर हक़ीक़त उस ज़माना के तमाम मुहाजिरीन से ज़्यादा हम्दर्दी और हर क़िस्म की इम्दाद के मुस्तहिक़ हैं और लोगों की हिजरत में तो कोई और जज़्बा भी कार फरमा हो सकता है, लेकिन उनकी हिजरत की वजह उसके सिवा कुछ नहीं कि उन्हें इस्लाम हर चीज़ से ज़्यादा अज़ीज़ था और कम्यूनिस्टों के ग़लबा के बाद वह अपने वतन में रहते हुए चूंकि वह अपने दीन को महफ़ूज़ न रख सकते थे इसलिए उन्हें वहाँ से हिजरत करना पड़ी। ऐसे हालात में उन्हें सबसे बढ़ कर मुसमलान मुल्कों में अमान मिलना चाहिए थी।

सऊदिया का आसार व मुशाहिदा को मिटाना :

हुकूमते सऊदी ने जिस तरह सहाब-ए-किराम रिज़वानुल्लाहु अलैहिम अज्मईन के आसार और बुज़ुर्गों के मक़ाबिर और दीनी मुशाहिद को मिटाया है उस पर हर तबक़ा के मुसलमानों ने अफ़्सोस और रंज का इज़्हार किया है। मुहम्मद आसिम साहब और मौलाना मौदूदी अगरचे अक़ीदा सऊदीया के हम मुश्रिब हैं, लेकिन आसारे सहाबा के साथ सऊदिया का यह ज़ुल्म व सितम उन्हें भी मुतअस्सिर किए बेग़ैर न रह सका, चुनांचे वह लिखते हैं:

दारुल-अरक़म : मक्का मुअज़्ज़मा में जितने दूसरे आसार और मसाजिद हैं, उनकी निस्बत तारीख़ी लिहाज़ से बहरहाल यक़ीनी नहीं हैं, लेकिन दारुल-अरक़म की निस्बत तारीख़ी लिहाज़ से तक़रीबन यक़ीनी और क़तई थी। यह जिस जगह पर आज से चन्द साल पहले क़ायम था। तमाम मुसलमान बादशाहों और उमरा ने उसकी इस लिहाज़ से हमेशा हिफ़ाज़त की कि यह जिस जगह दारुल-अरक़म क़ायम था। हर दौर में उस जगह कुरआन व हदीस की तालीम का कोई न कोई सिलसिला जारी रहा। इमारतें अगरचे गिरती और फिर से

बनती रही हूँगी, लेकिन बहरहाल जगह वही रही। आख़िरी इमारत जिसे हम ने 1949 ई० में खुद देखा है ग़ालिबन नवीं सदी हिजरी की बनी हुई थी, उसके दरवाज़े पर भी दारुल-अरक़म लिखा हुआ था और उसके अन्दर भी बड़े पत्थर रखे हुए थे, जिन में से एक पर यह इबारत कुन्दा थी :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

फ़ी ब्यूति इज़्निल्लाह अन यरफ़ओ व युज़्करू फ़ीहा इस्मुहू। युसब्बहु लहू फ़िल-गुदुव्वे वल-आसाल..........हाकज़ा मुस्तहब्बता। रसुलुल्लाह व दारुल-खे़ज़राने व फ़ीहा मुबर्रन अल-इस्लाम।

दूसने पत्थर पर इमारत के बानी की हैसियत से अबू जाफर मुहम्मद बिन अली बिन अबी मन्सूर अल-अस्फ़हानी वज़ीर अश्शाम वल-मूसल का नाम कुन्दा था। हमारे पहले सफर के ज़माना में शैख़ अबुल-मस्मअ्, अब्दुज़्ज़ाहिद मरसम (मौजूदा ख़तीबे हरम के बड़े भाई) का दर्से कुरआन व हदीस हुआ करता था, मगर अब वहाँ क्या देखते, अफ़्सोस करते हुए आगे बढ़ गयें तारीख़ी आसार से सऊदी हुकूमत का तग़ाफ़ुल एक ऐसी चीज़ है जो अरब की सियासत करने वाले हर शख़्स को बुरी तरह खटकती है। मुश्रिकाना अफ़्आल (यानी व मन याज़मु शआइरिल्लाहि फ़इन्नहा मिन तक़्वल-कुलूब पर अमल करने वाले लोग जो शआइरिल्लाह की ताज़ीम करते हैं और ऐसे मक़ामात पर खड़े हो कर अल्लाह तआला से इस्तिजाबत तवक़्क़ु पर दुआ करते हैं उन्हीं अफ़्आल को वहाबिया मुश्रिकाना अफ़्आल क़रार देते हैं। क़ादरी) को रोकना बिल्कुल बरहक़ मगर इस्लाम के निहायत क़ीमती आसार तारीख़ को ज़ाए करना किसी तरह दुरुस्त नहीं है।

अल-मअ्ला का क़ब्रिस्तान : कुछ और आगे बढ़ें तो बाएं हाथ को मक्का मुअज़्ज़मा का क़ब्रिस्तान जिसे अल-मअ्ला या अल-मअ्लात कहा जाता है, आ गया। अल-मअ्ला जाहिलीयत के ज़माना से आज तक अह्ले मक्का का क़ब्रिस्तान है इस में कोई शक नहीं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल-मुत्तलिब, चचा अबू तालिब, अहलिया मुकर्रमा हज़रत ख़दीजा और दूसरे तमाम अइज़्ज़ह यहीं दफन हुए होंगे और बहुत से सहाब-ए-किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम

अज्मईन और बाद के सुलहा, फुक़्हा, मुहद्देसीन की क़बरें भी यहीं होंगी, लेकिन उनकी जगहों का तऐयुन क़तई नामुम्किन है। नज्दियों की हिजाज़ में आमद से पहले यहाँ बहुत सी पुख़्ता क़बरों पर बड़े शानदार कुब्बे बने हुए थे जो अकाबिर सहाबा की तरफ़ मन्सूब किए जाते थे और लोग उन पर तरह-तरह के नज़्राने पेश करते थे। नज्दियों ने आकर उन तमाम कुब्बों को गिरा दिया और पुख़्ता क़बरों को मिस्मार कर दिया। अब यहाँ कोई पुख़्ता क़बर नहीं है, अब भी बाज़ क़बरों को बाज़ सहाबा की तरफ़ मन्सूब किया जाता है, लेकिन इस निस्बत की कोई हक़ीक़त नहीं है, इस क़ब्रिस्तान में एक जगह पर हज़रत ख़दीजा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल-मुत्तलिब और चचा अबू तालिब की क़बरों की निशानदेही की जाती थी, लेकिन सऊदी हुकूमत ने इन क़बरों को भी मिस्मार करके उनके आगे पुख़्ता दीवार बना दी है ताकि कोई शख़्स इस दीवार से आगे न बढ़ सके।

बैअ़ते उक़्बा : मिना के वस्त में मस्जिदुल-ख़ीफ़ है और यह उस जगह वाक़े है, जहाँ हुज्जतुल-विदा के मौक़ा पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़्याम फरमाया था और सहाब-ए-किराम के साथ पाँच नमाज़ें अदा फरमाई थीं। जुमरा ऊला और सानिया के दर्मियान एक छोटी सी मस्जिद है, जिसे मस्जिदुल-मुंहिर कहा जाता है कहते हैं कि हुज्जतुल-विदा के मौक़ा पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी कुरबानी के ऊंट यहाँ ज़बहे फरमाए थे, लेकिन इसका कोई सुबूत नहीं है। जुमरा उक़्बा (जुमरा कुबरा) से कुछ पहले एक छोटी सी मस्जिद और है जिसे मस्जिदुल-अशरह कहा जाता है। कहते हैं कि पहले साल मदीना के जिन आदमियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर बैअत की थी और जो तारीख़ की किताबों में बैअते उक़्बा के नाम से मशहूर है और इस लिए इस जुमरा का नाम भी जुमरा उक़्बा रखा गया है, मगर यह जगह भी अब नई सड़क के नीचे आ गई है, हालांकि बैअ़ते उक़्बा जैसे अहम वाक़या की तारीख़ी यादगार को ज़रा सी तवज्जोह से महफ़ूज़ रखा जा सकता था।

मस्जिद इब्ने अब्बास : मस्जिदे इब्ने अब्बास के महल्ले वक़ूअ़ को देखते हुए साफ़ अन्दाज़ा होता है कि यह मस्जिद उस जगह

बनी हुई है, जहाँ मुहासर-ए-तायफ़ के मौक़ा पर मुसलमानों का लश्कर ठहरा हुआ था और जंग हुई थी उसके बिल्कुल सामने जुनूब मग़्रिब में उन सहाब-ए-किराम की क़बरें हैं जो ग़ज़व-ए-तायफ़ में शहीद हुए। लोगों ने हमें बताया कि पहले इन क़बरों पर तख़्ते भी लगे हुए थे, लेकिन अब यह तख़्ते मिटा दिए गये हैं।

हुनैन : सीले कबीर पहुंच कर हम ने उमरा का एहराम बांधा और कुछ देर वहाँ रुक कर आगे रवाना हुए। तायफ़ जाते हुए हमारा ड्राइवर बिल्कुल जाहिल था इसिलए वह रास्ता की कोई चीज़ हमें न बता सका। आते हुए जो ड्रावर मिला वह क़द्रे पढ़ा लिखा था। ज़ीमा और शराए के दर्मियान सड़क की दाएं तरफ़ एक खुले मैदान के मुतअल्लिक़ उस ने हमें बताया कि ग़ज़व-ए-हुनैन यहाँ वाक़े हुआ था। हम ने मोटर से उतर कर मुतअद्दिद तस्वीरें लीं, अफ़्सोस यहाँ भी कोई अलामत मौजूद नहीं।

अल-बक़ीअ् : इसी रोज़ अस्र और मग़्रिब के दर्मियान हम मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान अल-बक़ीअ् की ज़्यारत के लिए गये जो मस्जिदे नबवी से मश्रिक़ की सिम्त वाक़े है और मामूली रफ़्तार से ज़्यादा से ज़्यादा पाँच मिनट का रास्ता है। पहले बक़ीअ् जाने वाले को बहुत सी गलियों से गुज़रना पड़ता था, मगर अब हुकूमत ने मस्जिदे नबवी और बक़ीअ् के दर्मियान खुली और पुख़्ता सड़क बना दी है जिस से बक़ीअ् आना जाना बहुत आसान हो गया है। यह क़ब्रिस्तान भी जाहिलीयत के ज़माने से अह्ले मदीना का क़ब्रिस्तान चला आ राह है। तुर्कों के दौर में यहाँ भी बहुत सी पुख़्ता क़बरें और उन पर ख़ूबसूरत कुब्बे बने हुए थे, मगर नज्दी हज़रात ने शरीफ़ हुसैन को शिकस्त देकर जब मदीना मुनव्वरा पर क़बज़ा किया तो यहाँ के अक्सर कुब्बे गिरा दिए और क़बरें तोड़ दीं, लेकिन बहरहाल मक्का मुअज़्ज़ा के अल-मुअ्लात की बनिस्बत यहाँ पुख़्ता क़बरों की तादाद अब भी ज़्यादा है और उस में रास्तों का उम्दा इंतिज़ाम है।

इंहिदाम मुशाहिद व मआसिर पर अह्ले अरब के तअस्सुरात : अगले दिन (14 दिसम्बर) सुबह के वक़्त में और चौधरी साहब मदीना मुनव्वरा के गवर्नर (अमीरुल-मदीना) के दफ़्तर

गये। मदीना के गवर्नर ज़ाबता के लिहाज़ से शाही ख़ानदान के एक शहज़ादा हैं लेकिन वह अमलन सारा साल नज्द में रहते हैं, उनके वकील (सिक्रेट्री) अब्दुल्लाह असद हीरी उनकी जगह तमाम फ़राइज़ अंजाम देते हैं, इसलिए उमूमन इन्हीं को अमीरुल-मदीना कहा जाता है। असद हीरी नज्द का एक बा रुसूख़ ख़ानदान है। सऊदी ख़ानदान की उस से रिश्तेदारियाँ भी हैं। इसलिए उसके बहुत से अफ़राद कई जगहों मसलन तबूक, अल-अजा और हाइल के अमीर या वकीलुल-अमीर हैं। मदीना में जिस इमारत में अमीर का दफ़्तर है, निहायत ख़स्ता और पुराने तरज़ की इमारत है उसकी अब तक क़िस्मत न जागने पर हमें तअज्जुब हुआ अमीर अब्दुल्लाह सुधेरी से हमारी मुलाक़ात न हो सकी, उनके वकील जो उनके बड़े साहबज़ादे हैं, से मुलाक़ात हुई, उन्होंने मग़्रिब के बाद मौलाना को अपने वालिद के हाँ आने की दावत दी। मग़्रिब के बाद हम उनके हाँ गये, निहायत सादा लेकिन बाख़बर क़िस्म के आदमी मालूम हुए। इस्लामी आसार की हिफ़ाज़त से ग़फ़्लत पर अफ़्सोस ज़ाहिर करते रहे और उसके मुक़ाबला में यूरोप और अमरीका वाले जिस तरह अपने आसार की हिफ़ाज़त करते हैं, उस पर रश्क करते रहे।

सहाब-ए-किराम की क़बरों के बारे में आप पढ़ चुके हैं कि उनके नज़्दीक क़बरों पर हाज़िर होना फूल चढ़ाना यह सब कुछ तो शाह सऊद की हुकूमत के नज़्दीक बिदअत थे, लेकिन क्या काफिरों की क़बर पर हाज़िरी देना और फूलों की चादर चढ़ाना यह उनके नज़्दीक बिदअत न था, यह ऐन कारे सवाब था हम नहीं कहते रोज़नामा कोहिस्तान से सुनिए।

सऊदी अरब के वज़ीरे दिफ़ा अमीर फहद बिन सऊद (मौजूदा वली अहद) ने जो शाह सऊद के हम्राह अमरीका आए हैं कल अमरीका के पहले सदर जार्ज वाशिंगटन की क़्यामगाह की सैर की, बारिश के बावजूद उन्होंने पाएं बाग़ की सैर की और जार्ज वाशिंगटन की क़बर पर फूल चढ़ाए।

यह तो एक शहज़ादे का अमल था अब खुद बादशाह का किताब व सुन्नत पर अमल मुलाहिज़ा फरमाएं।

नवाए वक़्त लिखता है :

वाशिंगटन यकुम फरवरी आज सुबह शाह सऊद पोटोमिक दरिया उबूर करके अरलिंकटन क़ब्रिस्तान गये और गुम्नाम सिपाही की क़बर पर फूल चढ़ाए।

उसके अलावा एक और नुक़्त-ए-नज़र से देखिए। इस्लामी मक़ाबिर, मआसिर और मुशाहिद के साथ शाह सऊद के मज़ालिम की दास्तान आपने मुलाहिज़ा फरमाई कि किस तरह उनकी हुकूमत ने अल-मअ्ली और अल-बक़ीअ् के क़ब्रिस्तान वीरान किए। सहाब-ए-किराम और हुज़ूर के अइज़्ज़ा के निशानात तक मिटा दिए गये। इस्लामी आसार और मुशाहिद को पैवन्द ज़मीन कर दिया गया, क्योंकि अगर यह सब कुछ न किया जाता, तो शाह सऊद के नज़्दीक तौहीद मज्रूह हो जाती और रिसालत का पैग़ाम मुरझा जाता। आइए हम आपको इस्लामी मआसिर व मुशाहिद की वीरानी के मुक़ाबला में शाह सऊद के मुहल्लाह की सदा बहार बसाते इशरत व नशात दिखलाएं। देखिए सहाब-ए-किराम और अइज़्ज़-ए-रसूल के मआसिर को वीरान करने वाला यह बादशाह अपने मुहल्लात को बेगमात और कनीज़ों के ग़ौल के ग़ौल से किस तरह शादाब रखता है, शायद उसके नज़्दीक उसके इस कसरवाना किरदार से न तौहीद के तक़ाज़े मज्रूह होते हैं और न पैग़ामे रिसालत में कोई फ़र्क़ आता है।

शाह सऊद की हैरत खेज़ अय्याशियाँ

शाह सऊद का दौर-ए-अमरीका :

रोज़नामा कोहिस्तान लिखता है :

अमरीका की सनअत मोटर साज़ी के मरकज़ की एक इत्तिला में बताया गया है कि वहाँ सऊदी अरब के हुक्मरां शाह सऊद के लिए ख़ास क़िस्म की साठ कैडलॉक कारें तैयार की जा रही हैं, उनकी मज्मूई लागत दस लाख डालर होगी।

शाह सऊद जब वाशिंगटन पहुंचे थे, तो सदर आइज़न हावर ने उनका ख़ैर मक़्दम करते हुए उन्हें इस्लाम के मुक़द्दस मक़ामात के कस्टडियन की हैसियत से अमरीकी अवाम के सामने पेश किया था। अब अमरीकी अवाम बजा तौर पर कहते होंगे कि मुसलमानों के ऐश व इशरत के जो अफ़्साने तारीख़ों में बयान किये गये हैं वह सही हैं, क्योंकि बीसवीं सदी का एक "मुसलमान" हुक्मरान अब भी इतना मुस्रिफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्च है कि वह हर साल एक नया महल तामीर करवाता है और हर साल लाखों डालर कारों पर सर्फ़ करता है। बयान किया जाता है कि शाह के महल्लात की तादाद बयालिस तक पहुंच गई है। गिरां क़द्र तोहफ़ा तहाइफ़ देने में वह पिछले बादशाहों को भी पीछे छोड़ गये हैं।

अमरीका के मशहूर मेगज़ीन टाइम ने अमरीकी अवाम से शाह का जिस अन्दाज़ से तआरुफ़ कराया है, उस से शाह सऊद की शख़्सियत के साथ इस्लाम और कुरआन को भी मज्रूह किया गया है। मसलन टाइम कहता है कि सऊदी अरब में गुलामी इसलिए जाइज़ है कि इस्लम में उसको जाइज़ क़रार देता है, हरम औरतों से इसलिए भरे हुए हैं कि इस्लाम इस अय्याशी और हवसनाकी पर एतराज़ नहीं करता। वहाँ जम्हूरियत कन्सटिट्यूशन और असम्बली इसलिए नहीं है कि इस्लाम इन उमूर के बारे में ख़ामोश है।

हमारे नज़्दीक यह बातें गुम्राह कुन हैं। सऊदी अरब का निज़ामे हुकूमत शख़्सी और जाबिराना है उसका इस्लाम से दूर का भी तअल्लुक़ नहीं। इस्लाम के नज़्दीक मुसलमान हुक्मरानों के लिए यह किसी तरह जाइज़ नहीं है कि वह गुज़र बसर से ज़्यादा सरकारी ख़ज़ाने पर बार डालें, इस बारे में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का

तरज़े अमल इस्लाम के ऐन मुताबिक़ था।

आज शाह सऊद जिस मुल्क पर हुकूमत कर रहे हैं। वहाँ इस्लाम के अह्दे अव्वल में मुसलमान ऐसे खुशहाल थे कि लोग ज़कात, सदक़े और ख़ैरात की रुकूम और अशिया लिए फिरते थे, लेकिन उन्हें कुबूल करने वाला कोई न मिलता था, लेकिन आज इस सरज़मीन की तीन चौथाई आबादी ज़िन्दगी की हर मुसर्रत से महरूम है, उसके बरअक्स शाही ख़ानदान, शुयूख़ और सऊदी हुक्काम ऐसी कारों में फिरते हैं जो सदर अमरीका को भी नसीब नहीं। और ऐसे महलों में रहते हैं, जिन में रहने का तसव्वुर उस ज़माना का कोई हुक्मरां भी नहीं कर सकता। क़ाहिरा, इस्कन्दरिया के मुज़ाफ़ात लिबनान के ख़ूबसूरत इलाक़ों में सऊदी अरब के शहज़ादों के मुहल्लात न सिर्फ़ अपने हुस्न व जमाल, बल्कि ऐश व इशरत के लवाज़िमात से भी बेनज़ीर हैं।

लेकिन ज़ाहिर है कि इन बातों का इस्लाम से कोई तअल्लुक़ नहीं। इस्लामी निज़ामे हुकूमत में तो एक हुक्मरां की इक़्तिसादी हैसियत एक आम मुसलमान से किसी तरह बुलन्द नहीं होती, इसके बावजूद अमरीका में शाह सऊद का जिस अन्दाज़ से तआरुफ़ हुआ है और जिन शाहाना अदाओं का वह मुज़ाहरे कर रहे हैं। उसे इस्लाम की नुमाइन्दगी से ताबीर करना हमारे लिए इंतिहाई तक्लीफ़ देह अम्र है।

शाह सऊद ने बीसवीं सदी के दौर में सदियों पुरानी शाही अय्याशियों की तारीख़ को ज़िन्दा कर दिया था। उनके हरम में क़ानूनी और ग़ैर क़ानूनी बीवियों की एक बड़ी तादाद और कनीज़ों की लम्बी खेप थी। शाह की इन्हीं अय्याशियों पर रोज़नामा कोहिस्तान शाह सऊद की अलिफ़ लैलवी शख़्सियत का उनवान क़ायम करके लिखता है।

शाह सऊद की अलिफ़ लैलवी शख़्सियत :

सऊदी अरब के मुतलकुल-हुक्म बादशाह सऊद बिन अब्दुल-अज़ीज़ दुनिया के आख़िरी ताजदार हैं जिनके हर फरमान को क़ानून की तक़्दीस का दरजा हासिल है। मौजूदा शाह सऊद सुल्तान इब्ने सऊद के सबसे बड़े साहबज़ादे हैं। सुल्तान ने अपनी तल्वार की नोक से सऊदी अरब की हदें मुतऐयन की थीं और वह मग़रिब (अंग्रेज़ों के साथ तआवुन के पुर ज़ोर हामी थे। अरबियन आयल कम्पनी के मनाफ़ा में

सऊदी ख़ानदान का पचास फ़ीसद हिस्सा है। शाह सऊद रेशमी लिबास ज़ेबतन करते हैं। अपने सर पर मख़्सूस अरबी अमामा पहनते हैं उनकी आदात व अत्वार में अब भी बाज़ अलिफ़ लैलवी दास्तानों की बातें मौजूद हैं। आपकी क़रीब की नज़र कम्ज़ोर है और इसलिए हर वक़्त एक सुनहरी फ़रेम का चश्मा लगाए रखते हैं वह इस छप्पन साल की उम्र में शिकार खेलते हैं। बाज़ों और अरबियुन्नस्ल घोड़ों का शौक़ रखते हैं, उनकी चार मन्कूहा बीवियाँ हैं। दर्जनों औरतों को तलाक़ दे चुके हैं। उनके चालीस बेटे हैं। मगर इस मुआमले में वह अपने वालिद का मुक़ाबला नहीं कर सकते। वह एक सौ पचास औरतों को अपने रिश्त-ए-मुनाकिहत में लाए थे और उनकी कुल औलाद चार सौ पचास थी।)

महल : कुछ अरसा क़बल शाह सऊद को ख़्याल आया कि उनके हरम के लिए संगे मरमर का एक हसीन व जमील और इयर कन्डीशन महल तामीर होना चाहिए। यह ख़्याल आते ही उन्होंने इटली के मशहूर माहिरे तामीर सनीवर आर संबेड व बरेज़ी को हुक्म दिया कि वह ऐसा इशरत कदह तामीर करे जिसे देख कर अलिफ़ लैला की दास्तानें याद आ जाएं, लेकिन वह उसकी तामीर के इख़्राजात अदा करना भूल गये। महल की तामीर पर ४६ हज़ार पाउन्ड (दस लाख रुपया लागत आई थी)

इसी सिलसिले में नवाए वक़्त लिखता है :

सनवर बरेज़नी ने बताया कि मैं इस सिलसिला में दोबारा सऊदी अरब गया था। मेरे हम्राह मेरा बेटा और मेरे दो कारीगर भी थे वहाँ जा कर मुझे मालूम हुआ कि शाह सऊद एक महल की बजाए एक बहुत बड़ा क़िला सा तामीर कराना चाहते हैं जो चालीस इमारतों पर मुश्तमिल होगा और हर इमारत दूसरी इमारत से बरसाती के ज़रिए मुल्हक़ होगी उसमें उनकी चार मन्कूहा बीवियों और अस्सी लौडियों के लिए एक हरम भी होगा। यह पूरा क़िला तक़्रीबन ४ लाख मुरब्बा गज़ में फैला हुआ होगा। इस सिलसिले में हमें ज़मीन के एक बहुत बड़े क़तआ को हम्वार करना पड़ा। मैंने और मेरे मददगारोंने इस मन्सूबा पर अट्ठारह महीना काम किया।

यह तो बैरूनी महल का एक इज्माली नक़्शा था। अब महल के

अन्दरूनी हिस्सा की कैफ़ियात को एक वाक़िफ़ कार अमरीकी ख़ातून ने बयान किया जो नवाए वक़्त ने छाप दिया है।

अन्दरूने महल : एक अमरीकी ख़ातून शाह सऊद के हरम में दाख़िल हुई उस ने जो कुछ देखा। ज़ैलमें उसके मज़्मून के बाज़ इक़्तिसाबात दर्ज हैं।

अमरीकी ख़ातून लिखती है कि मैं महल में ईरानी क़ालीन पर चलते हुए एक वसीअ् कमरा में पहुंची जो किसी बड़े होटल के हाल रूम से कम न था। उस कमरा में एक दबीज़ क़ालीन बिछा हुआ था जो फ़र्श ज़मीन से कई इंच ऊंचा था। मुझे बताया गया कि यह हरम का दरबार हाल है और शाह र शाम अपनी बीवियों के साथ खुश गप्पियों में सर्फ़ करते हैं। इस हाल में नक़्श व निगार से मुरस्सा बहुत सी गुदैली सुनहरी कुर्सियाँ क़तारों में बिछी हुई थीं। क़रीब ही एक मुनक़्क़श सुनहरा कामदार सोफ़ा रखा हुआ था।

शाह की बेगमात ऊंचे गले के मोरदार कुर्ते पहने हुईं थीं, जिनका कपड़ा निहायत मुनक़्क़श था। लिबास में जवाहरात बकसरत लगे हुए थे उसके साथ उन्होंने आम क़िस्म के धारीदार मोज़े भी पहन रखे थे। यह बेगमात सोने के ज़ेवरात और जवाहरात से इस क़द्र लदी हुई थीं कि यक़ीनन वह उनका ख़ासा बोझ महसूस करती होंगी। गला, कान, गर्दन, हाथ की कलाई और कमर सब सोने और इंतिहाई बेश क़ीमत जवाहरात के ज़ेवरात के बोझ तले दबे हुए थे। एक-एक उंगली में उन्होंने कई-कई अंगूठियाँ पहन रखी थीं वह मेकअप काजल सुर्ख़ी वग़ैरह से पुराने वक़्तों के हालीवुड की साकिन पिक्चरों की हिरूइन लगती थीं, उनके इत्र इतने तेज़ थे कि उनकी बू मेरे लिए शुरू में बड़ी नागवार थी।

शाह सऊद की चार बीवियाँ हैं उन चार बीवियों के अलावा बाक़ी साबिक़ बावियाँ और लौंडियाँ हैं। मुझे मालूम हुआ कि शाह सऊद की सत्तरा क़ानूनी साबिक़ बीवियाँ है। और हरम में उनके लिए अलाहिदा जगह मुक़र्रर है। बाज़ औक़ात शाह अपने मन्ज़ूर नज़र शुयूख़ को एज़ाज़ देने के लिए अपनी किसी साबिक़ बीवी को उसके निकाह में देते थे।

हरम में लौंडियाँ भी हैं और लौंडियों के लिए अलाहिदा-अलाहिदा

कुवार्टर मौजूद हैं। हाल ही में हरम में दाख़िल होने वाली औरतों की तादाद दस से साठ तक बताई जाती हैं। सिफ़ारती हल्क़ों के मुताबिक़ शाह के पच्चीस बेटे हैं। बेटियों की तादाद नामालूम है। हर लड़के के लिए अलाहिदा मोटर और ड्राइवर मौजूद है। शाह ने अपने कमरे में जदीद तरज़ की बिजली की घन्टियां लगवाई, मगर चूंकि शाह का गुस्ल ख़ाना एक बहुत बड़े कमरा और ख़ास सोने की मंटगज़ पर मुश्तमिल था। महल का दरवाज़ा मुनक़्क़श था जहाँ राइफ़ल पर संगीन चढ़ाए एक सन्तरी पहरा दे रहा था। शाह की एक बेगम ने एक तलाई दाना घड़ी जिसके डायल पर शाही निशान बना हुआ था मुझे तोहफ़ा दी।

शाह खर्चियाँ : इसी उनवान के तहत रोज़नामा कोहिस्तान लिखता है :

शाह सऊद जिस बहरी जहाज़ से अमरीका पहुंचे उस से उतरते वक़्त मौसूफ़ ने जहाज़ के अराकीन को 20 हज़ार डालर की बख़्शिश दी। अमला के हर रुक्न को दो सौ से चार सौ डालर तक बख़्शिश मिली। इस नक़द रक़म के अलावा शाह ने उन्हें सोने की घड़ियाँ भी दीं। जहाज़ के कप्तान को एक बेश क़ीमत घड़ी मिली।

यह ख़बर शाह सऊद की शाह ख़र्चियों की एक अदना सी मिसाल है जो शाहाना अदाएं वह क़यामे अमरीका के दौरान दिखाएंगे, उनके तज़्किरे कुछ दिनों बाद आएंगे, मगर शाही ख़ानदान के दूसरे अफ़राद जो कुछ करते हैं, वह ख़ालिस अलिफ़ लैलवी दास्तान की बातें हैं और मज़े की बात यह है कि इस ख़ानदान की नज्दी मम्लिकत में अभी दर्सगाहों और मुहज़्ज़ब ज़िन्दगी की दूसरी इब्तिदाई ज़रूरियात का तसव्वुर भी नहीं पैदा हो सका।

शाह ख़र्चियों की शोहरत : रोज़नामा कोहिस्तान लिखता है कि :

सऊदी अरब के शाही वहाबी ख़ानदान की मुस्रिफ़ाना अय्याशियों की दास्तानें बड़ी आम हैं। शाही ख़ानदान को तेल के ज़ख़ाइर से करोड़ों डालर की सालाना आमदनी होती है जिस पर शाही ख़ानदा न के शहज़ादों का तसर्रुफ़ है। एक-एक शहज़ादे के पास कई-कई मुकल्लफ़ महल्लात और कारें हैं। ग़ैर मुल्की बैंकों में लाखों डालर के हिसाबात

खुले हुए हैं और कुछ दिनों से यह अफ़्वाह भी गरम है कि नज्दी शहज़ादे रेगिस्तान के खुफ़िया मक़ामात पर अपनी दौलत छुपा रहे हैं। शाही ख़ानदानों की मुस्रिफ़ाना अय्याशियों की दास्तानें बड़ी रंगीन हैं। जब कोई शहज़ादा सैर व सियाहत पर निकलता है तो उसके हम्राह अइज़्ज़ा व खुद्दाम का पूरा लश्कर होता है और अलबेले शहज़ादों का यह गरोह एक दिन की शापिंग पर लाखों रुपये ज़ाए कर देता है। यह है इस मुल्क के शाही ख़ानदान की हालत जिसके अवाम की गुर्बत दुनिया में ज़रबुल-मसल है। जिहालत, निक्बत और बीमारी ने ग़रीब अवाम को अपने शिकन्जा में जकड़ रखा है। मीलों तक किसी मदरसा, हस्पताल और मुतमद्दिन ज़िन्दगी के किसी निशान का पता नहीं चलता।

शाह सऊद का शाहाना ग़रूर : शाह सऊद मुल्क की तमाम दौलत को अपनी ज़ाती मिल्कियत समझते थे और अपने मुल्क के अवाम को अपना ज़र ख़रीद गुलाम गरदानते थे, उनके पास बेपनाह दौलत थी जिसके नशा में चोर शाह सऊद के सामने अपनी ज़ात के सिवा कुछ न था।

इस सिलसिले में रोज़नामा कोहिस्तान लिखता है :

दुनिया की सबसे ज़्यादा ग़ैर जम्हूरी जागीरदाराना मम्लिकत का यह ताजदार शाह सऊद मग़्रिब की सबसे बड़ी जम्हूरियत अमरीका का हैरत अंगेज़ दोस्त है। शाह सऊद किसी पार्लियामेंट या कौन्सिल के सामने जवाबदेह नहीं और सऊदी अरब के किसी बाशिन्दे को वोट देने का हक़ हासिल नहीं। शाह के इयर कन्डीशन बुलन्द क़स्र ऐसी सरज़मीन पर तामीर हो रहे हैं जहाँएक तिहाई आबादी अब भी सियाह ख़ेमों में ख़ाना बदोशी की ज़िन्दगी गुज़ारती है और सिर्फ़ पाँच फीसद बाशिन्दे अपना नाम लिखना जानते हैं..........जब शाह इब्ने सऊद और (वालिद सऊद) को तेल की दौलत मिली, तो उनकी समझ में न आता था कि उसका क्या किया जाए। मुल्क की हर चीज़ बादशाह की मिल्कियत थी इसलिए उन्होंने इस दौलत को भी ज़ाती दौलत समझा। उनके लड़कों को सारी दुनिया का सफर करने के लिए बेशुमार रुपये मिलते थे। क़ाहिरा की हर शबीना कल्ब में कोई न कोई सऊदी शहज़ादा रक़्स वाली औरतों के झुरमुट में नज़र आता.........एक क़िस्सा मशहूर है कि

क़ाहिरा की एक कलब में जो मिस्रियों के लिए मख़्सूस थी। एक सऊदी शहज़ादा शराब में मदहोश दाख़िल हुआ और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा कि ऐ सुअर के बच्चो तुम शाही ख़ानदान के एक फ़र्द के सामने खड़े हो कर ताज़ीम क्यों नहीं बजा लाते।

सऊदी शहज़ादों के ठाठ बाठ : रोज़नामा कोहिस्तान इस मौज़ूअ् पर लिखता है :

गुज़िश्ता माहे लिबनान में इस पुरफ़िज़ा पहाड़ी मक़ाम पर सैर व तफ़रीह की ग़रज़ से लिखता सऊदी अरब के 32 बत्तीस शहज़ादे आए जिनकी उम्रें चार से सोला बरस तक थीं। उन बत्तीस शहज़ादों की देख भाल के लिए बत्तीस ख़ुद्दाम भी उनके हम्राह थे और उनके पास जदीद तरीन माडलों की पचीस कारें थीं। होटल वालों को हिदायत कर दी गई थी कि शहज़ादों के क़्याम व तआम में शाहाना ठाठ बाठ का सुबूत दिया जाए, चुनांचे रात के वक़्त उनके लिए नर्द की फ़िल्मों की ख़ास तौर पर नुमाइश की जाती और मक़ामी रक़्सगाह में भी उनके लिए ख़ास प्रोग्राम तरतीब दिए जाते। गुज़िश्ता हफ़्ता यह तमाम शहज़ादे अपने वतन वापस चले गये, मगर उनके इस मुख़्तसर से क़्याम का बिल एक लाख डालर से ज़्यादा बयान किया जाता है।

शाह सऊद का ज़वाल : शाह सऊद जिस बेदर्दी के साथ शाही ख़ज़ाने को लुटा रहे थे यह हालत अरबों के लिए ज़्यादा अरसा तक क़ाबिले बर्दाश्त न थी, चुनांचे इस मौज़ूअ् पर मुहम्मद सिद्दीक़ लिखते हैं !

शाह सऊद के इसराफ़ ने माली बहरान पैदा कर दिया था, मईशत तबाह हो चुकी थी। कहा जाता है कि शाही ख़ज़ाना में सिर्फ़ ३१७ रियाल रह गये थे। उसकी एक वजह यह भी थी कि सऊदी अरब ने फ़्रांस और बरतानिया का मुआशी मुक़ातेआ कर रखा था, जिस से मईशत पर बुरा असर पड़ा था। मुल्क में तालीम याफ़्ता तबक़ा भी जन्म ले चुका था जो मुल्क में इस्लाहात का ख़्वाहिशमन्द था। अमीर फ़ैसल ने वज़ारते उज़्मा पर फाइज़ होते ही काबीना में ज़रूरी रद्दो बदल किया और वज़ारते ख़ज़ाना समेत चार मुहकमा अपनी निगरानी में ले लिए। नतीजा यह निकला कि एक ही साल में मुल्क में तवाज़ुन पैदा हो गया।

अहम सरकारी क़र्ज़े अदा कर दिए गये और करन्सी में इस्तेहकाम पैदा हो गया। उधर ख़ारजी महाज पर सऊदी अरब ने ग़ैर जानिबदारी को तरजीह दी ताहम ख़ारजा तअल्लुक़ात में कोई ख़ास तब्दीली न की गई। यही वजह है कि जब 1958 ई० में इराक़ में इंक़लाब बरपा हुआ, तो सऊदी अरब ने मुत्तहिदा अरब जम्हूरिया का साथ देने से इंकार कर दिया।

अमीर फ़ैसल के वज़ीरे आज़म बनने से अय्याश अफ़राद का क़ाफ़िया तंग होने लगा। यह लोग क़ौमी ख़ज़ाना पर सफेद हाथी बन कर बैठते थे। उनकी अब एक न चलती। अमीर फ़ैसल के ख़िलाफ़ साज़िशें होने लगीं। शाह के गर्द ख़ुशामदियों का हल्क़ा तंग होता गया उन लोगों में शहज़ादे भी थे और आम मसाहिब भी। इस तरह कशीदगी ने सर उठाया। दिसम्बर 1940 ई० में काबीना में बहरान पैदा हुआ। दो वजूहात फौरी थीं। क़ानून साज़ मज्लिस और बजट अव्वलुज़्ज़िक्र को शाह का क़ुर्ब हासिल था। अचानक यह मुतालबा पेश किया गया कि आईन की तश्कील की जाए जो एक नुमाइन्दा मज्लिस तैयार करे। वज़ीरे आज़म के नज़्दीक यह मुतालबा क़बल अज़ वक़्त था, जहाँ तक बजट का तअल्लुक़ था उन पर यह लाज़िम था कि वह आमदनी और इख़राजात की मुकम्मल तफ़्सीलात शाह को पहुंचाया करें, लेकिन वह ऐसा न करते क्योंकि वह इस ख़्याल से मुत्तफ़िक़ न थे कि शाह फिर से क़ौमी ख़ज़ाना दोनों हाथों से लुटाना शुरू कर दें। नतीजा यह कि जनवरी 1961 ई० में अमीर फ़ैसल ने इस्तीफ़ा दे दिया जिसे शाह ने फौरन मन्ज़ूर कर लिया। नई काबीना बनी तो शाह ख़ुद वज़ीरे आज़म बन गये। काबीना की अहम तरीन शख़्सियत तीस साला अमीर तलाल थे जिन्हें वज़ारते ख़ज़ाना दी गई। काबीना में शहज़ादों के अलावा मग़रिबी दर्सगाहों के तालीम याफ़्ता शहरी भी लिए गये। ख़ानदान के बाअसर अफ़राद ने शाह सऊद और अमीर फ़ैसल के दर्मियान मसालेहत कराने की कोशिश की ताकि आले सऊद में लगांगत क़ायम रहे। मार्च 1962 ई० में अमीर फैसल वज़ीरे आज़म बना दिए गये।

अब वज़ीरे आज़म फ़ैसल ज़्यादा बअख़्तियार थे। उन्होंने हुक्मरान ख़ानदान के इख़राजात कम करने और फलाह व बहबूद के काम अंजाम देने की कोशिश की, उन्होंने यह कोशिश भी की बैरूनी म्मालिक से मुलाज़िमत के लिए जो लोग सऊदी अरब का रुख़ करते हैं उनकी

आमद से सऊदी बाशिन्दों के हुक़ूक़ सल्ब न हों और न ही उन पर ऐसा मुआशरती असर पड़े। जो सऊदी रिवायात के ख़िलाफ़ हो। इस क़िस्म की पालीसी मिस्र, शाम और इराक़ से आए हुए कारीगरों के मुआमला में भी अख़्तियार की गई जो ला महदूद तादाद में सऊदी अरब में मुलाज़िमत कर रहे थे। 1955 ई० में कई फ़िलस्तीनियों, शामियों और लिबनानियों की सऊदी अरब से निकाल दिया गया।

शाह सऊद की माज़ूली : अक्तूबर 1962 ई० में वज़ीरे आज़म फ़ैसल मिस्र ही में थे कि मुल्क की मज्लिसे आला का इज्लास हुआ और फ़ैसला हुआ कि शाह सऊद की हिक्मते अमली की वजह से मुल्क तबाही के किनारे आ पहुंचा है। इसलिए उन्हें सबकदोश करके अमीर फ़ैसल को फरमां रवा बनाया जाए। इस मज्लिस में सऊदी ख़ानदान के बड़े और जैयद उलमा शामिल थे। मिस्र से वापसी पर फ़ैसल को मज्लिस के फ़ैसले का पता चला उन्हें इस फ़ैसले से इख़्तिलाफ़ था, लेकिन मज्लिस के अरकान मिस्र थे, उन्होंने शाह सऊद को अपने फ़ैसले से आगाह किया। उन्होंने हबसे बैज़ से काम लिया। मज्लिस ने पूरे मुल्क के उलमा और आले सऊद के तमाम बुज़ुर्गों का इज्लास तलब कर लिया जो अक्तूबर 1964 ई० को शहज़ादा ख़ालिद की रिहाइशगाह पर मुनाक़िद हुआ। दूसरा इज्लास मुफ़्ती आज़म के मकान पर हुआ और तीसरा सहरा होटल में हुआ जिस में एक सौ शहज़ादों और सत्तर उलमा ने शिर्कत की। शाह सऊद को मुत्तफ़ेक़ा तौर पर बरतरफ़ और फ़ैसल की बादशाहत का एलान कर दिया।

बाब (11)

शाह फ़ैसल का दौरे हुकूमत

शाह फ़ैसल सऊदी बादशाहों में सियासी एतबार से सबसे ज़्यादा कामयाब हुक्मरां साबित हुए। 29 अक्तूबर 1964 ई० को शाह सऊद को माज़ूल करके शाह फ़ैसल को सऊदी अरब का बादशाह बना दिया गया। जब शाह फ़ैसल ने अपने अह्दे हुकूमत का आग़ाज़ किया, तो सऊदी अरब क़र्ज़ों की गिरिफ़्त में था और अरब अवाब की अक्सरीयत गुर्बत और इफ़्लास और जिहालत में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रही थी, लेकिन शाह ने कुदरत के अतीया सियाल तेल की बदौलत मुल्क को क़र्ज़ों की गिरिफ़्त से आज़ाद किया और तेल की दौलत से अपने मुल्क को तरक़्क़ी और ख़ुशहाली की राह पर डाल दिया।

फ़ैसल मैदाने अमल में : मुहम्मद सिद्दीक़ कुरैशी शाह फ़ैसल के कारनामों के बारे में लिखते हैं।

फ़ैसल 2 नवम्बर 1964 ई० को तख़्त नशीन हुए, उन्होंने दाख़िली हिक्मते अमली में अपने अज़ीम वालिद की तक़्लीद की। उनके वालिद ने क़बाइली अरबों को मुत्तहिद करके बज़ोर शमशीर सलतनत क़ायम की थी इस सलतनत को जिहालत और पस्मांदगी से पाक करने और उसकी मुआशी, मुआशरती और सियासी तरक़्क़ी से हम्कनार करने का जो भी काम हुआ वह शाह फ़ैसल का मरहूने मिन्नत है, जब वह बरसरे इक़्तिदार आए, तो ख़ज़ाना ख़ाली हो चुका था, लेकिन उनकी तग व दो से वह वक़्त भी आया, जब मुल्क का तरक़्क़ियाती बजट एक अरब चालीस करोड़ रियाल तक पहुंच गया। किसी ने सच कहा है। दौलतमन्द होना और बात है और ख़र्च करना और बात है इस मुआमला में शाह फ़ैसल अपनी मिसाल आप थे। दुनिया में बहुत कम रहनुमा ऐसे होंगे, जो क़ौमी दौलत शाह की तरह इस्तेमाल करते हों। उनके दौर में सऊदी अरब ने मुआशी और मुआशरती शोबों में मोजज़ नुमा तरक़्क़ी की है।

बुनियादी ज़रूरियात : सऊदी अरब मश्रिक़े उस्ता का

वाहिद मुल्क है, जहाँ बेरोज़गारी बिल्कुल नहीं। तमाम लोगों को मुलाज़िमत के बेहतरीन मवाक़े मयस्सर हैं। आम तौर पर एक हुनरमन्द कारकुन बीस रुपये रोज़ाना उजरत लेता था, लेकिन बढ़ती हुई मांग के पेशे नज़र अब रोज़ाना उजरत (कम अज़ कम) पचास रुपये कर दी गई है। इसके बावजूद कारीकरी की बेहद मांग है।

तालीम : इस मौज़ूअ् पर मुहम्मद सिद्दीक़ कुरैशी लिखते हैं :

शाह फ़ैसल ने सऊदी अरब को बतदरीज बीसवीं सदी में लाने की कोशिश की, उसके लिए उन्होंने तालीम का सहारा लिया और तालीम मुफ़्त और लाज़मी क़रार दी न्यूयार्क हियर्ल्ड टरब्यून अक्तूबर 1964 ई० की एक इशाअत में रक़म तराज़ है।

सऊदी अरब में जब पहले तेल दरयाफ़्त हुआ, तो हुकूमत ने उसे महज़ आमदनी का ज़रिया समझा, लेकिन मौजूदा हुकूमत को पहली मरतबा एहसास हुआ कि यह सियाल सोना न सिर्फ़ आमदनी का ज़रिया है, बल्कि दुनियाए अरब की अज़्मत के अहया का सबब भी बन सकता है, चुनांचे हुकूमत ने मौजूदा नस्ल का तालीम से बहरावर करने का एक जामे और हमागीर प्रोग्राम मुरत्तब किया है। रेगिस्तानों को गुल्ज़ार में बदल दिया गया है और शहरियों को हर मुम्किन सहूलत पहुंचाई गई है।

इस मौज़ूअ् पर मुहम्मद सिद्दीक़ कुरैशी लिखते हैं।

सेहते आम्मा : शाह ने अपने दौरे हुकूमत में आम सऊदी शहरी की ज़िन्दगी में एक इंक़लाब बरपा कर दिया............सदियों से ज़िन्दगी की बुनियादी आसाइशों और सहूलतों से महरूम लोगों को जदीद ज़िन्दगी की सहूलतें बहम पहुंचाईं। कुदरत ने सऊदी अरब को तेल की बेपनाह दौलत से माला माल कर रखा है, लेकिन उसके समरात से आम शहरियों ने फ़ाइदा शाह के दौर ही में उठाया। शाह ने इस दौलत का ख़ासा हिस्सा रिफ़ाहे आम्मा के कामों पर सर्फ़ किया। इन्हीं में एक शोबा सेहत आम्मा का भी है। हस्पताल और डिस्पेंसरियाँ क़ायम की गईं। जिन में सात हज़ार बिस्तरों का इंतिज़ाम किया गया। क्लीनिक और फिक्सटर यूनिट उनके अलावा हैं। गश्ती शिफ़ा ख़ानों का भी ख़ातिर ख़्वाह इंतिज़ाम किया गया। जिन में जदीद तरीन आलात हैं। यह गश्ती शिफ़ा ख़ाने क़स्बे-क़स्बे जाते हैं, बाक़ायदा और मुनज़्ज़म दौरे

करते हैं। इस तरह दूर उफ़्तादा इलाक़े के लोग तिब्बी सहूलतों से इस्फ़िादा करते हैं। हुकूमत की तरफ़ से यह भी इंतिज़ाम किया गया कि मुल्क के डॉक्टर किसी बीमारी का इलाज न कर सकें, तो मरीज़ सरकारी ख़र्च पर दुनिया के किसी बड़े हस्पताल में बज़रिया तैयारा भेजा जाए।

1944 ई० में सऊदी अरब में तक़रीबन साढ़े साठ लाख की आबादी के लिए 73 हस्पताल 167 डिस्पेंसरियाँ और 252 हेल्थ सेन्टर थे, लेकिन अब उनकी तादाद में मोतदबा इज़ाफ़ा हो चुका है। इंसिदादी शोबा में 33 क़रनतीने और बिल्ड बैंक क़ायम किया गया। मुल्क का अहम तरीन क़रनतींना जद्दह में है। जिस की तामीर पर एक करोड़ पचास लाख रियाल, यानी तक़रीबन 33 लाख अमरीकी डालर ख़र्च हुए। यह क़रनतीना एक शहर नज़र आ जाता है। उसका मज्मूई रक़्बा......2,28 मुरब्बा मीटर है और उस में बयक वक़्त 2,408 अफ़राद रखे जा सकते हैं।

ज़राए आम्दा रफ़्त : इस मौज़ूअ् पर मुहम्मद सिद्दीक़ कुरैशी लिखते हैं।

शाह फ़ैसल ने इक़्तिदार संभालते ही जहाँ ज़िन्दगी के दूसरे शोबों की तरक़्क़ी में गहरी दिलचस्पी ली। वहाँ ज़राए आम्दोरफ़्त, बन्दर्गाहों और मवासिलात पर भी खुसूसी तवज्जोह दी। सऊदी अरब के जुग़राफ़ियाई महल्ले वक़ूअ् ने उसकी फौजी अहमियत बहुत बढ़ा दी है यह मश्रिक़ व मग़्रिब के दर्मियान राबता का काम देता है। यही वजह है कि ऐ दुनिया के हर ख़ित्ता से मुंसलिक करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया। सड़कों की तामीर में हर इलाक़ा की ज़रूरियात को मद्दे नज़र रखा गया और इस बात पर ज़्यादा ध्यान दिया गया कि इन इलाक़ों में सड़कों का ख़ातिर ख़्वाह इंतिज़ाम हो, जहाँ ज़रई और मअ्दनी पैदावार ज़्यादा होती है, ताकि इस पैदावार को मंडियों तक लाने में किसी क़िस्म की कोई दिक़्क़त न हो। 1965 ई० में सऊदी अरब में सड़कों की कुल लम्बाई 3,227,500 किलो मीटर थी। शाह के दौर में 10,000 किलो मीटर पक्की सड़कें तामीर हो चुकी थीं और उनके आख़िरी दिनों में 2,000 किलो मीटर लम्बी सड़कों को तामीर जारी थी, चूंकि सऊदी का रक़्बा बहुत ज़्यादा है और अक्सर इलाक़ा ग़ैर आबाद है। इस लिए आला क़िस्म की सड़कें बनाना मुश्किल काम है। अलाचा अर्ज़ी उनकी

तामीर पर इख़राजात भी ज़्यादा उठते हैं, लेकिन उनके बग़ैर ख़ातिर ख़्वाह तरक़्क़ी भी मुम्किन नहीं, यही वजह है कि शाह ने सालाना बजट का 30 फीसद हिस्सा ज़राए आम्दोरफ़्त के लिए मुख़्तस कर रखा था। हाजियों की सहूलत के पेशे नज़र जद्दह, मक्का और मदीना के दर्मियान पक्की सड़कों का जाल बिछा दिया।

इस ज़िम्न में मुहम्मद सिद्दीक़ लिखते हैं :

मवासिलात : पहले डाक का इंतिज़ाम भी माक़ूल न था। शाह ने उसे बेहतर बनाया। 1944 ई० में मुल्क भर में 303 पोस्ट आफिस थे, जिनकी दाद में माक़ूल इज़ाफ़ा किया गया और अब कई जगहों पर कम्प्यूटर से काम लिया जा रहा है। 1955 ई० में टेलीफोन सिस्टम शुरू हुआ, 1966 ई० में मुल्क भर में 24,200 टलीफोन थे। अब तो घर-घर टेलीफोन हैं और दुनिया के किसी भी शहर से फौरी तौर पर राबता क़ायम हो सकता है। टली टेली प्रिन्टर की सहूलतें भी आम हैं।

मुहम्मद सिद्दीक़ लिखते हैं :

मअ्दनी वसाइल : यहाँ की सबसे बड़ी दौलत तेल है, जिस पर आजकल सऊदी अरब का कुल्लियतन इंहिसार है, ताहम मुल्क दीगर मअ्दनी वसाइल से भी माला माल है। मुल्क भर में जो सर्वे किया गया। उस से यह नतीजा अख़ज़ किया कि ज़ेरे ज़मीन दौलत ही दौलत है। इन धातों में करोमाइट, टेटेनियम, अबर्तन, नमक और जपसम शामिल हैं। सोना भ्झी माकूल मिक़्दार में पाया जाता है। 1973 ई० में शाह के हुक्म पर मुख़्तलिफ़ मुतालेआती गुरूप क़ायम किए गये और पेट्रौल एण्ड मिनरल तन्ज़ीम (पेट्रोमन) क़ायम की गई। उसने कामयाबी के साथ वसीअ् पैमाने पर मअ्दनियात तलाश कीं।

मुहम्मद सिद्दीक़ रक़म तराज़ हैं।

सनअ़तें : मुल्क में वसीअ् पैमाने पर सनअ़तें क़ायम करने का मन्सूबा भी शाह फ़ैसल की हुकूमत ने बनाया। दूसरे पंजसाला तरक़्क़ियाती मन्सूबा में 6 करोड़ डालर सनअत कारी के लिए मुख़्तस किए गये हैं। 1967 ई० में जद्दह में 60 लाख डालर की लागत से फौलाद का कारख़ाना लगाया गया। अलावा अज़ीं मुल्क में सीमेंट, साबुन, चीनी,

नमदे, खजूरों की पैकिंग के डब्बे, हल्के मशरूबात और सनअती गैस भी तैयार होती है। 1969 ई० में चार करोड़ पचास लाख डालर के सरमाए से कमाद का कारख़ाना लगाया गया, जब अमरीका और यूरोप की मुख़्तलिफ़ हुकूमतों से यह कहा गया कि वह सनअतें लगाने में सऊदी अरब को फ़न्नी इम्दाद दें, तो उन्होंने लैत व लअल से काम लिया, क्योंकि मग़रेबी ताक़तों के अपने मफ़ाद पर ज़र्ब पड़ती थी।

मुहम्मद सिद्दीक़ लिखते हैं :

तेल बरदार जहाज़ : सऊदी अरब पेट्रोलियम बरामद करने वाले अरब मुल्कों की तंज़ीम और ओपक दोनों का अहम रुक्न है। सऊदी अरब इस ख़्याल का ज़बरदस्त हामी रहा है कि तंज़ीम के अराकीन का तेल बरदार जहाज़ों का अपना बेड़ा होता कि इस तरह वह दौलत बच सके, जो मग़्रिबी मुल्कों की जहाज़ रां कम्पनियाँ किराए की शक्ल में ले जाती हैं, चुनांचे शाह फ़ैसल के ज़माना में तेल बरदार जहाज़ों की ख़रीदारी का सिलसिला शुरू हो गया।

रेडियो और टेलीवीज़न : शाह फ़ैसल ने जदीद ज़राए से फाइदा उठाने की भी पूरी कोशिश की। 1966 ई० में मुल्क भर में सात रेडियो स्टेशन क़ायम हो चुके थे। उन से आलमी सर्विस का भी एहतिमाम किया गया, ताकि दुनिया भर के लोग सऊदी अरब के बारे में ताज़ा तरीन हालात से बाख़बर होते रहें। 1960 ई० में शाह ने टेलीवीज़न का इजरा किया, उनकी वफ़ात तक मुल्क भर में छे: टेलीवीज़न स्टेशन क़ायम हो चुके थे।

इस उनवान के तहत मुहम्मद सिद्दीक़ ने लिखा है।

मेअ्यारे ज़िन्दगी : शाह बरसरे इक़्तिदार आए, तो हुकूमत को आरामको के भारी क़र्ज़े अदा करने थे। शाह ने ऐसे हुस्ने तदब्बुर से काम लिया कि सऊदी अरब पूरी दुनिया की मालियात पर छा गया। उसकी फ़ी कस आमदनी आठ सौ रुपया से तजावुज़ कर गई। शहरियों को सस्ते दामों अनाज व दीगर अशिया ज़रूरत मुहैया की गईं। मीलांज़ के अख़्बार ओगी ने अपनी 4 अगस्त 1964 ई० में लिखा कीचड़ और ईंटों के बने हुए दिहात के क़रीब तेल के "बुख़ार" ने एक सराब सा पैदा

कर दिया है। जदीद शहर, पुर तकल्लुफ़ होटल, बैनल-अक़्वामी हवा की मुस्तक़िर्र, अहम सनअतें और युनिवर्सिटियाँ।

मुहम्मद सिद्दीक़ लिखते हैं।

ग़ैर मुल्की सरमाया कारी : शाह की हुकूमत ने कोशिश की सऊदी अरब ज़्यादा से ज़्यादा तरक़्क़ी करे, ताकि ज़िन्दगी के हर शोबा में नुमायाँ तब्दीली हो। ग़ैर मुल्की सरमाया दारों की तवज्जोह सरमाया कारी की तरफ़ मब्ज़ूल कराने के लिए शाह ने हुक्म दिया कि उन्हीं फ़ैक्टरियों के लिए जगह मुफ़्त दी जाए। पाँच साल तक इंकम टैक्स न लिया जाए। बशर्तेकि क़ौमी सरमाया भी 25 फ़ीसद लगाया गया हो। फ़ैक्टरियों की मशीनरी, ख़ाम माल या पैदावार पर कोई दरआमदी या बरामदी महसूल न लिया जाता। इस हिक्मते अमली के ख़ातिर ख़्वाह नताइज बरामद हुए और देखते ही देखते बेशुमार फ़ैक्टरियाँ नसब हो गईं।

इस मौज़ूअ् पर मुहम्मद सिद्दीक़ लिखते हैं :

मालियाती निज़ाम : शाम ने मुल्क की बाग डोर संभाली, तो माली हालत बहुत पतली थी और जब शहीद हुए, तो तमाम अज़ीमुश्शान मन्सूबों के फ़ैयाज़ाना मसारिफ़ के बावजूद क़ौमी ख़ज़ाना में 23 अरब डालर थे। 1974 ई० में सऊदी अरब को तेल की फ़रोख़्त से 28 अरब डालर की आमदनी हुई। सऊदी अरब में माली उमूर की निगरानी सऊदी अरब मालियाती एजेंसी करती है। मन्सूबा बन्दी, मुआशी हिक्मते अमली और सालाना माली उमूर की तफ़्सीलात यही तय करती है और उन्हें पाय-ए-तक्मील तक पहुंचाती है।

सऊदी अरब ने जदीद बैंक कारी में भी नुमायां तरक़्क़ी की है। मुख़्तलिफ़ बैंकों की 65 शाख़ें मुल्क भर में जाबजा फैली हुई हैं, बैंकिंग की तर्बियत के लिए ट्रेनिंग सेन्टर क़ायम किया गया। जहाँ कम्प्यूटर ऐसी जदीद तरीन सहूलत तक मुहैया की गईं। सनअतों के फरोग़ के लिए सनअती बैंक और ज़राअत की तरक़्क़ी के लिए ज़रई बैंक क़ायम किए गये। जो छोटे सनअतकारों और काश्कारों को आसान शराइत पर क़र्ज़े देते, ताहम क़र्ज़े लेने की रफ़्तार निहायत सुस्त थी, क्योंकि प्राईवेट सेक्टर ही से सरमाए की फराहमी आसानी से हो जाती है।

1971 ई० में अदाइगियों के तवाज़ुन में 80 करोड़ डालर फ़ाज़िल थे, हालांकि गुज़िश्ता दस बरस की मज्मूई फ़ाज़िल रक़म 90 करोड़ डालर थी। इस साल कल क़ौमी पैदावार 16 फीसद से तजावुज़ कर गई। उसकी एक वजह तेल की पैदावार और क़ीमतों में इज़ाफ़ा थी। शाह तेल की पैदावार पर ही कुल्लियतन इंहिसार पसन्द न करते थे। इस ज़िम्न में उन्होंने कहा : हमारा क़तई नसबुल-ऐन यह है कि हम अपनी मईशत में तनव्वुअ़ पैदा करें और तमाम शहरियों के लिए सूदमन्द मुलाज़िमत यक़ीनी करें, ताकि वह मुल्क की मुआशी तारीख़ी में हिस्सा ले सकें।

मुहम्मद सिद्दीक़ कुरैशी इसी मौज़ूअ़ पर लिख रहे हैं :

तेल सियाले दौलत : तेल पैदा करने वाले म्मालिक में सऊदी अरब सरे फ़ेहरिस्त है। उसके तेल के ज़ख़ाइर भी सबसे ज़्यादा हैं, लेकिन उसके बावजूद शाह के हुक्म से तेल की मज़ीद तलाश जारी है। रुबुउल-ख़ाली, जहाँ लक़ व दक़ सहरा के सिवा किसी क़िस्म की ज़िन्दगी नहीं उसका मुकम्मल सर्वे किया गया। पहले मरहला पर पानी के ग्यारह कुएँ खोदे गये। इसलिए उम्मीद है कि यहाँ तेल भी मिल जाएगा। मज़ीद बरआँ जनरल पेट्रोलियम एण्ड मिनरल आर्गनाइज़ेशन क़ायम की गई और उसे पेट्रो केमिकल सनअतें लगाने का काम सौंपा गया, जिनके इस इलाक़ा में फ़रोग़ के बहुत ज़्यादा इम्कानात हैं। उन में से एक आयल एण्ड गैस कारपोरेशन ऑफ पाकिस्तान भी है। 1980 ई० तक पांच कारख़ाने क़ायम करने का एलान किया गया।

अन्दरूने सऊदिया के बारे में शोरिश काशमीरी के तअस्सुरात : शोरिश काशमीरी मस्लक देवबन्द के नक़ीब पाकिस्तान के मशहूर अह्ले क़लम और नामवर सहाफ़ी थे। उन्होंने शाह फ़ैसल के दौरे हुकूमत में 1969 ई० में सऊदी अरब में चौदह दिन गुज़ारे और उन तअस्सुरात को अपनी मशहूर किताब "शब जाए कि मन बूदम" में लिख दिया। हम इस किताब के बाज़ इक़्तिसाबात बिला तब्सिरा नक़ल कर रहे हैं। यह तअस्सुरात दो क़िस्म के हैं एक तरफ़ सऊदी अरब की पेरिस और न्यूयार्क को मात करने वाली शाहराहें,

फ़लक बोस इमारतें और पुर शिकोह होटल, दूसरी तरफ़ सहाब-ए-किराम और क़राबतदार रसूल की क़बरों के वीराने लीजिए पढ़िए।

सऊदी अरबीया का शिकोह : सऊदी अरब के शान व शिकोह के बारे में शोरिश काशमीरी लिखते हैं :

जद्दह में अब सिर्फ़ दो चीज़ें हैं। एक ज़बान, दूसरे अज़ान बाक़ी हर चीज़ पर यूरोप की छाप लगी हुई है। अरबों का ख़ास लिबास भी यहाँ मख़्लूत हो गया है। क़तअ् है वज़अ् नहीं, वज़अ् है, क़तअ् नहीं। वज़अ् का भरम मांद है, तो क़तअ् में रख रखाव नहीं, ग़रज़ अरब तो हैं 'हर क़िस्म के अरब'आरबा भी और अरब मुस्तअ्रबा भी, लेकिन अर्ज़े कुरआन के अरब आब व गुल के एक नए सांचे में ढल गये हैं।

दो तूफ़ानों से खेलने वाले अरब थे और खुद एक तूफ़ान थे। यह साहिल के तमाशाई अरब हैं, जो किनारा पर खड़े खुद एक किनारा हो गये हैं। यह कहना मुश्किल होगा कि उनका माज़ी से कोई रिश्ता नहीं रहा, लेकिन यह कहना ग़लत न होगा कि उनका माज़ी उन से महरूम हो चुका है और उस चिराग़ की तरह हो गया है, जो यादों के मज़ार पर भूली बिसरी को देता है।

जद्दह बहरे अहमर की मलिका है। उसकी मौजें उसके साहिल से ज़रूर टकराती और पीछे हट जाती हैं। जहाज़ आते हैं और निकल जाते हैं। करोड़ों रुपया का माल उतारा जाता और हिजाज़ के बाज़ारों में बिकता है। उन अरबों में कोई तारिक़ नहीं, जो उन मौजों में उतर जाए सफ़ीनों को आवाज़ दे और बादबान खोल दे। साथी कहें हम वतन से दूर हैं लौटेंगे, क्योंकर?

एक और सफ़ः पर लिखते हैं :

जद्दह जो कभी था अब नहीं रहा और जो है, वह बैरूत का हम ज़ुल्फ़ है, अरबों की दौलत बैरूत के बाद यहाँ निहाल होती है। एक कुमली मार्किट है, जहाँ यूरोप की तहज़ीब अपनी मस्नूआत समेत फ़रोख़्त होती है। यूरोप की ऐश तलबियों ने जिन चीज़ों को ईजाद किया यहाँ बुहताल से बिकती हैं। कपड़ा है, तो उसके बाज़ार लाए हुए हैं, एक से बढ़ कर एक, ख़्यालों से नाज़ुक कपड़ा सवाल रुपया का नहीं। तेल और सोने ने अरबों को इतना पैसा दे दिया है कि सवाल अब उसके ख़र्च करने

का है। शुयूख़ अरब और उमराए हिजाज़ क़ीमत नहीं लगाते, पैसा लुटाते हैं। उनकी दौलत ख़रीदार ढूँढती और चौकड़ी भरती है। जद्दह की हर रात अलिफ़ लैला को मुहीत है। अलिफ़ लैला कहानियों का मज्मूआ है। उसके सौदागर महफ़िलें सजा कर ऊंटों की क़तार में सार बानों के हम्राह चलते और सहराओं में जूत जगाते थे, अब यहाँ अम्वियों के दमिश्क़ की सबुह निगारख़ाना और अब्बासियों के बग़दाद की शब मय ख़ाना हर लहज़ा जवान है। उसकी मार्किट बाज़ार उकाज़ की रिवायतों को झुठला चुकी है और सूक़ एजाज़ की हिकायतों से कहीं आगे निकल गई है। अरबों की ज़मीन का रौग़न और अरबों के जिस्मों का ख़ून मग़्रिब ने लगातार कशीद किया और अब तक कशीद कर रहा है। जद्दह की इमारतें कशीदा क़ामत हैं, कभी अरब क़द आवर थे, अब इमारतें क़द आवर हैं, जद्दह उनका नोशा है और यह उसक बराती।

अगले सफ़ः पर लिखते हैं :

हर चन्द मैं इस जुस्तजू में रहा कि जद्दह में अर्ज़े कुरआन को तलाश करूं। अफ़सोस नाकाम रहा, नाक़ा तलाश किया, सैयारा (मोटर) पाया। बड़ी-बड़ी कारें हमारे हाँ की बनिस्बत पतंगों की तरह उड़ती फिरती हैं। लमबी-लमबी इयर कन्डीशन कारें जो खुद यूरोप इस्तेमाल नहीं करता। यहाँ ख़र्राटे भरती हैं।

मस्जिदों के बारे में लिखते हैं :

मसाजिद की कैफ़ियत : मस्जिदें भी हैं, लेकिन एक दो मस्जिदों के सिवा कोई मस्जिद पुर शिकोह नहीं, इन दो मस्जिदों पर शिकोह का लफ़्ज़ वारिद नहीं होता। मस्जिदे हन्फ़ी भी है। मस्जिद मालिकी भी है। मस्जिद शाफ़ई भी और मस्जिद उकाशा भी। मदीनतुल-हुज्जाज में भी ख़ूबसूरत मस्जिद नबी है, मगर इन मस्जिदों से एक फ़र्ज़ का एहसास ज़रूर होता है। किसी शिकोह का नहीं। कपड़ा मार्किट के बग़ल में एक टेढ़ी, मेढ़ी गली है। उस गली में एक छोटी सी मस्जिद है, इस तरह की मस्जिद जैसी मस्जिदें हमारे हाँ दिहात में होती हैं। बदवियत की यादगार! लेकिन क़द आवर इमारतों के पहलू में उसका वजूद अलिफ़ के साथ हम्ज़ह की तरह है। उन मस्जिदों पर बुलन्द मीनार नहीं, यह इधर उधर की संगी इमारतों को इस तरह

टक़र-टकर देखती हैं, जिस तरह खि़दमतगार औरतों के बच्चे मालिकन की बहू के सोला सिंगार को दीदे फाड़ कर तका करते हैं।

मआसिर व मुशाहिद की कैफ़ियत : मआसिर, मक़ाबिर और मुशाहिद के बारे में लिखते हैं :

सऊदी हुकूमत ने अह्दे रिसालत के आसार सहाब-ए-किराम के मज़ाहिर और अह्ले बैत के शवाहिद इस तरह मिटा देते हैं कि जो चीज़ें ढूँढ-ढूँढ कर महफ़ूज़ करनी चाहिए थीं, वह ढूँढ कर मह्व कर दी गई हैं। कहीं कोई क़बर या निशान नहीं लोग बताते और हम मान लेते हैं। हुकूमत के नज़्दीक इन आसार और नुकूश और मज़ाहिर व मक़ाबिर का बाक़ी रखना बिदअत है। अक़ीदा तौहीद के मनाफ़ी है। सुन्नते रसूल के खि़लाफ़ है, लेकिन अस्रे हाज़िर की हर जिद्दद, जद्दह ही में नहीं। पूरे हिजाज़ में मौजूद है, बल्कि बढ़ कर फैल रही है। क्या कुरआन व सुन्नत का इतलाक़ उस पर नहीं होता? शाह फ़ैसल की तस्वीरें होटलों में लटक रही हैं उन्हें हुकूमत ने खुद मुहैया किया है। इयर पोर्ट पर उतरते ही शाह फ़ैसल की तस्वीर पर नज़र पड़ती है। क़हवा ख़ानों और रेस्तूरानों में इन तस्वीरों की बुहतात है, लेकिन उन में कोई बिदअत नहीं! बिदअत अस्लाफ़ की यादें बनाने और बाक़ी रखने में है?

अब उमराए हिजाज़, शुयूखे़ अरब और ख़ानदान शाही सोने और चाँदी के तार से खींचे हुए रेशम में तुलता और किस्म-किस्म के गद्दों पर सोता है।

कस्टम के इंतिज़ामात के बारे में लिखते हैं :

कस्टम : शराब, चर्स, और किताब तीनों पर कस्टम की निगाहें रहती हैं। लुत्फ़ यह कि किताब या रिसाला कस्टम संसर नहीं करता, वह मुहकमा तालीम के पास जाता है और मुहकमा तालीम के अरकान की मर्ज़ी है कि वह महीनों में और हफ़्तों में संसर करें, चाहे रोक लें, चाहे पास कर दें। मैं अपने साथ अल्लामा इक़बाल के खुतबात व कलिमात का मज्मूआ फ़ैज़ाने इक़बाल ले गया था, लेकिन रोक लिया गया। मैं पन्द्रह रोज़ रह कर वापस आ गया। "फ़ैज़ाने इक़बाल" संसर न हो सका, किताबें उनके संसर आफिस में कूड़ा करकट की तरह पड़ती रहती हैं। कुरआन पाक के तरजमे भी उन में गुड मुड होते हैं। कोई

तख़्सीस या कोई एहतराम नहीं, बस जो शख़्स वहाँ बैठा है। उसकी मर्ज़ी का नाम संसर है और उसकी फ़ुर्सत का नाम वक़्त, मैंने कस्टम के मुहतमिम से बहेतरा कहा कि उन किताबों में कोई बात मुज़िर नहीं। यह तो उस शख़्स के कलिमात का मज्मूआ है, जो हिजाज़ के इश्क़ में गुंधा हुआ था, लेकिन उस ने पट्ठे पर हाथ ही न धरने दिया। आख़िर फ़ैज़ाने इक़बाल के तमाम नुस्ख़े वहीं छोड़े।

शिर्क और इश्क़ का फ़र्क़ : इस मौज़ूअ़ पर लिखते हैं :

मैंने सुहैल से कहा आख़िर इस बेतवज्जही और आसार फरामोशी की वजह क्या है? जिस जगह को क़ुरआन, सीरत और हदीस व तारीख़ ने महफ़ूज़ कर लिया है, वह बेएतनाई की मुस्तहिक़ है? अगर यह चीज़ें मक्का से निकाल दी जाएं, तो मक्का के पास क्या रह जाता है। बैतुल्लाह ने मक्का को मेअ़राज बख़्शा, लेकिन इस मेअ़राज को जिस साहिबे मेअ़राज की मारिफ़त हम ने पहचाना और मक्का हमेशा के लिए उम्मुल-क़ुरा हो गया, उसके आसार व नुक़ूश न होते, तो मक्का में कुरह अर्ज़ी के इंसान के लिए क्या क़शिश थी? यह चीज़ें तो बैतुल्लाह के हाशिए हैं। अरबों को एहसास ही नहीं कि उनके शर्फ़ व इम्तियाज़ को इन्हीं चीज़ों ने ज़िन्दा कर रखा है। यह सब जिस आक़ा के दम क़दम से है, वही आक़ा अरबों को अबदल-आबाद तक अइज़्ज़ा दे गया हैं। मुहम्मद अरबी न होते, तो अरबों की तारीख़ उसके सिवा क्या थी कि और क़ौमों के तरह वह भी एक थे। हज और उमरा ने तुलूअ़ क़्यामत तक अरबों की मईशत क़ायम कर दी है। उनके बाज़ारों की रौनक़े फ़ख़्र मौजूदात की ज़ात है कि लोग उनके इश्क़ में उनकी दावत परखचे आते और मेहमान हो कर मेज़बानी करते हैं?

मैंने सुहैल को याद दिलाया कि आले सऊद की हुकूमत यूरोप की हर चीज़ से मुस्तना हो रही है हत्ता कि तबीअत नौजवान रखने का यह सामान यहाँ मौजूद है, लेकिन जिस इल्म ने यूरोप की बालादस्ती क़ायम की है ओर उसने जोड़ बटोर को अपनी तारीख़ गढ़ ली है, वह इल्म अरबों के हाँ हक़ीक़ी मआख़ज़ समेत मौजूद है और अरब हैं कि अपनी तारीख़ अपने हाथों मिटा रहे हैं। यूरोप का मिज़ाज़ यह है कि वहाँ इल्म खण्डर तलाश कर रहा है और जुस्तजू वीराने खोद रही है, लेकिन हम

तारीख़ की इस दौलत से जो सरवरे कौनेन के सवानेह व अफ़्कार पर रौशनी डालती है और अज़ीमुल-मर्तिबत सहाबा के हालात व कवाइफ़ से आगाह करती है। एक ऐसा बर्ताव कर रहे हैं कि उस पर इग़माज़ व इस्तिबदाद दोनों का इतलाक़ होता है। यह तारीख़ व इश्क़ दोनों से ज़्यादती है। सऊदी हुकूमत क़रने अव्वल की हुकूमत नहीं। आज की बादशाहत है। बादशाहत मन्शा बनी नहीं, क़ैसर व किसरा की यादगार है कि हम ने अपने लिए उसे मुशर्रफ़ बइस्लाम कर लिया है।

सुहैल को इसरार था कि यह "बेहुर्मती" शिर्क की ख़राबियों का रद्दे अमल है, लोगों ने उन जगहों को मआबद बना लिया और माबूदे हक़ीक़ी से हटते जा रहे थे। उनके लिए बैतुल्लाह से ज़्यादा बैअ़ते रिज़वान का दरख़्त अज़ीज़ था कि जिसके हाँ बच्चा नहीं होता, वह औरतें उस से लिपट कर दुआ मांगती थीं।

मैंने सुहैल से कहा यह कहानी सही भी हो, तो उस से यह कहाँ साबित होता है कि वह चीज़ें मिटा दी जाएं, जो बहरहाल तारीख़ की यादगार हैं।

आख़िर ज़माना काबा और मस्जिदे नबवी भी तो आसार हैं? सफ़ा व मरवा भी तो शआइरिल्लाह हैं, मुज़्दलिफ़ा क्या जाते हैं? मिना क्यों पहुंचते हैं? अरफ़ात क्या है जुम्रतुल-उक़्बा, जुम्रतुल-उस्ता और जम्रतुल-ऊला क्या हैं? आसार हैं जो रस्में वहाँ अदा की जाती हैं, वह मज़ाहिर हैं उन्हीं अक़ीद की बिना पर महफ़ूज़ किया गया, तो यह अक़ीदा जिसकी मारिफ़त हम तक पहुंचा और जिस ने यह मिल्लत तैयार की बक़ौल इक़बाले दीन अल्लाह की तरफ़ से आता है और मिल्लते पैग़म्बर बनाते हैं। इस आलीशान पैग़म्बर का मूलिद व मस्कन, उसकी दावत के मराकिज़ मनाज़िल और नुज़ूले वह्ये के महवर व मुहीत क्यों न महफ़ूज़ किए जाएं। उसके सांचे में ढले हुए इंसानों की यादगारें क्यों न बाक़ी रहीं? यह सब यादगारें इंसानों की हैं, जो तारीख़ के धारे से को अबदल-आबाद तक मोड़ के ज़िन्दा जावेद हो गये। जिनका नाम और काम सुबह क़्यामत तक ज़िन्दा रहेगा। जिनके लिए तमाम इज़्ज़तें हैं। जो हुज़ूर के अह्ले बैत थे वज्दान जिन्हें इश्क़ की आंखों से अब भी चलता फिरता देखता है। उनके आसार महफ़ूज़ न रहें, तो फिर कौन सी चीज़ महफ़ूज़ की जाएगी। सऊदी हुकूमत ने शिर्क

(सऊदी हुकूमत का खुद साख्ता, क़ादरी) को मुन्हदिम किया, लेकिन साथ ही इश्क़ को भी मिस्मार कर दिया है, वह शिर्क और इश्क़ में इम्तियाज़ न कर सकी, हालांकि यह चीज़ें अक़ीदा नहीं, तारीख़ हैं। जिस क़ौम ने सबसे पहले दुनिया को तारीख़ दी और जिसके मआख़िज़ कलामुल्लाह ने महफूज़ किए हैं, वह क़ौम आज अपनी तारीख़ मिटाने पर तुली हो, तो यह एक अल्मिया है। इन आसार की ताज़ीमे दीन का मस्अला नहीं। बिला शुबह तौहीद बारी उन परिस्तशों (अगर यह परस्तिश हो तो वफ़ादारी) की इजाज़त नहीं देती, लेकिन यह मस्अला तहज़ीब का है।

इस्लाम की सर ज़मीन पर आले सऊद की हुक्मरानी ज़रूरी है और उसका नज़्म व नस्क़ भी इसी के हवाला है, लेकिन यह इलाक़ा आले सऊद की मीरास नहीं, बल्कि मिल्लते अरबी भी कहना उसकी वारिस नहीं। यह सर ज़मीन खुसूसन मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा तक की सर ज़मीन जहाँ-जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आते जाते रहे.......बल्कि पूरा अरब दुनियाए इस्लाम का ज़ामिन है। तमाम मुसमलान हुकूमतों को मज़्हबन उसकी तौलियत हासिल है। आले सऊद तो उकसी मस्ऊल है।

सुहैल को मेरे जज़्बाती होने का यक़ीन हो गया। उसके बावजूद मैंने उसे क़ाइल कर लिया कि यह चीज़ें उस बेरुख़ी की सज़ावार नहीं, यह तारीख़ के अज्ज़ा हैं और उन्हें इस लिहाज़ से बाक़ी रहना चाहिए कि इल्म के चार जरिए हैं, पहला वह्य, दूसरा आसार क़ुदमा जिसकी बुनियाद क़ुरआने हकीम ने सीरू फ़िल-अर्ज़े पर रखी और तारीख़ को अय्यामुल्लाह के ज़िक्र करने से ताबीर किया है। तीसरा ज़रिया इल्मुन्नफ़्स और चौथा सहीफ़ा मग़्फ़िरत है। सीरू फ़िल-अर्ज़े की ग़ायत क्या है? आसारे क़ुदमा का मुताला यही चीज़ें हैं, जो तारीख़ी अस्बियत को ज़िन्दा रखती और अक़ीदा में अक़ीदत पैदा करती हैं।

जन्नतुल-मअ़ली के बारे में लिखते हैं!

जन्नतुल-मअ़ली : जन्नतुल-मअ़ली मक्का मुअज़्ज़मा का क़दीम तरीन, लेकिन जन्नतुल-बक़ीअ़ के बाद सबसे अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान है, मिना के रास्ते पर मस्जिदुल-हराम से एक मील दूर है, यहाँ से एक

चौड़ी सड़क निकाली गई है। जिस से क़ब्रिस्तान के दो हिस्सा हो गये हैं, ग़िर्दा गिर्द एक पुख़्ता चहार दीवारी है। किसी क़बर पर कोई निशान या कतबा नहीं सब निशान ढा दिए गये हैं। हर तरफ़ मिट्टी के ढेर हैं। चिराग़ न फूल, किसी-किसी क़बर पर निशानदेही के लिए कंकरियाँ पड़ी हैं। अजब वीराना है। जिस हिस्सा में हज़रत अस्मा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक, इमाम इब्ने ज़ुबैर और सईद बिन मुसैय्यिब (कश्तगां हज्जाज बिन यूसुफ़) की क़बरें हैं, वहाँ अन्दर जाने के लिए एक दरवाज़ा है, लेकिन वह क़ुबूर पर हाज़िरी के लिए नहीं नई मैयतों के लिए है और एक दरवाज़ा है, लेकिन वह क़ुबूर पर हाज़िरी के लिए नहीं नई मैयतों के लिए है और जिस हिस्सा में हज़रत ख़दीजतुल-कुबरा रज़ि अल्लाहु अन्हा और उनके अफ़राद ख़ानदान आराम फरमा रहे हैं या हुज़ूर की वालिदा हज़रत आमिना रज़ि अल्लाहु अन्हा, हुज़ूर के लख़्ते जिगर क़ासिम और हुज़ूर के चचा अबू तालिब मदफ़ून हैं, वहाँ कोई दरवाज़ा और कोई रास्ता नहीं है। टूटी फूटी क़बरें, मिट्टी की ढेरियाँ हो गई हैं। किसी क़बर पर पानी का छिड़काव नहीं। धूप का छिड़काव ज़रूर है, पूरी दुनिया में उस से बढ़ कर कोई क़ब्रिस्तान बेबसी की इस हालत में न होगा।

मै। और सुहैल एक पहाड़ी पर चढ़ गये, वहाँ से हज़रत ख़दीजा की क़बर पर निगाह की, उम्मुल-मुमिनीन का मज़ार..........? मैं काँप उठा मेरा दिल धक धक करने लगा। मुसलमानों ने अपनी बीवियों के ताज महल बना डाले, लेकिन जिस औरत को पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां की पहली शरीक हयात होने का शर्फ़ हासिल हुआ, जो फातिमतुज़्ज़हरा की मां थीं, वह एक क़बर वीरान में पड़ी हैं। मैं अपने तईं ज़ब्त न कर सका। आंखों में बदलियाँ आ गईं। मैंने कहा सुहैल! अरबों का मिजाज़ ही उनके लिए सज़ा है। क्या ख़दीजतुल-कुबरा मक्की ज़िन्दगी नहीं गुज़ार रहीं। हुज़ूर को बेअ्सत से पहले ग्यारह साल सताया गया। उम्मुल-मुमिनीन को अब सताया जा रहा है। हुज़ूर मदीना में? उम्मुल-मुमिनीन मक्का में! इस औरत......अज़ीम औरत का इंसानियत पर कितना बड़ा एसान है? सबसे पहली आवाज़ जिस ने नुबुव्वत की बशारत पर साद किया। अपनी जसारत पर मुझे हैरत हुई कि मैंने उस ढेरी (लहद) के सामने

खड़ा होने का हौसला किया, मैं हिल गया एक कपकपी तारी हो गई।

मेरा ऐ काशके मादर न ज़ादे

जो लोग उसका नाम कुरआन व सुन्नत रखते हैं वह खुद किस मुँह से ताज शही पहनते हैं, ऊंचे-ऊंचे महल बताते, मुहम्मद अरबी की दौलत समेटते और उसका नाम ख़ज़ाना शाही रखते हैं। जिस ज़ाते अक़्दस के सदक़ा में इज़्ज़तें पाईं हैं। उसके आसारे अक़्दस की यह बेहुर्मती! यह कुरआन व सुन्नत नहीं एहानत और सरीहे एहानत है। अल्लाह की ज़मीनें और दफ़ीने सब अल्लाह का माल हैं। उसकी मख़्लूक़ का माल हैं किसी फर्द को यह हक़ हासिल नहीं कि इंसानों को गेला बना ले खुद चरवा बन बैठे, गोश्त खाले खालें बेच डाले। मौत किसी का पीछा नहीं छोड़ती। जो मौत की इस तरह हतक कर रहे हैं। मौत उन से भी मुतआक़त है, लेकिन जन्नते मअ़ली में, वह लोग सो रहे हैं, जो हमें ज़िन्दा कर गये। हमें बक़ा दे गये, जो मुँह फेर के शाहों पर निगाह करते, तो उनकी गोदड़ियों से ख़िल्अते फ़ाख़िरा काँप उठते थे। सऊदी हुकूमत इश्क़ और शिर्क में फ़र्क़ न कर सकी है। रहमत इन क़बरों में होने वालों पर, और इबरत हमारे लिए!

कितनी अज़ीम ज़िन्दगियाँ उन क़बरों में सो रही हैं।

दादी बदर पर तब्सेरा करते हैं :

वादी बदर : मुल्क अब्बास ने कहा वह सामने है, वादी-ए-बदर और मोटर दो मिनट बाद एक बड़े चाय ख़ाने के सामने रुक गया। उस वक़्त वहाँ कोई नहीं था। ताला के बेग़ैर सब कुछ बन्द बड़ा था। एक सन्नाटा, मिट्टियाँ थीं और मख़रूती लोटे, वुज़ू किया नफ़्ल पढ़े शुहदाए बदर की क़बरों पर गये, वही आलिम और हालत जो हिजाज़ में क़बरों की है, निशान न कतबा क़बरें भी क्या मिट्टी की ढेरियाँ हैं। सूरः इंफ़ाल की ७५ आयतें फ़िज़ा का एहाता किये हुए हैं कि यहाँ वह सो रहे हैं, जो इन आयतों के बैनस्सुतूर में हैं, जो कुल तीन सौ तेरह थे और जिनमें यहाँ होने वाले चौदह हैं, जो अल्लाह की राह में मारे गये। जिन्हें शहादत ने सर बुलन्द किया और जिनकी मदद को अल्लाह ने फ़रिश्ते भेजे थे। यह वह जंग है, जिस के अहवाल का ज़ख़ीरा कलामुल्लाह में महफ़ूज़ हो गया है, यही वह जंग है जिसमें मुसलमानों की बेसरो सामानी पर हुज़ूर

ने अपने अल्लाह से कहा था।

ऐ अल्लाह! तूने मुझे जो वादा किया है, आज पूरा कर फिर सज्दे में गिर कर अर्शे इलाही से हम कलाम हुए थे।

खुदाया! अगर यह चन्द लोग आज मिट गये, तो फिर क़्यामत तक तेरा कोई नाम लेवा नहीं रहेगा।

अल्लाह ने कहा :

फौज (कुरैश) को शिकस्त दी जाएगी, वह पुश्त फेर देंगे। (क़्रम ३)

वही हुआ जो अल्लाह के रसूल ने चाहा और अल्लाह ने पूरा किया।

इस वीराना में अब भी हज़रत सअद बिन उबादा की आवाज़ गूंज रही है, खुदा की क़सम आप फरमा दें, तो हम समुन्द्र में कूद पड़ें।

हज़रात मिक़्दाद एलान कर रहे हैं :

"हम क़ौम मूसा की तरह यह नहीं कहेंगे कि आप और आपका खुदा जा कर लड़ें। हम आपके दाएं से, बाएं से, सामने से, पीछे से लड़ेंगे।

तीन सौ तेरह ने, जिन में सिर्फ़ दो घड़ा सवार थे। कुरैश की एक हज़ार फौज को जिसमें एक सौ सवार थे, तीन सौ तेरह कर दिया। कुरैश के नामवर रुउसा में निन्नानवे फ़ीसद लुक़्मा अजल हो गये। अबू जहल, मुअव्विज़ और मुआज़ दोनों उमर भाईयों के हाथ से मारा गया। अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ने उसका सर काट के हुज़ूर के क़दमों में डाल दिया। उतबा जो रुउसा मक्का में पहले नम्बर पर कुरैश के लश्कर का सालार था। हज़रत हमज़ा के हाथों मारा गया। यह सब कुछ इस जंग ही की फुतूहात थीं और वह शुहदा जिन्हें हुज़ूर ने खुद दफ़्ना दिया था। उनकी क़बरें आज "वारिसान सुन्नत" के हाथों पामाल हो चुकी हैं। तारीख़ के वह अज़ीम आसारे मह्वे होते जा रहे हैं, जिन्हें उतबा व अबू जहल न मिटा सके, उन्हें हम अपने हाथों मह्व कर रहे हैं।

मैं झिंझिला गया यह कुरआन व सुन्नत नहीं, यह संगीनी व संगदिली है कि रसूलुल्लाह की यादगारें मिटाई जाएं और अपनी यादगारें खड़ी की जाएं क्या अरब इस एहानत और बग़ावत की सज़ा नहीं पा रहे हैं? अरबों की शर्फ़ इंसानी किन से हासिल हुआ। उनकी बदौलत?

आज यही मंबए मिटाए जा रहे हैं। सूरः इंफ़ाल के महबित से यह सुलूक इश्क़ व ईसार की तौहीन है। क्या कुरआन व सुन्नत के दाई जो अहादीस पर ज़िन्दगी बसर करते हैं, भूल गये हैं कि रसूलुल्लाह ने

जिब्रीले अमीन से कहा था कि अह्ले बदर सब मुसलमानों में अफ़ज़ल हैं। उस पर जिब्रीले अमीन ने कहा था जो फ़रिश्ते बदर में शरीक हुए थे। उनका भी मलाइका में यही दरजा है। (सही बुख़ारी)

उधर हज़रत ज़ुबैर ने बरछी से अबू करश का सफ़ाया कर दिया। रसूलुल्लाह ने वह बरछी ले ली, चारों ख़ुलफ़ा के पास मुन्तक़िल होती रही। फिर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के पास आई। आख़िर इस बरछी में क्या ख़ुसूसियत थी? क्या उसके लिए क़ुरआन में कोई हुक्म आया था? लेकिन यादगार थी, मुन्तक़िल होतीगई, आख़िर इन बादशाहों ने जो उमैया के ख़ानदान में से थे और यादगारों की तरह उसे भी गुम कर दिया।

जन्नतुल-बक़ीअ् के बारे में लिखते हैं !

जन्नतुल-बक़ीअ् : जन्नतुल-बक़ीअ् कोई आठ एकड़ रक़्बा में होगा। चारों तरफ़ चार, साढ़े चार फिट की फ़सील है। एक ही दरवाज़ा उस दरवाज़ा पर एक सिपाही खड़ा रहता है। केई लोग बाहर ज़ाइरों के इंतिज़ार में रहते हैं और कोई मुआवज़ा तय किए बेग़ैर वह ढेरियों की निशानदेही करते हैं। इस से मालूम होता है, कौन सी क़बर किस वजूद मुबारक की है? यहाँ कोई फूल वाला नहीं, कोई मुश्कीज़ा नहीं, शमअ् व गुल नापेद हैं, जन्नतुल-मुअ्ला का भी यही हाल था, बल्कि वहाँ कुछ बेएतनाई ज़्यादा है; लेकिन जन्नतुल-बक़ीअ् जो ख़ानदाने रिसालत के दो तिहाई अफ़राद का मदफन शुरू इस्लाम के दरख़शन्दा चेहरों की आख़िरी आरामगाह और अन गिनत शुहदाए इस्लाम सुल्हाए उम्मत और अकाबेरीने दीन के सफरे आख़िरत की मंज़िल है। एक ऐसी एहानत का शिकार है कि देखते ही ख़ून खौल उठता है। दामने यज़्दां चाक करने का हौसला नहीं। कुलाहे सुल्तानी तक रसाई नहीं, अपना गरीबान चाक करने से फाइदा नहीं। उमर फ़ारूक़ ने ठीक ही कहा था।

"अरब वाले सरकश ऊंट हैं, जिनकी महार मेरे हाथ में दी गई है, लेकिन मैं उनको रास्ता पर चला कर छोड़ दूँगा।"

जन्नतुल-बक़ीअ् में कोई अरब नहीं आता। असल अरब क़बरों में सो रहे हैं और वही सही अरब थे, जिनके लिए क़ुरआन उतरा था। अब वहाँ हम से अज्मी जाते हैं और एक ऐसे मंज़र से वास्ता पड़ता है कि दिल

बिखर जाता हे। उन अरबों का तुर्रह किया है। यही कि उनके ख़ित्ता में काबतुल्लाह और मदीनतुन्नबी वाक़े हैं। उनके दामन में जबले नूर, जबले रहमत, जबले सफ़ा, और जबले उहुद हैं। उनके रास्ते रसूलुल्लाह के क़दमों से मुस्तफ़ीद हैं। उनकी ज़बान में अल्लाह तआला ने काइनात को ख़िताब किया है आख़िरी बनी उन में से मबऊस फरमाया नव्वे फ़ीसद तारीख़े इस्लाम उनकी आग़ोश में इस्तिराहत कर रही है, लेकिन उन यादगारों के महफ़ूज़ करने से उन्हें शरअ् रोकती है। मगर उनके अपने वजूद लफ़्ज़ी व मानवी मावरा है उन्हें ज़रा बराबर एहसास नहीं कि उसी मिट्टी में कौन सो रहे हैं, रसूल मक़्बूल के लख़्ते पारे हैं। उनकी नूरे नज़र और इस नूरे नज़र के चश्म व चिराग़ हैं, चचा हैं, चचा के बेटे हैं। उम्मत की माएं हैं, जन्नत की शहज़ादियाँ हैं, औलिया हैं, फ़ुक़्हा हैं, उलमा हैं, हुकमा हैं, हलीमा सादिया हैं। लेकिन अरब हैं कि क़बरें ढाए और महल बनाए जा रहे हैं। मुझ पर कपकपी तारी हो गई। बयदे लरज़ाँ की तरह कांपने लगा। दिल यूं हो गया, जिस तरह कुएँ ख़ाली डोल थर्राता है।

दाख़िल होते ही दाएं हाथ के एक कोने में हुज़ूर की फूफ़ियाँ हैं, आतिका सफ़ीया और फातिमा के मज़ार हैं। आगे बढ़ें, तो नौ उम्महातुल-मुमिनीन महवे ख़्वाब हैं। आइशा, सौदा, ज़ैनब, हफ़्सा, उम्मुल-मसाकीन, उम्मे सलीमा, जौहरा, उम्मे हबीबा और सफ़ीया उनके साथ की रविश पर हज़रत अक़ील, हज़रत जाफर तैयार, इमाम मालिक और इमाम नाफ़े आसूदह ख़ाक हैं। उनके एक तरफ़ शुहदा के मज़ारात का टुकड़ा है। सामने हुज़ूर के फ़रज़न्दे इब्राहीम की मुल्हिद है, इधर उध ार अब्दुर्रहमान बिन औफ़, रुक़ैया बिन्ते उस्मान बिन मज़ऊन, सअद बिन अबी वक़ास, फ़ातिमा बिन्ते असद, अब्दुल्लाह बिन उमर, मालिक अंसारी, इस्माईल बिन जाफर सादिक़ के मदफून की ढेरियाँ हैं। आख़िरी नकर पर हज़रत उस्मान का मज़ार है। उस मज़ार से हट कर दीवार के साथ हलीमा सादिया की क़बर है। यहीएक क़बर है जो इस क़ब्रिस्तान में दरख़्त के साए तले है। बाक़ी पूरे क़ब्रिस्तान में कोई दरख़्त पूरा या क्यारी नहीं है।

उम्महातुल-मुमिनीन के मज़ारात से दस बारह गज़ आगे एक ग़ैर कशीदा मसलुस टिकड़ी में जो ज़्यादा से ज़्यादा 5X3 गज़ की होगी। छे:

ढेरियाँ हैं। उन पर कोई निशान नहीं क़बरों की शक्ल है। संग्रेज़ों का हशिया, सीना पर कंकरियाँ, दाएं तरफ़ बिन्ते रसूल पड़ी हैं। सामने रसूलुल्लाह के चचा के हज़रत अब्बास हैं। हज़रत अब्बास के जस्दे मुबारक की दाहिनी तरफ़ इमाम हसन, इमाम ज़ैनुल-आबेदीन, इमाम बाक़र और इमाम जाफर लेटे हैं। यह सारी जगह मस्जिदे नबवी में वाक़े हज़रत फ़ातिमाके हुजरे से भी छोटी है। उस करबला में चचा निगरां हैं। बच्चे मां की गोद में हैं और जो करबला में रह गये थे उनकी जुदाई का हुज़्न मां की क़बर से महसूस हो रहा है। शौहर नजफे अशरफ़ में और बाप वह सामने कि बीच में चन्द मकान हाइल हैं। दुनिया वालों ने मरने के बाद भी दीवारें खींच दी हैं। गुंबदे ख़ज़रा को उस रुख़ से देखिए सोगवार मालूम हो रहा है और उस वीरानी को टुकुर टुकुर देख रहा है उसके होंठों पर जुंबिश सी है।

गोश नज़्दीक लबम आरम कि आवाज़े हस्त

"फातिमा मेरा जिगर गोशा है, जिस से उसको दुख पहुंचेगा, मुझे भी अज़ीयत होगी।" (इरशादे नबवी)

बिन्ते रसूल के सामने में कोई घन्टा भर साकित व सामित खड़ा रहा, जैसे कोई चीज़ गड़ गई हो और उसमें ज़िन्दगी के आसार मुतलक़न न रहे हों, मलिक अब्बास देर तक दुआएं मांगते रहे, लेकिन मैं था कि "बेदस्त व पा" खड़ा था। जब महवियत यहाँ तक पहुंच गई कि होश रहे न हवास, जैसे कोई आह नार सा मुंजमिद हो चुकी है या आंसुओं की तुग़यानी रुक गई है, तो अब्बास मलिक ने मुझे गुम सुम पा कर कहा :

आग़ा साहब फातिमा पढ़िए।

मैं पूरी तरह हिल चुका था। अब्बास ने मेरे शाना पर हाथ रख कर कहा। आग़ा साहब? और मैं अन्नक़्शु कल-हजरे की तरह था। उन्होंने झिंझोड़ा ....फातिहा पढ़िए। मैंने कहा मलिक साहब फातिहा किस लिए किया उन्हें हमारे हाथों की एहतियाज है। हम क्या और हमारी दुआए मग्फ़िरत किया? हम तो खुद उनके मुहताज हैं। हमारी मग्फ़िरतें उनकी बदौलत होंगी। मलिक साहब हैरान रह गये। मैंने क़बर से टिकटिकी बांध रखी थी। मैं कह रहा था। फातिमा (सलामुल्लाह अलैहा) तो अब भी करबला में है। तेरे बाप का कलिमा पढ़ने वालों ने तुझे अब

तक सताया है। तेरी कहानी ज़ख़्मों की कहानी है, तूने काबतुल्लाह में बाप के ज़ख़्म धोए थे, करबला में तेरी औलाद ने ज़ख़्म खाए, कूफ़ा में तेरा शौहर उम्मत के ज़ख़्म खा के वासिल बेहक़ हो गया। तेरे अबा की उम्मत ने तेरी औलाद को हमेशा सताया है। आज चौदह सदियाँ होने को आई हैं। तेरी औलाद क़बरों में भी सताई जा रही है। पूरा अरब तेरी औलाद की क़त्लगा है। फातिमा तेरे अबा ने कहा था।

फातिमा! मेरी रिहलत के बाद जो मुझे सबसे पहले मिलेगा, वह तो होगी तो उनके पास चली गई। मुहम्मद का घराना अब भी करबला में पड़ा है, जो लश्कर व सिपाह और ताज व कुलाह की तल्वारों से बच रहे थे। उनकी क़बरें क़त्ल कर दी गईं। अपनी क़बर के क़त्ल पर मुझे रोने दे, तू इस क़बर में है और मैं तेरे सामने ज़िन्दा हूँ। मुझे अपनी ज़िन्दगी एक फ़ेअ्ले अबस महसूस हो रही है। तेरे मरक़द के ज़र्रे तमाम काइनात के मुरदारेद से अफ़ज़ल हैं, उन में महर व माह से बढ़ कर दरख़्शानी है, लेकिन ज़माना ने आंखें फेर ली हैं और उसका शीशा दिल ग़ैरत व हमीयत से ख़ाली हो गया?

मैं लौट आया रात भर बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। नींद उड़ चुकी थी और मैं यही सोच रहा था कि अरबों के पास ज़बान की नुखुव्वत के सिवा कुछ नहीं रहा, माज़ी का घमण्ड रह गया है, लेकिन वह शर्फ़ क़तअ़न नहीं रहा जो उनके माज़ी की सबसे बड़ी मीरास है।

आज सुबह फातिमा के मज़ार पर गुम सुम खड़ा सुन रहा था। उम्मुल-मुमिनीन कह रही हैं, ऐ अह्ले अरब हया करो, मेरी नूरे चश्म के मरक़द से यह सुलूक कर रहे हो। उसके बाप ने तुम्हें शर्फ़ बख़्शा और ख़ैरुल-उमम बनाया था।

हज़रत सौदा आईना हिजाब के जल्व में थीं। हज़रता आइशा का हुजरा हुज़ूर का मदफन मुबारक है। आइशा ही के सीना पर सर रख कर हुज़ूर ने वफ़ात पाई थी, इन्हीं की बदौलत खुदा ने तयम्मुम का हुक्म सादिर किया। हुज़ूर के मरजुल-मौत में मिस्वाक चबा कर इन्हीं ने दिया था। उनका बाप दुनिया में तीसरा मुसलमान था और ग़ारे हिरा में दो का, दूसरा जो सिद्दीक़ के लक़ब से मुलक़्क़ब हुआ जो ख़िलाफ़ते इलाही का पहला फरमांरवा था। आज जन्नतुल-बक़ीअ् में उसकी बेटी, हुज़ूर की बीवी और हमारी मां एक बेनाम व निशां क़बर में इस्तिराहत पज़ीर हैं।

हज़रत हफ़्सा साइमुन्नहार क़ाइमुल्लैल थीं। हज़रत उमर की बेटी और रसूल की उन बीवी का मज़ार भी इस शरई संगीनी का शिकार है। हज़रत ज़ैनब उम्मुल-मसाकीन की लहद अपनी कुन्नियत का अक्स है। हज़रत उम्मे सलमा का बिछौना हुज़ूर की ज़ा नमाज़ के सामने बिछता था। अबू लुबाबा की तौबा कुबूल हो गई, तो उन ही के हुजरा में वही उतरी थी, ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में शरीक थीं। हुदैबिया के सफर में साथ थीं। हिज्जतुल-विदा में हमराह हैं। हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के बाद ख़्वाब देखा कि रसूलुल्लाह निहायत परेशान हैं। सर और रेश गर्द में अटे हुए हैं। पूछा या रसूलुल्लाह क्या हाल है। इरशाद हुआ मक़्तले हुसैन से आ रहा हूँ। अह्ले इराक़ ने हुसैन को क़त्ल किया, खुदा उनको क़त्ल करे, हुसैन को ईज़ा दी, खुदा उन पर लानत करे।

अबू हुरैरह ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। जन्नतुल-बक़ीअ् में दफ़न हुईं। इन्हीं ख़स्ताहाल क़बरों में एक क़बर उनकी भी है। हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश अपने दसत व बाज़ू से मआश पैदा करतीं और फुक़रा व मसाकीन में लुटा देती थीं। हुज़ूर की फूफ़ी ज़ाद बहन थीं। जन्नतुल-बक़ीअ् के वीराने में वह भी सो रही हैं। हज़रत जौहरीया बनू मुस्तलक़ के सरदार की बेटी और मीर उमम के हरम का चिराग़ थीं। उनकी आख़िरी आरामगाह का चिराग़ भी इसी वीराना में है। हज़रत उम्मे हबीबा अमीर मुआविया की बहन थीं। उनके बाप अबू सुफ़ियान फतहे मक्का से पहले उनके घर में आए तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिछौने पर बैठना चाहा। आपने बिछौना उलट दिया। बाप ने बिगड़ कर कहा! बिछौना इस क़द्र अज़ीज़ है। फ़रमाया! रसूलुल्लाह के फ़र्श पर कोई मुश्रिक नहीं बैठ सकता। रिवायत है कि मदीना में हज़रत अली के मकान में आपकी क़बर थी, लेकिन अली का इम्कान न रहा यह क़बर कहाँ रहती? रहे नाम अल्लाह का।

हज़रत मैमूना का इंतिक़ाल सर्फ़ में हुआ। हज़रत इब्ने अब्बास ने जनाज़ा पढ़ाया, जनाज़ा उठा, तो हज़रत इब्ने अब्बास बोले यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी का जनाज़ा है। बाअदब और आहिस्ता चलो। हज़रत सफ़ीया आक़िल अफ़्ज़ल और हलीम थीं। (असदुल-ग़ाबा) वह ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में गिरफ़्तार हो कर आईं थीं। सरवरे दोआलम के हरम में दाख़िल हो गईं। एक दिन आबदीदा

थीं। हुज़ूर तशरीफ़ लाए सबब पूछा फरमाया कि हफ़्सा व आइशा कहती हैं कि हम अज़्वाज में अफ़ज़ल हैं हम आपकी ज़ौजा होने के अलावा चचा ज़ाद भी हैं। हुज़ूर ने फरमाया तुमने यह क्यों न कह दिया कि मेरे बाप मूसा, हारून, मेरे चचा और मुहम्मद मेरे शौहर हैं।

जन्नतुल-बक़ीअ् उन ग्यारह में नौ की आख़िरी आरामगाह है, लेकिन हुक्मरानों की शरई ख़शूनत का शिकार, रसूलुल्लाह के अह्ले बैते रसूल की औलादें, रसूल के साथी, रसूल के जांनिसार, रसूल के जांनशीन, रसूल के फ़िदाई हत्ता कि रसूल को गोद में खिलाने वाली हलीमा सअ्दिया यहाँ इस तरह लेटी हुई हैं, जिस तरह गुम्नाम अदीबों के अधूरे मशवरों पर इबारतें क़लम की कतरे बुयूनत से दम तोड़ देती हैं।

उहुद के बारे में लिखते हैं :

दामने उहुद : इसी उहुद के दामन में ज़मीन से दो ज़ीना बुलन्द और पहाड़ से ढेरों नीचे हज़रत अमीर हमज़ा, अब्दुल्लाह बिन जहश और मुस्अब बिन उमैर की क़बरें हैं, लेकिन आले सऊद की शरई यल्ग़ार ने हम्वार कर दी हैं यहीं हिन्दा ने हज़रत अमीर हम्ज़ा का सीना चाक करके उनका कलीजा चबाया और मिस्ला किया था। इन्हीं शुहदा के फ़िराक़ में मदीना अश्कबार था हर घर से चीख़ें आ रही थीं। उन्हीं चीख़ों पर हुज़ूर ने कहा था :

आह हमज़ा का रोने वाला कोई नहीं!

हिन्दा ने तो हमज़ा का कलीजा चबाया था, लेकिन उन्होंने हमज़ा की क़बर चबा डाली है। मुस्अब बिन उमैर और अब्दुल्लाह बिन जहश दफ़न ज़रूर हैं, लेकिन वह क़बरें नहीं उनका साया हैं। अरब कहते हैं कि यहाँ अमीर हमज़ा दफ़न हैं। यह अब्दुल्लाह बिन जहश या मुस्अब बिन उमैर की क़बरें हैं और अक्सर शुहदा इसी मिट्टी में सो रहे हैं। हम उनके हाफ़िज़ा पर एतमाद करते और सर झुकाते हैं कि उहुद का यह मैदानी टुकड़ा इन्हीं सहाबा में से बेशतर की ख़्वाबगाह है।

हुज़ूर ने फरमाया था उहुद पर आओ तो उसके दरख़्त से ख़्वाह वह दरख़्त ख़ारदार ही क्यों न हो, कुछ ज़रूर खाओ, लेकिन उहुद इसी तरह नगर सुल्तानी के इग़माज़ का शिकार है जिस तरह और आसार

हैं, कोई निशान या कतबा नहीं और यह तो पूरे हिजाज़ में है। जहाँ तहाँ से इस्लाम उठा और फ़ैला, वह जगहें खुद बोलती हैं कि हम फ़लां हैं। हालांकि इस वादी के चप्पा-चप्पा की निशान देही होनी चाहिए क्या इन्हें क़ायम रखने या क़ायम करने से दूसरी इबादतगाह बन जाएगी? यह कोई उज़्र नहीं, बल्कि उज़्र लंग है। अरबों को जिस तारीख़ पर नाज़ है, बल्कि जिस तारीख़ ने उन्हें शर्फ़ बख़्शा वह काबतुल्लाह और हरमे नबवी हैं या फिर यह मक़ाम जिन्हें ग़ज़वाते नबी ने दवाम बख़्शा और कुफ़्फ़ारे मक्का ढेर हो गये। तारीख़ के यह पड़ाव इस तरह नहीं रहने चाहिएं कि इल्म के इस ज़माना में मिट जाएं। आख़िर अरब शहज़ादे यूरोप में घूमते फिरते हैं, वहाँ क्या नहीं करते और क्या नहीं लाते क्या वहाँ नहीं देखते कि फ़्रांस ने अपने शाहों की क़त्ल गाहें तक महफ़ूज़ की हुई हैं। रूमा ने वह तमाशगाह महफ़ूज़ कर ली है, जहाँ शाहाने रूम वहशत के दौर में दरिन्दों से इंसान की चीर फाड़ का तमाशा देखा करते थे। बर्लन में रूस ने अपनी फतह की अज़ीमुश्शान यादगारें क़ायम की हैं। इंग्लिस्तान क़दामत का घर है, वह अपने शाहों की पुरानी यादगारें सीने से लगाए बैठा है। शाह का महल और वज़ीरे आज़म का मकान नहीं बदला कि उसकी पुरानी तारीख़ है, जो माज़ी को हाल से मिलाती है क्या यह चीज़ें इबादत गाहें बन गई हैं? जब उन लोगों ने जो कुरआन के नज़्दीक मिस्ल व मअ़तूब हैं, अपने तारीख़ी सरमाया को इबादतगाह नहीं बनाया, तो मुसलमान जिन की तर्बियत तौहीद व रिसालत की आब व हवा में हुई है। उन आसारे क़दीमा को इबादत गाह बना लेंगे? जहाँ बैतुल्लाह और गुंबदे ख़ज़रा हों। वहाँ और कौन सी जबीने नियाज़ की सज्दागाह हो सकती है। लोगों की कज रवी और गुम्राही का इलाज यह नहीं कि वह चीज़ें इसलिए मिटा दी जाएं कि अवामुन्नास बअल्फ़ाज़े शरीअ़त शिर्क करते हैं, किसी ने अंगूर और खजूर को मिटाया है कि लोग उस से शराब कशीद करते हैं।

जद्दह को जदीद और रियाज़ को जन्नत बनाने वाले मक्का में आकर आस्तीन चढ़ा लेते हैं और मदीना में जाकर पांचे ऊंचे कर लेते हैं, उन्हें अपने नफ़्स में नवाही महसूस नहीं होते।

जबले सलअ् के बारे में लिखते हैं !

जबले सलअ् : मस्जिदे फतह या अहज़ाब जबले सलअ् के ग़रबी किनारा पर है। उसके गिर्दा गिर्द सलमान फार्सी ने ग़ज़्व-ए-अहज़ाब में ख़न्दक़ खोदी थी। यहाँ हुज़ूर के साथ अबू बकर, उमर, उस्मान और अली ने ख़ेमा नसब किए थे। यहां उनके और फातिमतुज़्ज़हरा व सलमान फार्सी के नाम पर मसाजिद बनी हुई हैं। यह मस्जिदें भी शाही सतवत और शरई ख़शूनत के नरग़ा में हैं। क़रीब अमरीकी तरज़ का शाही महल है। महल में बहुत बड़ा बाग़ीचा है, लेकिन वहाँ शरअ् मफ़रूर हो गई है।

मदीना के बारे में लिखते हैं :

मदीना : मदीना में नई चीज़ें सिर्फ़ होटल हैं, हरम के चारों तरफ़ यूरोपी मस्नूआत की लदी फन्दी दुकानें हैं, ज़रे मुबादला के ब्योपारी हैं, बैरूत के रसाइल व जराइद हैं, बाल कटाई के सैलून हैं, ऊंट ग़ायब हो चुके और सैयारे अड़े फिर रहे हैं।

अल-विदा : रुख़सत होने से पहले मैंने रौज़-ए-अक़्दस के गर्द कई फेरे डाले एक सुतून पर खड़ा हुआ, अस्हाबे सुफ़्फ़ा के चबूतरे पर क़रने अव्वल को तलाश किया, हज़रत फातिमा के हुजरा पर तहज्जुद की नमाज़ों को महसूस किया, जो सरवरे काइनात हर रात यहाँ अदा फरमाते थे। मालूम होता था।

अभी इस राह से कोई गया है

फ़ातिमतुज़्ज़हरा के मज़ार पर

जन्नतुल-बक़ीअ् में मज़ारात की हालत हद दरजा नागुफ़्ता है। पहलू में फलक बोस इमारत खड़ी की जा रही हैं और बहुत सी क़द आवर इमारतें खड़ी हो चुकी हैं। जिस पयम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमर भर पक्का मकान न बनाया, उसके नाम लेवा बंगलों और महलों में रह रहे हैं, लेकिन जन्नतुल-बक़ीअ् ही एक ऐसी जगह है, जहाँ क़बरों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की "हिदायत" पर याराने नज्द ने इबरत के नोश्ते बना रखा है, गोया अस्लाफ़ की क़बरों पर "सुन्नते नबवी" नाफ़िज़ है, लेकिन खुद ज़िन्दा क़बरें संगे मरमर के महलों में रह रही हैं।

हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा के मज़ारे अक़्दस पर मेरे अश्कबार दिल की, जो हालत हुई अर्ज़ करना मुश्किल है, एक वीराना में मां पड़ी सोती हैं। ज़रा हट के इमाम हसन, इमाम ज़ैनुल-आबेदीन, इमाम जाफर सादिक़, और इमाम बाक़र आराम कर रहे हैं। उनकी जुड़वां क़बरों के रू-ब-रू हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब की क़बर है। ज़ैल के अश्आर इसी हाज़िरी की यादगार हैं।

-शोरिश काशमीरी

इस सानेहा से गुंबदे ख़ज़रा है पुर मलाल
लख़्ते दिल रसूल की तुर्बत है ख़स्ताहाल
दिल में ठिठक गया कि नज़र में सिमट गया
इस जन्नतुल-बक़ीअ् की ताज़ीम का ख़्याल
तैयबा में भी है आले पयम्बर पे इब्तिला
इस इब्तिला से ख़ातिरे कौनेन है निढाल
सोए हुए हैं, मां की लहद ही के आस पास
पूरे ख़लील, सब्ते पयम्बर, अली के लाल
उड़ती है धूल मरक़द आले रसूल पर
होता है देखते ही तबीअ़त कर इख़्तिलाल
उफ़्तादगाने ख़्वाब में आले अबू तुराब
अब तक वही है गर्दिशे दौरां की चाल ढाल?
फ़रशही रवा है? पयम्बर के दीन में
लेकिन हराम शय है? मक़ाबिर की देख भाल
इस्लाम अपने मूलिद व मन्शा में अजनबी
तेरा ग़ज़ब कहाँ है? खुदावन्दे ज़ुल-जलाल
तोंदें बढ़ी हुई हैं ग़रीबों के ख़ून से
महलों की आब व ताब है, हुक्काम पर हलाल
जिस की निगाह में बिन्ते नबी की हया न हो
उस शख़्स का नोश्त-ए-तक़्दीर है ज़वाल
फटती है पू, तो सुबह भी होती है बिज़्ज़रूर
फिरते हैं रोज़ व शब, तो पलटते हैं माल व साल
कब तक रहेगी आले पयम्बर लुटी पिटी
कब तक रहेंगे जाफर व बाक़र गुस्ताहाल
अज़ बसका हूँ ग़ुलामे ग़ुलामाने अह्ले बैत
हर लहज़ा उनकी ज़ात पे कुरबान जान व माल
क्या यूं ही ख़ाक उड़ेगी मज़ारात अक़्दस पर!
फ़ैसल की सलतनत से है शोरिश मेरा सवाल

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

مُحَمَّدٌ حَامِدٌ أَحْمَدُ مَحْمُودٌ

الصلوٰة والسلام علیک یا رسول اللّٰہ

مُحَمَّد صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

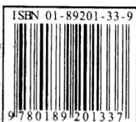
قَاسِمٌ	عَاقِبٌ				فَاتِحٌ	خَاتِمٌ
حَاشِرٌ	مَاحٍ				دَاعٍ	سِرَاجٌ
رَشِيْدٌ	مُنِيْرٌ				بَشِيْرٌ	نَذِيْرٌ
هَادٍ	مَهْدٍ	رَسُوْلٌ	نَبِيٌّ	طٰهٰ	يٰسٓ	مُزَّمِّلٌ
مُدَّثِّرٌ	شَفِيْعٌ	خَلِيْلٌ	كَلِيْمٌ	حَبِيْبٌ	مُصْطَفٰى	مُرْتَضٰى
مُجْتَبٰى	مُخْتَارٌ	نَاصِرٌ	مَنْصُوْرٌ	قَائِمٌ	حَافِظٌ	شَهِيْدٌ
عَادِلٌ	حَكِيْمٌ	نُوْرٌ	حُجَّةٌ	بُرْهَانٌ	أَبْطَحِيٌّ	مُؤْمِنٌ
مُطِيْعٌ	صَادِقٌ	مُصَدِّقٌ	نَاطِقٌ	مُذَكِّرٌ	وَاعِظٌ	أَمِيْنٌ
عَرَبِيٌّ	هَاشِمِيٌّ	تِهَامِيٌّ	صَاحِبٌ	مَكِّيٌّ	مَدَنِيٌّ	مُضَرِيٌّ
أُمِّيٌّ	عَزِيْزٌ	حِجَازِيٌّ	تَرَازِيٌّ	قُرَيْشِيٌّ	حَرِيْصٌ	رَؤُفٌ
يَتِيْمٌ	غَنِيٌّ	جَوَّادٌ	فَتَّاحٌ	عَالِمٌ	طَيِّبٌ	طَاهِرٌ
مُطَهَّرٌ	خَطِيْبٌ	فَصِيْحٌ	رَحِيْمٌ	سَيِّدٌ	مُتَّقِيٌّ	إِمَامٌ
بَارٌّ	شَافٍ	مُتَوَسِّطٌ	سَابِقٌ	مُقْتَصِدٌ	مَهْدِيٌّ	حَقٌّ
مُبِيْنٌ	أَوَّلٌ	آخِرٌ	ظَاهِرٌ	بَاطِنٌ	رَحْمَةٌ	مُحَلِّلٌ
مُحَرِّمٌ	آمِرٌ	نَاهٍ	شَكُوْرٌ	قَرِيْبٌ	مُنِيْبٌ	مُبَلِّغٌ

لا إله إلا الله محمد رسول الله

مُحَمَّدٌ حَامِدٌ أَحْمَدُ رَسُوْلُ اللّٰهِ

رضوی کتاب گھر دہلی




ISBN 01-89201-33-9
9780189201337

RAZAVI KITAB GHAR
423 Matia Mahal Jama Masjid Delhi-6
Contact:. 9350505879,011-23264524

Rs. 200/-





RAZAVI KITAB GHAR

423 Matia Mahal Jama Masjid Delhi-6

Contact:. 9350505879,011-23264524

Rs. 200/-